हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास

इस पुस्तक में लगभग एक सहस्र वर्षों में विकसित होने वाली हिन्दी काव्य की सभी प्रमुख प्रवृत्तियों का इतिहास क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने के साथ-साथ हिन्दी काव्य की आदि युगीन अपभ्रंश तथा वीर काव्य की प्रवृत्तियाँ भक्ति युगीन निर्गुण काव्य सूफी काव्य राम काव्य कृष्ण काव्य नीति काव्य तथा लक्षण काव्य की प्रवृत्तियाँ रीति युगीन शृंगार काव्य वीर काव्य भक्ति एवं नीति काव्य की प्रवृत्तियाँ भारतेन्दु तथा द्विवेदी युगीन काव्य प्रवृत्तियाँ एवं आधुनिक युगीन राष्ट्रीय काव्य छायावादी काव्य प्रगतिवादी काव्य प्रयोगवादी काव्य तथा वर्तमान कविता की अन्य प्रवृत्तियों का इतिहास पृथक्-पृथक् रूप में करते हुए हिन्दी काव्य की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया गया है।

डा० प्रतापनारायण टण्डन—जन्म लखनऊ शिक्षा बी० ए० (आनर्स) तथा एम० ए० लखनऊ विश्वविद्यालय में हुई। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा आयोजित प्रथमा मध्यमा (विशारद) तथा उत्तमा (साहित्य रत्न) परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। सन् १९५८ में लखनऊ विश्वविद्यालय में हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास शीर्षक प्रबन्ध पर पी एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। लखनऊ विश्वविद्यालय से ही १९६३ में समीक्षा के मान और हिन्दी समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ शीर्षक प्रबन्ध पर डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की। उक्त प्रबन्ध पर लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा सन १९६३ का बोरजों रिसर्च प्राइज भी प्रदान किया गया। प्रकाशित कृतियाँ आधुनिक साहित्य (निबन्ध सग्रह) सन् १९५६ (प्रकाशक—विद्यामन्दिर लखनऊ) हिन्दी उपन्यास में वर्ग भावना प्रेमचन्द युग (शोध रचना) सन १९५ (प्रकाशक—हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय) कांडङ (अनुवाद) सन १९५६ (प्रकाशक—पाण्डुलिपि प्रकाशन दिल्ली) रीता की बात (उपन्यास) सन १९५७ (प्रकाशक—प्रेम प्रकाशन लखनऊ) हिन्दी साहित्य पिछला दशक (आलोचना) सन १ ५७ (प्रकाशक हिन्दी साहित्य भण्डार लखनऊ) हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास (शोध प्रबन्ध) सन १९५८ (प्रकाशक—हिन्दी साहित्य भण्डार लखनऊ) अन्धी दृष्टि (उपन्यास) सन १९६० (प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली) वे तो इरादे (कहानी सग्रह) सन १९६० (प्रकाशक—हिन्दी साहित्य भण्डार लखनऊ) हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास (संक्षिप्त प्रबन्ध) सन १९ (प्रकाशक—हिन्दी साहित्य भण्डार लखनऊ) रीता (पाकेट संस्करण) सन १९६ (प्रकाशक—हिन्द पाकेट बुक्स नई दिल्ली) स्वर्ग यात्रा (नाटक) सन १-६२ (प्रकाशक—भारती साहित्य मन्दिर दिल्ली) कपहले पानी की बूँदें (उपन्यास) सन १९६४ (प्रकाशक—विवेक प्रकाशन लखनऊ) शून्य की पूर्ति (कहानी सग्रह) सन १९६४ (प्रकाशक—विवेक प्रकाशन लखनऊ) नवाब ननकौआ (एकांकी सग्रह) सन १९६४ (प्रकाशक—विवेक प्रकाशन लखनऊ) हिन्दी उपन्यास कला सन १९६५ (प्रकाशक—हिन्दी समिति उ० प्र० शासन लखनऊ) रीता (अंग्रेजी अनुवाद) सन १९६५ (प्रकाशक—जे का बीगा पब्लिशर्स कलकत्ता) पथरीले प्रतिरूप (विदेश की रचनाएँ) सन १९६५ (प्रकाशक—विवेक प्रकाशन लखनऊ) वासना के अंकुर (उपन्यास) सन १९ ६ (प्रकाशक—साहित्य केन्द्र प्रकाशन दिल्ली) अभिशप्ता (उपन्यास) सन १९६६ (प्रकाशक—साहित्य केन्द्र प्रकाशन दिल्ली) नायिकाएँ नाम रीता (अपना अनुवाद) सन १९६७ हिन्दी उपन्यास का परिचयात्मक इतिहास (आलोचना) सन १ ६७ (प्रकाशक—विवेक प्रकाशन लखनऊ) तथा हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास २ भाग (आलोचना) सन १९६८ (प्रकाशक—विवेक प्रकाशन लखनऊ) आदि। उपर्युक्त में से हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास तथा अन्धी दृष्टि नामक रचनाएँ उत्तर प्रदेशीय शासन द्वारा पुरस्कृत की गयीं। समीक्षा के मान और हिन्दी समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ४० ० रु का अनुदान तथा २५ ०० रु का विशेष पुरस्कार भी प्रदान किया गया। इसी कृति पर ११ ० ० रु का श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार भी प्रदान किया गया। सम्पादन कार्य लखनऊ से प्रकाशित नई कहानी संकलन (१९५६) का संयुक्त रूप से सम्पादन किया। सन १९५७ से ११५८ तक युग चेतना (लखनऊ) के सम्पादक मण्डल में रहे। आकाशवाणी से डेढ़ दर्जन से अधिक कहानियाँ वार्ताएँ तथा नाटक आदि प्रसारित हो चुके हैं। सन १९६४ में इटली (यूरोप) की यात्रा की तथा रोम फिरेन्ज़ा पीसा तथा फ्लोरेंस आदि ऐतिहासिक नगरों का भ्रमण किया। अध्यापन अक्टूबर १९५८ से लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास

खण्ड १ पद्य भाग

लेखक

डा० प्रतापनारायण टंडन

बी० ए० (आनर्स) एम० ए० पी-एच० डी० डी० लिट्०

प्राध्यापक हिन्दी विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ



विवेक प्रकाशन

मूल्य	३० रु० (प्रथम खंड)
संस्करण	प्रथम १९६८
सर्वाधिकार	लेखक के अधीन
प्रकाशक	विवेक प्रकाशन अमीनाबाद लखनऊ
मुद्रक	अधिकार प्रेस २२ कैसरबाग लखनऊ

मूर्धन्य आलोचक डा० नगेन्द्र को सादर समर्पित

प्राक्कथन

इस कृति के प्रथम खण्ड में हिन्दी पद्य तथा द्वितीय खंड में हिंदी गद्य साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास प्रस्तुत किया गया है। प्रथम खंड के पहले और दूसरे अध्यायों में आदि युगीन अपभ्रंश काव्य की प्रवृत्ति तथा आदि युगीन वीर काव्य की प्रवृत्तियों का विकास दिखाया गया है। भक्ति युगीन काव्य प्रवृत्तियों में निर्गुण काव्य की प्रवृत्ति तीसरे अध्याय में, सूफी काव्य की प्रवृत्ति चौथे अध्याय में, राम काव्य की प्रवृत्ति पांचवें अध्याय में, कृष्णकाव्य की प्रवृत्ति छठें अध्याय में, नीति काव्य की प्रवृत्ति सातवें अध्याय में तथा चारण काव्य की प्रवृत्ति आठवें अध्याय में विवेचित की गयी है। रीति युग के अंतर्गत नवें अध्याय में शृंगार काव्य, दसवें अध्याय में वीर काव्य तथा ग्यारहवें अध्याय में भक्ति तथा नीति काव्य की प्रवृत्तियों का परिचयात्मक इतिहास प्रस्तुत किया गया है। बारहवें अध्याय में भारतेन्दु युगीन तथा तेरहवें अध्याय में द्विवेदी युगीन काव्य प्रवृत्तियों का इतिहास है। वर्तमान युगीन काव्य प्रवृत्तियों में से राष्ट्रीय काव्य प्रवृत्ति का चौदहवें अध्याय में, छायावादी काव्य प्रवृत्ति का पन्द्रहवें अध्याय में, प्रगतिवादी काव्य प्रवृत्ति का सोलहवें अध्याय में, प्रयोगवादी काव्य प्रवृत्ति का सत्रहवें अध्याय में तथा अन्य काव्य प्रवृत्तियों का परिचयात्मक इतिहास अठारहवें अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

शुक्लोत्तर युगीन निबंध, सैंतीसवें अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर युगीन एकांकी, अड़तीसवें अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यास, उनतालीसवें अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर युगीन कहानी, चालीसवें अध्याय में आधुनिक युगीन आलोचना तथा इकतालीसवें अध्याय में गद्य साहित्य की अन्य प्रवृत्तियों का परिचय है।

इस प्रकार से यह कृति प्रवृत्तिगत आधार पर हिन्दी के पद्य तथा गद्य साहित्य का परिचयात्मक इतिहास प्रस्तुत करने वाली सर्वप्रथम साहित्यिक ऐतिहासिक रचना है। इसमें लेखक का दृष्टिकोण प्रायः उपलब्ध साहित्य का प्रवृत्तिगत विभाजन के आधार पर विकासात्मक परिचय देना रहा है। अनेक स्थलों पर कुछ मंतव्य लेखक के अपने हैं। इनसे लेखक के साहित्य संबंधी दृष्टिकोण का भी परिचय मिलता है। अनावश्यक विस्तार के भय से बहुत से नाम तथा अन्य विवरण इस कृति में नहीं दिये जा सके हैं यद्यपि विविध सिद्धांतों तथा प्रवृत्तियों का निरूपण करते समय विषय की प्रतिनिधि जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयत्न अवश्य किया गया है। आशा है इस रूप में यह कृति पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

बी ४/१ बांदा निशातगंज कालोनी
लखनऊ—७

—प्रतापनारायण टंडन

विषय-सूची

अध्याय . १

आदि युगीन अपभ्रंश काव्य की प्रवृत्ति

कवि धाहिल रचना काल तथा कृतियाँ—पउमसिरिचरिउ अथवा पद्मश्री चरित कवि धाहिल के काव्य का उदाहरण—[illegible]।

कवि नयनंदि साम्प्रदायिक परिचय कृतियाँ—आराधना काव्य का उदाहरण—[illegible]।

कवि वरदत्त रचना काल तथा कृतियाँ—वज्रस्वामिचरित काव्य का उदाहरण—[illegible]।

हेमचन्द्र रचना काल प्रमुख कृतियाँ—सिद्धहेमचन्द्र शब्दानुशासन अभिधान काव्यानुशासन छन्दानुशासन नाममालाकोश काव्य का उदाहरण—[illegible]।

कवि सोमप्रभ रचना काल सम्प्रदाय परिचय प्रमुख कृतियाँ—कुमारपाल प्रतिबोध काव्य का उदाहरण—[illegible]।

जिनदत्तसूरि रचना काल प्रमुख कृतियाँ—उपदेशरसायनरास कालस्वरूप कुलकम तथा चर्चरी काव्य का उदाहरण—[illegible]।

हरिभद्र सूरि सम्प्रदाय परिचय प्रमुख कृतियाँ—सनत्कुमारचरित णमिणाह चरिउ काव्य का उदाहरण—[illegible]।

अद्दहमाण अथवा अब्दुर्रहमान रचना काल प्रमुख कृतियाँ—संदेश रासक काव्य का उदाहरण—[illegible]।

महेश्वर सूरि प्रमुख कृतियाँ—संजममंजरी काव्य का उदाहरण—[illegible]।

श्रीचन्द्रमुनि प्रमुख कृतियाँ—कथाकोश काव्य का उदाहरण—४७।

पद्मकीर्ति सम्प्रदाय परिचय प्रमुख कृतियाँ—पासणपुराण—४७।

अन्य प्रमुख कवि अपभ्रंश काव्य परम्परा के अन्य प्रमुख कवि मदनग विद्याधर बब्बर सारंगधर जामभट्ट शालिभद्रसूरि सोमप्रभ न मगगण जिनपद्म सूरि विनयचन्द्र सूरि आदि प्रमुख कृतियाँ काव्य के उदाहरण आदि युगीन अपभ्रंश काव्य परम्परा का महत्व—[illegible]।

अध्याय . २

आदि युगीन वीर काव्य की प्रवृत्ति

आरम्भिक कालीन परिस्थितियाँ प्रमुख कवि और काव्य—५ । दलपति विजय रचना काल तथा प्रमुख कृतियाँ—खुमानरासो विषयवस्तु एवं महत्व—५१।

नरपतिनाल्ह रचना काल प्रमुख कृतियाँ—बीसलदेवरासो कथा-वस्तु भाषा तथा काव्य का उदाहरण—[illegible]।

चन्दबरदाई रचना काल और कृतियाँ—पृथ्वीराजरासो विषयवस्तु प्रामाणिकता प्रक्षिप्तता भाषा रस योजना अलंकार योजना धार्मिक तत्व दशावतार वर्णन समकालीन सामाजिक व्यवस्था का निरूपण कथानायक का चरित्र काव्य के उदाहरण—[illegible]।

भट्ट केदार परिचय तथा प्रमुख कृतियाँ—जयचन्द्रप्रकाश रचना कालान [illegible] —५७।

अध्याय : २

भक्ति युगीन निर्गुण काव्य की प्रवृत्ति

अध्याय : ३

भक्ति युगीन निर्गुण काव्य की प्रवृत्ति

'रतनखान', मस्तच्छावली, 'भक्ति विवेक' ज्ञान परोछि बारहखडी 'रामावतार लीला, ब्रजलीला, ध्रुवचरित विश्वविभूति तथा 'सुखसागर आदि काव्य के उदाहरण—७७।

अक्षर अनन्य जन्म काल जीवन परिचय वर्ण्य विषय प्रमुख कृतियां—ज्ञान योग विज्ञान योग, ध्यान योग 'विवेक दीपिका' 'ब्रह्म ज्ञान तथा अनन्य प्रकाश आदि—७८।

जगजीवन दास सम्प्रदाय परिचय जन्म काल जीवन परिचय गुरु परम्परा, प्रसिद्ध कृतियां—शब्द सागर ज्ञानप्रकाश आगमपद्धति, महा प्रलय प्रथमग्रन्थ, अघ विनाश आदि काव्य का उदाहरण—७९।

लालदास जन्म काल जीवन परिचय, बाल्यावस्था सिद्धान्त प्रचार गृहस्थ जीवन, कृतियाँ—लालदास की चेतावणी काव्य का उदाहरण—८०।

प्राणनाथ जन्म काल जीवन परिचय धर्मध्यान प्रमुख कृतियां—८०।

बाबा लाल जीवन परिचय रचना काल गुरु परम्परा किंवदन्तियाँ प्रमुख कृतियाँ—नादिरुन्निकात काव्य का उदाहरण—८०।

साध सम्प्रदायी संत प्रवर्तन काल प्रमुख संत—जोगीदास वीरभान तथा ऊदादास प्रमुख कृतियां—बानी आदिउपदेश निर्वान ज्ञान पोथी साध पंत आदि—८१।

हरिदास जन्म काल निरंजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक प्रमुख कृतियाँ—हरिपुरुषजी की वाणी काव्य का उदाहरण—८१।

बावरी साम्प्रदायिक कवि संत बावरी साहिबा गुरुपरम्परा रामानन्द (द्वितीय) दयानन्द तथा मायानन्द बावरी साहिबा के प्रधान शिष्य—बीरू गुरुभाई सूफी शाह (शाह फकीर) शाह फकीर की रचनाएं—शब्दसार आदि। अन्य सन्त—जगजीवनदास भीखा साहब हरिलाल साहब आदि। भीखा साहब की रचनाएं। अन्य संत—हरनाम साहब गोविन्द साहब पलटू साहब जानकी दास, गुलालसाहब, यारी साहब आदि। बावरी साम्प्रदायिक कवियों के काव्य के उदाहरण—८१।

अन्य साम्प्रदायिक संत दरियादास रामचरणदास दूलन दास गरीबदास परशराम आचार्य बाबा रामचन्द्र बाबा रामचन्द्र की कृतियां—चरणचन्द्रिका शिष्य परम्परा नवनिधिदास दरियादास तथा शिव नारायण आदि। जीवनदास की शिष्य परम्परा दूलनदास, देवीदास गुसाईंदास धर्मदास तथा उपाध्याय चमार आदि। अन्य संत सिद्धादास पहलवानदास घासीदास बालकदास अमरदास असगरभानदास तथा अन्य दास आदि काव्य के उदाहरण—८२।

दरियादास (प्रथम बिहारी निवासी) तथा दरियादास (द्वितीय मारवाड निवासी) अन्य संत दत्तदास आदि—८४।

चरनदास जन्म काल चरणपंथ वंश परिचय शिक्षा-दीक्षा रचनाएँ—वाणी ग्रंथ। शिष्य परम्परा सहजोबाई, दयाबाई, जूड़ाराम तथा बुद्धिदास आदि—८४।

'रतनखान, भक्तवच्छावली', 'भक्ति विवेक ज्ञान परोछि, बारहखडी रामावतार लीला ब्रजलीला ध्रुवचरित', विग्यविभूति तथा मुखसागर आदि काव्य के उदाहरण—७७।

अमर अनन्य जन्म काल जीवन परिचय वर्ण्य विषय प्रमुख कृतियां—ज्ञान योग' विज्ञान योग, ध्यान योग विवेक दीपिका, ब्रह्म ज्ञान तथा अनन्य प्रकाश, आदि—७८।

जगजीवन दास सम्प्रदाय परिचय जन्म काल जीवन परिचय गुरु परम्परा, प्रसिद्ध कृतियां—शब्द सागर 'ज्ञानप्रकाश आगमपद्धति महा प्रलय, 'प्रमग्रन्थ, अघ विनाश आदि काव्य का उदाहरण—७८।

लालदास जन्म काल जीवन परिचय बाल्यावस्था सिद्धान्त प्रचार गृहस्थ जीवन कृतियां—लालदास की चेतावणी काव्य का उदाहरण—८०।

प्राणनाथ जन्म काल जीवन परिचय धर्मज्ञान प्रमुख कृतियां—८०।

बाबा लाल जीवन परिचय रचना काल, गुरु परम्परा किंवदन्तियां प्रमुख कृतियां—नादिरे निकात काव्य का उदाहरण—८०।

साध सम्प्रदायी मत प्रवर्तन काल प्रमुख मत—जोगीदास वीरभान तथा उदा दास प्रमुख कृतियां—बानी आदिउपदेश निवान ज्ञान पोथी साध पत आदि—८१।

हरिदास जन्म काल निरंजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक प्रमुख कृतियां—हरिपुरुषजी की वाणी, काव्य का उदाहरण—८१।

बावरी साम्प्रदायिक कवि सत बावरी साहिबा गुरु परम्परा रामानन्द (द्वितीय), दयानन्द तथा मायानन्द बावरी साहिबा के प्रधान शिष्य—बीरू गुलाल भूपा साह (शाह फकीर), शाह फकीर की रचनाएं—शब्दसार आदि। अन्य सन्त—जगजीवनदास भाखा साहब हरिदास साहब आदि। भाखा साहब की रचनाएं। अन्य संत—हरलाल साहब गोविन्द साहब, पलटू साहब जानकी दास, गुलालसाहब यारी साहब आदि। बावरी साम्प्रदायिक कवियों के काव्य के उदाहरण—८१।

अन्य साम्प्रदायिक मत दरियादास रामचरणदास दूलन दास, गरीबदास धरनदास शिवनाथ बाबा रामचन्द्र बाबा रामचन्द्र की कवियां—चरणचन्द्रिका शिष्य परम्परा नवनिधिदास दरियादास तथा शिव नारायण आदि। जीवनदास की शिष्य परम्परा दूलनदास, देवीदास गुसाईं दास धर्मदास तथा उपाध्याय चमार आदि। अन्य मत सिद्धदास पहलवानदास घासीदास बालकदास अमरदास असगरभान दास तथा अन्य दास आदि, काव्य के उदाहरण—८३।

दरियादास (प्रथम बिहारा निवासी) तथा दरियादास (द्वितीय मारवाड़ निवासी) अन्य मत दलदास आदि—८४।

पानपदास जन्म काल पानप पंथ का परिचय शिक्षा-दीक्षा रचनाएं—वाणी ग्रन्थ। शिष्य परम्परा मनसादास कासीदास, चूड़दराम तथा बुद्धिदास आदि—८४।

अध्याय ४

भक्ति युगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति

अध्याय ४

भक्ति युगीन राम काव्य की प्रवृत्ति

गोस्वामी तुलसीदास जन्म तिथि सम्बन्धी विविध मत जन्म स्थान जीवन परिचय बाल्यावस्था वैवाहिक जीवन भक्ति साधना प्रमुख कृतियां । रामकाव्य के वर्ण्य विषय मानसरूपक राम कथा रामराज्य की धर्मराज्य में कल्पना समन्वयवादी दृष्टिकोण । रामचरितमानस—रचना काल कथा विभाजन गीतावली (पदावली रामायण तथा रामगीतावली)—वर्ण्य विषय तथा अन्य तत्व । विनयपत्रिका—वर्ण्य विषय । कवितावली—वर्ण्य विषय । कवितावली—वर्ण्य विषय तथा काव्य के उदाहरण—१ ५ १-१२ ।

अग्रदास जीवन परिचय रचना काल प्रमुख कृतियां—अष्टयाम, ध्यानमंजरी अथवा रामध्यान मंजरी कुंडलियां अथवा हितोपदेश उपखाणा बावनी शृंगार रससागर अथवा अग्रसागर काव्य का उदाहरण—१४३ ।

नाभादास जीवन परिचय रचना काल प्रमुख कृतियां—भक्तमाल रामाष्टयाम तथा रामचरितसंग्रह । 'भक्तमाल' के विविध टीकाकार एवं टीकाएं । काव्य के उदाहरण—१४४ ।

बालकृष्ण रचना काल प्रमुख कृतियां—ध्यानमंजरी नेहप्रकाश 'सिद्धान्ततत्व दीपिका' दयान मंजरी ग्वालपहेली प्रेमपहेली प्रेमदीपिका प्रेमपरीक्षा तथा परतीत परीक्षा आदि काव्य का उदाहरण—१४५ ।

रूपलाल सम्प्रदाय का नाम रूपसखी काव्य का उदाहरण—१४६ ।

बालानन्द जीवन परिचय काव्य का उदाहरण—१४६ ।

कृपानिवास जीवन परिचय वंश परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१४ ।

प्राणचन्द चौहान जीवन परिचय रचना काल प्रमुख कृतियां—रामायण महानाटक काव्य का उदाहरण—१४७ ।

छत्रसाल जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियां—काव्य का उदाहरण—१४७ ।

रामप्रियाशरण प्रेमकली जीवन परिचय रचना काल प्रमुख ग्रन्थ—सीतायन काव्य का उदाहरण—१४७ ।

जानकीरसिक शरण रसमाला जीवन परिचय अन्य नाम रसमालिनी तथा रसमालिका प्रमुख ग्रन्थ—अवधी सागर रचना काल तथा काव्य का उदाहरण—१४८ ।

रामप्रपन्न मधुराचार्य जीवन परिचय प्रमुख ग्रन्थ भगवतगण दर्पण माधुर्यकेलिकादम्बनी वाल्मीकि रामायण की टीका तथा 'रामतत्वप्रकाश' काव्य का उदाहरण—१४८ ।

कृपाचार्य हरिसहचरी अन्य नाम जनहरिया हरि तथा हरि कवि प्रमुख कृतियां—अष्टयाम तथा जानकी गीत काव्य का उदाहरण—१४८ ।

हरिदास जीवन परिचय प्रमुख कृतियां—रामतापनीयोपनिषद तथा रामस्तवराजभाष्य काव्य का उदाहरण—१४८ ।

सूरकिशोर जीवन परिचय रचना काल प्रमुख ग्रन्थ—मिथिला विलास काव्य का उदाहरण—१४८ ।

प्रयागदास तथा हृदय राम जीवन परिचय प्रमुख कृतियां—हनुमन्नाटक सुदामाचरित तथा रुक्मणिमंगल काव्य का उदाहरण—१४८ ।

रामवल्लभाशरण प्रमनिधि जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१५८।

बजनाथ पूरवसी जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१५९।

जानकी प्रसाद रसिकविहारी जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१५८।

बनादास जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१५८।

शीलमणि जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१६०।

सरयूदास प्रमुख कृतियां—पदावली नवसारावली रसिक वस्तु प्रकाश तथा भक्तिनामावली काव्य का उदाहरण—१६०।

सीतारामशरण रामरसरंगमणि जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१६ ।

सियालालशरण प्रमलता जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१६१।

अन्य कवि रामदास तपसीजी मनभावनजी शंकरदास मणिराम लक्ष्मी नारायण दास पौहारा पतितदास रामशरण रघुनाथदास हनुमानशरण मधुरअली रघुनाथदास रामसनेही नन्ददास जानकीशरण प्रीतिलता परमहंस सीताशरण रामवल्लभाशरण युगलविहारजी कामदेमणि सीतारामशरण भगवानप्रसाद रूपकला गोमतीदास माधुरलता सियाशरण मधुकरिया प्रमअली जानकीप्रसाद कामदमणि सीतारामशरण जुगलीला सिया रामशरण तपसी जनकदुलारीशरण वामनजी रामाजा सद्गुरुप्रसाद शरण बावन कवि मजर अली सुन्दरदास प्राणचंद चौहान माधवदास चारण हृदयराम मानदास कपूरचंद कृष्ण मंडन सुखदेव मिश्र लालदास बारहठ नरहर दास श्यामदास जोगराम भगवत सिंह सहजराम पंचमसिंह हरिसेवक शम्भुनाथ बंदीजन मधुसूदन इच्छा राम, मनजू लालदास शिवसिंह खुमान सदरि कवि क्षमकरण मिश्र हरिचरण दास हरिसहाय गिरि मून परमेश्वरी दास गणेश ब्रजनाथ देवादास कायस्थ धनीराम रुद्रप्रताप सिंह गोकुलनाथ जानकीचरण शिवबख्शराय रामगोपाल रूपसहाय सीताराम नवलसिंह कायस्थ भगवनदास रामानुजी रामनाथ गिरिधरदास रसिक गोविन्द रामनाथ प्रधान कृपाराम ललितदास मोतीराम प्रतापसाहि युगलमंजरी रनहरि मोहन विद्यारण्यतीर्थ जनकलाडिली शरण प्रियासखी किशोरदास हरिदास सहाय समरदास रामनाथ, हरिजन सियारामशरण लछिराम हरिबख्श सिंह लक्ष्मण रघुबर शरण श्रीनिवास जानकीप्रसाद (प्रथम) गोपालदास दयानिधि सरदार कवि छत्रधारी ईश्वरी प्रसाद गोमतीदास बाबा हरिदास वासुदेवदास सूरजदास मोहनदास गोकुलप्रसाद ब्रज राम वल्लभशरण रामदयाल जानकी प्रसाद (द्वितीय) भगवानदास खत्री प्रमसखी (द्वितीय) लालकवि वदेहीशरण श्यामसखे ध्रुवदास वदन पाठक इन्द्रजीत सिंह लालमणि

महावीरदास चतुरदास राघवदास श्यामनाथ गौरीशंकर वदीजीन दीक्षित समर सिंह पूयरपूरनचन्द शिवप्रकाश सिंह शंकर त्रिपाठी मुनिलाल माधव वरवक महशदत्त सीताराम प्रवाधाचार्य पद्मनाभाचार्य मानन्दमणि छेदालाल काशाराम मुन्नालाल हरीराम युगल प्रसाद चौबे जना सियारसिक रसिक बल्लभशरण स्वयप्रकाश, गुमानी पन्त रामकिशोर दास, विष्णुप्रसाद कुवरि, रामप्रिया—१६१ १६७।

भक्ति युगीन राम काव्य परम्परा का महत्व—१६७।

अध्याय . ६

भक्ति युगीन कृष्ण काव्य की प्रवृत्ति

भक्ति युगीन कृष्ण काव्य की प्रवत्ति का आरम्भ प्रेरणा एव रचनाए विभिन्न सम्प्रदाय विष्णु स्वामी सम्प्रदाय निम्बार्क सम्प्रदाय राधावल्लभ सम्प्रदाय आदि—१६८।

हितहरिवंश जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—राधासुधानिधि यमुनाष्टक' हितचौरासी तथा स्फुट वाणी। काव्य के उदाहरण—१७१।

दामोदर दास सवकजी जीवन परिचय, कृतियाँ— सवक वाणी काव्य के उदाहरण—१७३।

हरिराम व्यास जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—व्यास वाणी' रागमाला तथा नवधर्म और स्वधर्म पद्धति काव्य के उदाहरण—१७४।

चतुर्भुज दास जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—द्वादशयश काव्य के उदाहरण—१७५।

ध्रुवदास जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ काव्य के उदाहरण—१७६।

नहीनागरीदास जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—सिद्धांत दोहावली पदावली तथा रसपदावली काव्य के उदाहरण—१७८।

क याण पुजारी जन्म काल जीवन परिचय काव्य का उदाहरण—१७६।

भगवानदास अनयअली जीवन परिचय कृतियाँ काव्य के उदाहरण—१७८।

रसिक दास (प्रथम) रसिकदास (द्वितीय), रसिकदास (तृतीय), रसिकदास (चतुर्थ) रसिकदास (पचम) काव्य के उदाहरण—१८ ।

वृ दावनदास 'चाचाजी' जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ, काव्य का उदाहरण—१८१।

हरिदास रसिक जीवन परिचय कृतियाँ—साधारण सिद्धान्त' तथा 'राम के पद'—१८२।

वल्लभाचार्य जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—चौरासी वैष्णवन की वार्ता, तत्वदीपनिबंध, पूर्व मीमांसा भाष्य अथवा जैमिनी सूत्र भाष्य प्रकरणानि 'भागवत टीका, अणु भाष्य, सुबोधिनी, षोडश ग्रन्थ (यमुनाष्टक बालबोध, सिद्धान्त

मुक्तावली पुष्टिप्रवाह मर्यादा भेद, नवरत्न सिद्धान्त रहस्य अन्तःकरण प्रबोध विवेक धर्माश्रय कृष्णाश्रय चतुःश्लोकी भक्ति वर्धिनी जलभेद पंच पद्य सन्यास निर्णय निरोध लक्षण सेवाफल) पत्रावलम्बन शिक्षा पत्र मधुराष्टक परिवृढाष्टक प्रमावत पुरुषोत्तम सहस्रनाम त्रिविध नामावली संन्यास विवरण आदि—१८३।

गोपीनाथ जीवन परिचय ग्रन्थ साधनदीपिका—१८४।

विट्ठलनाथ जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—विद्वन्मण्डन निबन्धप्रकाशटीका अणुभाष्य का अंतिम डेढ़ अध्याय सुबोधिनी की पूर्ति और टिप्पणी भक्त हंस भक्त हेतु भक्ति निर्णय पात्रा सम टीका विर्णन शृंगार रस मडन निर्णय ग्रन्थ तथा स्फुट स्तोत्र तथा टीकाएँ आदि—१८४।

गोकुलनाथ जन्म काल जीवन परिचय आदि—१८४।

कुम्भन दास जन्म काल जीवन परिचय वर्ण्य विषय काव्य के उदाहरण—१८५।

सूरदास जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—सूर सागर साहित्य लहरी सूर सारावली गोवर्द्धन लीला दशम स्कन्ध लीला नाग लीला पद संग्रह सूरसागर सार भागवत सूर पच्चीसी सूरदासजी का पद प्राण प्यारी अथवा श्यामसगाई ब्याहलो नलदमयंती एकादशी महात्म्य तथा रामजन्म वर्ण्य विषय काव्य कला सिद्धान्त निरूपण तथा काव्य के उदाहरण आदि—१८६।

परमानन्द दास जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—दान लीला ध्रुव लीला या चरित्र परमानन्ददासजी का पद वल्लभ सम्प्रदायी कीर्तन संग्रह में पद परमानन्दसागर तथा परमानन्द दास जी के पद कीर्तन संग्रह आदि काव्य के उदाहरण—१९१।

कृष्णदास अधिकारी जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—जगन्नाथमानचरित्र 'भ्रमर गीत प्रेमतत्व निरूपण भक्त माल की टीका वैष्णव वन्दन माला भ्रमरसराशि तथा हिण्डोरा लीला वर्ण्य विषय काव्य के उदाहरण—१९३।

गोविन्द स्वामी जन्म काल जीवन परिचय वर्ण्य विषय काव्य के उदाहरण—१९४।

नन्ददास जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—अनेकार्थ मंजरी अथवा अनेकार्थनाममाला अथवा अनेकार्थ भाषा मानमंजरी अथवा नाम मंजरी अथवा नाममाला अथवा नामचिंतामणि माला रस मंजरी रूप मंजरी विरह मंजरी श्याम सगाई सुदामा चरित्र रुक्मिणी मंगल भ्रमर गीत रास पंचाध्यायी सिद्धान्त पंचाध्यायी तथा दशमस्कन्ध भाषा आदि—वर्ण्य विषय तथा काव्य के उदाहरण—१९६।

छीतस्वामी जन्म काल जीवन परिचय काव्य के उदाहरण—१९८।

चतुर्भुज दास जन्म काल जीवन परिचय पद संग्रह—चतुर्भुज कीर्तन संग्रह कीर्तनावली दान लीला, मधुमालती तथा भक्ति प्रताप। काव्य के उदाहरण—१९८।

अध्याय : ७

भक्ति युगीन नीति काव्य की प्रवृत्ति

अध्याय : ८

भक्ति युगीन लक्षण काव्य की प्रवृत्ति

अध्याय ९

रीति युगीन शृंगार काव्य की प्रवृत्ति

तरग _भावविनास रसानन्द लहरा काव्य रसायन पिंगल अष्टयाम प्रेमची पिका' 'राधिकाविलास, सुन्दरी सिन्दूर रागरत्नाकर देवचरित्र जाति विलास वृक्ष विलास', पावस विलास, देव शतक' प्रेम दर्शन तथा शिवाष्टक काव्य के उदाहरण—२३४।

सुरति मिश्र जन्म काल जीवन परिचय, ग्रंथ—काव्य सिद्धान्त आदि काव्य का उदाहरण—२३६।

भिखारी दास जीवन परिचय रचना काल ग्रंथ—रससाराश नामप्रकाश 'छन्दार्णव पिंगल', काव्यनिर्णय श्रृंगार निर्णय विष्णु पुराण भाषा' शतरंजशतिका छंदप्रकाश बागबहार 'रागनिर्णय व्रजमहात्म्य चन्द्रिका' 'अमर प्रकाश' 'वर्ण निर्णय' तथा 'रघुनाथ नाटक, काव्य के उदाहरण—२३७।

भूपति जीवन परिचय, रचना काल ग्रंथ काव्य के उदाहरण—२३८।

शाह मणि जीवन परिचय ग्रंथ काव्य का उदाहरण—२३८।

सोमनाथ जीवन परिचय, रचना काल, ग्रंथ—'रसपीयूषनिधि', कृष्ण लीला पंचाध्यायी, 'सुजान विलास तथा माधव विनोद नाटक—काव्य के उदाहरण—२४०।

रसलीन जन्म काल, जीवन परिचय ग्रंथ काव्य के उदाहरण—२४१।

दूलह कवि—जीवन परिचय रचना काल ग्रंथ—कविकुलकंठाभूषण, काव्य के उदाहरण—२४२।

रतन कवि जीवन परिचय ग्रंथ काव्य का उदाहरण—२४३।

मदनराय जीवन परिचय रचना काल ग्रंथ काव्य का उदाहरण—२४४।

देवकीनन्दन जीवन परिचय रचनाएँ काव्य का उदाहरण—२४४।

प्रानराय जीवन परिचय ग्रंथ—दलेल प्रकाश' काव्य का उदाहरण—२४५।

बेनी बन्दीजन जीवन परिचय ग्रंथ—१४५।

पद्माकर - जन्म काल, जीवन परिचय कृतियाँ—हिम्मत बहादुर विरुदावली, 'पद्माभरण, 'जगद्विनोद प्रबोध पचासा गंगालहरी, रामरसायन, 'भाषा हितोपदेश, ईश्वर पच्चीसी, 'आलिजाह प्रकाश' तथा प्रतापसिंह विरुदावली, काव्य के उदाहरण—२४६।

ग्वाल कवि जन्म काल, जीवन परिचय रचनाएँ—यमुनालहरी, 'रसिकानन्द, हमीरहठ' राधामाधव मिलन राधाष्टक, श्रीकृष्णजी का नखशिख', नेह निबाहन बंसी लीला गोपी पच्चीसी, 'कुब्जाष्टक 'कविदर्पण साहित्यानन्द' 'रसरंग, 'अलंकार भ्रम भंजन शृंगार प्रकाश भक्ति भावन साहित्य भूषण, साहित्य दर्पण 'महाश्रृंगार 'श्रृंगार कवित्त गंगाष्टक, यमुनाष्टक' ज्ञानशतक, कवित्त सग्रमाला, 'कविहृदय विनोद 'ज्ञानतहर रंगियाव, विजय विनोद तथा 'षट्ऋतु वर्णन, काव्य के उदाहरण—२४८।

प्रताप साहि जीवन परिचय, रचना काल ग्रंथ—'व्यंग्यार्थकौमुदी काव्य विलास, 'जयसिंह प्रकाश शृंगार मंजरी, शृंगार शिरोमणि अलंकार चिन्तामणि 'काव्य विनोद, 'जुगल नखशिख 'रसचन्द्रिका आदि काव्य के उदाहरण—२४८।

अध्याय . १०

रीति युगीन वीर काव्य की प्रवृत्ति

अध्याय . ११

रीति युगीन भक्ति तथा नीति काव्य की प्रवृत्तियां

ब्रजवासी दास ग्रंथ—ब्रजविलास तथा प्रबोध चन्द्र नाटक का उदाहरण—२८३।

बोधा जीवन परिचय रचनाकाल ग्रंथ—विरहवारीश तथा इश्कनामा काव्य के उदाहरण—२८३।

रामचन्द्र रचना काल ग्रंथ—चरणचन्द्रिका काव्य का उदाहरण—२८४।

मनचित जीवन परिचय कृतियाँ—काव्य का उदाहरण—२८४।

मधुसूदन दास जीवन परिचय रचना काल ग्रंथ—रामाश्वमेध काव्य का उदाहरण—२८५।

दीनदयाल गिरि जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—अनुरागबाग दृष्टान्त तरंगिणी अन्योक्ति माला वैराग्य दिनेश अन्योक्ति कल्पद्रुम तथा बाग बहार काव्य के उदाहरण—२८५।

मनियार सिंह जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—काव्य का उदाहरण—२८६।

कृष्णदास रचना काल ग्रंथ—माधुर्य लहरी काव्य का उदाहरण—२८७।

गणेश कवि जीवन परिचय कृतियाँ—वाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश प्रद्युम्न विजय तथा हनुमत पचीसी काव्य का उदाहरण—२८७।

सम्मन कवि जन्म काल कृतियाँ काव्य के उदाहरण—२८८।

गिरधर दास कृतियाँ उदाहरण—२८८।

नवल सिंह कायस्थ जीवन परिचय कृतियाँ नवलमोचन जौहरिनतरंग रसिक रंजनी विज्ञान भास्कर ब्रजगजदीपिका शुकरम्भा संवाद कवितावली भाषासप्तशती कवि जीवन आल्हा रामायण, रुक्मिणी मंगल मूल गीता रहस्य कामना आध्यात्म रामायण रूपक रामायण नारी प्रकरण सीता स्वयंवर रामचन्द्र विलास भारतवार्तिक रामायण सुमरनी दानलीला मिथिलाखंड नाम रामायण रामायण कोष तथा आल्हा भारत काव्य का उदाहरण—२८८।

रामसहाय दास जीवन परिचय कृतियाँ—वृत्त तरंगिणी रामसतसई शृंगार सतसई ककहरा रामसप्तशतिका तथा वाणी भूषण काव्य के उदाहरण—२८९।

पजनेश जीवन परिचय कृतियाँ—मधुप्रिया नखशिख पजनेश पचीसी तथा पजनेश प्रकाश काव्य का उदाहरण—२८९।

द्विजदेव जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—शृंगार लतिका शृंगार बत्तीसी तथा शृंगार चालीसी काव्य का उदाहरण—२८९।

रीति युगीन भक्ति तथा नीति काव्य की प्रवृत्तियाँ का महत्व—२९०।

अध्याय : २२

भारतेन्दु युगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ

भारतेन्दु युगीन हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि नवजागरण प्रमुख कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—भक्ति सर्वस्व कार्तिक स्नान वर्षाविनोद

अध्याय . १२

द्विवेदी युगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियां

बाल मुकुन्द गुप्त जीवन परिचय कृतियाँ—राग मनिता काव्य का उदाहरण—३ ४।

अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध जीवन परिचय कृतियाँ—रंगिन रहस्य प्रम प्रपंच प्रम पुष्पहार उपबोधन रामाचरन प्रियप्रवास हिन्दी बाराग रसकलश आदि काव्य उदाहरण—३ ५।

राय देवीप्रसाद पूर्ण जीवन परिचय कृतियाँ—मृत्युंजय रामनी कुमार वसत वियोग आदि काव्य का उदाहरण—३ ६।

रामचरित उपाध्याय—जीवन परिचय कृतियाँ—रामचरित चिंतामणि काव्य का उदाहरण—३ ६।

गिरिधर शर्मा नौरत्न जीवन परिचय कृतियाँ—मान रचना आदि—३०७।

रूपनारायण पाडय जीवन परिचय कृतियाँ—पराग वन वैभव वन विहंगम आदि काव्य का उदाहरण—३०७।

राम नरेश त्रिपाठी—जीवन परिचय कृतियाँ—मिलन स्वप्न मानसी आदि काव्य के उदाहरण—३ ७।

मथिलीशरण गुप्त जीवन परिचय कृतियाँ—अजित अनघ साकेत विष्णु प्रिया सिद्धराज यशोधरा भारत भारती जयद्रथ वध स्वदेश पञ्चवटी आदि काव्य के उदाहरण—३ ८।

गोपाल शरण सिंह जीवन परिचय कृतियाँ—माधवी कादम्बिनी मानवी जगदालोक आदि—३११।

बद्रीनाथ भट्ट जीवन परिचय काव्य का उदाहरण—३११।

गुरुभक्त सिंह भक्त जीवन परिचय कृतियाँ—नूरजहाँ आदि काव्य का उदाहरण—३१२।

हरदयालु सिंह जीवन परिचय कृतियाँ—दत्यवंश रावण आदि—३१२।

वियोगी हरि जीवन परिचय कृतियाँ—ब्रज माधुरी सार प्रम पथिक प्रद्धाकण आदि काव्य का उदाहरण—३१२।

बलदेव प्रसाद मिश्र राजहंस—जीवन परिचय कृतियाँ—राम राज्य मानस मथन आदि काव्य का उदाहरण—३१३।

गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश जीवन परिचय कृतियाँ—तारक वध आदि—३१३।

मोहनलाल महतो वियोगी जीवन परिचय कृतियाँ—अछूत निर्माल्य एक तारा धधले चित्र तथा कल्पना आदि—३१४।

अनूप शर्मा जीवन परिचय कृतियाँ—वधनाम आदि—३१४।

द्वारिकाप्रसाद मिश्र जीवन परिचय कृतियाँ—कृष्णायन काव्य के उदाहरण—३१४।

केदारनाथ मिश्र प्रभात जीवन परिचय कृतियाँ स्वर्णोदय कैकेयी आदि—३१५।

अन्य कवि—मुरारि बाजपेयी रामचद्र शुक्ल महेशचन्द्र प्रसाद सत्याशरण कौशलेंद्र राठौर जगदम्बा प्रसाद मिश्र हितैषी जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी जी पी श्रीवास्तव विजयानद पाडय होमवती देवी उदय नारायण पाडय हृदयेश रामशंकर शुक्ल रसाल लाचाप्रसाद पाडय रामानन्द द्विवेदी समीर मुरलीधर पाण्डेय रामानुज लाल श्रीवास्तव लक्ष्मीधर बाजपेयी श्यामनारायण मिश्र मोहन लाल द्विवेदी गजपुरी ब्रज रत्नदास, शिवसागर पाण्डेय जनार्दन झा द्विज, जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द आदि—३१५।

न्विगी युगीन हिन्दी काव्य का महत्व—३१५ ।

अध्याय . १४

आधुनिक युगीन राष्ट्रीय काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक युगीन काव्य प्रवृत्तियों का आरम्भ राष्ट्रीय पृष्ठभूमि, राष्ट्रीय भावना प्रधान काव्य रचना करने वाले प्रमुख कवि बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन राधा चरण गोस्वामी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाकृष्ण दास बालमुकुन्द गुप्त तथा प्रताप नारायण मिश्र। वर्ण्य विषय भौगोलिक एकता प्राकृतिक सौन्दर्य सांस्कृतिक गौरव धार्मिक उन्नता तथा गौरवपूर्ण अतीत आदि विभिन्न कवियों के काव्य से उदाहरण—३१७।

द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय काव्य की प्रवृत्ति प्रमुख कवि श्रीधर पाठक नाथूराम शंकर शर्मा गयाप्रसाद शुक्ल सनेही मैथिलीशरण गुप्त सत्यनारायण कविरत्न ठाकुर प्रसाद शर्मा रामनरेश त्रिपाठी, गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' महावीर प्रसाद द्विवेदी अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध तथा राय देवी प्रसाद पूर्ण आदि। वर्ण्य विषय आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक और राजनैतिक अवस्था का चित्रण तथा राष्ट्रीय चेतना का जागरण, प्रमुख कवियों के काव्य के उदाहरण—३२०।

प्रसाद तथा प्रसाद के परवर्ती युग में राष्ट्रीय काव्य की प्रवृत्ति का विकास राजनैतिक पृष्ठभूमि तथा राष्ट्रीय आंदोलन राष्ट्रीय भावना प्रधान प्रमुख कवि सियारामशरण गुप्त जयशंकर प्रसाद सुभद्रा कुमारी चौहान सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला मोहनलाल द्विवेदी गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश डा० रामकुमार वर्मा गोपाल शरण सिंह नेपाली, माखन लाल चतुर्वेदी डॉ० हरिवंशराय बच्चन हरिकृष्ण प्रेमी नरेन्द्र शर्मा शिव मंगल सिंह सुमन भगवती चरण वर्मा डॉ० रांगेय राघव, शमशेर बहादुर सिंह रामेश्वर शुक्ल अंचल आरसी प्रसाद सिंह बालकृष्ण शर्मा नवीन विलोचन शास्त्री जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द उदय शंकर भट्ट तथा गया प्रसाद पांडे आदि काव्य के उदाहरण—३२२।

आधुनिक युगीन राष्ट्रीय कविता की प्रवृत्ति का महत्व—३२७।

अध्याय १५

आधुनिक युगीन छायावाद काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक युगीन छायावादी काव्य की प्रवृत्ति का आरम्भ छायावाद की परिभाषा, स्वरूप प्रेरणा और प्रभाव रामचन्द्र शुक्ल विनय मोहन शर्मा नन्द दुलारे वाजपेयी डॉ० नगेन्द्र डॉ० रामकुमार वर्मा डॉ० देवराज महादेवी सुमित्रा नन्दन पंत आदि की छायावादी विषयक धारणाएँ—३२८।

छायावाद के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद निराला पंत प्रमुख काव्य ग्रन्थ वर्ण्य विषय छायावादी तत्व आंसू लहर, झरना तथा कामायनी आदि में काव्य तत्व पर काव्य के उदाहरण—३ १।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला परिचय प्रमुख काव्य ग्रन्थ—परिमल अणिमा वीथिका तुलसीदास अनामिका बेला नये पत्ते कुकुरमुत्ता तथा अर्चना प्रमुख काव्य तत्व वर्ण्य विषय विशेषताएँ एवं काव्य के उदाहरण—३३०।

सुमित्रानन्दन पन्त परिचय प्रमुख काव्य ग्रन्थ—उच्छ्वास पल्लव वीणा ग्रन्थि गुंजन युगान्त युगवाणी ग्राम्या स्वर्ण किरण स्वर्णधूलि युगपथ उत्तरा अमिता वाणी कला और बूढ़ा चाँद तथा लोकायतन आदि वर्ण्य विषय, प्रमुख तत्व विशेषताएँ तथा काव्य के उदाहरण— ३।

महादेवी वर्मा जीवन परिचय प्रमुख काव्य ग्रन्थ नीहार रश्मि नीरजा सान्ध्य गीत दीपशिखा तथा यामा आदि छायावादी विचार विस्तार काव्य के विषय प्रमुख तत्व विशेषताएँ एवं काव्य के उदाहरण— ३।

छायावादी काव्य प्रवृत्ति के विकास में योगदान देने वाले अन्य कवि डॉ० राम कुमार वर्मा नरेन्द्र शर्मा उदयशंकर भट्ट गोपाल शरण सिंह नवीन बच्चन तथा भगवती चरण वर्मा आदि छायावादी काव्य की प्रवृत्ति का महत्व— ३४।

अध्याय . १६

आधुनिक युगीन प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक युग में प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्ति का आरम्भ वैचारिक पृष्ठभूमि प्रगतिवाद विषयक धारणा पर सुमित्रानन्दन पन्त प्रभाकर शिवदान सिंह चौहान आदि के विचार—३४। ।

सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य से प्रगतिवाद के उदाहरण युगान्त युगवाणी ग्राम्या स्वर्णधूलि स्वर्णकिरण तथा अमिता में प्रगतिवादी काव्य तत्वों का विकास—३४६।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के काव्य में प्रगतिवादी तत्व कुकुरमुत्ता में यथार्थ चित्रण निराला का यथार्थात्मक दृष्टिकोण और निराशावादी काव्य के उदाहरण—३४७।

भगवतीचरण वर्मा के काव्य में प्रगतिवादी तत्व भैंसागाड़ी शीर्षक कविता से उदाहरण—३४८।

डा० रांगेय राघव परिचय तथा काव्य का उदाहरण—३४९।

नरेन्द्र शर्मा के काव्य में प्रगतिवादी तत्व प्रवासी के गीत शीर्षक काव्य संग्रह से उदाहरण— ३५०।

रामेश्वर शुक्ल अंचल के काव्य में प्रगतिवादी तत्व तथा काव्य के उदाहरण—३५१।

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में प्रगतिवादी तत्व हिमालय के आसू धूप और धुआँ नील कुसुम रसवन्ती के फूल रेणुका नीम के पत्ते तथा दिल्ली आदि काव्य संग्रहों में प्रगतिवादी तत्व तथा काव्य के उदाहरण—३५१।

डा० शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य में प्रगतिवादी तत्व पर आँखें नहीं भरी आदि संग्रहों से काव्य के उदाहरण—३५२।

अध्याय . १७

आधुनिक युगीन प्रयोगवादी काव्य की प्रवृत्ति

अध्याय : १८

आधुनिक युगीन कविता की अन्य प्रवृत्तियाँ

हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास

खंड १ . पद्य भाग

अध्याय १

आदि युगीन अपभ्रंश काव्य की प्रवृत्ति

हिंदी साहित्य के इतिहास के आदि युग में अपभ्रंश काव्य की प्रवृत्ति का विकास हुआ। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अपभ्रंश से सम्बन्धित उल्लेख संस्कृत साहित्य में उपलब्ध होते हैं। प्राकृत भाषा का परवर्ती रूप अपभ्रंश ही था। सर्वप्रथम द्वितीय शताब्दी ईस्वी पूर्व में पतंजलि ने अपभ्रंश का प्रयोग भाषा के सन्दर्भ में किया था। सामान्य अर्थ के अनुसार संस्कृत के विकृत रूप को भी अपभ्रंश कहते हैं। तीसरी शताब्दी में आचार्य भरत ने भी लगभग इसी सन्दर्भ में अपभ्रंश का उल्लेख किया है। छठी शताब्दी में आचार्य भामह ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ काव्यालंकार में काव्य के भेदों का वर्णन करते हुए उसके संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश रूपों का उल्लेख किया है। आगे चलकर आठवीं शताब्दी के पूर्व आचार्य दण्डी ने इन तीनों काव्य भेदों के अतिरिक्त मिश्रित काव्य और जोड़ दिया परन्तु अपभ्रंश को उन्होंने भी मान्यता दी। आठवीं शताब्दी में उद्योतन ने भी अपभ्रंश भाषा के सामान्य प्रयोग तथा उसमें संस्कृत प्राकृत के सम्मिश्रित रूप का वर्णन किया है। नवीं शताब्दी में आचार्य रुद्रट ने अपभ्रंश का उल्लेख किया है। राजशेखर ने भी दसवीं शताब्दी में विविध भाषाओं के सन्दर्भ में अपभ्रंश की चर्चा की है। इसके पश्चात अन्य अनेक विद्वानों ने भी अपभ्रंश के सम्बन्ध में विविध संकेत प्रस्तुत किये हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि लगभग दूसरी शताब्दी से विकृत भाषा के रूप में सर्वप्रथम अपभ्रंश का आरम्भ हुआ था और छठी शताब्दी तक वह साहित्यिक भाषा बन चुका था। लगभग नवीं शताब्दी में उसका व्यापक प्रसार हो चुका था और इसके पश्चात उसे साहित्यिक भाषा का पूर्ण गौरव प्राप्त हुआ। बारहवीं शताब्दी में उसका साहित्यिक ह्रास आरम्भ हुआ और फिर क्रमशः इसका लोप होने लगा। इस प्रकार से अपभ्रंश का एक भाषा के रूप में क्रमिक विकास परिलक्षित होता है। पहले वह आभीर आदि की भाषा थी। उसके पश्चात उसने एक लोक भाषा का रूप लिया। फिर वह शिष्टजन की भाषा बनी और अन्ततः उसे साहित्यिक भाषा का गौरव प्राप्त हुआ। इस प्रकार बाद में अपभ्रंश के अनेक रूप

विकसित हुए और इनके व्याकरण का भी निर्माण हुआ। इन्हीं भाषाओं में भी अपभ्रंश का विकास स्पष्ट लक्षित किया जा सकता है। अपभ्रंश का ... से सम्बन्ध है इनमें सर्वप्रथम उपनागर अपभ्रंश का उल्लेख किया जा सकता है। अपभ्रंश के इस रूप को नागर और ग्राम्य अपभ्रंश का मिश्रित रूप माना जाता है। इस अपभ्रंश के विषय में मार्कण्डेय तथा नमिसाधु आदि वैयाकरणों ने उल्लेख किया है। अपभ्रंश का यह रूप गुजरात और सिंध के पूर्व प्रदेश में प्रचलित था। इसके अतिरिक्त कैकय अपभ्रंश दक्षिणी कश्मीर पश्चिमी पंजाब तथा कैकय प्रदेश में प्रचलित थी। जिस प्रकार से उपनागर अपभ्रंश से राजस्थानी का विकास माना जाता है उसी प्रकार से कैकय अपभ्रंश से लँहदी भाषा का विकास माना जाता है। अपभ्रंश का तीसरा भेद नागर अपभ्रंश है जिसका क्षेत्र गुजरात और पश्चिमी राजस्थान था। इस अपभ्रंश रूप की चर्चा भरत मुनि ने आभीर आदि भाषा के रूप में की थी। मार्कण्डेय ने भी इसका उल्लेख किया था। हेमचन्द्र ने भी इसी को अपभ्रंश का आदर्श रूप माना था। गुजराती भाषा का विकास भी अपभ्रंश के इसी रूप से माना जाता है। अपभ्रंश के ... में जितना साहित्य उपलब्ध है उसका अधिकांश उसके इसी भाषा रूप में है। अपभ्रंश का चौथा रूप ब्राचड अपभ्रंश है जिससे सिंधी भाषा का आरम्भ माना जाता है। इसके विषय में विस्तृत सामग्री उपलब्ध नहीं है और न ही इसमें कोई विशेष साहित्य लिखा गया है। इस प्रकार से अपभ्रंश की भाषा और साहित्य की काल सीमा लगभग एक सहस्र वर्षों तक सिद्ध होती है यद्यपि इसका प्रसार उसके बाद भी अनेक शताब्दियों तक मिलता है।

अपभ्रंश में साहित्य रचना का आरम्भ—

साहित्यिक भाषा के रूप में अपभ्रंश की समृद्धि के पश्चात् इसमें साहित्य रचना आरम्भ हुई। राज दरबारों में भी उसे मान्यता प्राप्त हुई। अपभ्रंश भाषा के अन्तर्गत जो साहित्यिक विकास हुआ उसके स्फुट संकेत विविध व्याकरण ग्रन्थों में मिलते हैं जिनमें अपभ्रंश के विभिन्न प्रसंगानुसार उद्धरण प्रस्तुत किये गये हैं। इसका ... शताब्दी के पश्चात् चतुर्मुख द्रोण स्वयंभू पुष्पदन्त तथा योगीन्द्र आदि कवियों के ग्रन्थ इस भाषा में उपलब्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त अपभ्रंश दोहों की एक पृथक् परम्परा मिलती है। इस परम्परा में जिन कवियों का योगदान है यद्यपि उनके विषय में विशेष विवरण नहीं ज्ञात है परन्तु फिर भी भाषा की दृष्टि से इसका महत्व बहुत है। उत्तरी भारत के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में विविध विचारधाराओं के समर्थकों ने अपभ्रंश में मुक्तक काव्य सुभाषित खण्ड काव्य महाकाव्य चम्पू काव्य तथा विविध कथाओं की सृष्टि की। स्फुट रूप से प्राकृत पैंगल प्रबन्ध चिंतामणि प्रबन्ध कोश तथा पुरातन प्रबन्ध संग्रह आदि में अपभ्रंश के अनेक काव्य रूप उपलब्ध होते हैं। साधन माला सेकोद्देश्य टीका तथा ज्ञानार्णव आदि में भी वज्रयान से सम्बन्धित सिद्धान्त मिलते हैं।

प्रमुख कवि तथा काव्य—

योगीन्द्र लिखित परमात्म प्रकाश और योगसार, मुनि रामसिंह लिखित 'पाहुड दोहा' तथा सुप्रभाचार्य लिखित वैराग्य सार एवं महानन्दि आदि ग्रन्थों में भी अपभ्रंश की विविध शैलियों की उपलब्धि होती है। दोहा छंद के रूप में भी अपभ्रंश का विस्तृत साहित्य उपलब्ध होता है। देवसेन लिखित सावयधम्म दोहा, जिनदत्तसूरि लिखित चर्चरि, उपदेश रसायन रास तथा काल स्वरूप एवं महेश्वर सूरि लिखित 'संजम मंजरी' आदि कृतियाँ इस परम्परा में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

अपभ्रंश का प्रथम कवि—

उपर्युक्त कवियों में योगीन्द्र को अपभ्रंश का प्रथम कवि माना जाता है। इनका वास्तविक नाम जोइन्दु है। इनके काव्य में मुख्यतः रहस्यवादी विचारधारा का परिचय मिलता है। इनके जीवन से सम्बन्धित कोई विशेष उल्लेख इनकी किसी कृति में नहीं मिलता। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह उल्लेख मिलता है कि इन्हें भट्टारक की उपाधि मिली हुई थी। योगीन्द्र का रचना काल छठी शताब्दी ईस्वी माना जाता है। जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है आध्यात्म सन्दोह, सुभाषित तन्त्र, तत्वार्थ टीका, अमृताशीति, निजात्माष्टक, परमात्म प्रकाश, योगसार और श्रावकाचार आदि उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं जिनमें अपभ्रंश भाषा और साहित्य के सन्दर्भ में अंतिम तीन का ही विशेष महत्व है। इनमें से परमात्म प्रकाश योगीन्द्र की सर्वप्रथम रचना है जिसमें कवि के आध्यात्मिक विचार संगृहीत हैं। इस कृति में ३३० दोहे हैं जिनमें विविध आध्यात्मिक विषयों का निरूपण मिलता है। योगसार में कवि ने १०८ दोहे लिखे हैं और उनका विषय भी आध्यात्मिक है। श्रावकाचार में कवि ने सामान्य उद्देश्य प्रस्तुत किये हैं। योगीन्द्र के लिखे हुए इन तीनों काव्यों में से कुछ पंक्तियाँ नीचे उदाहरणार्थ प्रस्तुत की जा रही हैं

अप्पा सम्मणु बहुमु ण वि ण वि पत्तउ ण वि सग्गु।
पुरिसु णउ सउ इत्थि ण वि णाणिउ मुणइ असग्गु॥
जा णिसि सयलहं देहियहं जोग्गिउ तहि जग्गेइ।
जहिं पुण जग्गइ सयलु जगु सा णिसि मणिवि सुवेइ॥ (परमात्म प्रकाश)
आउ गलइ णवि मणु गलइ णवि आसा हु गलेइ।
मोहु फुरइ णवि अप्प हिउ इम संसार भमेइ॥
सो सिउ संकरु विण्हु सो सो रुद्द वि सो बुद्ध।
सो जिणु ईसरु बंभु सो सो अणंतु सो सिद्धु॥ (योगसार)
भोगहं करहिं पमाणु जिय इन्दिय म करि स दप्प।
हुंति ण भल्ला पोसिया दुद्धें काला सप्प॥
दुल्लह लहिवि मणुयत्तणउ भायन परिउ जेण।
इंधण कज्जें कप्प यरु मूलहो खण्डिउ तेण॥ (श्रावकाचार)

योगींद्र का परवर्ती अपभ्रंश साहित्य—

योगीन्द्र के पश्चात् अपभ्रंश साहित्य के अन्तर्गत काण्ह तथा सरह आदि सिद्ध कवियों के नाम उल्लेखनीय हैं। इन दोनों कवियों की स्फुट रचनाओं का संग्रह 'दोहा कोश' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। कुछ विद्वानों ने इन रचनाओं को पूर्वी अपभ्रंश में निर्मित माना है। सम्भवतः इस मान्यता का कारण यह है कि काण्ह को कतिपय प्रमाणों के आधार पर पूर्वी बंगाल का सिद्ध किया गया है। काण्ह का समय [illegible] ई० से लेकर १२ [illegible] तक अनुमानित किया जाता है। काण्ह के अतिरिक्त सरह का काल आठवीं शताब्दी के लगभग अथवा शताब्दी तक अनुमानित किया जाता है। इन दो शताब्दियों के मध्य जो अन्य सिद्ध कवि हुए उनमें शबरपा, भुसुकपा, लुईपा, विरूपा, दारिकपा, डोम्बिपा, गुडरीपा, कुकुरीपा, कमरिपा, तारकपा, टेंगणपा, महीपा, भादेपा, धामिपा, तिलोपा तथा शांतिपा आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कुल मिलाकर ८४ सिद्धों का उल्लेख मिलता है। सिद्धों ने जो काव्य रचना की उसके कुछ प्रतिनिधि उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं :

नाडि नअ रे ठिअ खाना मुम्मुणि रे वक्काला।
घण किसिट्ठा वज्जइ करुणवि अई न रोला॥
तहि धन खज्ज गाढ़ मल णा पिज्जिअई।
हन कन्नित्त पणिअइ दुन्दुर वज्जिअई॥
चउमम कस्तुरि सिहना कप्पुर नाइअई।
मानइ इंधन सनील तहि भर खाइअई॥
पेंखर खट करत सुद्धामुद्ध ण मानिअइ।
निर मुह अग चढाविअइ जस नावि मणिअइ।
मनअज कुन्दुर चट्टु डिंडिम तहि णा वज्जिअइ॥ (काण्ह)
घरेत पिअन्त सुरहि रमन्त णित पुण्ण चक्काविं भरन्ते।
अइस धम्म सिज्झइ परलोअह णाह पाए दलीउ भअलोअह॥

जहि मण पवण ण सचरइ रवि ससि णाह पवेस।
तहि बढ़ ! चित विसाम करु सरहे कहिअ उएस॥
आइ ण अंत ण मज्झ णउ णउ भव णउ णिव्वाण।
एहु सो परम महासुह णउ पर णउ अप्पाण॥

गअ सविति म करह रे ध या भावाभाव सुगति रे बंधा।
णिअ मण मुणहु रे णिउण जोई जिम जल,जलहि मिलन्ते सोई। (सरह)
काआ तरवर पंच बिडाल चंचल चीए पइठो काल।
दिढ़ करिअ महासुह परिमाण लूइ भणइ गुरु पुच्छिअ जाण। (लुइपा)
सहज थिर करि वारुणी साध जे अजरामर होइ दिट काध।
दशमि दुआरत चि ह देखइआ आइल गराहक अपणे वहिआ।

चउशठि घडिए पट पसारा पइठन गराहक नाहि निसारा। (विरुपा)
एक्क ण किज्जइ मन्त्र ण तन्त णिअ घरणी लइ केलि करन्त।
णिअ घर घरिणी जाव ण मज्जइ, तावकि पचवण विरहिज्जइ।
जिमि लोण विलज्जइ पाणिएहि तिमि घरिणी लइ चित्त।
समरस जइ तक्खणे जइ पुण ते सम नित्त॥ (कण्हपा)
बेंग ससार बाढहिल जाअ दुहिल दूध कि बेंटे समाअ।
बलद बिआएल गविआ बाँझ, पिटा दुहिए एतिना साँझ।
जो सो बुज्झी सो धनि बुधि जो सो चोर सोइ साधी।
निते निते षिआला षिहे षम जूझअ ढेण्ढणपाएर गान विरले बुझअ। (तांतिपा)
पुत्रस्यापि गणाया नवत्वा गुरु महति।
तस्मादम धिया पुंसा तायस्नान तु निष्फलम॥
धर्मो यदि भवत स्नानात केवर्त्तानां कृतार्थता।
नक्तं दिव प्रविष्टानो मत्स्यादीना तु का कथा॥ (कणरीपा)

कवि सयम्भु अथवा स्वयम्भु—

अपभ्रंश साहित्य के अन्तर्गत उपयुक्त कवियों के अतिरिक्त सयम्भु अथवा स्वयम्भू का भी विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है। वस्तुतः इस नाम से अभी तक केवल एक कवि को समझा जाता रहा है जबकि अब यह सिद्ध किया जा चुका है कि चतुर्मुख सयम्भुपिता तथा त्रिभुवन सयम्भु पुत्र के नाम से ये दो पृथक व्यक्ति रहे हैं। इन दोनों को एक ही कवि समझने का भ्रम सम्भवतः इस कारण से हुआ क्योंकि इनकी काव्य कृतियों में मुख्यतः स्वयम्भु अथवा स्वयम्भ मात्र ही मिलता है, चतुर्मुख और त्रिभुवन नहीं लिखे गए हैं। एक मान्यता यह भी है कि चतुर्मुख स्वयम्भु द्वारा आरम्भ तीन प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थों को त्रिभुवन स्वयम्भु द्वारा कुछ अंश और जोड़कर सम्पूर्णता प्रदान की गयी। इन दोनों कवियों के विषय में अनुमान से कुछ तथ्य एकत्रित किये जाते हैं क्योंकि उनके निवास स्थान आदि का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इनकी कृतियों में सर्वप्रथम 'पउमचरिउ' अथवा 'पद्मचरित' या रामायण का नाम सर्व प्रथम उल्लेखनीय है। इस रचना में बारह हजार श्लोक हैं। इसकी कई प्रतियाँ उपलब्ध हैं। यह काव्य मुख्यतः दोहा छन्द में लिखा गया है। इसमें प्रकृति वर्णन सामाजिक चित्रण रूप वर्णन वस्तु वर्णन तथा धार्मिक भावनाओं के प्रभावशाली चित्र उपलब्ध होते हैं। इनकी दूसरी कृति रिट्ठणेमिचरिउ हरिवंश पुराण कहा जाता है। इसमें भी अठारह हजार श्लोक बताये जाते हैं। कहा जाता है कि इसमें ग्रन्थ का कुछ अंश असमाप्त ही भी मिलता है। पूर्व ग्रन्थ की भाँति यह ग्रन्थ भी अप्रकाशित है। इन कवियों का तीसरा ग्रन्थ पंचमीचरिउ है जिसकी कोई प्रति उपलब्ध नहीं है। पउम चरिउ तथा रिट्ठणेमिचरिउ में से एक एक काव्यांश उदाहरण के लिए यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

पेक्खु पेक्खु आवतउ साहण गन ग जा म ग्गय वाहण ।
पक्ख पेक्ख हिंगत तुरंगम ण्ह्वने विउन मर्यादि गम ।
पेक्ख पेक्ख चिंधइ धूयाइ रह् तासे महि ग ग गा ।
पक्ख पेक्ख वडढिय असिवतइ धार्णारय पाविरय पत्तउ ।
पक्ख पेक्ख व जतइ तूरइ नाना वि तिाय मभारउ ।
गल गज्जत धणहु टकारउ गुहु विमा र पारादृवारउ ।
पेक्खु पक्ख सय सख रसता णाइ ग तुक्खउ गयण ग मा ।
पक्ख पेक्ख पच्चनत उ णरवइ, णहु चारहुग म न गणि णावइ ।
दसउर णाहु णिहालई जावहि सयनु वि सणण परा उ तावहि । (पउमचरिउ)
तहि अवसरि सरसइ धीरवइ करि कव्वु दीण म विमन मइ ।
इन्देण समप्पिउ वायरण रमु भरह वाम वित्थरण ।
पिंगलेण छन्द पय पत्थारु भम्मह दण्डिणिहि अलंकारु ।
बाणण समप्पिउ घण घणउ त अक्खर डवर पणघणउ ।
हरिसेणि पाणिउ णित्तणउ अवरेहि मि कइहि कइत्तणउ । (रिट्ठणेमिचरिउ)

उज्जोयण सूरि अथवा उद्योतन सूरि—

अपभ्रंश काव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत उज्जोयण सूरि अथवा उद्योतन सूरि का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह जैन श्वेताम्बर साम्प्रदायिक कवि थे। आठवीं शताब्दी में लिखी गयी इनकी कृति कुवलयमाला शीर्षक से प्रसिद्ध है। इनका भी एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तहे सा वि वरउ कि गुण जणहोन्ति वस्सइ विआर ।
खना घई सइन्ति बहु विआर भणि भरिअन्तउत्ति । (स वहा)
महु पत्तिय सु एव मन्न भणतस्स मसय मोत ।
मा मा का हिंसि मेत्ति उग्ग भुजंगेण व खनेण ।।
जार जाअहा दुज्जणहो दुठठ तुरगमहो ज्जि ।
जेण ण पुरउ णउ मग्गउ हू तीरइ गत ज्जि ।। (कुवलयमाला)

पुप्फदंत अथवा पुष्पदंत—

अपभ्रंश काव्य प्रवृत्ति के अन्तर्गत दसवीं शताब्दी में आविर्भूत पुप्फदंत अथवा पुष्पदंत का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। काव्य कौशल तथा भावाभिव्यंजना की दृष्टि से पुष्पदंत की गणना अपभ्रंश के महत्वपूर्ण कवियों में की जाती है। वे दिगम्बर जैन साम्प्रदायिक कवि थे। कतिपय विद्वानों का अनुमान है कि शिव महिम्नस्तोत्र की रचना भी इन्होंने ही की थी। इनकी लिखी हुई प्रसिद्ध कृतियों में तिसट्ठि महापुरिस गुणालंकार णायकुमारचरिउ तथा जसहरचरिउ आदि हैं। इनमें से प्रथम बीस सहस्र श्लोकों का एक ग्रन्थ है। आदि और उत्तर पुराण के रूप में इनका विभाजन करके कवि ने उत्तर खण्ड में पद्म पुराण तथा हरिवंश पुराण

को भी समाविष्ट किया है। इनमें चौबीसों तीर्थंकरों का भी वर्णन किया गया है। जिस प्रकार से महाभारत के विषय क्षेत्र की विशालता और महत्व का प्रतिपादन करते हुए यह कहा जाता है कि जो कुछ भी उसमें है वह सर्वत्र है और जो उसमें नहीं है वह कहीं नहीं है इस ग्रन्थ के विषय में भी कवि ने यही गर्वोक्ति की है। कवि की दूसरी कृति णायकुमारचरिउ अथवा नागकुमार चरित्र एक खंड काव्य है। इसी प्रकार से तीसरी कृति जसहरचरिउ अथवा यशोधर चरित्र भी एक खंड काव्य है। इसकी कथा का धार्मिक सन्दर्भ में भी महत्व है। इन तीनों काव्यों में से एक एक अंश उदाहरणार्थ यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

रज्जहु कारणि पिउ मारिज्जइ वंधवहु मी सघारिज्जइ।
जिहिं अलि गयो सघारउ तिहि रज्जण लोउ त वारहु।
भड मामन्त मति क्य भायउ, चिंतिज्जतउ सत्तु परायउ।
तहुल पमयहु कारणि राणा णरइ पडंति काइ अवियाणा।
जन्मउ रज्जु जि दुक्ख गुरुक्कउ जइ सुह कि ताए मुक्कउ॥

(तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकार)

अतेउरु अलउरु हणइ ग्रय बालहो आय हो किं कुणइ।
सणणाहु कय तहा कि करइ छत्त छायहु कि उवयरइ।
णउ कहिं की मरण दिण उव्वरइ जमराणिलु सामाणिलु धरइ।
मुय राय पट्ट बध बमइ कि आउ णिबंधणु णउल्हसइ।
ण रहहिं रहिजन्त वह कि मणुमह लग्गउ रज्जगहु।
हाइवि जाइवि सहसत्ति किह रायतणु सहारउ जिह॥ (नागकुमार चरित्र)
वाहिरन्त भिन्न मुअ त लल्त त पगु त कुन्ट बहिरंध त मट।
त काण काणीण घणहीण त मीण हुरीण बल खीण।
णिरराम णिद्धाम णिद्धाम णिगुणाम णित य णिप्पाण चडाल त पाण।
त डाव कल्लाल मच्छधिणीवाल दाणाल ते कोल ते सीह सददूल।
त सिंगि विपराल त णहर पहराल त पक्खि विछाल।
त सप्प रतवड ममासिणो मच्छ छिंदणइ रुधणई बधणई बवणई।
लुचणई उचणई कुचणई तडणई कुट्टणइ घट्टणाई वट्टणाई।
पउलणई पाचणई हूणणई चालणई तलणाई ज्वलणाई मलणाई गिलणाई।
तिरगगु णरगगु मणुगगु रुजगु दुक्खाइ भुजनि सग्ग कह जति।
पत्ता पगु णागह जहि हिमन्त पग्म धम्मु उपज्जइ।
ता बहुगुणि मन्निवि मुणि पारद्धिउ पण विज्जइ॥ (यशोधर चरित्र)

कवि धवल—

अपभ्रंश काव्य की आदि युगीन उक्त परम्परा में कवि धवल का नाम भी उल्लेखनीय है। इनके लिखे हुए ग्रन्थ हरिवंश पुराण में १८ सहस्र श्लोक बतलाये जाते

है। ग्रंथ की ११२ संधियां म स प्रत्येक के अंतिम छन्द म कवि के नाम की मात्रा भी मिलती है। इस रचना में कवि ने अपने समकालीन तथा पूर्ववर्ती अनेक कवियों का उल्लेख भी किया है। धवल के रचना काल के विषय में विद्वानों का अनुमान है कि वह दसवीं शताब्दी के लगभग रहा होगा। धवल के काव्य का एक उदाहरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है

सा याण ैहणाल णमि ती वण्ह वमरग्गमा ।
महपुरिसतिसटिठ्न्न हरिवमगराज जयउ ॥
हरिपउन्वाण वहा चउमुह वामनि भासिय जइया ।
तह विरयमि नार्यपिया जण ण णाम न्मण पउर ॥
जइ गोत्तमेण भणिय सणिय रायणपुत्तिय जइया ।
जह जिणमणण वय तह विरयमि किपि उन्नम ॥
सुवउ भवियाणन्द पिगुणचन्दरा यमन्वजणमूल ।
धणणय धवलण वय हरिवस ममाहण पन्ज ॥ (हरिवंश पुराण)

कणयामर अथवा कनकामर—

कणयामर का उल्लेख कनकामार के नाम से भी मिलता है। यह दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के अनुगमन कर्त्ता थे। ग्यारहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों म इन्होंने एक काव्य ग्रन्थ की रचना की थी जिसका शीर्षक करकण्डचरिउ है। इस प्रबन्ध काव्य म लेखक ने दस संधियां के अन्तर्गत राजकुमार करकण्ड की कथा प्रस्तुत की है। इस कथा म रोचकता तो विद्यमान है ही साथ ही साथ जैन धर्म के संदेश म भी इसका महत्व है। इस काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सो बम्हण परया रहा पत्तण समार ममाण्डि तें धणण।
दुन्भजिवि अन्वहिं दुप्पवम उप्पणउ कुमि वनिग देम ॥
सो काणवि कम्म णिम्मआ वि नमहिवणिवरिवम हुओ वि।
पर पुरिसु रमन्तिण णायन्त ससार सहणणव दुहइ पत्त।
एत्यवि भरन्पुरि तामनिति जायतु ण सुरवइ नइइ तत्ति।
वसुमित्त ताह वणि अत्थि साह सौ णायन्त धरिणिए सणाह।
एक्कहिं िणि मुहएं रमनमा हुइ धूयन जायउ तम्मि ताह।
पहिनारी णाम धणमई वि पुण दुन्जा णाम घणसिरी वि।
घत्ता णानदणयरि धणदत्त वणि धणमित्ता महिणि तस्स सुयउ।
धणयान णाउ वदियसिरन धणवहत्तु पन्भहि हुयउ ॥ (करकण्डुचरिउ)

मुनि रामसिंह—

दसवीं शताब्दी म ही अपभ्रंश कवि मुनि रामसिंह का उल्लेख मिलता है। इनकी लिखी हुई एक प्रसिद्ध कृति पाहुड दोहा सिद्ध की जाती है। इस कृति के संबंध म साहित्य के मान्य विद्वानों म पारस्परिक विवाद है। कुछ विद्वानों का यह अनुमान है

कि पाहुड दोहा शीर्षक कृति की रचना अपभ्रंश कवि योगीन्द्र ने की थी जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। किन्तु अनेक खोज सूत्रों के आधार पर अब यह सिद्ध किया गया है कि इसके वास्तविक रचयिता मुनि रामसिंह ही थे। इस काव्य ग्रंथ में २२२ छन्द और दोहा के अन्तर्गत कवि ने योग और अध्यात्म के वास्तविक स्वरूप का निरूपण किया। भक्ति त्याग बलिदान तथा तप आदि के विषय में भी इसमें आत्मा और पवित्रता पर बल दिया गया है। इसका एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

वासु समाहि करउ को अंचउं।
छोपु अछोपु भणिवि को वंचउ।
हल सहि कलहु केण सम्माणउ।
जहिं जहिं जोवउ तहिं अप्पाणउ। (पाहुड दोहा)

धण्वाल अथवा धनपाल—

अपभ्रंश काव्य परम्परा में धण्वाल अथवा धनपाल नाम के तीन कवियों का उल्लेख मिलता है। इनमें से जो प्रथम धनपाल हैं उनका समय दसवीं शताब्दी माना जाता है। इनकी एक कृति भविसयत्त कथा नामक से उपलब्ध होती है। ये प्रथम धनपाल कवि दिगम्बर जैन सम्प्रदायिक थे। दूसरे धनपाल की लिखी हुई कृति पाइयलच्छीनाममाला शीर्षक में बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त तीसरे धनपाल का समय इन दोनों से भिन्न लगभग दो सौ वर्षों बाद अनुमानित किया जाता है। इनकी लिखी हुई कोई अपभ्रंश कृति उपलब्ध नहीं होता। भविसयत्त कथा में एक काव्यांश उदाहरणार्थ यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

पुरिसिं पुरिसिंदउ पालिव्वउ परधणु परयत्त णउ लिव्वउ।
तं धणु जं अविणासियधम्मं जं सुपुरिसहिं भुंजिय सुखम्मं।
तं कत्तु परिओसियगत्तउ जं मुणिपाणिगणहणि विरत्तउ।
णियमणि जण मउ उप्पज्जइ मरणंति विण कम्मु तं किज्जइ।
अण्णु वि मणमि पुत्त परमत्थें जंपवि णाहि परिपुण्ण महत्थें।
तरुणि तरल जोवण मणि भाविउ धम्मम्माण दाणगुणभाविउ।
तहिंमि कालि अम्हहिं मुसरिज्जहिं णवर वार मुच्छगु णिज्जहिं।
परधणु पायधूलि माणिज्जहि परयत्त मण मयउ गणिज्जहि।
जणिज्जहिं जणणयणाणंदणु जिणवर निरावल चरिज्जहि वंदणु।
घत्ता जिणधम्मगुणु अममअमिन गुण मिल्लउ समणगमणु।
रक्खिउ जिणसासणेवरहिं निव्विवि आवइ अनुदिणु॥ (भविसयत्त कथा)

देवसेन जैन—

दसवीं शताब्दी में ही अपभ्रंश काव्य परम्परा में एक अन्य कवि भी हुए जो देवसेन जैन के नाम से उल्लिखित किये जाते हैं। इनकी लिखी दो कृतियों का उल्लेख मिलता है जिनके शीर्षक नयचक्र तथा सावयधम्म दोहा हैं। देवसेन जैन ने अपने

का य म मुख्य रूप से नीति गार आध्यात्म तथा सदाचार आदि की महिमा का वर्णन करते हुए आध्यात्म प्रधान विषयो की विवेचना की है। इसका एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

दुज्जणु सुहिउ होउ जगि सुयणु पयासिय जेण ।
अमिउ विसें वासरु तमिण जिम मरगउ कच्चेण ॥
छिलउ हाहि म इन्दियहैं पचहं विण्णि णिवारि ।
इक्क णिवारहिं जीहडी अण्ण पराई णारि ॥ (सावयधम्मदोहा)

कवि धाहिल --

अपभ्रंश कवि धाहिल की एक रचना पउमसिरिचरिउ अथवा पद्मश्री चरित्र श्रावक से उल्लिखित की जाती है। इनका रचना काल भी लगभग इसी के आसपास ही अनुमानित किया जाता है। इस काव्य का एक अंश नीचे उदाहरणार्थ प्रस्तुत है

चिंतइ कुमारु दुस्सील एह कन्नस मह मित्र नाह ।
अइविरुहउ निम्मल कुल पसूय दुच्चारिणि कह ण (य) म (ग) ग्घय ।
उम्मग्ग लग्ग हय (१) दुट्ठ सील उद्दाम विसमिसय कामसील ।
सच्छन्द अणज्ज निराणवय (१) अनाणिय मोहिय विसयमय ।
न गणइ निय कुलु मइनिज्जत न गणइ सील रयण भजंत ।
न गणइ माइ वप्पु स सहोयर न गणइ सासुय ससुरउ देयर ।
न गणइ सयण वग्गु सुहि परियण न गणइ इह परलोय भयावण ।
न गणइ मरण लज्ज भउ मेल्लइ करइ अकज्ज ... ।(पउमसिरिचरिउ)

कवि नयनंदि--

अपभ्रंश काव्य की इस परम्परा म आगामी नाम नयनंदि कवि का है। ये दिगम्बर जैन साम्प्रदायिक कवि थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ आराधना शीर्षक से उपलब्ध होता है। यह ग्रंथ दो भागो म उपलब्ध है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है

महापइउ तस्स माणिक्कणंदी भुयणप्पहाऊ इमोणामछंदी ।
घत्ता पढम सीस तहो जाउ जगविक्खायउ मुणि णयणंदि अणिंदिउ ।
चरिउ सुदंसण णाहहो, तेण अवाहहो विरइउ बुह अहिणंदिउ ।
आरामगाम पुर वरणिवेसे सुपसिद्ध अवंतीणाम देस ।
सुरवइ पुरिव विवुहयणइट्ठ तहिं अत्थि धारणयरी गरिट्ठ ।
रणउद्भर अरिवर सेलवज्ज रिद्धि देवासुर जणि चउज्ज (१)
तिहुवण णारायण सिरिणिकेउ तहिंणरवर पुंगमु भायदेउ ।
मणिगण पह दूसियरविगभत्थि तहिं जिणहरु पउविहारुअत्थि ।
णिवविक्कम कालहो ववगएसु एयारहसवच्छर सएसु ।

तहि केवलि चरिउ अमच्छरेण णायणदियविरइउ वच्छरेण ।
जो पढइ सुणइ भावइ लिहेइ, सो सासय सुह अइरेंलहइ ॥ (आराधना)

कवि वरदत्त—

आदि युगीन अपभ्रंश काव्य परम्परा में वरदत्त का नाम भी उल्लिखित किया जाता है। इनके लिखे हुए एक ग्रन्थ का परिचय मिलता है जिसका शीर्षक 'वरसामि चरिउ' है। इस ग्रन्थ के रचना काल के विषय में कोई तथ्य उपलब्ध नहीं है। कुछ स्थलों पर इस कृति की हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं। इस ग्रन्थ का निम्न काव्यांश उदाहरणार्थ प्रस्तुत है

अहो जण निसुणि (णि) ज्जउ कन्न धरिज्जउ (हु) वइरसामि मुणिवावरिउ
साहउ सु मणाहरु भवियह मणहरु जि जिणण्यणु समुद्धरिउ ।
तवननामि पुरवरु पहाण अत्थत्य भरहि वरगुणनिहाणु ।
जिण भवणिहि सदह किउ पवित्त नउनविहार मंडिउ पवित्तु ॥ (वरसामिचरिउ)

हेमचन्द्र—

ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में इस काव्य परम्परा के अन्तर्गत हेमचन्द्र का उल्लेख भी मिलता है। इनकी मुख्य देन व्याकरण शास्त्र के क्षेत्र में है। इनका लिखा हुआ 'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन' नामक ग्रन्थ अपने विषय की अद्वितीय रचना मानी जाती है। हेमचन्द्र ने इस ग्रन्थ के अतिरिक्त एक रचनात्मक पुस्तक 'द्वयाश्रय' शीर्षक से प्रस्तुत की। इस काव्य में लेखक ने अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जो उनके व्याकरण ग्रन्थ में उदाहरणों के रूप में उद्धृत किये गये हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त हेमचन्द्र ने काव्यानुशासन छन्दोनुशासन देशनाममालाकोश आदि ग्रन्थों की भी रचना की है। इनका एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

ज मन्द भिराण भिरिहिं दहण पवसनतेण ।
ताण गणतिए अंगुलिउ जज्जरियाउ नहेण ॥ (हेमचन्द्रशब्दानुशासन)

कवि सोमप्रभ—

बारहवीं शताब्दी में ही अपभ्रंश काव्य परम्परा के अन्तर्गत सोमप्रभ का आविर्भाव हुआ। यह एक जैन साम्प्रदायिक कवि थे। इनका लिखा हुआ 'कुमारपाल प्रतिबोध' शीर्षक एक काव्य ग्रन्थ उपलब्ध होता है। परन्तु इस कृति में अपभ्रंश छन्दों की तुलना में संस्कृत तथा प्राकृत छन्द ही प्रधानतः उपलब्ध होते हैं। यह ग्रन्थ मुख्य रूप से उपदेशात्मक है जिसमें कवि ने अनेक नैतिक कथाओं के माध्यम से चारित्रिक आदर्श उपस्थित किये हैं। पाँच प्रस्तावों में विभाजित यह काव्य नीति अनीति का सम्यक् विवेचन करता है। ग्रन्थ में विवेचित प्रसंगों का आध्यात्मिक महत्व भी निरूपित किया गया है। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है

पिय हउं थक्किय सयलु दिणु तुह विरहग्गि किलन्त ।
थोडइ जल जिम मच्छलिय तल्लोविल्लि करन्त ॥ (कुमारपाल प्रतिबोध)

जिनदत्त सूरि—

हेमचन्द्र के समकालीन अन्य अपभ्रंश कवियों में जिनदत्त सूरि का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। इन्होंने तीन ग्रन्थों की रचना की है जिनके नाम उपदेश रसायन रास, कालस्वरूप कुलकम तथा चर्चरी है। इन ग्रन्थों में लेखक ने जैन साम्प्रदायिक धार्मिक नियम विधान आदि से सम्बन्धित नीति उपदेश तथ्य भी कथन प्रस्तुत किये हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

पर्हि गुणहि सत्थह बक्खाणहि।
र्जा रयणिहि रह भमण कयाह न कारियइ
लउडारसु र्जहि पुरिसु वि दिन्तिउ वारियइ
जहि जल कीडारण हुति न दवयह
माहमास न सिलिद्धा कय अट्ठाहियह ॥ (चर्चरी)

हरिभद्रसूरि—

जैन धर्माचार्य हरिभद्रसूरि की लिखी हुई एक कृति समराइच्चकहा शीर्षक से उपलब्ध होती है। परन्तु यह कृति प्राकृत भाषा में लिखी गयी है जिसमें इनके लिखे हुए अन्य भी अनेक ग्रन्थ बताये जाते हैं। अपभ्रंश में लिखी हुई इनकी एकमात्र रचना णमिणाह चरिउ शीर्षक से उपलब्ध होती है। इसमें अनेक पौराणिक धार्मिक कथाओं का सम्मिश्रण मिलता है। इस काव्य में कलात्मक तत्वों की निहिति के कारण इसे अपभ्रंश का एक विशिष्ट काव्यापलब्धि माना जाता है। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है

सवणाण विम्मणइ नयणरमन्न विहू मेत्त गवय।
गटयनच्चिय तिमिर हर जग पहू ससि रवि सय।
सवण ज जदानय लानिय विहून महून आलय ॥ (णमिणाह चरिउ)

अद्दहमाण अथवा अब्दुरहमान—

अद्दहमाण अथवा अब्दुरहमान का रचना काल भी ११वीं शताब्दी से लेकर १४वीं शताब्दी के मध्य माना जाता है। इन्होंने अपभ्रंश में सन्देश रासक की रचना की है। यह काव्य मुख्यतः एक वियोगिनी नायिका की विरह भावनाओं पर आधारित गाया है। ग्रन्थ मध्यम तक है और इसमें कलात्मक तत्वों का समावेश बहुलता से मिलता है। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है

पान्थ पिय वक्खानन विरहग्गिहि उत्पत्ति।
ज सित्तउ धारासयहि जलइ पल्लिली चत्ति ॥
सोसिज्जत विव जम्मसाम दीउहग्गहि पसयच्छी।
निवडत बाह भर नायणाह घूमंउण सिञ्चति ॥ (संदेश रासक)

महेश्वर सूरि—

आध्यात्मिक विषय पर काव्य रचना करने वाले कवि महेश्वर सूरि का नाम भी यहाँ उल्लेखनीय है। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ संजममंजरी शीर्षक से उपलब्ध होता है। जैसा कि इसके शीर्षक से ही स्पष्ट है इसमें कवि ने संयम के यथार्थ महत्व का वर्णन किया है। इस कृति का एक उदाहरण इस प्रकार है

दण्ड दमवि मण वसि करवि धरि सजमि अप्पाण।
मोह महाभडु निज्जिणिहि जिम पावहि निरवाणु॥
समणह भूसण गयवसण सजम भजरि एह।
सिरि महेसरि सूरि गुरु कन्नि कुडल मुणह॥ (संजममंजरी)

श्रीचन्द्र मुनि—

उपदेश प्रधान काव्य रचना करने वाले कवियों में अपभ्रंश परम्परा के अन्तर्गत श्रीचन्द्र मुनि का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। इनका लिखा हुआ एक मौलिक काव्य ग्रन्थ कथाकोश शीर्षक से उपलब्ध होता है। इस ग्रन्थ में ५३ संधियों के अन्तर्गत कवि ने पृथक पृथक कथाएँ प्रस्तुत की हैं जिनमें विविध गुणों से सम्बन्धित उपदेशों की निहिति है। इस काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

लद्धि सिद्धि च समाहि कारण।
समरय ससार दुहोह वारण॥
पहु जए ज सरस निरतर।
सु‍ सयानन्दसज अणुत्तर॥ (कथाकोश)

पद्मकीर्ति—

जैन साम्प्रदायिक कवि पद्मकीर्ति का नाम भी इसी परम्परा में उल्लिखित किया जा सकता है। अपभ्रंश काव्य की इस परम्परा के अन्तर्गत इनकी एक कृति उपलब्ध होती है जिसका शीर्षक पासपुराण है। जैसा कि इस काव्य ग्रन्थ के शीर्षक से ही स्पष्ट है इसमें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की जीवन गाथा का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ का एक उदाहरण इस प्रकार है

सुपसिद्ध महामइणियम धारि थिउ सवण सघु इह महि वियारि।
तहि चदसेण णामेण रिसि, वय सजम णियमइ जासु किसि।
तहु सीसु महामइ णियम धारि णायवतु गुणायउ बभयारि।
सिरि माहवसेण महामु भाउ जिणसेणु सीसु पुणु तासु जाउ। (पासपुराण)

अन्य प्रमुख कवि—

अपभ्रंश काव्य परम्परा के अन्तर्गत उपर्युक्त कवियों के अतिरिक्त अन्य भी अनेक कवियों से सम्बन्धित विवरण उपलब्ध होता है। इनमें मानंग नामक जैन आचार्य विद्याधर बब्बर मानधर आभभट्ट शालिभद्रसूरि सोमप्रभ सम्मकर्माणि जिनदत्त

सूरि विनयचन्द्र सूरि आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें से मेरुतुंग का लिखा हुआ ग्रन्थ भोजप्रबन्ध भाषा से उपलब्ध है। इसमें कवि ने प्राचीन राजाओं के जीवन से सम्बन्धित कथायें प्रस्तुत की हैं। विद्याधर के लिखे हुए ग्रन्थ प्राकृत पिंगल सूत्र का उल्लेख मिलता है। सारंगधर का लिखा हुआ शार्ङ्गधर पद्धति नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध है। बब्बर के लिखे हुए किसी भी पृथक ग्रन्थ का उल्लेख नहीं मिलता। आमभट्ट की रचना उपदेशतरंगणी शीर्षक से उपलब्ध होती है। शालिभद्र सूरि ने बाहुबलिरास नामक कृति की रचना की थी। लक्ष्मणगणि ने सुपासनाह चरिउ ग्रन्थ दो भागों में प्रस्तुत किया था। जिनपद्मसूरि नामक जैन साम्प्रदायिक कवि ने थूलि फद्दमाग नामक कृति की रचना की है। विनयचन्द्र सूरि के लिखे हुए नेमिनाथ चतुष्पादिका शीर्षक ग्रन्थ का उल्लेख मिलता है। इन कवियों के काव्य में कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं

१ मुज भणइ मुणालवइ ? ज वण गयननूरि।
जइ सक्कर सय खंडथिय ता इम मीठी चूरि॥ (मेरुतुंग)

२ भअ भज्जिअ बंगा भग्गु कलिंगा तेलंगा रण मुत्ति चले।
मरहट्ठा धिट्ठा लग्गिअ कट्ठा सोरट्ठा भय पाअ पअले॥
चंपारण कंपा अ वअ झंपा उत्थी उत्थी जाव हर।
कासीसर राणा किअउ पआण विज्जाहर भण मंतिवरे॥ (विद्याधर)

३ गून बादल छाइ खेह पसरी नि आण श ब्द खर।
शत्रु पाडि लुटालि तोडि हनिसी एव भणन्त्यू भटा॥
मूठ गवमरा मचालि सहसा रे कन्त मरे कह।
कंठ पाग निवेश जाहु शरण श्रीमल्लदेव विभुम॥ (शारंगधर)

४ रे धणि ! मत्त मअगज गाभिणि खजण लोअणि चंदमुही।
चंचल जोव्वण जात ण जाणहि छइल समप्पहि काइ णही॥ (बब्बर)

५ रे रक्खइ लहू जीव बडवि रणि मयगल मारइ
न पिइ अणगलनीर हनि रा यह सहारइ।
अवर न बंधइ कोइ सधर रयणायर बंधइ
परनारी परिहरइ लच्छि परायह रंधइ।
कुमरपाल कोपि चडिउ फाडइ सतकडा हि जिमि
ज जिणधम्म न मनि नस तीहविं चाहिसु तम तिम॥ (आमभट्ट)

६ अहि उग्गमि पूरबदिसिहिं पहिलउ चालिय चक्क।
धूजिय धरयल थरहरए चलिय कुलाचल चक्क॥
पूठि पियाणु तउ दियए भयवन भरह नरिंदु तु।
पिडि पचायण परदलह हंनियलि अवर सुरिंदु॥ (शालिभद्र सूरि)

७ अह काइल कुलरवभुम्मल वणि बमत पयटट।

भटटु व मयणमहा निवड पर्याडिअविजय भरटटु ॥
सूर पयाइवि वतक्क उत्तरन्सि आसत्त ।
नीसासु व ाहिण दिसिहि मनय समीर पवत्त ॥ (सोमप्रम)
७ नय घिप्पइ ससणहि नट्ठ विणइहि गुणिहि ।
नु लउजइ नय माणिण नय चाुयसईहि ।
नय खरत्रामनवयणि न विहृवि न जोवणिण ।
दुग्गउ मणु महिनइ चितइ आमरिण । (लक्ष्मणगणि)
८ झिरिमिरिझिरिमिरि झिरिमिरि ए महा वरिसति ।
खनहन खनहन खलहन ए बादला वहति ।
झबमब मबमब मबयब ए बीजुनिय मबक्कइ ।
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणि मणु कपइ ॥ (जिनपद्म सूरि)
१० सुवि नवि ओना नमि हिरसि । मन आपणपउ तउ खय नसि ।
जिणि निमआण्डि पहिनउ छाडु । न गणिउ अट्ठ भवतर नट्ठ ॥ (विनयचन्द्र सूरि)

अपभ्रंश काव्य परम्परा का महत्व

इस प्रकार से आदि युगीन काव्य के अन्तर्गत जो प्रवति विकासशील रही उसमें उपयुक्त कवियो का ही योगदान मुख्य है। इनके अतिरिक्त इस प्रवति के अन्तर्गत ही कुछ अन्य कवियो का भी उल्लेख किया जाता है जिनमे विद्यापति प्रमुख हैं। इनकी प्रसिद्ध कृति पदावली के नाम से उपलब्ध होती है। अपभ्रंश के अतिरिक्त भी अन्य भाषाओं का प्रयोग इनके काव्य में मिलता है। शृगारिक आधार पर विद्यापति ने राधाकृष्ण की भक्ति का गान किया है। इसके अतिरिक्त उपयुक्त विवरण से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अपभ्रंश काव्य प्रवति में मुख्यत खण्ड काव्य प्रबंध काव्य तथा स्फुट काव्य ही लिखे गये। मुख्य रूप से ये काव्य अपभ्रंश प्रवति की सभी विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करने में समर्थ हैं। विशेष रूप से जैन धर्म से सम्बद्ध होने के कारण अपभ्रंश काव्य प्रवति में धर्म अध्यात्म भक्ति वैराग्य नीति उपदेश आदि से सम्बन्धित तत्व भी स्वभावत समाविष्ट हो गये हैं। अपभ्रंश काव्य प्रवति का विस्तार स्थूल रूप से लगभग १८ सौ वर्षों का स्वीकार किया जाता है। आगे चलकर वीर गाथा काल के चन्दबरदाई जैसे कवियो ने भी इस भाषा का प्रयोग किया। इसलिए आदि युग के अन्तर्गत अपभ्रंश काव्य की प्रवति का ऐतिहासिक महत्व है।

कहेउ हमारउ जन गनउ । मान दि मारि ताम । मारि ॥
कन्वा मान न मानिग मारि । गु मा । मारि न । बिनारि ॥
जीभ न जीभ बिगोयसा । न्य का ।अ गुमना । ॥
जीभ का दाधा न पागुर । ता न ग्नान गरवा ॥

चदवरदाई—

आदि युगीन वीर काव्य की प्रवृत्ति के आधार पर सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ पृथ्वीराज रासो का है। इसका रचना काल संवत १२ के लगभग माना जाता है। हिन्दी के सर्वप्रथम महाकवि होने का गौरव चन्द बरदाई को प्राप्त है जिनका लिखा हुआ महाकाव्य पृथ्वीराज रासो है। चन्दबरदाई दिल्ली और अजमेर के शासक महाराज पृथ्वीराज चौहान के दरबार के एक प्रतिष्ठित सामन्त राजकवि और सखा थे। उन्होंने लगभग ढाई हजार पृष्ठों के इस महाकाव्य में समय अथवा सर्गों के अन्तर्गत महाराज पृथ्वीराज के जीवन चरित्र युद्धों, वीरता तथा प्रताप और शौर्य का वर्णन किया है। ग्रंथ में मुख्य कथा पृथ्वीराज की वीरता, संयोगिता से विवाह, जयचन्द से युद्ध, शाहबुद्दीन गोरी से अनेक बार युद्ध, अन्त में पृथ्वीराज की गिरफ्तारी और चन्द तथा पृथ्वीराज का मृत्यु गमन है। इस ग्रंथ की प्रामाणिकता, प्रक्षिप्तता आदि के विषय में विभिन्न विद्वानों में अनेक मतभेद हैं। परन्तु इतना निश्चित है कि प्राय सभी दृष्टियों से यह काव्य विशिष्टता रखता है। इसकी भाषा को विद्वानों ने षड्भाषा नाम दिया है क्योंकि इसमें संस्कृत, पालि, पैशाची, अर्द्ध मागधी, महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, प्राकृत, अपभ्रंश, देश्य, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, ब्रज, अरबी, फारसी तथा तुर्की आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग मिलता है। भाषा का इतना विचित्र, स्वाभाविक सम्मिश्रण सम्भवतः अन्य किसी भी ग्रंथ में मिलना कठिन है।

भारतीय काव्य परम्परा के अनुसार चदवरदाई ने अपने महाकाव्य पृथ्वीराज रासो में मगलाचरण के उपरान्त धर्म, काम और मोक्ष रूपी वर्गों की स्तुति की है और इसके माध्यम से धर्मेश्वर, कर्मेश्वर और मुक्तश्वर के अभिनन्दन से मनुष्य के क्षत्रियोचित आदर्श की ओर संकेत किया है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है चन्दबरदाई पृथ्वीराज के सामन्त और मित्र थे और उन्हीं की कृपा से चन्द को राजसुख की प्राप्ति हुई थी। इसीलिए चद ने पृथ्वीराज चौहान की कीर्ति गाथा से अपनी काव्य गति को रसयुक्त बनाया था। कथा की मूल प्रेरणा के विषय में भी चन्द ने यह स्पष्ट किया है कि एक बार कवि चन्द की पत्नी ने कवि से दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज की सम्पूर्ण जीवन गाथा सुनाने का अनुरोध किया। फलस्वरूप कवि ने इस ग्रंथ की रचना करके पृथ्वीराज के ऋण से भी उऋण होने की चेष्टा की। कवि पत्नी उससे ईश्वर भक्ति का दान करने को कहती थी और फलतः कवि दशावतार वर्णन करता भी है किन्तु अन्ततः वह पृथ्वीराज की कथा पर ही केन्द्रित रहने की चेष्टा करता है क्योंकि उसे

यह अनुभव होता है कि आयु की अल्पता को देखते हुए राम और कृष्ण का गुण-गान उतना अधिक सम्भव नहीं है और इसके अतिरिक्त पृथ्वीराज के ऋण से भी उऋण होना है। इसीलिए कवि देवी से वरदान प्राप्त करके काव्य शक्ति की कामना करता है। यही नहीं सम्राट के ऋण से उऋण होने की कामना से ही चंद को भी पृथ्वीराज सहित आत्म बलिदान करना पड़ता है।

महाकवि चन्दबरदाई ने एक राज्याश्रित कवि होने के कारण पृथ्वीराज रासो में अपने आश्रयदाता का गुण गान किया है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सन्देह के होते हुए भी महाकाव्य में समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक पक्षों का विस्तृत चित्रण उपलब्ध होता है। इसलिए ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से यदि इस ग्रन्थ में कुछ अप्रामाणिक तत्वों की भी उपलब्धि हो तब भी इस ग्रन्थ का महत्व निर्विवाद रहता है। काव्य-कला की दृष्टि से पृथ्वीराज रासो में सुन्दर रूप में वीर रस का चित्रण किया गया है। इसके साथ ही रौद्र, वीभत्स, भयानक और अद्भुत रसों का प्रयोग भी है। शृंगार रस को भी इस काव्य में स्वाभाविक विस्तृत रूप में समाविष्ट किया गया है। सामान्य रूप से पृथ्वीराज रासो की कथा में मुख्यतः पृथ्वीराज चौहान के युद्धों और विवाहों का ही वर्णन है। इसलिए वीर और शृंगार रस एक प्रकार के क्रम बद्ध रूप में इसमें मिलते हैं। कहीं कहीं पर तो इन रसों के परिपाक के सूचक अत्यन्त उत्कृष्ट उद्धरण मिलते हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित छन्द दृष्टव्य है

सिर तुट्यौ दुट्यौ गयन कट्यौ कम्मरी।
तहाँ सुमरिय महमाय लखि दीनी तुरारी।
अमिय मद्द आयाम, लग्यौ अच्छरिय उछाह।
तहाँ सुमई परतप्पि असिन अरि बहुत प्रवाह।
अछहूत कुमार विभ्रम सुण्यौ रन रिवि विमानह मनु मयौ।
निहि दरस तिलोचन गंगधर त्रिम शंकर सिर सुर घुयौ॥

(पृथ्वीराज रासो, छ० २२८७ स० ६१)

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है शृंगार रस का योग भी इस काव्य में वीर रस के समानान्तर ही मिलता है। महाराना पद्मिनी का पुत्र दूत प्रेम कथा का विवरण देता है। वह उसमें पृथ्वीराज चौहान और रानी पद्मावती के रति विलास का वर्णन करता हुआ कहता है

लाज गढ़ डोलत। वढ़िय बर मन रस रत्त॥
अधर मधुर दम्पतिय। लूटि अब रव पत्त॥
मरत प्रगस घर अंग। सु पज्जव पग्गिलय॥
भूषन टट बखान। रहे अध बीच रंगसिद॥

नीसार थान नपुर बजिय । हार हाग करणा नि,र॥
रतिवाह समर मुनि द छिनिय । वीर मदन बाँ यगहर॥
('पृथ्वीराज रासो, छं० १४१ स० ६२)

रस परिपाक के साथ साथ पृथ्वीराज रासो म अलकार निरूपण भी नाटकीय रिक्ता की वद्धि म सहायक रूप म मिलता है। विशेष रूप स उपमा उत्प्रेक्षा भ्रांति सदेह अतिशयोक्ति एव दृष्टान्त आदि अलकारो का प्रयोग इस काव्य म बहुलता स हुआ है। अलकार योजना न कहा-कहा पर इस काव्य को विशेष कलापूर्ण एव चामत्कारिक बना दिया है यह सकेत निम्नलिखित उदाहरण स मिल सकता है

देखि तथ्य सजागि नह तन काम करारे।
हाव भाव विभ्रम कटाच्छ दुज बट्ट भति निनारे।
रचि तरग झकार बयन अमोन बसय सब।
हरन दुच्य इम तम सिवान कुच चक्रवाक सोहि सब।
द्रिग भवर मकर बिवर परत भरत मनोरथ सकल मुनि।
बर बिन्दुर नपति मनान म नन जानो किहि पटिय गुनि।
(पथ्वीराज रासो, छं० ११८८ स० ६१)

पथ्वीराज रासो का महत्व उसके विशिष्ट वहत आकार रसात्मकता आलकारिकता भाषा शली एव लोकप्रियता आदि अनेक दष्टियो से है। यद्यपि इस ग्रन्थ म प्रक्षिप्त अशो का बहुलता से समावेश किया गया है परन्तु फिर भी कवि न इसम जिन पात्रो को प्रस्तुत किया है और उनके माध्यम से जिन कथाओ की योजना की है व अपने आप म निर्दोष एव क्रमबद्ध प्रतीत होते है। विशेष रूप से कथा के नायक पथ्वीराज चौहान का चित्रण कवि ने अत्यन्त सतक दष्टि से कलात्मक रूप म प्रस्तुत किया है। पथ्वीराज चौहान के जीवन म नित्यप्रति होने वाल युद्धो मगया प्रसगो सन्य प्रयाणो विवाह प्रसगो आदि के माध्यम से इसम लेखक ने विविध वणनो की आलोचना की है जिन्होने ग्रन्थ को मोहक बना दिया है। इसके अतिरिक्त कवि ने इस ग्रन्थ म नायक पृथ्वीराज चौहान की सवा म ३६ क्षत्रिय वशो के प्रस्तुत रहने का उल्लेख भी किया है। इसी कारण यह ग्रन्थ समकालीन राष्ट्रीय स्वरूप और परिस्थितियो के स दभ म जन चेतना की विवति करता है।

पृथ्वीराज रासो म महाकवि चदबरदाई ने जिन धार्मिक वणनो की योजना की है उनम समकालीन धम भावना का सम्यक परिचय मिलता है। उपलब्ध उल्लखो क आधार पर यह कहा जा सकता है कि पृथ्वीराज चौहान के समय म हिन्दू धम के अतगत निगुण और सगुण भक्ति का प्रचार था। भक्तजन ब्रह्मा विष्णु और शिव के उपासक थ। कविगण गणेश तथा सरस्वती की भी स्तुति करत थे जो जनता की इनम भक्ति और आस्था का सूचक है। पृथ्वीराज रासो म भी दशावतारो का वणन मिलता है। विष्णु की पजा क अनक प्रसग इस ग्रन्थ म मिलते हैं। यही नही, वीर योद्धाओ के

विश्व लोक में गमन का भी उल्लेख इसमें किया गया है। शिव की उपासना शिव मंदिरों की चर्चा तथा वीर गति के उपरांत योद्धाओं के शिव लोक गमन के प्रसंग चंदबरदाई ने प्रस्तुत किये हैं। शिव की पूजा और शिव मंदिरों से सम्बंधित कथाएं भी रासो में आयोजित किये गये हैं। इनके अतिरिक्त अन्य भी अनेक देवी देवताओं उदाहरण के लिए गणेश उमा सरस्वती हनुमान भैरव, यम इन्द्र वरुण गंधर्व यक्ष नारद तथा शनि आदि की उपासना के संकेत भी इसमें प्राप्त होते हैं। इनके अतिरिक्त भैरव भूत प्रेत वेताल पिशाच एवं योगिनियां आदि भी इसमें किसी न किसी रूप में समाविष्ट हुए हैं। बौद्ध और जैन धर्म के साथ साथ ईसाई धर्म से सम्बंधित विवरण इसमें मिलते हैं।

जैसा कि ऊपर कहा गया है दशावतार पृथ्वीराज रासो में वर्णन धर्म वर्णन का पृथक और मुख्य विषय है। इसमें चंदबरदाई ने मच्छ कच्छ वाराह नृसिंह वामन परशुराम राम, कृष्ण बुद्ध तथा कल्कि अवतारों का वर्णन किया है। गंगा आदि के महात्म्य का वर्णन भी इस कृति में मिलता है। गंगा के दर्शन गुणगान स्नान और जलपान का महत्व अनेक स्थलों पर इंगित किया गया है। गंगा महात्म्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

पाप मनमथ हरन गंग नव बंध अंत पर।
हरि चरनन करि जनम काम छंड सु तुच्छ वर।
तीन लोक भर भवन तहाँ प्रावन सु थानन।
निगम न हरि उर धरै धम्म तट काय प्रमानन।
कहहि सु चतुर नर नाग सुर दुति दरसन परसन विहर।
दिलीवनाथ सो गंग लिपि जस सम उज्जल बसु अपर॥

('पृथ्वीराज रासो, छ० ३१६)

जैसा कि ऊपर संकेत किया गया है पृथ्वीराज रासो समकालीन सामाजिक व्यवस्था का विस्तृत निरूपण करता है। इसमें चन्दबरदाई ने विजयादशमी दीपावली होली तथा ग्रहण आदि का विस्तृत वर्णन किया है। नवरात्रि नौदुर्गा तथा विजया दशमी आदि के वर्णन भी इसमें मिलते हैं। दुर्गापूजन के समय पशुबलि के विधान की भी इसमें चर्चा है। नवरात्रि में व्रत का विधान भी इसमें मनुष्य के लिए निर्दिष्ट किया गया है। दीपोत्सव के अंतर्गत लक्ष्मी पूजन एवं दीप दान के प्रसंग 'पृथ्वीराज रासो' में मिलते हैं। दीपमालिका के अवसर पर जन समाज के हर्ष और उल्लास के सूचक वृत्तान्त इसमें मिलते हैं। शिवरात्रि के अवसर पर भी स्नान, ध्यान और दान का महत्व वर्णित है। वसंतोत्सव के अवसर पर ऋतु राज वसंत के स्वागत में बसंत पंचमी को कृष्ण की प्रतिमा के पूजन का उल्लेख इसमें मिलता है। होलिकोत्सव का कथा से सम्बंधित अनेक प्रसंग भी इस काव्य में मिलते हैं। इन धार्मिक पर्वों और उत्सवों के अतिरिक्त जन्मोत्सव एवं विवाहोत्सव के अन्तर्गत

प्रसंग पृथ्वीराज रासो में उपलब्ध होते हैं। पृथ्वीराज चौहान के जन्म के उपरान्त का तो अत्यन्त विस्तृत वर्णन इस काव्य में मिलता है। इस जन्म के अवसर पर ज्योतिषियों से मुहूर्त सम्बन्धी परामर्श, गर्ग नाम आदि की जानकारी, दान और अन्य उपहार भेंट आदि की चर्चा भी इसमें है। पृथ्वीराज की विजयों और विवाहों के अवसरों पर भी उत्सवों के आयोजनों का वर्णन हुआ है। ये वर्णन भी पर्याप्त विस्तार से दिये हैं। शकुन एवं अपशकुन की सामाजिक मान्यताएँ हिन्दू और मुसलमान दोनों ही समाजों में थीं। इसी सन्दर्भ में लोगों ने स्वप्नों के भी प्रभावों का विश्लेषण किया है। समकालीन सती प्रथा के भी अनेक विवरण इस काव्य में उपलब्ध होते हैं। पृथ्वीराज रासो में अनेक क्षत्राणियों के सती होने का प्रसंग वर्णित है। सामूहिक रूप से सतियों का परलोकगमन भी इसमें वर्णित है। युद्ध होने के पश्चात पतिपरायण वधुएं जिस जिस लोक में उनके पति गये हुए थे वे। जाकर उनसे मिलती हैं। उदाहरणार्थ

विविह तरनि दिय दान अवर सामंत सूर भर।
अप्प अप्प हय नीय मिलिय रह हित धाम घर॥
चित चित रस रवनि गवनि पावक प्रजारिय।
प्रेम प्रीति पिय प्रेम नेम गमह प्रति पारिय॥
उज्जलिय भान आयास मिलि हर हर सुर हर गौम भौ।
जह जह सुवास निजवत पिय तह तहां तिय पिय मिलन भौ।

(पृथ्वीराज रासो ६० १६२४)

पृथ्वीराज रासो के चरित्र नायक सम्राट पृथ्वीराज चौहान हैं। उन्हीं के जीवन चरित्र प्रमुख युद्धों एवं विवाहों आदि का वर्णन इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है। जम्भावती, इन्छिनी, पुण्डीरनी, दाहिमी, शशिवृता, पद्मावती, हंसावती, संयोगिता आदि के अतिरिक्त अन्य कन्याओं से भी पृथ्वीराज के विवाह इसमें विस्तार से वर्णित किये गये हैं। इसके अतिरिक्त लगभग तीन दर्जन प्रमुख युद्धों का उल्लेख भी इसमें है। भीमदेव चालुक्य, जयचंद राठौर, शाहबुद्दीन मुहम्मद गोरी, परमार पड़िहार, मुगलराय भाटी राज भान आदि से भी पृथ्वीराज के महत्वपूर्ण युद्धों का इसमें उल्लेख है। पृथ्वीराज के जीवन की कतिपय अन्य विशिष्ट घटनाओं का भी इसमें वर्णन है। पृथ्वीराज के अतिरिक्त इस ग्रन्थ में उसके रैनसी नामक पुत्र का चरित्र भी वर्णित है जिसकी एक युद्ध में मृत्यु हो गयी थी। मुहम्मद गोरी जो गजनी का बादशाह था उसके पृथ्वीराज से बीस युद्धों का उल्लेख इस ग्रन्थ में मिलता है। ये युद्ध विविध स्थानों तथा विविध परिस्थितियों में हुए थे। पृथ्वीराज चौहान, रैनसी तथा शाहबुद्दीन मुहम्मद गोरी के अतिरिक्त इस ग्रन्थ में भीमदेव चालुक्य, जयचन्द राठौर, परमार रावल समरसिंह या सामंत सिंह आदि के चरित्र भी वर्णित हैं। स्त्री पात्रों में इतिहास प्रसिद्ध चरित्र संयोगिता, इच्छिनी, शशिवृत्ता, पद्मावती तथा पृथाकुमारी आदि से पृथ्वीराज के

विवाह का विस्तृत वर्णन इसमें मिलता है। इस प्रकार से महाकवि चंदबरदाई [illegible] पृथ्वीराज रासो अपने समकालीन जीवन और परिस्थितियों का [illegible] प्रस्तुत करने वाला महाकाव्य है। इसमें वीर रस को प्रधानता देते हुए रौद्र [illegible] भयानक तथा अद्भुत रसों के समानान्तर ही शृंगार रस का जैसा समन्वय हुआ है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। परस्पर विरोधी रसों का यह परिपाक इसमें असाधारण [illegible] रसिकता का योग एवं असामान्य छंद विधान के साथ-साथ कवि की प्रतिभा [illegible] वर्णन शक्ति आदि ने मिलकर हिन्दी के सर्वप्रथम महाकाव्य का [illegible] अधिकारी बना दिया है।

भट्ट केदार—

उपलब्ध नही हुई है। उसके स्वरूप और महत्व की कल्पना का मूल आधार मौखिक है जिसमें विविध ग्रामों में गाये जाते थे। उनमें प्रचलित रूप है जो विशेष रूप से वर्षा काल में गाये जाते है। भारतीय इतिहास के इन दो प्रसिद्ध राजपूत वीरों के चरित्र का आधार बनाकर अनेक साहित्यिक विधाओं में रचनाएँ लिखी गयी है। आल्हा खण्ड में भी इन दो वीरों के अद्वितीय वीरत्व का चित्रण है। इसके अतिरिक्त विद्वानों का यह भी अनुमान है कि जगनिक ने किसी बड़े प्रबन्ध काव्य की रचना की थी और आल्हा खण्ड उसका कोई खण्ड विशेष अथवा अंश विशेष है जिसके अन्तर्गत कवि ने चन्देलवंशी वीरों की गाथा का वर्णन किया था। चूँकि यह ग्रन्थ मात्र मौखिक रूप में ही उपलब्ध होता है इसलिए इसमें समय समय पर अनेक प्रक्षिप्त अंशों का समावेश हो गया है। इसके फलस्वरूप इसका मूल रूप भी कहीं-कहीं पर परिवर्तित हो गया है। आल्हा और ऊदल सामन्त युग में जन्मे थे। वे युधिष्ठिर और भीम के अवतार के रूप में जन सामान्य में समादृत होते थे। आल्हा खण्ड का एक काव्यात्मक उदाहरण के लिए यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

यह सुनि ऊदन बोलन लाग। दादा बचन है ध्यान तुम्हार ॥
दखिया मारि उड़ीसा मारा। बाजी रातबरन नौ टाप ॥
अटक पार नौ मण्डा गाड़ा। मारे खुरासान गुजरात ॥
धुर दक्खिन ते ओ काबुल लग। बाजी टाप बछेड़ा क्यार ॥
घर में आयी टीका पर। तो रजपूती जाय नसाय ॥
तुमहिं हलौआ का डर नाहीं। तुमको जानत सकल जहान ॥
टीका लौटन का नाही है। चाहे प्राण रहे की जाय ॥
ब्याह रचाय लेउ मलखे का। टीका तुरत लेउ चढ़वाय ॥

श्रीधर—

आदि युगीन वीर-काव्य की इस प्रवृत्ति के अन्तर्गत श्रीधर का नाम भी उल्लेखनीय है। इनका रचना काल पन्द्रहवी शताब्दी माना जाता है। श्रीधर ने रणमल्लछन्द शीर्षक काव्य ग्रन्थ की रचना की थी। जैसा कि इसके शीर्षक से ही स्पष्ट है इसमें ईडर के राठौर राजा रणमल्ल की एक युद्ध में ऐतिहासिक विजय का वर्णन मिलता है। रणमल्ल का यह युद्ध पाटन के सूबेदार जफर खाँ से हुआ था। श्रीधर राजा रणमल्ल राठौर के राज्याश्रित कवि थे। इनकी जाति व्यास बतायी जाती है। रणमल्ल के जफर खाँ से युद्ध और जफर खाँ की पराजय का विवरण इतिहास में भी मिलता है और यह घटना सन् १३८७ ई० की बतायी जाती है। यह काव्य कुल ७० छन्दों में लिखा गया है। यह काव्य ग्रन्थ चारण परम्परा के अन्तर्गत आता है और इसमें कलात्मक दृष्टिकोण से भी रस छन्द अलंकार आदि की प्रभावशाली योजना मिलती है। इस काव्य ग्रन्थ का एक उदाहरण इस प्रकार है

ढमढमइ ढमढमकार ढबर ढोल ढोली जंगिया।

सुर करहिं रण सहणाइ समुन्दरि सरस रसि समरंगिया ।।
कलकलहिं काहल कोडि कलरवि कुमल रायर थरहरइ ।
सचरइ शक सुरताण साहण साहमी सवि सगरइ ।।

अन्य कवि—

ऊपर जिन रचनाओं का उल्लेख किया गया है उनके अतिरिक्त भी कुछ कवियों की रचनाएँ इस युग में उपलब्ध होती हैं। इन कवियों में खुसरो तथा विद्यापति के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। खुसरो ने साधारणतः दोहे और पहेलियाँ इत्यादि की ही रचना की है। विद्यापति ने मुख्यतः पदावली की रचना की है जिसमें शृंगारिक भावनाओं की प्रधानता है। कहने का आशय यह है कि इस प्रवृत्ति में वीर रस प्रधान काव्य मुख्यतः उपर्युक्त कवियों द्वारा ही लिखा गया। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है राजनैतिक अशान्ति और साम्प्रदायिक युद्धों पर वीर भावना के काव्य में समुचित विकास के लिए आधारभूमि उपस्थित की। यदि इस युग में एक ओर पृथ्वीराज रासो जैसे महाकाव्य लिखे गये तो दूसरी ओर रणमल्लछन्द जैसी लघु काव्य-कृतियाँ भी लिखी गयीं। हिन्दी के परवर्ती काव्य में वीर भावनाओं का समावेश मिलता है। परवर्ती युगों में जो कविता लिखी गयी उसमें वीर रस के तात्विक समावेश का परिचय यथास्थान दिया जायगा।

———

अध्याय . ६

भक्ति युगीन निर्गुण काव्य की प्रवृत्ति

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्ति युग के अंतर्गत जिस काव्य प्रवृत्ति का सर्वप्रथम उल्लेख किया जा सकता है उसका सम्बन्ध निर्गुण काव्य से है। भारतवर्ष पर विदेशी और विधर्मी जाति का आधिपत्य हो जाने के पश्चात धार्मिक भावनाओं का जागरण तीव्र रूप से हुआ। पन्द्रहवीं शताब्दी से ये धार्मिक भावनाएं काव्य में एक सुनिश्चित स्वरूप ग्रहण करती दिखाई देती हैं। मुसलमानों के निरंतर आक्रमणों का सामना करते हुए हिंदू जाति ने इन युद्धों को एक प्रकार के धर्म युद्ध के रूप में ग्रहण किया। महमूद गजनवी के बारह और मुहम्मद गोरी के बीस युद्धों के पश्चात भारतवर्ष में राजनीतिक अस्थिरता और परतंत्रता की स्थिति उत्पन्न हो गयी। ये विधर्मी और विदेशी जब तक देश पर आक्रमण और लूटमार करके चले जाते थे तब तक भी कोई विशेष धार्मिक समस्या उत्पन्न नहीं हुई। परन्तु जब मुसलमान विजेता स्थायी रूप से यहां बसने का विचार करने लगे और उनकी शासन व्यवस्था में हिंदू धर्मानुयायियों पर कर का बोझ अधिक बढ़ गया तब धर्म के क्षेत्र में एक प्रकार की नवचेतना का जागरण हुआ।

भय के अतिरिक्त विधर्मियों से हिंदू धर्मानुयायियों को स्वयं अपनी सामाजिक और वर्ण व्यवस्था के वैषम्य से भय था। मुसलमानों में जहां एक ओर सभी में एकता और समानता की भावना थी वहां दूसरी ओर हिंदुओं में वर्ण व्यवस्था अपने उग्र रूप में विद्यमान थी। अनेक धार्मिक सम्प्रदाय प्रचलित थे जिनके अनुयायी हिंदू परस्पर विरोध और शत्रुता की भावना रखते थे। अस्पृश्यता की भावना भी प्रचलित थी यद्यपि अनेक बड़े बड़े संतों ने इसके निराकरण का प्रयत्न किया।

इस प्रकार की परिस्थिति में निर्गुण सम्प्रदाय के अंतर्गत एक विशिष्ट काव्य प्रवृत्ति विकसित हुई जिसमें मुख्य रूप से साम्प्रदायिक एकता और समानता की भावना निहित थी। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यह एक आध्यात्मिक आंदोलन था जिसमें बाह्य आडम्बर की तुलना में आंतरिक शुद्धता पर अधिक बल दिया गया।

जाति और सम्प्रदाय विहीन यह विचारधारा तत्कालीन आवश्यकताओं की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। इस निर्गुण काव्य में जो पहली धारा मिलती है वह ज्ञान और साधना पर आधारित है। इसमें धर्म समन्वय-सुधार की भावना प्रधान है। यदि काव्य प्रवृत्ति की दृष्टि से देखा जाय तो यह कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास के अन्तर्गत भक्ति युग में निर्गुण काव्य प्रवृत्ति का प्रसार स्थूलतः तेरहवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी तक मिलता है। महमूद गजनवी मुहम्मद गोरी कुतुबुद्दीन ताजखाँ बलबन अलाउद्दीन खिलजी सरवर ख्वाजा फीरोज तुगलक तैमूरलंग वजीर इकबाल खाँ बहलोल लोदी, सिकन्दर शाह इब्राहीम लोदी बाबर हुमायूँ शेरशाह सूरी, अकबर जहाँगीर शाहजहाँ औरंगजेब बहादुरशाह मुहम्मदशाह नादिरशाह तथा अहमदशाह दुर्रानी आदि मुसलमान आक्रमणकारियों तथा शासकों के शासनकाल में यह प्रवृत्ति किसी न किसी रूप में विद्यमान थी। इन विदेशियों की धार्मिक कट्टरता से युक्त नीति और हिन्दुओं के प्रति असहिष्णुता ने इस काव्य प्रवृत्ति के प्रसार में योग दिया। भक्ति युग में निर्गुण काव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत जिन प्रमुख कवियों का योगदान है उनका संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण नीचे उपस्थित किया जा रहा है

जयदेव—

निर्गुण काव्य प्रवृत्ति में सर्वप्रथम उल्लेखनीय नाम जयदेव का है जिनका रचना काल तेरहवीं शताब्दी माना जाता है। कबीर जैसे विशिष्ट सन्तों ने भी अपने पूर्ववर्ती ज्ञानियों का उल्लेख करते हुए जयदेव की चर्चा की है। ऐतिहासिकता की दृष्टि से भी जयदेव अत्यन्त प्राचीन हैं। गीत गोविन्द इनकी विख्यात कृति है। जयदेव के सम्बन्ध में जो विवरण उपलब्ध हैं उनसे यह ज्ञात होता है कि यह राजा लक्ष्मणसेन की सभा के पाँच रत्नों में से एक थे। इनके विवाह तथा सामाजिक जीवन से सम्बन्धित अनेक विवरण उपलब्ध होते हैं। ब्राह्मण कन्या पद्मावती इनकी पत्नी थी। गीत गोविन्द के अतिरिक्त जयदेव ने रसना राघव तथा चन्द्रालोक नामक दो अन्य कृतियों की भी रचना की थी। जयदेव ने अपने काव्य में आध्यात्मिक के रूप में ज्ञान चर्चा करते हुए गोपियों का पवित्र्य तथा राधा का दिव्य स्थान निर्देशित किया है। जीव की मुक्ति उनके विचार से तभी हो सकती है जब गोपियों की भाँति कृष्ण या राधा से प्रेम हो। जयदेव के सम्बन्ध में चन्दवरदाई की रचना तथा भक्तमाल में भी उल्लेख मिलते हैं। जयदेव के सम्प्रदाय के विषय में यह कहा जाता है कि यह निम्बार्क सम्प्रदाय के थे। कुछ लोग इन्हें विष्णु स्वामी के सम्प्रदाय का भी मानते हैं। परन्तु निर्गुण काव्य के जो तत्व इनकी कविता में सर्वप्रथम उपलब्ध होते हैं उनके कारण इनका ऐतिहासिक महत्व इस काव्य-परम्परा के आरम्भ में भी है।

नामदेव—

सन्त नामदेव का समय तेरहवीं चौदहवीं शताब्दी माना जाता है। महाराष्ट्र

साहित्य म गर प्रसिन्द स त मे स्प म न्दवा विशेष स्थान है । इनका जन्म सन् १२७०
म सतारा जिले के नरसी बमनी नामक स्थान म हुआ था । इनके जीवन तथा रचना
काल के विषय म विविध विद्वानो म पारस्परिक मतभेद है । कहा जाता है कि ये दामा सेट
दर्जी के पुत्र थ और राजाबाई नामक पत्नी से इनके नारायण महादेव गोविन्द और
बिट्ठल नामक पुत्र हुए थे । ८० वर्ष की अवस्था मे सन् १३५० म इनकी मृत्यु हुई । ज्ञानदेव
की भाति ही नामदेव का भी निर्गुण वारकरी परम्परा के प्रवतक होने का श्रेय प्राप्त है ।
यह विट्ठल सम्प्रदाय के अनुयायी थ जिसमे नाम स्मरण का महत्व अधिक है । कहा
जाता है कि स त नामदेव ने ज्ञानदेव महाराज के साथ उत्तर भारत का भ्रमण करके
इस धम प्रचार किया । विट्ठल सम्प्रदाय के अन्य प्रसिद्ध स तो म गोरा कुम्हार
चोखा मेला जनाबाई तथा का होपात्रा आदि अन्य प्रसिद्ध सन्त भी हुए है । नाम स
के विषय म भी अनेक किवदन्तियो का प्रचार है । कहा जाता है कि बार बार बाद
करते रहते एक बार इन्हे पश्चाताप और ज्ञान हुआ और तब विठोबा मन्दिर को गरू
मानकर इन्होने भक्ति का माग अंगीकृत किया । नामदेव के विषय म यह भी कहा
जाता है कि इनके विचार वारकरी सम्प्रदाय स प्रभावित थ । यह सन्त तुकाराम के
आध्यात्मिक आदश भी कहे जाते है । नामदेव की निगन बानी का एक उदाहरण
इस प्रकार है

माइ न होती बाप न होते कम न होता काया ।

× ×

भाई रे इन नैनन हरि पखो ।

हरि की भक्ति साधु की सगति सोई यह दिन लखो ।

यह ससार हाट का लखा सब कोउ बनि जहि आया ।

जिन जस लादा तिन तस पाया मूरख मूल गवाया ॥

आतम राम देह घरि आया तामे हरि का देखो ।

कहत नामदेव बनि बलि जही हरि भजि और न लेखो ॥

त्रिलोचन—

स त त्रिलोचन नामदेव और ज्ञानदेव के गुरु बताये जाते हैं । इनका जन्म थ य
वन म हुआ था । इनके जीवन के विषय म अनेक प्रकार की किवदन्तियाँ प्रसिद्ध है ।
आदि ग्रथ म कबीर के दो दोहो म त्रिलोचन और नामदेव के सवाद का विवरण है ।
कुछ विद्वानो का यह भी अनुमान है कि नामदेव और त्रिलोचन स्वामी रामानन्द के
पूर्व समय के थ । कुछ प्रमाणो के आधार पर इनका ज म तेरहवी शताब्दी म माना जाता
है । त्रिलोचन के पदो म आध्यात्मिक विषयो पर विवेचना मिलती है । यह भी उल्लेख
मिलता है कि यह रुद्र सम्प्रदाय के अ तगत विष्णुस्वामी की परम्परा के अनुगामी थ ।
परवर्ती काल म वल्लभ सम्प्रदाय के पुष्टि माग का आरम्भ भी इन्ही स हुआ था ।

रामानन्द—

रामानन्द जी का जीवन विवरण हि दी साहित्य के आचार्यों मे मतभेद का विषय

है। डा० फर्कुहर प० रामचन्द्र शुक्ल तथा मैकालिफ आदि विद्वानों ने इनके जन्म काल के विषय में विभिन्न अनुमान प्रकट किये हैं। अगस्त्य संहिता में भी इनके जन्म का भिन्न काल मिलता है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर इनका जन्म काल सन् १३८८ से लेकर १४७० के मध्य था। इनकी माता का नाम सुशीला और पिता का नाम पुण्यसदन था। भक्तमाल के प्रसिद्ध टीकाकार प्रियादास भाण्डारकर तथा ग्रियर्सन इनका जन्म प्रयाग में मानते हैं। बताया जाता है कि रामानुज की शिष्य परम्परा के अन्तर्गत देवाचार्य के अतिरिक्त राघवानन्द नाम के जो प्रसिद्ध योगी हुए हैं उन्होंने योग बल से रामानन्द की अल्प आयु में रक्षा की थी। कहा जाता है कि राघवानन्द ने ही उन्हें किसी नवीन सम्प्रदाय के प्रवर्तन की प्रेरणा दी थी। कुछ विद्वान रामावत सम्प्रदाय के एक विशिष्ट प्रवर्तक के रूप में भी उनका उल्लेख करते हैं। एक मत के अनुसार श्री सम्प्रदाय की दो विशिष्ट शाखाएं हो गयी थीं जिनमें द्वितीय का पुनरुद्धार रामानन्द ने किया था। रामानन्द जी की लिखी हुई विभिन्न कृतियों में वैष्णव मताब्जभास्कर, श्रीरामार्चन पद्धति, गीताभाष्य, उपनिषद्भाष्य, आनन्दभाष्य, सिद्धांतपटल, रामरक्षास्तोत्र, 'योगचिन्तामणि', रामाराधनम्, 'वेदान्त विचार', 'रामानन्दादेश', ज्ञानतिलक, ज्ञानलीला, आत्मबोध, राम मंत्र, जोग ग्रंथ तथा अध्यात्म रामायण आदि के नाम लिए जाते हैं। अन्य कृतियों के सम्बन्ध में भी रामानन्द की स्फुट रचनाओं का विवरण प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए भजन रत्नावली में भी रामानन्द के नाम से चार पद उपलब्ध होते हैं। रामानन्द का महत्व हिन्दी साहित्य में राम भक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य के रूप में अन्यतम है। इनकी शिष्य परम्परा में संत कबीर, पीपा, रविदास, धन्ना, अनन्तानन्द, सुरसुरानन्द, नरहर्यानन्द, योगानन्द, सुखानन्द, भवानन्द तथा गालवानन्द आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। संत रज्जबदास के संग्रह ग्रंथ 'सर्वांगी' में रामानन्दजी का एक पद उपलब्ध होता है जो इस प्रकार है

हरि बिन जन्म वृथा खोयो रे।
कहा भयो अति मान बड़ाई धन मद अंध मति सोयो रे॥
अति उतंग तरु देखि सुहायो सैंबल कुसुम सूवा सेयो रे।
सोइ फल पुत्र कलत्र विषय सुख, अंति सीस धुनि धुनि रोयो रे॥
सुमिरन भजन साध की संगति, अन्तरि मैल न धोयो रे॥
रामानन्द रतन जम त्रास श्रीपति पद काहे न जोयो रे॥

संत नाई—

रामानन्द के शिष्य सेन नाई का समय चौदहवीं शताब्दी माना जाता है। कहा जाता है कि ये बीदर के राजा के आश्रय में रहते थे और संत ज्ञानदेव के समकालीन थे। यह वारकरी सम्प्रदाय के अनुयायी भी बताये जाते हैं। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि यह बांधवगढ़ नरेश के आश्रय में रहते थे। इस मत से भी मिलता है

कि यह स्वामी रामानन्द के समकालीन थे ही नहीं। इनकी भक्ति की महत्ता के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की किंवदन्तियों का भी प्रचार है। आज भी इनके नाम पर संत पंथ का भी प्रचलन होना उल्लिखित किया जाता है। इनके जीवन से सम्बन्धित कुछ चामत्कारिक घटनाएँ भी साहित्य ग्रन्थों में उपलब्ध होती हैं।

कबीरदास—

संत कबीर का जन्म काल पन्द्रहवीं शताब्दी माना जाता है। अनन्तदास रचित श्री कबीर साहब जी की परिचयी, गोसाईं जी की वाणी, कबीर चरित्र बोध तथा अन्य ग्रन्थों में इनके जीवन से सम्बन्धित भिन्न तिथियाँ मिलती हैं। डा० हण्टर, विल्सन तथा वेस्कट आदि के मत से कबीर सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। जाति से कबीर जुलाहे थे और अनेक पदों में इस तथ्य का उल्लेख मिलता है। जनश्रुति यह कहती है कि इनका जन्म हिन्दू परिवार में परन्तु पालन पोषण मुसलमान परिवार में हुआ था। इनके पोष्य पिता का नाम नीरू अथवा नीरुद्दीन और माता का नाम नीमा बताया जाता है। जनश्रुति के ही अनुसार इनका जन्म काशी में तथा मृत्यु मगहर में हुई थी। गोरखपंथी योगियों के सम्पर्क से कबीर ने योगाभ्यास और ज्ञान की प्राप्ति की थी। इन्हीं के सान्निध्य के कारण कबीर ने आध्यात्मिकता के आकर्षण में पड़कर विरक्ति का अनुभव किया। कबीर रामानन्द के शिष्य किस प्रकार हुए इस विषय में भी किंवदन्तियों का प्रचार है। कुछ विद्वान कबीर का गुरु शेख तकी को मानते हैं जिसका उल्लेख खजानतुल आसफिया नामक ग्रन्थ में मिलता है। कबीर के काव्य में जो तत्व विवेचित हुए हैं उनका महत्व कबीर की आविर्भावकालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में विशेष रूप से है। कबीर ने अपने ज्ञान मार्ग में जिन सिद्धान्तों का अनुमोदन किया वह मुख्यतः हिन्दू धर्मशास्त्रों द्वारा अनुमोदित है। कबीर वचनावली के सम्बन्ध में भी भिन्न प्रकार के मतों का विवरण मिलता है। कबीर ने अपने काव्य में मुख्य रूप से धार्मिक आडम्बर का विरोध करते हुए निर्गुण मार्ग का समर्थन किया है। कबीर ने अपने काव्य में वास्तविक ज्ञान के प्रकाश के लिए अपने साधु गुरु का ही महत्व सर्वोपरि स्वीकारा है। इस सम्बन्ध में अनेक पदों का उल्लेख है जिनमें एक इस प्रकार है

राम मोहि सतगुर मिले अनेक कलानिधि परम तत्व सुखदाई।
काम अगिनि तन जरत रही है हरि रसि छिरकि बुझाइ॥
दरस परस तें दुरमति नासी दीन रटनि ल्यौ आई।
पाषंड भरम कपाट खोलिके अनभै कथा सुनाई॥
यहु संसार गंभीर अधिक जल को गहि ल्यावै तीरा।
नाव जहाज खेवइया साधू उतरे दास कबीरा॥

एक रहस्यवादी कवि के रूप में कबीर का स्थान हिन्दी काव्य में बहुत ऊँचा है। कबीर के काव्य में इतने गूढ़ और गम्भीर विषयों का विवेचन है जो सामान्य ज्ञान से

पड़ा है। स्थूल जीवन-तत्त्वों का जितना सूक्ष्म विवेचन कबीर ने किया है उतना अन्य किसी कवि ने नहीं। आध्यात्मिक विषयों का विवेचन करते हुए कबीर ने आत्मा-परमात्मा के सम्बन्ध पर विस्तार से विचार किया है। कबीर की लिखी हुई रमैनियों, सबदों तथा उलटबाँसियों आदि में भी गम्भीर अर्थ की निहिति मिलती है। आत्मा का विवेचन करते हुए कबीर ने उसका जो रूप वर्णित किया है वह अत्यन्त प्रतीकात्मक है। कबीर का मुख्य सिद्धान्त यह था कि जब तक मनुष्य की आत्मा प्रकाशित नहीं होती तब तक उसके जीवन में व्याप्त अज्ञान का अंधकार दूर नहीं होगा। कबीर की उलटबाँसियों में भी जो गूढ़ दार्शनिक सिद्धान्त सामान्य जीवन सन्दर्भों में मिलते हैं उनका इस दृष्टि से बड़ा महत्त्व है। कबीर के बीजक मूल से इस सम्बन्ध में एक उलटबाँसी इस प्रकार है :

अवधू वो तत रावल राता।
नाचै बाजन बाज बराता॥
मौर के माथे दुलहा दीन्हा।
अकथ जोरि कहाता॥
मड़ये के चारन समधी दीन्हा
पुत्र ब्याहिल माता।
दुलहिन लीपि चौक बैठारी
निर्भय पद परकाता।
भाते उलटि बरातिहिं खायो
भली बनी कुशलाता॥
पाणिग्रहण भयो भौ मंडन
सुषमनि सुरति समाना।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो
बूझो पंडित ज्ञानी॥

इस प्रकार से कबीर ने आध्यात्मिक विषयों को दुरूह चित्र अपने काव्य में दिया है। कबीर के काव्य में रहस्यात्मक तत्त्वों की प्रधानता का भी मूल कारण यही है कि कबीर ने अपनी कल्पनात्मक सामर्थ्य का उपयोग करते हुए चित्रात्मक और प्रतीकात्मक पदों की रचना की। कबीर के रहस्यवाद में मुख्यतः आत्मा और परमात्मा के पृथक्करण की स्थिति को प्रकट करने का प्रयास किया गया है। अन्तर की मोहजन्य भावनाएँ जब पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं तब मनुष्य ईश्वर अथवा ब्रह्म की परम सत्ता के प्रति आत्मिक समर्पण करता है। आत्मा का आत्म विस्मरण ही ब्रह्म में उसका विलीनीकरण है। कबीर द्वारा निर्दिष्ट प्रक्रिया के अनुसार व्यक्ति के आत्म विस्मरण की अन्तिम स्थिति यह है जब आत्मा और परमात्मा का एक रूप होता है। इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि कबीर का रहस्यवाद पूर्णतः अद्वैतिक भाव

ताओ और भक्ति युगीन अद्वैतवादी मत का सम्यक् समाहार रूप है। आत्मा और परमात्मा का एकीकरण और परमात्मा में आत्मा का विलीनीकरण इसकी चरम परिणति है। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि कबीर ने जिस निर्गुण ज्ञानमार्गीय भक्ति का प्रतिपादन किया वह धार्मिक आध्यात्मिक आधार पर आडम्बरविहीन है। कबीर का व्यक्तित्व और दृष्टिकोण इतना व्यापक और प्रभावशाली था कि कबीर के पश्चात् उनका एक सम्प्रदाय प्रारम्भ हुआ। उनके सम्प्रदाय के मुख्य समर्थकों में अनेक प्रसिद्ध निर्गुण कवि हुए जिनमें दादूदयाल, सुन्दरदास, गरीबदास और चरणदास आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कबीर के काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो उनके दृष्टिकोण के विविध पक्षों के स्पष्टीकरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

व दिन कब आवग भाइ।
जा कारनि हम देह धरी है
मिलिबौ अग लगाइ।
हौ जानू ज हिल मिल खेलू
तन मन प्रान समाइ
या कामना करौ परपूरन
समरथ हो राम राइ।
माहि उदासी माधो चाहै
चितवत रैनि बिहाइ
सेज हमारी सिंघ भइ है
जब सोऊ तब खाइ।
यहु अरदास दास की सुनिये
तन की तपति बुझाइ
कहै कबीर मिले ज साई
मिलि करि मगल गाइ।

\+ + +

मैं सासन पीव गाहनि आई।
साई सग साध नही पूगी
गयो जोवन सुपिना की नाई।
पच जना मिलि मण्डप छायो
तीनि जना मिलि लगन लिखाई
सखी सहेली मगल गावै
सुख दुख माथ हलद चढाइ।
नाना रग भावरि फेरी

गाठि जोरि बंठ पति ताई
पूरि सुहाग भया बिन दूल्हा
चौक के रंग धर्यो सगो भाई।
अपने पुरिष मुख कबहु न देख्या
सती होत समझी समझाई
कहै कबीर हूँ सर रचि मरिहौं
तिरौं कन्त ले तूर बजाई।

\+ \+

हम सब माहि सकल हम माहीं।
हम से और दूसरा नाहीं।
तीन लोक में हमारा पसारा
आवागमन सब खेल हमारा।
खट दरसन कहियत हम भेखा
हमही अतीत रूप नहीं रेखा।
हमही आप कबीर कहावा
हमही अपना आप लखावा।
झीनी झीना बीनी चदरिया।
काहे के ताना काहे के भरनी
कौन तार से बीनी चदरिया।
इंगला पिंगला ताना भरनी
सुखमन तार से बीनी चदरिया।
आठ कँवल दल चरखा डोले
पाँच तत्त गुन तीनी चदरिया।
साँई को सियत मास दस लागे
ठोक ठोक के बीनी चदरिया।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी
ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी
ज्यों की त्यों धरि दीनीं चदरिया।

रचना—

मत इनका का रचना-काल चौदहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है यद्यपि इनके जन्म और स्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कहा जाता है कि यह जाति के जुलाहे थे। परन्तु इन्होंने कभी भी आव ... नहीं की। इनके विषय में अनेक

किवन्तियां प्रसिद्ध है। जो इनकी आध्यात्मिक जीवन और इनके द्वारा प्रदर्शित भक्ति भाव को प्रकट करती है। आदि ग्रन्थ में इनका काव्य संग्रहीत है। अन्य संतों की भांति इन्होंने भी मुख्य रूप से आध्यात्मिक विषयों पर काव्य रचना की है। इनका काव्य का उदाहरण इस प्रकार है

एक बूंद जल कारने चातक दुख पावे।
प्रान गये सागर मिले पुनि काम न आवे ॥
प्रान जो थाके थिर नहीं कैसे बिरमाओ।
बूडि मुए नौका मिले कहु काहि चढ़ाओ ॥
मैं नाही कछु हौ नहीं कछु आहि न मोरा।
औसर लज्जा राखि लेहु सदना जन तोरा ॥

नालदेव—

भक्तियुगीन निर्गुण काव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत कुछ महिला संतों के नाम भी उल्लिखित किये जाते हैं जिनमें नालदेव एक हैं। ये रुक्माई के विवाहित और जाति की मेहतर थीं। इनकी धार्मिक भावना में मुख्य रूप से संत सिद्धान्तों की प्रधानता है। इनके पदों का एक संग्रह नलावायोग के नाम से उल्लिखित किया जाता है। इसीलिए इनका नाम नलावायोगिनी भी कहा जाता है। इनके पदों के अध्ययन पर यह ज्ञात होता है कि इनके विचारों पर नाथ मत का प्रभाव अधिक था। इनका रचना काल भी चौदहवीं शताब्दी ही अनुमानित किया जाता है।

धना—

संत धना का समय पन्द्रहवीं शताब्दी अनुमानित किया जाता है। यह जाति के जाट थे। कहा जाता है कि यह सननाई तथा रविदास के आध्यात्मिक सिद्धान्तों में समन्वय रखते थे। इनके पद भी आदि ग्रन्थ में संकलित है। इनका निवास-स्थान राजपूताना के टांक नामक स्थान के अन्तर्गत धवन गांव बताया जाता है। इनके काव्य में भी ईश्वर भक्ति से सम्बन्धित सामान्य और सरल भावनाओं की ही प्रधानता है।

वेणी—

निर्गुण काव्य प्रवृत्ति के अन्तर्गत संत वेणी का भी नाम उल्लेखनीय है जिनका रचना काल निश्चित नहीं है। इनके विषय में गुरु अर्जुनदेव के एक पद में भी उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि इनके विचारों पर नाथ सम्प्रदाय का विशेष प्रभाव है।

रविदास—

संत रविदास रामानन्द के बारह प्रधान शिष्यों में कहे जाते हैं। इनकी जाति चमार थी जिसका उल्लेख इन्होंने स्वयं किया है। संत धन्ना और मीराबाई के पदों में भी रविदास का उल्लेख मिलता है। कुछ विद्वान इन्हें साध सम्प्रदाय के प्रवर्तकों में भी बताते हैं जिसकी स्थापना वीरभान ने की थी जो रविदास के शिष्य उदयदास

के अनुगामियों में थे। संत रविदास को कुछ लोग कबीर का समकालीन भी बताते हैं। इनका रचना काल सोलहवीं शताब्दी अनुमानित किया जाता है। 'भक्तमाल' में भी इनका उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि महाराणा सांगा की पत्नी झालारानी इनकी एक शिष्या थी। अधिकांश संत कवियों की भांति रविदास भी अशिक्षित थे। इसीलिए उनकी भाषा मिश्रित है। इनके द्वारा चलाये गए एक पंथ का उल्लेख रैदासी पंथ के नाम से भी मिलता है जिसके मानने वाले विविध प्रांतों में मिलते हैं। संत रविदास के काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

माधव अविद्या अहित कीन तातें विवेक दीप मलीन ॥
मृग मीन भृंग पतंग कुंजर एक दोष विनास।
पंच दोष असाध जामहिं कौन ताकी आस ॥
जल थल जीव जहां तहां लौं करमवा संग जाय।
मोह पास अबद्ध बांध्यो करिये कौन उपाय ॥
त्रिगुण जानि अचल सभय पाप पुण्य समाय।
मानुषावतार दुलभ तिहू संगति पाय ॥
रैदास दास उदास तन भ्रम जप न तप गुरु ज्ञान।
भक्त जन भवहरन, परमानंद करहु निदान ॥

पीपा—

संत पीपा का उल्लेख श्री रामानन्दजी की शिष्य परम्परा में मिलता है। भक्तमाल के टीकाकार प्रियादास का लिखा हुआ 'पीपाजी की कथा' नामक एक काव्य भी इनके विषय में बताया जाता है। इनके समय के सम्बन्ध में फर्कुहर तथा कनिंघम आदि विद्वानों में मतभेद है। जनरल कनिंघम ने जतपाल सायनसिंह राजवंश की परम्परा में इनको रखा है। इनका रचना-काल भी पन्द्रहवीं शताब्दी के लगभग अनुमानित किया जाता है। इनका काव्य सर्व संग्रहों में संकलित है। इसके अतिरिक्त इनकी रचनाओं का एक संग्रह श्री पीपाजी की बानी शीर्षक से भी बताया जाता है। पीपा के काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

काया देवा काया देवल, काया जंगम जाती।
काया धूप दीप नैवेद्य काया पूजा पाती ॥
काया बहु खंड खोजन नव निद्धि पाई।
ना कछु आइबा ना कछु जाइबा राम की दुहाई ॥
जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजे सो पावै।
पीपा प्रनवै परम तत्व हो सतगुरु होय लखावै ॥

धर्मदास—

संत धर्मदास कबीर के समकालीन बताये जाते हैं। ये बांधवगढ़ के निवासी और जाति के वैश्य थे। भी इस्लाम के अनुगामी होने के पश्चात् यह कबीर से

दीक्षा लेकर उनके प्रमुख शिष्यों में मान्य हुए। इनका सबसे महत्वपूर्ण काम यह है कि इन्होंने कबीर के गूढ़ उपदेशों को साधारण और सरल भाषा शैली में समाज के रूप में जनसामान्य के सम्मुख रखा। इनका समय सोलहवीं शताब्दी अनुमानित किया जाता है। संत गरीबदास ने भी अपने वाणी ग्रंथ में धर्मदास का उल्लेख किया है। इनके विषय में यह भी उल्लेख मिलता है कि कबीर पंथी होने के पूर्व यह सगुण भक्ति के उपासक थे और कबीर से प्रभावित होकर ही इन्होंने अपना मत परिवर्तित किया था। संत तुलसी साहब लिखित घट रामायण नामक ग्रंथ में भी इनका उल्लेख मिलता है। कबीर से इनके विचारों में पर्याप्त साम्य मिलता है और कबीर के रहस्य वादी सिद्धांतों से भी इनके रहस्यवाद में पर्याप्त स्वच्छन्दता पायी जाती है। संत धर्मदास के काव्य का उदाहरण इस प्रकार है

सतगुरु आवो हमरे देस निहारो बाट खड़ी।
वाहि देस की बतियां रे लावें सन्त सुजान।
उन सन्तन के चरन पखारों तन मन करों कुरबान॥
वाहि देस की बतियां हमसे सतगुरु आन कही।
आठ पहर के निरखत हमरे नैन की नींद गई॥

कमाल—

संत कमाल कबीर के औरस पुत्र कहे जाते हैं। यह उनके शिष्य के रूप में भी कबीर मत का प्रचार करते रहे। कहा जाता है कि यह जाति के मुसलमान थे। इनके जन्म और कबीर के औरस पुत्र होने के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की किंवदन्तियों का प्रचार है।

नानक—

गुरु नानक सिक्खों के आदि गुरु के रूप में मान्य किये जाते हैं। इनके अनेक नामों का उल्लेख मिलता है जिनमें गुरु नानक, बाबा नानक, नानक शाह, नानकदेव, नानक पादशाह और नानक साहब आदि हैं। इनका जन्म सन् १४६६ में लाहौर के अन्तर्गत तलवंडी नामक स्थान में हुआ बताया जाता है। इनके पिता का नाम कालू एवं माता का तृप्ता कहा जाता है। यह जाति के खत्री थे और मुख्यतः कृषि कार्य करते थे। बाल्यावस्था के पश्चात इनके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हुआ और इन्होंने शिक्षा का परित्याग कर यह सत्संग एवं ज्ञान चिंतन करने लगे। इनके जीवन से सम्बन्धित अनेक प्रकार की किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं जो इनके महत्व का सूचन करती हैं। इनका विवाह सुलक्षणा की कन्या सुलखिनी से हुआ था जिससे इनके श्रीचन्द तथा लक्ष्मीचन्द (लखमीदास) नामक पुत्र हुए थे। कहा जाता है कि यह अपने बहनोई जय राम के प्रयास से सुलतानपुर के गवर्नर दौलत खां के यहां मोदी के रूप में भी रहे थे। इनका परमात्मा का दर्शन होने का भी उल्लेख मिलता है। श्री गुरु ग्रंथ साहब में इनकी रचनायें मिलती हैं। इनके उपदेशों में मुख्यतः एकेश्वरवाद से सम्बन्धित सिद्धांत

मिलते हैं। नानक जी के बाद इनका एक पंथ चला। इन्होंने अन्तिम समय में अपने शिष्य लहिणा को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया जो गुरु अंगद के नाम से विख्यात हुए। नानक के काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

सब कछु जीवत को ब्यौहार।
माता पिता भाई सुत बांधव अरु पुनि गृह की नार।
तन ते प्रान होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार।
आध घरी कोऊ नहिं राखै घर तें देत निकार॥
मृग तृस्ना ज्यों जग रचना यह देखो हृदै बिचार।
कहु नानक भजु राम नाम नित जाते होत उधार॥

अंगद—

गुरु नानक के पश्चात उनके द्वारा मनोनीत शिष्य लहिणा गुरु अंगद के नाम से उनकी गद्दी पर बैठे। अंगद के पिता का नाम फेरू और माता का नाम दयाकुमारी था। इनका समय सोलहवीं शताब्दी है। इनका विवाह खीवी से हुआ था जिससे इनके दातू तथा दासू नामक दो पुत्र भी थे। कहा जाता है कि गुरु अंगद बादशाह हुमायूं द्वारा भी सम्मानित किये गये थे। अंगद की रचनाएं ग्रंथ साहब में संकलित हैं। अंगद का लिखा हुआ एक दोहा उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

जामुख तामुख रागिया दुख भी सभाले आइ।
नानक कहै सियाणिये या कन्त मिलावा होइ॥

अमरदास—

गुरु अंगद के पश्चात गुरु अमरदास का नाम इस परम्परा में उल्लिखित किया जा सकता है। इनके पिता का नाम तेजभान तथा माता का नाम लखनकुमारी था। इनकी पत्नी मनसादेवी थी जिससे इनके मोहरी तथा मोहन नामक दो पुत्र तथा दानी एवं भानी नामक दो पुत्रियाँ हुई थीं। कहा जाता है कि इनके दर्शन करने बादशाह अकबर भी आये थे। इनकी पुत्री भानी का विवाह हरिदास खत्री के पुत्र जेठा से हुआ था। जेठा इनकी भक्ति भावना से बहुत प्रभावित हुए और इनके पश्चात इनकी गद्दी पर रामदास के नाम से बैठे। गुरु अमरदास की रचनाओं में 'आनन्द' नामक कृति विशेष रूप से प्रसिद्ध है। गुरु अमरदास की भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है

तू आपे आप सभु करता कोई दूजा होइ सु औरो कहिए।
हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि।
आपे जलि थलि रवि रहिए।
हरि आपे मारै हरि आपे छोडै मन हरि सरणि पड़ि रहिए।
हरिबिनु कोई मारि जीवालि न सकै।
मन मेरे निचिंद निसचिंतु होइ रहिए।

उठदिया बहदिया गुनिया गन हरि नाम समाइग।
जन नानक गुर मुग हरि नहि।

रामदास—

गुरु रामदास का जन्म सन १५ ४ म हुआ था। [illegible] गुरु [illegible] महत्व तथा अजन न नाम उ [illegible] [illegible] दास न सबस योग्य और भक्ति म निष्ठा रखन वाला जानकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। सन १५८१ म गुरु रामदास का स्वगवास हुआ। प्रसिद्ध ग्रन्थ साहिब म गुरु रामदास की रचनाए उपल ध होती है। [illegible] काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

हौं क्या सालाही किरम जन्तु वडी तरी वडिआई।
तू अगम दयालु अगम्मु है आपि लहि मिलाई।
मैं तुझ बिन बेली को नाही तू अति सखाई।
जो तेरी सरणागती तिन लए छडाई।
नानक वेपरवाहु है तिसु तिल न तमाई।
सगति सन्त मिला हरि सरि निरमलि नाय।
निरमलि जल नाय मनु गवाय भये पवित्र सरीरा।
दुरमति मन गई भ्रम भागा हौ म बिनठा पारा।
निरदरि प्रभु सत सगति पाए निज घर हा आवासा।
हरि मगन रगि रसन रसाय नानक नाम प्रगासा॥

अजनदेव—

गुरु अजनदेव का जन्म सन १५६३ म हुआ था। इनक जीवन क विषय म अनक किंवदंतिया प्रसिद्ध हैं जो बाल्यावस्था म ही इनकी ईश्वर भक्ति म निष्ठा की द्योतक हैं। इनका विवाह किशनचद की पुत्री गगा से हुआ था। इनक पुत्र का नाम हर गोविन्द था। गुरु अजनदेव न एक महत्वपूण काय यह किया कि अपन पूववर्ती सभी गुरुओ की रचनाओं का सकलन किया। य जीवन भर अनक प्रकार क षडय त्रो क भी शिकार रह और इन्ह अनेक पीडाए सहन करनी पडी। अ तत हरगोबिन्द को अपना उत्तराधिकारी घोषित करन क पश्चात सन १६०६ म उन्होंने अपन प्राण छोड। गुरु अजनदेव की प्रसिद्ध कृतियो म सुखमनी का नाम विशष रूप स उल्लखनीय है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

गावहु राम के गुण गीत।
नाम जपत परम सुख पाइय आवागवणु मिट मरे मीत।
गण गावत होवत परगास चरण कमल मह होय निवास।
सत सगति मह होई उधार नानक भव जल उतरसि पार।

हरगोविन्द—

गुरु हरगोविन्द का जन्म सन् १५९५ में हुआ था। अपने पूर्ववर्ती गद्दी अधिकारी के साथ हुए कठोर व्यवहार तथा रचित षडयंत्रों के कारण इनके समय तक सिक्खों में पर्याप्त रोष की भावना जाग्रत हो गयी थी। इसीलिए विशुद्ध धार्मिक भावनाओं के स्थान पर अब कुछ लोग हिंसा वृत्ति में संलग्न होने लगे थे। इसलिए सिक्खों के स्वर्ण मन्दिर में एक अकाल तख्त की स्थापना इनके समय में की गयी और पवित्र धर्म-ग्रन्थ तथा गुरु की रक्षा के लिए पचास प्रधान रक्षकों की नियुक्ति किया गया। गुरु हरगोविन्द की दामोदरी तथा नानकी नामक दो पत्नियाँ थीं जिनमें प्रथम से गुरुदित्ता तथा द्वितीय से तेगबहादुर का जन्म हुआ। गुरुदित्ता के हरराय नामक पुत्र हुए जो इनके पश्चात् गद्दी पर बैठे। इनका स्वर्गवास सन् १६४४ में हुआ था।

हरराय—

गुरु हरगोविन्द के पश्चात् गुरु हरराय उनकी गद्दी पर बैठे। इनका जन्म सन् १६३० में हुआ था। इनके विषय में जो विवरण उपलब्ध है उससे यह ज्ञात होता है कि यह बचपन से ही ईश्वर भक्ति की वृत्ति रखते थे। कहा जाता है कि किसी कारण से अपने पुत्र रामराय से रुष्ट होने के कारण इन्होंने उसके स्थान पर हरकृष्ण राय को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। इनका स्वर्गवास सन् १६६१ में हुआ था।

हरकृष्ण राय—

गुरु हरराय के पश्चात् गुरु हरकृष्ण राय गद्दी पर बैठे जो उनकी पत्नी कृष्ण कुँवर से उत्पन्न हुए थे। इनका जन्म सन् १६५ में हुआ था। केवल पाँच वर्ष की छोटी अवस्था में ही यह गद्दी पर बैठे थे। औरंगजेब के आमंत्रण पर जब यह उससे मिलने के लिए दिल्ली की ओर जा रहे थे तो मार्ग में ज्वरग्रस्त हो जाने के कारण सन् १६६४ में इनका स्वर्गवास हो गया।

तेगबहादुर—

गुरु तेगबहादुर गद्दी पर सन् १६६५ में बैठे थे। कहा जाता है कि इनके भाई धीरमल तथा अन्य अनेक व्यक्ति इनसे द्वेष रखते थे और इनकी हत्या तक करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते थे। यह भी बताया जाता है कि इनकी भेंट भ्रमण काल में सन्त मलूकदास से भी हुई थी। आगे चलकर यह औरंगजेब द्वारा बन्दी बना लिए गये थे तथा सन् १६७५ में इनका स्वर्गवास हो गया था। गुरु तेगबहादुर की रचनाएँ गुरु ग्रन्थ साहिब में संगृहीत हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

प्रानी नारायन सुधि लेहु।
छिनु छिनु औधि घटै निसि बासुर वृथा जात है देहु।
तरुनापो बिखियन स्यों खोयो बालापन अग्याना।
बिरध भयो अजहूं नहि समझै कौन कुमति उरझाना।

मानुस जन्म लियो जहि ठाकुर ना । वृथा विरगाया ।
मुकति होति नर जाते सुमिरे निमख न ताका गाया ।
माया को भ्रम कहा करतु है गम न गाहू नाई ।
नानक कहत चेतु चिंतामणि होइ न अंत सहाई ॥

गोविन्द सिंह—

गुरु गोविन्द सिंह की प्रसिद्धि भारतीय इतिहास म और कारणों से है। राष्ट्र जाति व क्षेत्र म विद्यमान परिस्थितियों और उनका ध्यान हुए गुरु गोविन्द सिंह के महत्वपूर्ण कार्यों ने भी उन्हें प्रसिद्धि दी। गुरु गोविन्द सिंह के पहली पत्नी से अजीत सिंह नामक पुत्र ने जन्म लिया। इनकी दूसरी पत्नी से जोरावर सिंह तथा जुझार सिंह जन्मे। इनका एक और पुत्र फतह सिं० इनकी तीसरी पत्नी से उत्पन्न हुआ। गुरु गोविन्द सिंह ने अपने समय म अनेक बार औरंगजेब की सेनाओं से भीषण युद्ध किया। इनके जुझार सिंह तथा फतेह सिंह नामक पुत्रों को - और ७ वर्ष की अवधि म दीवार म चिनवा दिया। इनके शेष दो पुत्र भी युद्ध म वीरगति को प्राप्त हुए। गुरु गोविन्द सिंह की कृतियों म सन्त सिंह द्वारा संकलित दसवां पातशाह का ग्रन्थ प्रसिद्ध है। गुरु गोविन्द सिंह का स्वर्गवास सन १७०८ म हुआ था।

बन्दा बहादुर—

गुरु गोविन्द सिंह के पश्चात् इस परम्परा म वीर बन्दा बहादुर का नाम उल्लेखनीय है जिनका पूर्व नाम लक्षमणदेव था। इनका जन्म सन १६७० म हुआ था। गुरु गोविन्द सिंह ने इन्हें गुरुबख्श सिंह नाम दिया था किन्तु यह अपनी शूरवीरता के कारण बन्दा के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके समय तक सिक्खों म बहुत वैमनस्य की भावना आ चुकी थी और उनकी एकता नष्ट होने लगी थी। सिक्ख धर्म के अन्तर्गत अन्य भी अनेक प्रकार के सम्प्रदाय चले। इनके प्रवर्तकों और समर्थकों म गुरु नानक के पुत्र श्रीचन्द पृथीचन्द हन्दाल रामराय बीर सिंह राम सिंह सुथरा शाह गुलाब दास दयाल दास आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त सन्त जगन्नाथ सन्त शेख फरीद सन्त सिंगाजी तथा सन्त भीखन आदि के नाम भी यहां उल्लिखित किये जा सकते हैं।

दादू दयाल—

भक्ति युगीन निर्गुण काव्य प्रवृत्ति के अन्तर्गत सन्त दादू दयाल का नाम विशेष रूप से उल्लिखित किया जाता है। इनका जन्म सन १५४४ म अहमदाबाद म हुआ था। मुहसन फनी विल्सन ताराचन्द्र गैरोला स्वामी दयानंद सुधाकर द्विवेदी तथा क्षितिमोहन सेन आदि विद्वानों म इनकी जाति और पैतृक व्यवसाय के सम्बन्ध म मतभेद है। इनके गुरु का नाम बुड्ढन बताया जाता है। कुछ लोग इन्हें कबीर के पुत्र कमाल का शिष्य बताते हैं। इनके दो पुत्र गरीबदास और मिस्की दास तथा दो

पुत्रिया नानाबाई और माता बाई का भी उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि इनकी अकबर से भी भेंट हुई थी। इनकी प्रसिद्ध कृतियां म अनभय वाणी तथा कायावेलि हैं। दादू दयाल के भक्ति नान आध्यात्म याग माया ब्रह्म आदि विषयों से सम्बन्धित सिद्धान्ता का कबीर की विचारधारा म पर्याप्त साम्य मिलता है। इन्होंने स्वयं अपनी रचनाओं म कबीर का उल्लेख बडे आदर से किया है। इनके पश्चात इनका एक पथ स्वतन्त्र रूप म दादू पथ के नाम म प्रचलित हुआ। इनके अनेक शिष्य थे जिनमें सुन्दर दास (ज्येष्ठ) सुन्दर दास (कनिष्ठ) जगजीवनदास गरीबदास रज्जबदास हरदास जन गोपाल चित्रदास बखना बनवारी जगजीवन छीतम और विशनदास आदि के नाम विशेष रूप म उल्लेखनीय हैं। इनमें से सुन्दरदास ने ज्ञान समुद्र तथा सुन्दर विलास नामक दो ग्रन्थों की रचना की थी। रज्जबजी ने सर्वांगी नामक कृति की रचना की थी। दादू के काव्य म मुख्य रूप से ईश्वर भक्ति सत्संग महिमा, साम्प्रदायिक समन्वय निमन्त्रण आदि विषयों का समावेश मिलता है। दादू दयाल के काव्य का एक उदाहरण नाचे प्रस्तुत किया जा रहा है

मालिक महरबान करीम
गुनहगार हर राज हर दम, पनह राखि रहीम ॥
अव्वल आखिर बन्दा गुनही, अमल बद बिसियार।
गरक दुनिया सितार साहिब दरबद पुकार ॥
फरामोस नेकी बदी करद बुराई बद फैल।
बसखिद तू अजाब आखिर हाजिर सैल ॥
नाम नेक रहीम राजिक, पाकपरवरदिगार।
गुनह फिर करि देहु दादू तलब दर दीदार ॥

रज्जब साहब—

सन्त रज्जब साहब दादू दयाल के प्रमुख शिष्य थे। इनका जन्म सम्वत् १६१० म हुआ था। यह जाति के पठान थे। दादू दयाल से भेंट होने के पश्चात इन्हें जीवन से विरक्ति हो गयी थी। इनकी मृत्यु के पश्चात इनका एक पृथक सम्प्रदाय चल पडा था। इनकी रचनाओं म वाणी तथा सर्वांगी ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है। इनका मृत्युकाल सम्वत १७४६ बताया जाता है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

मीन ममु न ठाहर हुआ पन अगस्त।
रज्जब रीता सिंह सा जहां पर दम हस्त ॥
जब रज्जब घण जोन मन लघुदारपन विशेष।
पैठ पन्नग पयाल प्रथ माया दृष्ठ ॥
श्रवण नैन मुख नासिका मदिवनावणाहार।
रज्जब पाद पथ का प्राण पिंड व्यवहार ॥

१६८२ बतायी जाती है। इनके पिता का नाम बाबा श्यामसुन्दरदास कहा जाता है। कुछ लोग उनका नाम लाला सुन्दरदास और कुछ लाला सुन्दरदास ही बताते हैं। इनकी जाति भी विभिन्न लोग ब्राह्मण और खत्री पृथक पृथक मानते हैं। कहा जाता है कि बाल्यावस्था में ही मलूकदास के हृदय में भगवद्भक्ति के प्रति अनुराग था। उनकी दानशीलता की ओर यथेष्ट प्रसिद्ध है। बचपन से ही उनकी इस प्रकार की भावनाओं को देखकर उनके माता पिता चिन्तित हो गये। परन्तु साथ ही कुछ साधुओं ने उसी समय उनके उत्तम भविष्य की घोषणा की थी। उनके गुरु महात्मा विट्ठलदास बताये जाते हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में उनका निर्देशन गुरु मुरार स्वामी ने किया। मथुरादास की परिचयी में उनकी गुरु परम्परा के अन्तर्गत विट्ठल नाविक देवनाथ तथा भवनाथ आदि का उल्लेख मिलता है। यह भी अनुमान किया जाता है कि १२ वर्ष की अवस्था के पश्चात मलूक का विवाह हुआ था। उनके एक पुत्री भी उत्पन्न हुई थी। परन्तु इनकी पत्नी और पुत्री दोनों का ही देहान्त हो गया था। पिता की मृत्यु के पश्चात इन्होंने अपना पैतृक व्यवसाय करने का प्रयत्न किया परन्तु उसमें इनका मन न रमा। परोपकार और परसेवा ही इनका प्रमुख कार्य था। जीवन के अन्तिम काल में ही मलूकदास ने अपना अधिकाश अप्ठ पा य रखा। अन्तत अनेक साधु संतों की उपस्थिति में मलूकदास ने सन १६८२ में अपना शरीर छोड़ा। संत मलूकदास की प्रसिद्ध कृतियों में ज्ञान बोध, रतनखान, भक्त बच्छावली, भक्ति विवेक, ज्ञान परोछि, बारहखड़ी, रामअवतार लीला, ब्रज लीला, ध्रुव चरित्र, विभय विभूति तथा सुखसागर आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनकी मृत्यु के पश्चात मलूकदासी सम्प्रदाय के नाम से एक पृथक मत चला। रामसनेही आदि साधुओं ने इसका विशेष प्रचार किया जिसे मलूकदास ने अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। रामसनेही के अतिरिक्त मलूकदास के शिष्यों में दयालदास, सुथरादास, पूरनदास, लालदास आदि शिष्यों के नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। संत मलूकदास के काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

राम नाम दोउ बसे सरीरा। जस घृत रहे मध्य छीरा॥
जैसे रहै तिल में तेला। तस राम सकल घट येना॥
जस सुमन मा रहे बस बासी। तस राम सकल घट पासी॥
जैसे धरती के बिच पानी। तैसे राम सकल घट जानी॥
जस दरपन में परछाहीं। तस राम सकल घट माहीं॥

\+ | +

हमरे गुरु की अद्भुत लीला न कछु खाय न पीवे।
ना वह सोवे ना वह जागे ना वह मरे न जीवे॥
बिन पावन उड़ि जाय अकास बिन पखन उड़ि आय॥
बिन पायन सब जग फिरि आवे सो मेरा गुरु भाई॥

गज न काज बावर हरि गज प्रहारा ।
गवहि त रावन गया पाया दुख भारा ॥
जरन खुरो रघुनाथ क मन नाहि माना ।
जा क जिय अभिमान ह ताका तोरन छाना ॥
एक दया और दीनता, त राहिए मा ।
चरन गहा जाय साध क, रीझ रघुराइ ।
यहा बड़ा उपज्ञ है पद्राह न करिय ।
कहैं मलूक हरि सुमिर क, भौसागर तरिय ॥

अक्षर अनन्य—

सन अक्षर अनन्य का जन्म सन १६८७ म हुआ था। यह मनुष्य क राजा पच्चीचन्द क दीवान थ । आग चनकर य जावन म विरक्त हा गय थे और पना म जाकर रहन लग थ । कहा जाता है कि महाराज छत्रसाल इनक शिष्य हा गय थ । ज्ञान और भक्ति विषयक इनक सिद्धान्त बड़ उच्च कोटि क हैं । इनकी कृतिया म नाद याग विज्ञान याग ध्यान याग विवक दापिका ब्रह्म ज्ञान तथा अनन्य प्रकाश आदि कृतिया विशप रूप स उल्लखनीय हैं ।

जगजीवन दास—

सत जगजीवन दास नाम क प्रसिद्ध साधु सतनामी सम्प्रदाय क अन्तगत हुए थ । इनका जन्म सन १६८२ म बाराबकी जिल म हुआ था । यह जाति क ठाकुर थ । इनक गुरु काशी निवासी विश्व वरपुरी थ । कुछ लाग इन्ह बुल्ला साहब और गाविन्द साहब का शिष्य बतात हैं । गुलाल साहब का परम्परा म भी इनका उल्लख किया जाता है । इनक प्रसिद्ध कृतिया म शब्दसागर ज्ञान प्रकाश आगम पद्धति महाप्रलय प्रम ग्रथ तथा अघविनाश आदि क नाम विशप रूप म उल्लखनीय हैं । जगजीवनदास क नाम स ही दा अन्य सत कवि भी उल्लिखित किय जात हैं जिनम जगजीवन शाह पथी तथा जगजावन निरजनी हैं । इनक काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

अर मन समुझि कर पहिचान ।
का त अहसि कहा त आयसि काह मम भुलान ॥
सुधि सभारि विचारि करिक वृक्ष पाठिन ज्ञान ।
नान यह दुई धारि हिन का अइन नहि अस्थान ॥
साथ गउ यह काह काया कहिन माया खान ।
लाग सबर कब काउ नहि हाया सबका ध्यान ॥
घबराहि कबहु हा नहि आइ नाम निरवान ।
जगजावन सतगुरु राखि है सदा रहु नपदान ॥

लालदास—

संत लालदास का जन्म सम्वत् १५९७ और मृत्यु सम्वत् १७०५ में हुई थी। ये अलवर राज्य के धौलीधूप ग्राम में रहने थे। निर्धनता के कारण लकड़ी बेचकर अपनी जीविका चलाते थे। बचपन से ही इनकी रुचि धार्मिक कार्यों की ओर थी। फकीर गदन चिश्ती की मजार पर ... अपने सिद्धान्तों का प्रचार करना आरम्भ किया। गृह त्याग कर केवल उपदेश कार्य ही करने लगे। जीवन में ... और ... का सामना करना पड़ा। इनके ... पुत्र ... तथा पुत्री ... का भी उल्लेख मिलता है। इनके काव्य का एक संग्रह लालदास की वाणी ... में उद्धृत किया जाता है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

लालजी भगत भीख ना मांगिये मांगत आवै शरम।
घर घर डोलत दुख है क्या बादशाह क्या हरम॥
लालजी साधु ऐसा चाहिए धन कमाकर खाय।
हिरदे हरि की चाकरी पर घर कभूं न जाय॥
लालजी हक खाइए हक पीइए हर की करो फरोह।
इन बातों साहिब खुशी बिरले काय॥

प्राणनाथ—

संत प्राणनाथ का जन्म सम्वत् १६७५ में हुआ था। यह काठियावाड़ के निवासी थे। इनकी जाति क्षत्रिय बतायी जाती है। अनेक प्रदेशों का भ्रमण करने के पश्चात् यह पन्ना में जाकर रहने लगे जहां पर महाराज छत्रसाल इनके शिष्य बन गये थे। इनका धर्म विषयक ज्ञान बहुत विस्तृत था और विभिन्न भाषाओं और विभिन्न सम्प्रदायों के धार्मिक सिद्धान्तों की अवगति इन्हें थी। कहा जाता है कि कलजमेशरीफ शीर्षक एक ग्रन्थ इन्होंने फारसी में लिखा था जो अब भी उपलब्ध है। प्राणनाथ के अन्य ग्रन्थों में प्रकट बानी, ब्रह्म ज्ञानी, बीसा गिरोहा का बाब, बीस गिरोहा की हकीकत, कीर्तन, प्रेम पहेली तारतम्य तथा राज विनोद आदि ग्रन्थ हैं। अपनी पत्नी के साथ संयुक्त नयन में ... हान पदावली शीर्षक रचना भी प्रस्तुत की थी। इनके विषय में नागरी प्रचारणी सभा की खोज रिपोर्टों एवं इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया आदि में भी सूचनाएं प्राप्त होती हैं। महातारियान शीर्षक एक अन्य ग्रन्थ भी इनका लिखा हुआ बताया जाता है। प्राणनाथ के मत का इनके जीवन काल में बहुत प्रचार हुआ। उन्होंने एक नवीन मत का भी प्रवर्तन किया जो धामी पंथ के नाम से विख्यात हुआ। इनके प्रधान भक्तों में पंचम सिंह और जीवन मस्ताने थे। इनमें से पंचम सिंह ने कुछ सवैया की तथा जीवन मस्ताने ने पचक दोहों की रचना की थी। प्राणनाथ का स्वर्गवास सम्वत् १७५१ में हुआ।

बाबा लाल—

संत बाबा लाल मालवा प्रदेश के निवासी थे और इनकी जाति क्षत्रिय थी।

यह अद्गार के समकालीन बताये जाते हैं। इनके गुरु का नाम चनन स्वामी था। इनके जीवन से सम्बन्धित अनेक चामत्कारिक घटनाओं का विवरण किंवदंतियों के रूप में उपलब्ध होता है। कहा जाता है कि इन्होंने नासिहनिवात नामक एक फारसी ग्रन्थ की भी रचना की थी। मौलाना रूम के सिद्धान्तों का इनपर पर्याप्त प्रभाव था। इनके सिद्धान्तों का इनके स्वर्गवास के पश्चात् कुछ समय तक प्रचार रहा। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

जाके अन्तर ब्रह्म प्रनान घर मौन भाव गाव गीत।
निसदिन उनमन रहित कुमार, शब्द सुरत जुड़ एकतार॥
कहा भीतर स्वास है स्वास भीतर जाव।
नाव भीतर वासना किस विधि पावे पीव॥

साध सम्प्रदायी संत—

साध सम्प्रदाय के अन्तर्गत संत जोगीदास संत बीरभान तथा संत ऊदा दास आदि का उल्लेख किया जाता है। इस सम्प्रदाय का प्रवर्तन काल सम्वत् १६०० के लगभग माना जाता है। संत बीरभान की रचनाएँ बानी में संगृहीत हैं। जोगीदास का लिखा हुआ एक ग्रन्थ आदि उपदेश शीर्षक से भी उल्लिखित किया जाता है। इस सम्प्रदाय की अन्य विशिष्ट रचनाओं में निर्वान ज्ञान पोथी तथा साध पंथ आदि हैं।

हरिदास—

संत हरिदास का नाम सत्रहवीं शताब्दी में माना जाता है। यह निरंजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक के रूप में बताये जाते हैं। हरिदासजी हरिपुरुष के नाम से भी उल्लिखित किये जाते हैं जिनकी रचनाएँ हरिपुरुष जी की वाणी के नाम से प्रसिद्ध हैं। निरंजनी सम्प्रदाय के अन्य प्रसिद्ध कवियों में निपट निरंजनी तथा भगवानदास निरंजनी भी बताये जाते हैं। हरिदासजी के काव्य का उदाहरण इस प्रकार है

नहिं स्वाद सूं यारी नहिं स्वाद स्यूं प्रीति।
विरतम तजि गावि न भगा यह साधा की रीति॥

बावरी साम्प्रदायिक संत—

संत बावरी साहिबा संत मायानन्द की शिष्या थीं। मायानन्द के पूर्व बावरी पंथ प्रवर्तकों में रामानन्द (द्वितीय) तथा दयानन्द के नाम बताये जाते हैं। संत बावरी साहिबा की भक्ति निश्छल और सरल भावनाओं से युक्त थी। इनके प्रधान शिष्यों में बीरू का नाम लिया जाता है। इनके गुरु भाई सूफीशाह भी बताये जाते हैं जिनकी रचनाएँ शाहफकीर के नाम से उल्लिखित की जाती हैं। इनकी एक रचना दस्सार के नाम से भी प्रसिद्ध है। इन्हीं के समय में ही जगजीवनदास का भी उल्लेख किया जाता है। भीखा साहब और हरिलाल साहब भी इसी शिष्य-परम्परा में थे। भीखा साहब की रचनाओं में राम कुंडलिया राम सहस्र नाम राम स्वरू

रास राग, राम कवित्त तथा भगतबछावली आदि प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त इनका काव्य भीखा साहब की बानी नीरज में भी मिलता है। इन संतों के अतिरिक्त इसी सन्दर्भ में संत हरलाल साहब, गोविन्द साहब, पलटू साहब, जानकीनाथ गुलाल साहब, यारी साहब आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन संत कवियों की कुछ प्रसिद्ध रचनाएं इस प्रकार हैं

समधि बूधि रन चढ़ना साधो खूब लड़ाई लड़ना है।
दम दम कदम परे आगे का पीछे नाहिं पछरना है॥
तिल तिल घाव लगे जो तन में घन सेती क्या टरना है।
सबद खैंचि समसेर जेर करि उन पाँचो को धरना है॥
काम क्रोध मद लोभ कद करि मन कर ठौरे मरना है।
खड़ा रहै मैदान के ऊपर उनकी चोट सम्हरना है॥
आठ पहर असवार सुरत पर गाफिल नाहीं परना है।
सीस दिहा साहिब के ऊपर फिकरा डर अब डरना है॥
पलटू बिना इश्क के ऊपर अब क्या दूसर करना है॥ (पलटू साहब)

— — —

दीजै दो प्रभु बास चरन में मन अस्थिर नहिं पास।
हौं सठ सठा जीव को बाचा नहिं समान उर सास॥ (भीखा साहब)

— — —

भक्ति परकासित कहिय भवना साहु कहा अधिकारी।
का पतिव्रता को अन्तर ता का बिभचारी वारी॥
पवन नीर पवन जल कहिय को अमृत को खारी।
का है रूप गंगाजल का है का है सलिल उबारी॥
का है कीट पतंग कौन है को है नृपति भिखारी।
का है बिऊना हरित पवन है का जनम का मारी॥
कहु गुलाल यह यूनि धका जिव निरखत को निरखारी।
सतगुर कृपा संत सरनागति भवसागर तें उबारी॥ (गुलाल साहब)

— — —

बावरी रावरी का कहिये मन ह्वै कै पतंग भर नितभ भावरी।
भावरी जानहिं संत सुजान जिन्ह हरिरूप हिये दरसावरी॥
सावरी सूरत मोहनी मूरत दे करि ज्ञान अनन्त लखावरी।
खावरी सौ है तेहारी प्रभू गति रावरी देखि भई मति बावरी॥ (बावरी साहिबा)

— — —

हमारा एक अनहद पिय प्यारा है।
घट घट नूर मुहम्मद साहब जाका सकल पसारा है॥

चौन्ह तबक जाकी रुमनाई झिलमिल जोति मिनारा है।
बेचमून बेचून अकना हिन्दू तुर्क म यारा है॥
साइ दरवस दरस निज पायो माई मुमनम सारा ह।
आव न जाय मर नहि जीव यारी यार हमारा है॥ (यारी साहब)

अन्य साम्प्रदायिक सत—

उपर्युक्त सत कवियों के अतिरिक्त मत न्रियान्ास मत रामचरण दास मत चरणदास मत दूलन दास मत गरीबन्ास मत परसुराम न्वाचार्य मत बाबा रामचन्द्र आन्नि भी हुए। बाबा रामचन्द्र सीतारामी सम्प्रन्ाय के प्रवतक थे। इनकी प्रसिद्ध रचना चरण चन्द्रिका नाम स उपलब्ध होती है। न्नक शिष्य बाबा रघुनिधन्ास थे। मत दीयान्ास तथा सत शिवनारायण आदि भी इस शाखा परम्परा म उल्लिखित किय जा सकते हैं। जगजीवन दास की शिष्य परम्परा म दूला न्ास, दवीन्ास गुसाईंन्ास खमन्ास, एव उपाध्याय चमार आन्नि हैं। सिद्धान्ास पन्वानन्ास पासीन्ास बालकन्ास अगरन्ास अगरमान दास अजबन्ास आन्नि क नाम भी न्सी सन्भ म उल्लिखित किय जा सकते हैं। इन सतो की रचनाओ क कुछ उन्नाहरण न्स प्रकार है

मन मगन भया जब क्या गाव।
ये गुन इन्द्रीदमन करेगा वस्तु अमानी सो पाव॥
तिरलोकी की इच्छा छान्न जग म विचर निर्भव॥
उलटी सुलटी निरति निरन्तर बाहर म भीतर न्याव॥
अधर सिहासन अविचल आसन जहा सुरति ठहराव॥
त्रिकुटी महल म सज बिछी है द्वान्स अन्न्र छिप जाव॥
अजर अमर निज मूरत सूरत ओअ साह दम ध्याव॥
सकल मनोरथ पूरन साहिब कन्नरि जहा मौजन जाव॥
गरीबन्ास सतपुरुष बिदेही, साचा सतगुरु दरसाव॥ (गरीबदास)

— — —

मुझ कृष्ण से मिलन की आरजू है।
सदा रोज न्नि म मेरी जुस्तजू है॥
नहीं भाती हैं मुझको बातें किसी की।
सुना जब स उस यार की गुफ्तगू है॥
नहीं मुझको मतलब जहाँ म किसी स।
चुभा जब स न्नि म सनम खूबरू है॥
जो आशिक है उसको नहीं उसम गाफिल।
तड़पना अबस स सदा न्बरू है॥
सराके मुहब्बत पिई जिसने यारा।

हुआ दा जहा म वो ही सुखरू है ॥
सभी आशिको ने लिया वस तू ।
मुआसी न तेरा रहा ज़िन रजू है ॥
जहा देख रनजीत वही है व हाजिर ।
हर एक गुल म उसकी मिली खुशबू है ॥ (चरनदास)

दरियादास—

दरियादासी साम्प्रदायिक सन्तो म दरिया दास का नाम भी उल्लेखनीय है। दरियादास नाम के दो सन्त हुए बताये जाते हैं। इनम स एक दरियादास (प्रथम) बिहार के रहने वाले थे और सन्त दरियादास (द्वितीय) मारवाड़ के रहने वाले। उन्हें दरिया साहब भी कहा जाता है। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत अन्य भी अनेक प्रसिद्ध सन्त हुए जिनमे दलदास का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पानपदास—

सत पानपदास का जन्म सम्वत १७७६ म हुआ था। इनके मत के अनुयायी पानपपंथी कहलाते हैं। कहा जाता है कि यह बीरबल के वश म जन्मे थे। इनका बचपन बड़े कष्टो म व्यतीत हुआ था। भगवन सेवा म अनुरक्ति के कारण इन्होने अपने गुरु मगनीराम से दीक्षा ली थी। गुरु की आज्ञा से ही इन्होंने धर्मोपदेश का कार्य आरम्भ किया और प्रचारार्थ विभिन्न स्थानो का भ्रमण भी किया। इनकी रचनाए वाणी ग्रन्थ म सगृहीत है। इनका स्वर्गवास सन १८ ० म हुआ था। इनकी शिष्य परम्परा म मनोहरदास बालादास बूलमराम तथा बुद्धिराम आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

रामचरन—

सत रामचरन का नाम रामसनेही साम्प्रदायिक सन्तो म विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका जन्म सम्वत १७७६ म हुआ था। यह सतराम के नाम से भी प्रसिद्ध है। इनकी रुचि भगवत भक्ति की ओर होने के सम्बन्ध म कुछ किवदन्तिया प्रसिद्ध है। इन्होने अपने गुरु कृपाराम से दीक्षा ली थी। इनका स्वर्गवास सन १८५४ म हुआ था। इनकी विशिष्ट कृतियो म नाम गुरु महिमा नाम प्रताप शब्द प्रकाश अणभय विलास अमृत उपदेश जिज्ञासा बोध विश्वास बोध विश्रामबोध समता निवास रामरसायन बोध चिन्तामणि मन खन्डन शब्द तथा सुख सागर आदि विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

दीन दरवेश—

सन्त दीन दरवेश का निवास स्थान पाटन बताया जाता है। इनका समय १८वी शताब्दी बताया जाता है। यह सूफी मार्गी थे। और अनन्तर निगुण भक्ति सम्प्रदाय म आये थे। इनका शास्त्रिक ज्ञान बहुत कम था। कहा जाता है कि सत्य तत्व की खोज

शिवदयाल—

संत शिवदयाल का जन्म संवत् १८८५ में हुआ था। ये आगरे के निवासी थे। यह राधास्वामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक कहे जाते हैं। इनके विचारों पर तुलसी साहब के सिद्धान्तों का प्रभाव बताया जाता है। इनके विशिष्ट शिष्यों में रायबहादुर शालिग्राम हैं जो हुजूर साहब के नाम से प्रसिद्ध हैं। हुजूर साहब के ग्रन्थों में प्रेमबानी और जगतप्रकाश के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पं० ब्रह्म शंकर मिश्र ने भी इस सम्प्रदाय की व्याख्या की है।

अन्य संत—

उपर्युक्त साम्प्रदायिक संतों के अतिरिक्त अन्य भी अनेक संत हुए हैं। इनमें नागी सम्प्रदाय के अन्तर्गत संत इन्दराज का नाम लिया जा सकता है। इनके पिता का नाम पूरन एवं माता का नाम जानकी था। इनके सबसे प्रसिद्ध शिष्य गंगाराम थे। इस शिष्य परम्परा में संत मतराम तथा भगीरथ दास भी हुए। इनके अतिरिक्त अन्य विविध साम्प्रदायिक संतों में ताबरदास, पहलवान दास, गोविन्दसाहब, पानपदास, रामचरन, सहजोबाई, दयाबाई, हरनाम साहब, चतुर्भुज साहब आदि के नामों का उल्लेख विशेष रूप से किया जा सकता है। इन संतों ने इस परम्परा के अन्तर्गत निर्गुण सिद्धान्तों का प्रचार किया।

महत्व—

इस प्रकार से भक्ति युग में निर्गुण-ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत जिस सम्प्रदाय का प्रसार हुआ वह दार्शनिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तों के निरूपण की दृष्टि से विशिष्टता रखता है। इस सम्प्रदाय के अनुयायियों ने मुख्यतः एकेश्वरवाद पर बल दिया। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही संतों ने एकेश्वरवाद का समर्थन करते हुए बहुदेववाद का विरोध किया। इस प्रकार के मत का मूल कारण यह है कि निर्गुण साम्प्रदायिक संत पूर्ण ब्रह्म में आस्था रखते हैं। परमात्मा के अस्तित्व और गुणों का विश्लेषण करते हुए इन संतों ने उसमें एकीकरण का अनुमोदन किया। परमात्मा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि भक्त स्वयं को निर्गुण और सगुण से परे रखे। संत मत के अन्तर्गत जिन विविध सम्प्रदायों का विकास हुआ है उन्होंने पृथक् पृथक् रूप से आत्मा और परमात्मा में एकीकरण की श्रेणियाँ विज्ञापित की हैं परन्तु वे सभी एक स्वर से कहते हैं कि साधक की साधना की सार्थकता तभी है जब उसे पूर्ण ब्रह्म की प्राप्ति हो जाय। इस संदर्भ में परमात्मा तथा आत्मा का जो विश्लेषण इस परम्परा के अन्तर्गत हुआ है वह अनुपम है। निर्गुण संतों ने परमात्मा की सत्ता सर्वत्र बताते हुए यह स्पष्टतः घोषित किया है कि उससे पृथक् आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है। अनेक मत यह भी मानते हैं कि जीवात्मा अन्ततोगत्वा परमात्मा में निवास करती है परन्तु उनकी धारणा यह है कि जीवात्मा परमात्मा का पूर्ण रूप नहीं है वरन् एक अंशमात्र है।

जीवात्मा और जड़ जगत के सम्बन्ध में भी सन्तों ने माया आदि का विवेचन किया है। सन्तों के दार्शनिक मत और आध्यात्मिक सिद्धान्तों में सहज ज्ञान और आत्मा के परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण का अनुमोदन मिलता है। ऊपर इस परम्परा का जो संक्षिप्त विवरण उपस्थित किया गया है वह नाथ मत द्वारा मान्य विशिष्ट सिद्धान्तों का परिचय प्रस्तुत करता है।

— ० —

अध्याय : ४

भक्तियुगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति

भक्तियुगीन हिन्दी काव्य की विविध प्रवृत्तियों में सूफी काव्य की धारा का भी विशिष्ट महत्व है। स्थूल रूप में हिन्दी सूफी काव्य का प्रवृत्ति का प्रसार चौदहवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक मिलता है। इस काल के मध्य लगभग बीस सूफी कवियों ने अनेक प्रेम काव्यों का प्रणयन करके इसके विकास में योग दिया है। सूफी काव्य ग्रन्थ के विषय में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि इसकी रचना पद्धति भारतीय परम्परा की तुलना में अपेक्षाकृत फारसी मसनवी पद्धति से अधिक प्रभावित है। सूफी काव्य प्रवृत्ति का आरम्भ होने के पूर्व भारतीय काव्य परम्परा में विविध प्रकार के प्रेमाख्यान उपलब्ध होते हैं। नीचे हिन्दी में लिखित सूफी काव्य की प्रवृत्ति का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुल्ला दाऊद—

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सूफी काव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत सर्वप्रथम कवि मुल्ला दाऊद का उल्लेख किया जाता है। मुल्ला दाऊद की लिखी हुई एक कृति चंदायन अथवा चंदावत शीर्षक से उल्लिखित की जाती है। मुल्ला दाऊद द्वारा प्रणीत यह कृति एक प्रेम कथा है जो नोरक या लोरिक तथा चंदा के प्रणय पर आधारित है। भारतीय साहित्य में ज्योतिरीश्वर ठाकुर लिखित वर्ण रत्नाकर जैसे ग्रन्थों में उल्लिखित लोरिक नृत्यों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि इसका सम्बन्ध किसी लोकगीत अथवा लोककथा से भी हो सकता है। इसलिए इसको लोककथा भी कहा जाता है। इस कृति का रचना काल सम्वत १४७८ बताया जाता है। इसकी जो प्रतियाँ उपलब्ध हैं वे सभी अत्यन्त प्राचीन तथा खण्डित अवस्था में हैं। इसमें चौपाई और दोहा छन्दों का प्रयोग मिलते हैं। इसकी भाषा अवधी है जिसमें मागधी तथा शौरसेनी आदि का भी प्रभाव है। कथा सूत्र के अनुसार इसका नायक लोरिक अहीर गोवर नामक स्थान का निवासी है। उसकी पत्नी का नाम मैना है। उसी स्थान के एक अन्य निवासी बावन अहीर का विवाह सहदेव की कन्या चान्दा से होता है। संयोगवश लोरिक और चान्दा का परस्पर प्रेम हो जाता है। बृहस्पति नामक एक दूती उन दोनों की भेंट

कराती हैं। धीरे धीरे नायक नायिका की पारस्परिक अनुरक्ति बढ़ती जाती है और अन्त में वे दोनों उस स्थान को छोड़कर चल देते हैं। लोरिक का भाई कंवरू उसे रोकना चाहता है परन्तु सफल नहीं होता। लोरिक और चान्दा गंगा पार करते हैं। चान्दा का पति बावन भी वहाँ पहुँच कर उसे प्रताड़ित करता है परन्तु निराश लौट आता है। गंगा पार करते समय केवट भी चान्दा के रूप पर मुग्ध होकर राजा करिंगा से उसके सौन्दर्य की प्रशंसा करता है। राजा गगऊ नामक मल्ल को लोरिक के पास भेजता है परन्तु वह लोरिक से पराजित हो जाता है। यही दशा बोदई नामक मल्ल की होती है। अन्त में दस ब्राह्मण लोरिक को राजा के सामने प्रस्तुत करते हैं। राजा उसकी शिष्टता से प्रसन्न होकर उसे ब्राह्मणों के साथ विदा कर देता है। वे सब उगीसा पहुँचते हैं। वहाँ पर चान्दा को एक नाग डस लेता है। लोरिक पीड़ा से विह्वल होकर चिता पर चान्दा के साथ जलकर प्राण देने का निश्चय करता है। इसी समय एक गारुड़ी के आ जाने से चान्दा की प्राण रक्षा होती है। फिर लोरिक सारंगपुर आ जाता है। चान्दा एक स्वप्न देखती है कि उसे एक तोता योगी अपहृत कर लेगा। लोरिक एक मढ़ी में चान्दा को छोड़कर जाता है और तभी तोता योगी चान्दा का अपहरण कर लेता है। लौटकर लोरिक उसका पीछा करता है और उसे पकड़ लेता है। वे दोनों चान्दा सहित नगर में पहुँचते हैं। यहाँ पर भी लोरिक को ही चान्दा की प्राप्ति होती है। इधर दूसरी ओर मैना लोरिक के वियोग में बड़ी कठिनाई से दिन व्यतीत करती है और उसे एक सन्देश भेजती है। यह सन्देश पाकर लोरिक वापस लौटता है। चान्दा का पिता उन दोनों के सम्बन्ध को स्वीकार कर लेता है। कथा का कुछ विस्तार इसके आगे भी है परन्तु उसके सम्बन्ध में कोई सुनिश्चित विवरण उपलब्ध नहीं होता। इस कृति के सम्बन्ध में अब्दुल कादिर बदायूनी की रचना मुन्तखबुत्तवारीख में भी उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि यह सूफी काल में बहुत प्रचलित था तथा विद्वानों ने इसे मान्यता दी थी।

कुतबन—

कुतबन का समय सोलहवीं शताब्दी का आरम्भिक काल माना जाता है। इनके लिखे हुए प्रेम काव्य का नाम मृगावती है। कुतबन ने इस ग्रन्थ में अपने समकालीन शासक हुसैनशाह का उल्लेख किया है जो जौनपुर में रहते थे। कुतबन के गुरु शेख बुढ़न थे। कुतबन का लिखा हुआ मृगावती नामक प्रेम काव्य इस परम्परा में ऐतिहासिक महत्व रखता है। इसका रचना काल सन् १५०३ माना जाता है। इसकी जो प्रति उपलब्ध होती है वह पूर्ण नहीं है। कुतबन ने स्वयं इसमें उल्लेख किया है कि इसकी कथा का आधार पूर्व प्रचलित कोई लोक कथा थी। यद्यपि कुतबन से पूर्व इस प्रकार की कोई कृति नहीं मिलती परन्तु फिर भी उनके इस कथन से यह अनुमान लगाया जाता है कि वह किसी न किसी रूप में पूर्वप्रचलित रही होगी। मृगावती में कुतबन ने चन्द्रगिरि के राजा गणपतदेव के कुमार तथा मृगावती की कथा प्रस्तुत की है।

राजकुमार मृगावती के रूप पर मुग्ध होकर उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हो जाता है। अनेक कष्टों का सामना करते हुए अन्त में वह उसके पास पहुँचने में सफल होता है। मृगावती उड़ने की विद्या जानने के कारण एक दिन राजकुमार को छोड़कर कहीं उड़ जाती है। राजकुमार पुनः मृगावती की खोज के लिए योगी के वेश में चल पड़ता है। अनेक स्थानों को पार करते हुए वह एक पहाड़ी पर पहुँचकर रुक्मिणी नामक एक कन्या की किसी राक्षस से रक्षा करता है। रुक्मिणी का पिता इस पर प्रसन्न होकर उन दोनों का विवाह कर देता है। फिर राजकुमार मृगावती के राज्य में आता है। इधर दूसरी ओर राजकुमारी मृगावती अपने पिता की मृत्यु के कारण स्वयं राज काज करने लगती है। राजकुमार उसके राज्य में बारह वर्षों तक रहता है। फिर अपने पिता का सन्देश पाकर वह मृगावती सहित वापस लौटता है और मार्ग में रुक्मिनी को भी ले लेता है। अन्त में घर पहुँचकर अपनी दोनों पत्नियों सहित वह सुखपूर्वक रहने लगता है। एक बार शिकार खेलते समय उसकी मृत्यु हो जाने पर मृगावती तथा रुक्मिनी दोनों उसके साथ सती हो जाती हैं। मृगावती के कुछ काव्यांश इस प्रकार हैं

गाहा दोहा अरल अरल सोरठा चौपाई के सरल।
आखर आखिर बहुत आप औ दसी चुनि चुनि कह लाय॥
पन्त सुहावन पीज मान। पहुप सुगंत न भाव आनू।

\+ \+ \+

दोय मास दिन दस मही पहर गौराय जाय।
येक येक बोल मानी जस गुरवा इकठा सवचित लाय॥

\+ \+ \+

सप बुझन जग साचा पीर नाम लेत सुध होय सरीर।

\+ \+ \+

साह हुसेन आहि बड राजा छत्र सिघासन उनको छाजा।
पण्डित औ बुधवत सयाना पढ़ पुरान अरथ सब जाना॥

\+ \+ \+

रुकमिनि पुनि वसहि मरि गई कुलवती सतसा सति भई।
बाहर वह भीतर वह होई घर बाहर को रहै न जोई॥
बिधि कर चरित न जान आनू जो सिरजा सो जाहि निआनू॥

मझन—

भक्तियुगीन सूफी काव्य प्रवृत्ति के अन्तर्गत मधुमालती के लेखक मझन का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका जीवन परिचय बहुत कम उपलब्ध होता है। मधुमालती की एक उपलब्ध प्रति के आधार पर इनके जीवन का जो विवरण मिला है उससे यह ज्ञात होता है कि मझन शेरशाह के उत्तराधिकारी सलीमशाह के

समकालीन थे। मझन के गुरु का नाम शेख मुहम्मद या गौस मुहम्मद बताया जाता है। मझन की जाति और धर्म आदि के विषय में भी कोई विशेष विवरण उपलब्ध नहीं होता। परन्तु कुछ लोगों का यह अनुमान है कि ये मुसलमान थे और इनका पूरा नाम मुस्तार मिया मझन था। मझन ने मधुमालती के आरम्भिक भाग में अबूबक्र उमर उस्मान तथा अली आदि खलीफाओं की वन्दना की है। हजरत मुहम्मद के प्रति भी उनकी भावना उसमें अभिव्यक्त है। यह भी अनुमान लगाया जाता है कि मझन अनूपगढ़ अथवा चनार्टी के निवासी थे। मधुमालती का रचना काल सन् १५४५ है। इसकी एकाधिक हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं। इसकी कथा का आधार एक लोकप्रसिद्ध कहानी है। यह कहानी सर्वथा कल्पित है और इसमें ऐतिहासिकता अथवा प्रामाणिकता का अभाव है। कहानी का नायक मनोहर कनकगढ़ अथवा कनसर के राजा सूरजभान का पुत्र है। बारह वर्ष की अवस्था में उसे पिता के द्वारा गद्दी मिलती है। नृत्य गान आदि में उसकी बहुत रुचि रहती है। एक बार अर्द्ध रात्रि के समय मनोहर को सुप्तावस्था में देखकर अप्सराएं उसे महारस नगर की राजकुमारी मधुमालती की चित्रसारी में पहुंचा देती हैं। जब वे जागकर एक दूसरे को देखते हैं तो परस्पर अनुरक्त होकर अपने परिचय देते हैं। मधुमालती अपने पिता का नाम राजा विक्रमराय बताती है। प्रेमवार्ता करते हुए दोनों पुनः सो जाते हैं। तब अप्सराएं मनोहर को वापस उसके घर पहुंचा देती हैं। प्रातःकाल मनोहर अपनी धाय से तथा मधुमालती अपनी सहेलियों से रात्रि की सम्पूर्ण घटना का वर्णन करते हैं। मनोहर लोगों के बहुत समझाने पर भी एक जोगी का वेष धारण करके मधुमालती की खोज में निकल पड़ता है। एक नौका पर वह समुद्र में यात्रा करता है जो तूफान आ जाने के कारण टूट जाती है। अपने साथियों से बिछुड़ कर मनोहर एक लकड़ी के तख्ते के सहारे बहता हुआ एक निर्जन वन में पहुंचता है। वहां उसे एक सुन्दरी मिलती है जिसका नाम प्रेमा है। वह चित्तबिश्रामपुर के राजा चित्रसेन को अपना पिता बताती है। वह यह भी बताती है कि किस प्रकार से सखियों सहित उसके समय एक राक्षस उसे पकड़ कर जंगल में रख गया जहां वह एक वर्ष से एकान्तवास कर रही है। उससे यह भी पता चलता है कि वह मधुमालती की बचपन से ही सखी रही है। मनोहर उसकी सारी कथा सुनकर उसी के दिये हुए हथियार से राक्षस का वध कर देता है और उसे लेकर उसके पिता के पास पहुंचा देता है। उस नगर में कुछ विशेष अवसरों पर मधुमालती भी अपनी माता के साथ आती थी। इस बार आने पर प्रेमा की सहायता से मनोहर से उसकी भेंट होती है। मधुमालती की माता रूपमंजरी को जानकारी में जब यह तथ्य आता है तो वह अपनी पुत्री को शाप दे देती है जिसके प्रभाव से वह पक्षी बनकर उड़ जाती है। पक्षी रूप में उड़ते हुए ही वह मानगढ़ के कुंवर ताराचन्द को देखती है। ताराचन्द उसे पकड़ लेता है और उसकी पूरी कहानी सुनता है। वह मनोहर से उसका मिलन कराने का भी प्रण करता है। ताराचन्द उसे लेकर उसके माता पिता

की चिश्तिया शाखा के प्रचारकों में शाह निज़ामुद्दीन प्रमुख थे। चिश्तिया अशरफ़ जहाँगीर, हुसैन शाह मेहदी, सैयद मुहम्मद जौनपुरी, शेख अलहदाद, शेख बुरहानुद्दीन आदि की गुरु शिष्य परम्पराओं का उल्लेख जायसी ने किया है। जायसी के विषय में कहा जाता है कि सात वर्ष की अवस्था में चेचक निकलने के कारण वह काने हो गये थे। दाहिनी ओर आँख, एक हाथ और एक पैर जाता रहा था। जायसी के अन्तिम दिन अमेठी के निकट धर्म साधना में व्यतीत हुए थे। जायसी की प्रमुख रचनाओं में पद्मावत, अखरावट, आख़िरी कलाम, महरी बाईसी, चित्रावत तथा मसलानामा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। महरानामा नामक कृति कोराईनामा अथवा कहरानामा शीर्षक से भी उल्लिखित की जाती है। इसी प्रकार से चित्रावत, चित्ररेखा के नाम से और मोस्लीनामा मसलानामा नाम से भी उल्लिखित की जाती हैं। इन कृतियों के अतिरिक्त जायसी की अन्य रचनाओं में ममन्दा, कहरनामा, मुकहरानामा अथवा मुखरानामा, माहरानामा अथवा होलीनामा, खुर्वानामा, सकरानामा, लहरावत, मटकावत, इतरावत, चम्पावत, मटरावत, सुतरावत, नहरावत, नैनावत, पनावत, परमार्थ जपजी तथा पुसीनामा आदि का भी उल्लेख किया जाता है। ये रचनाएँ कहीं उपलब्ध नहीं होतीं।

मलिक मुहम्मद जायसी की कीर्ति का मुख्य कारण उनका लिखा हुआ प्रसिद्ध प्रमाख्यान पद्मावत है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इसका उल्लेख गार्सां द तासी ने सर्वप्रथम किया था। इसकी अनेक प्रतियाँ सम्पादित हुई हैं। इसके रचना काल के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। विभिन्न विद्वानों ने इसका रचना काल सन १५२१, सन १५४०, सन १५०८, सन १५३८ तथा सन १५४१ अनुमानित किया है। जायसी ने स्वयं इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख किया है कि इसके रचना काल के समय दिल्ली में शेरशाह का शासन था। पद्मावत में जायसी ने सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन की पुत्री पद्मावती और चित्तौड़ के राजा रतनसेन की प्रेमकथा प्रस्तुत की है। पद्मावती अत्यंत सुन्दरी थी और उसके योग्य वर नहीं मिलता था। उसके पास हीरामन नाम का एक गुणी तोता था। एक दिन वह तोता पद्मावती से उसके वर के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहा था। तभी राजा गंधर्वसेन के सुन लेने के कारण वह उनसे भयातुर होकर वहाँ से उड़ गया। एक बहेलिये द्वारा पकड़ा जाकर चित्तौड़ में एक ब्राह्मण द्वारा क्रय किया गया। उस ब्राह्मण ने उसे राजा रतनसेन के हाथ एक लाख रुपये में बेच दिया। एक दिन राजा रतनसेन शिकार खेलने गया और उनकी अनुपस्थिति में उनकी रानी नागमती से तोते ने पद्मावती के रूप की प्रशंसा की। नागमती ने तोते को मारने की आज्ञा दी परन्तु दासी ने उसे राजा के भय से छिपा लिया। राजा रतनसेन लौटने पर तोते को न पाकर बहुत उद्विग्न हुए और अंततः वह उनके सामने लाया गया। तोते ने समस्त वृत्तांत उनके सामने प्रस्तुत किया और पद्मावती के असाधारण रूप के विषय में भी बताया। फलतः राजा बहुत उत्कंठित हुए और जोगी का भेष धारण करके पद्मावती को प्राप्त करने के लिए निकल पड़े। राजा के साथ ही सोलह हजार

अब राजकुमार भी इस यात्रा में चले। हीरामन तोता बराबर उनको आगे राह दिखाता रहा। अनेक कष्ट सहते हुए वे लोग सिंहलद्वीप तक पहुँच सके। वहाँ पहुँचने पर राजा रतनसेन अपने साथियों के साथ भगवान शिव के मंदिर में पद्मावती का नाम स्मरण करने लगा। दूसरी ओर हीरामन ने सारा समाचार पद्मावती को बताया। पंचमी के दिन पद्मावती पूजा करने के लिए शिव मन्दिर में आयी। राजा उसका रूप देखकर अचेत हो गया और पद्मावती लौट गयी। पुनः चेतना लौटने पर उसे पद्मावती का संदेश मिला कि जब तक वह सिंहलगढ़ पर विजय नहीं प्राप्त कर लेगा तब तक उसका पद्मावती से मिलना नहीं हो सकेगा। शिव की आराधना करने के पश्चात् रतनसेन ने गढ़ पर चढ़ाई की परन्तु बन्दी बना लिया गया। उसे सूली पर चढ़ाने का आदेश हुआ। परन्तु उसके साथी मानो सहस्र जोगियों के रूप में राजकुमारों ने गढ़ घेर लिया और भगवान शिव के वरदान से विजय प्राप्त की। पद्मावती के पिता गंधर्वसेन ने अपनी पुत्री का विवाह रतनसेन से कर दिया। विवाह के पश्चात् रतनसेन चित्तौड़ लौट आया और सुखपूर्वक दिन व्यतीत करने लगा। उसके दरबार में राघव चेतन नाम का एक पण्डित था। कहा जाता है कि उसे यक्षिणी सिद्ध थी। अन्य स्थानीय पंडितों से अनबन हो जाने के कारण उसको निष्कासन कर दिया गया। राघव चेतन दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन के पास गया और उसने पद्मावती का वर्णन दिखाकर उसके असाधारण सौन्दर्य की चर्चा की। अलाउद्दीन ने पद्मावती को प्राप्त करने के लिए राजा रतनसेन को एक पत्र भेजा। अलाउद्दीन और रतनसेन में युद्ध छिड़ गया। अनेक वर्षों के पश्चात् अन्त में अलाउद्दीन ने सन्धि का प्रस्ताव किया। राजा ने उसे स्वीकार करके बादशाह को अपने महल में भोज पर निमन्त्रित किया। वहाँ पर दर्पण में पद्मावती की छाया देखकर बादशाह अचेत हो गया। बाद में जब रतनसेन उसे विदा करने बाहर द्वार पर आया तो बादशाह ने कपटपूर्वक उसे बन्दी बना लिया और दिल्ली ले आया। पद्मावती ने पति को छुड़ाने के लिए एक कूटनीतिक चाल चली। उसके आदेश से गोरा और बादल नामक दो शूरवीर सात सौ पालकियों सहित बादशाह के पास पहुँचे। बादशाह को यह संदेश भेजा गया कि पद्मावती रानी से पहले भेंट करेगी। अनुमति मिलने पर पालकी में छिपे हुए सैनिकों ने राजा को मुक्त किया और वह सुरक्षित चित्तौड़ पहुँच गया। इसके पश्चात् राजा देवपाल से युद्ध में उसकी मृत्यु हो गयी। उसके शव के साथ पद्मावती और नागमती सती हो गयीं। इधर बादशाह ने पुनः चित्तौड़ पर आक्रमण किया परन्तु पूरा समाचार सुनकर उसे अपार दुःख हुआ। इस प्रकार से इस कथा में जायसी ने एक ऐतिहासिक कथा के आधार पर अनेक कल्पित प्रसंगों का समावेश किया है। यह एक उत्कृष्ट प्रेमाख्यान है जिसमें एक श्रेष्ठ महाकाव्य के सभी गुण विद्यमान हैं। उनकी योजना रूप वर्णन तथा आध्यात्म निरूपण की दृष्टि से इसके कुछ आख्यान नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं

सरवर तीर पदमिनी आई खोपा छोरि केस मुकलाई।
ससिमुख अंग मलयगिरि बासा नागिनि झाँपि लीन्ह चहुँ पासा ॥
ओनई घटा परी जग छाँहा ससि के सरन लीन्ह जनु राहा ।
भूलि चकोर दीठि मुख लावा मेघ घटा महँ चंद देखावा ॥

× × ×

बरुनी का बरनौं इमि बनी साधे बान जानु दुइ अनी।
उन बानन्ह अस को जो न मारा बेधि रहा सगरौ संसारा ॥
गगन नखत जो जाहिं न गने वै सब बान ओहि के हने ।
धरती बान बेधि सब राखी साखा ठाढ़ि देहिं सब साखी ॥
रोव रोव मानुस तन ठाढ़े सूतहि सूत बेध अस गाढ़े ।
बरुनि बान अस ओपहँ बेधे रन बन ढाँख ।
सौ जहिं तन सब रोवाँ पंखिहि तन सब पाँख ॥

× × ×

तन चितउर मन राजा कीन्हा हिय सिंघल बुधि पदमिनि चीन्हा ।
गुरु सुआ जेइ पंथ देखावा बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा ?
नागमती यह दुनिया धंधा बाँचा सोइ न एहि चित बंधा ।
राघव दूत सोई सैतानू माया अलाउदीं सुलतानू ॥

× × ×

ओहि मिलान जौ पहुँचै कोई तब हम कहब पुरुष भल सोई ।
है आगे परबत कै बाटा बिषम पहार अगम सुठि घाटा ॥
बिच बिच नदी खोह औ नारा ठावहिं ठाँव बैठ बटपारा ।

× × ×

पंडित गुनि सामुद्रिक देखा देखा रूप और लखन बिसेखा ।
रतनसेन यह कुल निरमरा रतन जोति मन माथे परा ॥
पदुम पदारथ लिखी जो जोरी चाँद सुरुज जस होय अँजोरी ।
जस मालति कहँ भौंर बियोगी तस ओहि लागि होय यह जोगी ।
सिंहल दीप जाइ यह पावै सिद्ध होय चितउर लेइ आवै ।

+ + +

जब लगि गुरु हौं अहा न चीन्हा कोटि अंतर पट बीचहिं दीन्हा ।
जब चीन्हा तब और न कोई तन मन जिउ जीवन सब सोई ॥
'हौं हौं' करत धोख तराई जब भा सिद्ध कहाँ परछाँई ।
मारे गुरु कि गुरु जियावै और को मार मरै सब आवै ॥

सूरा मनि हस्ति कर चर हौं नहिं जानौं जान गुरु।

× × ×

गुरु हस्ति पर चढ़ जो पेखा जगत जो नास्ति नास्ति पै देखा।
अंध मीन जस जल महँ धावा जल जीवन चख दिस्टि न आवा।।
गुरु मोर मोरे हिय दिय तुरंगम ठाठ।
भीतर करहिं डोलावै बाहर नाचै काठ।।

× × ×

बाँधि गा सुआ करत सुख केली। चूरि पाँख मेलेसि धरि डेली।
तहँवा बहुत पंखि खरभरहीं। आपु आपु महँ रोदन करहीं।
बिखदाना कित होत अँगूरा जेहि भा मरन डहन धरि चूरा।
जौं न होत चारा कै आसा कित चिरिहार ढुकत लेइ लासा ?
यह बिष चारै सब बुधि ठगी औ भा काल हाथ लेइ लगी।
एहि झूठी माया मन भूला ज्यों पंखी सेमर तन फूला।
यह मन कठिन मरै नहिं मारा काल न देख देख पै चारा।

+ +

ना वह भएउ भौंर कर रंगू न वह दीपक भएउ पतंगू।
ना वह करा भृंग कै होई ना वह आपु मरा जिउ खोई।
ना वह प्रेम औटि एक भएउ न ओहि हिय माँझ डर गएऊ।
तेहि का कहिय रहब जिउ रहै जो पीतम लागि।
जहँ वह सुनै लेइ धँसि का पानी का आगि।।

+ + +

सुए कहा हम अस भूले टूट हिंडोल गरब जेहि फूल।
केरा के बन लीन्ह बसेरा परा साथ तहँ बैरी केरा।
सुख कुरबारि फरहरी खाना ओहु बिष भा जब ब्याध तुलाना।
काहे क भोग बिरिछ अस फरा आड़ लाइ पंखिन्ह कहँ धरा।
सुखी निचिंत जोरि धन करना यह न चिंत आगे है मरना।
भूले हमहुँ गरब तेहि माहाँ सो बिसरा पावा जेहि पाहाँ।
होइ निचिंत बैठे तेहि आड़ा तब जाना खोंचा हिए गाड़ा।
चरत न खुरुक कीन्ह जिउ तब रे चरा सुख सोइ।
अब जो फाँद परा गिउ तब रोए का होइ ?

आलम—

भक्तियुगीन सूफी काव्य की प्रगति के अन्तर्गत आलम का नाम भी उल्लेखित किया जा सकता है। यह आलम अकबर के समकालीन बताये जाते हैं। आलम की लिखी हुई अनेक कृतियों की चर्चा की जाती है जिनमें सर्वप्रसिद्ध माधवानल काम

कथा कौतुक प्रमाख्यान है। इसके अतिरिक्त श्याम सनेही तथा आलम केलि नाम की अन्य रचनाओं का भी उल्लेख किया जाता है। आलम केलि में कुछ अन्य नाम भी बताये जाते हैं जो आलम के कवित्त, कवित्त आलम के, रस कवित्त अस्यमालिका और गुणमनी आदि है। आलम का पूरा नाम शेख आलम बताया जाता है। शेख साईं के नाम से भी यह प्रसिद्ध थे। कुछ लोग शेख को आलम की उपाधि और कुछ लोग उनकी पत्नी का नाम बताते हैं। श्याम सनेही में कवि आलम ने दोहा चौपाई शैली में रुक्मिणी के विवाह का वर्णन किया है। आलम केलि रीति काव्यात्मक रचना है। यह भी कवि के सूफी प्रवृत्तियों तथा की दृष्टि से विशिष्ट कही जा सकती है।

माधवानल कामकंदला एक ऐतिहासिक कथा पर आधारित प्रमाख्यान है। इसका रचना-काल सन १५८ कहा जाता है। इसमें आलम ने लोक प्रचलित कल्पित कथा को प्रस्तुत किया है। इसका आधार माधवानल नामक एक ब्राह्मण और कामकंदला नामक एक वेश्या का प्रेम गाथा है। कामकंदला राजा कामसेन के राज्यालय में रहती थी। माधवानल वीणावादन में कलात्मक उत्कृष्टता के कारण उस मोहित कर लेता है। दुर्भाग्यवश राजा के द्वारा निष्कासन आज्ञा हो जाने के कारण वह कामकंदला के वियोग में पीड़ित होता है। अन्त में विक्रमादित्य की सहायता से वह अपनी प्रेमिका को पुनः प्राप्त कर लेता है। यही नहीं वह अपनी पूर्व प्रेमिका लीलावती को भी प्राप्त करता है और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगता है। इस प्रमाख्यान में कवि ने लौकिक प्रेम के आधार पर आध्यात्मिक ईश्वरीय प्रेम का वर्णन किया है। दोहा तथा चौपाइयों में यह काव्य अवधी भाषा में लिखा गया है। यह आख्यान माधवानल भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी मूल कथा पर आधारित कुछ अन्य रचनाएं भी मिलती हैं जिनमें गणपति लिखित माधवानल प्रबंध दोग्धक, कुशलाम लिखित माधवानल कामकंदला चरित्र, किसी अज्ञात कवि द्वारा रचित माधवनल कामकंदला चौपाई तथा हरिनारायण कवि द्वारा लिखित माधवानल कामकंदला आदि की रचना भी की गयी है।

उसमान—

भक्तियुगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत उसमान लिखित चित्रावली शीर्षक काव्य का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसमान गाजीपुर के निवासी थे। उनके चार भाई शेख अजीज, मानउल्लाह, शेख फैजुल्लाह तथा शेख हसन थे। इनके पिता का नाम शेख हुसैन था। उसमान जहांगीर के समकालीन थे। उसमान के गुरु का नाम बाबा हाजी था जो चिश्ती सम्प्रदाय के अनुगामी थे। इनके पीर शाह निजाम चिश्ती थे। चित्रावली नामक प्रमाख्यान का रचना काल सत्रहवीं शताब्दी माना जाता है। इस विषय में स्वयं कवि ने ग्रन्थ में उल्लेख किया है। चित्रावली की कथा का आरम्भ कवि ने नेपाल के राजा धरनीधर की शिवाराधना से आरम्भ

किया है। राजा पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखते थे। भगवान शिव से राजा को यह वर दान प्राप्त होता है कि वह स्वयं अपने अंश से राजपुत्र के रूप में जन्मेंगे। उचित समय पर राजा के यहाँ पुत्र जन्म होता है। पण्डित लोग लग्न इत्यादि विचार कर उनका नामकरण करते हैं। सुजान नामक यह पुत्र बहुत शीघ्र ही अपनी प्रखर बुद्धि से विद्या ज्ञान प्राप्त कर लेता है। एक बार मृगया के अवसर पर आंधी के कारण वह अपने साथियों से पृथक हो जाता है। रास्ता भूल कर वह एक पहाड़ के निकट पहुँचता है जहाँ एक देव का निवास था। थका हुआ राजकुमार सुजान वहाँ सो जाता है। देव लौटने पर उसे सोया देख कर उसकी रक्षार्थ वहाँ बैठ जाता है और चौकसी करने लगता है। संयोगवश उसी समय उसका परिचित एक दूसरा देव आता है जो उसे रूपनगर की राजकुमारी चित्रावली की वर्षगाँठ का उत्सव देखने चलने के लिए अनुरोध करता है। राजकुमार की सुरक्षा का ध्यान कर वे दोनों उसे सुप्तावस्था में ही अपने साथ ले जाते हैं। रूपनगर पहुँच कर वे उसे राजकुमारी चित्रावली की चित्रसारी में सुला देते हैं। वहाँ पर राजकुमार जब जागता है तब वह चित्रावली के चित्र को देखकर मुग्ध हो जाता है। उसी चित्र में अपना भी चित्र बनाकर वह पुनः सो जाता है। यथासमय उत्सव समाप्त होने पर देव उसे पुनः वापस ले आते हैं। दूसरे दिन चित्रावली राजकुमार के चित्र को देखकर मुग्ध हो जाती है और उसके विरह में पीड़ित रहती है। धीरे धीरे यह बात चित्रावली की माता रानी हीरा तक पहुँचती है। रानी इस प्रसंग पर क्रुद्ध होकर उस चित्र को नष्ट करा देती है। इधर चित्रावली चार दूतों को राजकुमार सुजान की खोज में भेजती है। इनमें से परेवा नामक एक दूत सुजान के पास पहुँचने में सफल होता है। वह उसे चित्रावली तथा उसके पिता चित्रसेन के विषय में समस्त सूचनाएँ देता है। फलतः राजकुमार सुजान रूपनगर के लिए चल पड़ता है। परेवा उसे एक गुप्त सहायता देता है जिसके प्रभाव से वह अदृश्य रहता है। रूपनगर पहुँच जाने पर राजकुमार शिव मन्दिर में ठहर जाता है और दूत चित्रावली को जाकर उसके आगमन का समाचार देता है। चित्रावली उसे संदेश देती है कि शिवरात्रि के दिन जोगियों को भोजन कराने समय वह मन्दिर में उसे दर्शन देगी। वह उसे चेतावनी भी देती है कि इस अवसर तक के लिए उसे अपना आत्मिक बल एकत्र करते रहना चाहिए क्योंकि उसका रूप-दर्शन भौतिक चक्षुओं के लिए असह्य है। शिवरात्रि के अवसर पर चित्रावली की छवि को देखकर राजकुमार अचेत हो जाता है। पुनः चेतना लौटने पर उसे चित्रावली का संदेश मिलता है और अब वे दोनों एक दूसरे को प्रिय स्थान जान रहे हैं। इस प्रकार परस्पर की सहमति प्राप्त करके चित्रावली का एक दूत उससे मिलने के लिए राजकुमार को गुफा देकर गुफा में ले जाता है। अब चित्रावली को पीड़ा और बढ़ जाती है। गुफा में राजकुमार को एक अजगर निगल जाता है परन्तु उसकी विरहाग्नि की तीव्रता न सहन कर सकने के कारण उसे पुनः उगल देता है। यह देखकर एक वनमानुष राजकुमार के साथ

सहानुभूति प्रगट करता है और फिर से उसे एक दूसरा अवसर देता है जिसके फल स्वरूप पूर्व अर्जन का प्रभाव समाप्त हो जाता है। दुर्भाग्यवश उसे एक हाथी पकड़ लेता है। इसके पहले कि हाथी के द्वारा उसके प्राण हरण हों एक विशाल पक्षी हाथी को अपने पंजों में दबा कर उड़ने लगता है। तब हाथी राजकुमार को छोड़ देता है और वह एक बगीचे में जा पहुँचता है जहाँ पर सागरगढ़ की राजकुमारी कौलावती उसे देखकर मुग्ध हो जाती है। कौलावती उसे राजा की आज्ञा से ... करती है और सफल न होने पर उसे चोरी के अपराध में बन्दी बना लेती है। दूसरी ओर कौलावती पर आसक्त सोहिल नरेश उसके राज्य पर आक्रमण कर देता है। युद्ध में राजकुमार सुजान सोहिल नरेश का वध करके राज्य की रक्षा करता है। कौलावती के पिता उन दोनों का विवाह कर देते हैं परन्तु राजकुमार सुजान उसे चित्रावली से मिलने तक प्रतीक्षा करने का आश्वासन देता है। एक दिन राजकुमार सुजान और कौलावती शिव पूजन के हेतु गिरिनार पर्वत पर पहुँचते हैं। वहाँ पर चित्रावली का दूत परेवा पुनः उन्हें खोज लेता है। उसकी प्रेरणा से राजकुमार सुजान रूपनगर के लिए प्रस्थान कर देता है। रूपनगर पहुँचने पर परेवा चित्रावली को सन्देश देने जाते समय मार्ग में रानी हीरा के दूतों द्वारा बंदी बना लिया जाता है। राजकुमार कुछ प्रतीक्षा करने के पश्चात अन्त में प्रलाप करने लगता है। चित्रावली का पिता उसकी हत्या हाथी से करवाना चाहता है परन्तु सुजान उस हाथी को परास्त कर देता है। अन्त में राजा सुजान को बन्दी बना लेता है। बाद में राजा को उसके विषय में समस्त सूचनाएँ मिलती हैं और वह चित्रावली का सुजान से विवाह कर देता है। विवाह के पश्चात वे दोनों सुखपूर्वक वहाँ रहने लगते हैं। दूसरी ओर कौलावती हंसमित्र को रूपनगर भेजती है। वह राजकुमार सुजान को कौलावती का स्मरण कराता है। अब राजकुमार चित्रावली को लेकर वहाँ से विदा होता है और मार्ग में कौलावती को भी अपने साथ ले लेता है। अन्त में अनेक संकटों का सामना करते हुए वह अपने राज्य में पहुँचता है। वहाँ पर वह यह पाता है कि उसके माता पिता उसके वियोग में अंधे हो गये थे। मिलन की उत्कण्ठा में उनके नेत्रों में पुनः ज्योति आ गयी। उन्होंने राजकुमार सुजान को राज पद दे दिया और वह सुख से रहने लगा।

इस प्रकार से इस कथा में लेखक ने सौन्दर्य, प्रेम, विरह, वियोग आदि का लौकिक आधार पर जो चित्रण किया है वह आध्यात्मिक सन्दर्भ में भी महत्वपूर्ण है। सूफी प्रेमाख्यानों की आदर्शात्मक प्रेम पद्धति इस काव्य में भी मिलती है। कवि उसमान ने इस ग्रंथ में प्रेम और सौंदर्य तत्व का जो निरूपण किया है वह भी आध्यात्मिक सन्दर्भ में महत्वपूर्ण है। आत्मा और परमात्मा के आकर्षण के सन्दर्भ में भी इसका महत्व है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित काव्यांश द्रष्टव्य है

जहाँ रूप जग बनिज पसारा आइ प्रेम तहँ कीय योहारा।
दीपक जाति प्रेम उजियारा प्रेम पतंग आनि तन जारा।

रूप वास भा वतिक मेवा प्रेम भार भौ जिव परठवा ॥

— —

रुप प्रेम मिलि जो सुख पावा दूनहु मिलि विरहा उपजावा ।
जहि तन प्रेम आगि सुलगाइ विरह पान होइ दे पुलगाइ ।
प्रेम अंकुर जे सिर बाला विरह नीर मा छिन छिन बाला ।
प्रेम दीप जह जानि दिखाइ विरह दह छिन छिन उसकाइ ।
एहि विधि प्रेम विरह एक संगा ग्रसमन भौ मानहु रंगा ।

— —

उठे अकुलाइ मान दुख भारी कुंवर पास आइ एक नारी ।
सीस नाइ के बैठा तारा पूछ बात रखि मुख आरा ।
ना उधारे पूत कहु पीरा कहि कारन भा पीन सरीरा ।
का पीन भया मुख राता कहु बात बलिहारी माता ।

कवि उसमान ने चित्रावली की कथा के मध्य में वर्णन प्रसंग में आखेट नगर ढाढा नगर नखशिख आदि वर्णन विस्तार से प्रस्तुत किये हैं। सरोवर वर्णन का एक प्रसंग आत्मा और परमात्मा के रूपक के सन्दर्भ में भी भावना रखता है

बूडि बूडि हेरहिं सब जहि जस भाग सो पाउ ।
कोउ पाया कोउ मानि ले कोउ छूछ बहराउ ।
सरवर ढूंढि सब पचि रहा चित्रिनि खोज न पावा कहा ।
निकसी तीर भई बैरागा धरी ध्यान सब विनय लागी ।
गुपुत तोंहि पावहिं को जानी परगट महं जो रहहिं छपानी ।
चतुरानन पढ़ि चारी बेदू रहा खोजि पै पाव न भेदू ।
सबर पुनि हार कै सेवा ताहि न मिलिउ तोर को देवा ।
हम अंधी जहि आपुन सूझा अरे तुसार कहा जो बूझा ।
कौन सो ठाउं जहां तुम नाहीं हम चखु जोति न देखहि काहीं ।
पाव खोज तुम्हार सो जेहि देखरावै पंथ ।
कहा होइ जोगी भए और पुनि पढ़े गरंथ ।

चित्रावली काव्य पर शृंगारिक काव्य है। इसमें संयोग शृंगार वियोग शृंगार के साथ साथ वीर रस का भी समावेश मिलता है। प्रासंगिक रूप में कवि ने अन्य अनेक विषयों को भी इसमें समाविष्ट किया है जिसमें सात्विक भावनाओं की श्रेष्ठता और वांछनीयता निर्दिष्ट की गयी है। इस काव्य से कुछ अन्य प्रसंग नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं जो विविध सन्दर्भों में महत्व रखते हैं

दिय बिना कुछ हाथ न पावा दिया आनि सब इच्छ पुरावा ।
दिया धरें तम घर न लागा, दिया हूने पर सुख न भागा ।

एहि रग गाए सार य दीआ न र िया न अविरथा जीआ।
दिया हते निमि गम गूना िया हे पर आपन गूना।
िया हुते घर पाव सोभा आ पाग गीप पर लाभा।
दीया वाज मग ना न ोवा िया हा तो पार गोवा।

+ +

पान डारि क िया मथानी साम ना टागे मथगानी।
उलटी दृष्टि र टम लाई सजम र अि त्तु न जाई।
तौ नह मथ वठि दे जीऊ निगर छाछ मही त घीऊ॥
निजमो मथनी एक िन मथत मथन गा पि।
तत्वमसी पुनि नत्व सा जाम नरा सर ूि॥

+ +

घूघट घाति रूप अस देखा सा दखा जहि सोग सुरेखा।
अधर घर सा अमिरित पीआ जहिते पियत अमर भा हीया।
राहु गरास कलानिधि गासा ानन पत आनन पट ढापा।
पुनि मनमथ र त पागु मचारा घाति अठून कनर पिचकारी।
रग गुनान दाउ न भर राम रोम तन मानी झरे।
सेद थम रोमच तन आसु पतन सुरभग।
प्रथम समागम जो किया सीतन भा सब अग॥

× +

रूप प्रम विरहा जगत मूल सृष्टि के थम्भ।
हौ तीनन के अ कहु कथा करौं आरम्भ॥
जाग राउ राजसुख करई सवक जगि सवा चित धरई।
जाग चार जा परधन चहा बिरही जग बिरहानन दहा।
जाग ारी खेलत जूआ धानु एक काहू मन दूआ।
जागहिं सिद्ध ध्यानधरि हीए जागहिं दुखी दु ख मन हीए।
जाग पण्डित पत्त हरिबानी जागहिं बालक कहै कहानी।
मैं अजान जग बात सम आन न कछ सोहाय।
कहौं कहानी प्रम की नहि निसि जाय विहाय।

जान कवि—

भक्तियुगीन सूफी का य प्रवत्ति के अतगत जान कवि का नाम भी उल्लेखनीय है। नका वास्तविक नाम यामत खा था। यह राजस्थान के निवासी थे। इनके समय के विषय म अधिक विवरण उपलब्ध नहा है। परतु इनका रचना काल १६१४ से लकर १६६४ ई तक अनुमानित किया जाता है। यह कायमखानी वश म हुए थे जिसका विस्तत विवरण कायमरासा म उपल ध होता है। जान की लिखी हुई कुल

रचनाएं ७६ बतलायी जाती हैं। इनमें कायमखां रासा आदि कुछ कृतियां प्रकाशित भी हो चुकी हैं। नाममाला अनेकार्थी नाम जैसी रचनाएं भी दृष्टिगत होती हैं। इनकी लिखी हुई प्रेम-कथाओं में कनकावती, कामलता, मधुकर मालती, रतनावली तथा छीता आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। जान कवि की भाषा में ब्रज का प्राधान्य है। संस्कृत, अरबी तथा फारसी के भी शब्द उसमें बहुलता से समाविष्ट हुए हैं। लोक पद्धति पर भी कवि जान ने कुछ ग्रंथों की रचना की है जिनमें कथा मोहनी, कथा नल-दमयंती, ग्रंथ लैलामजनूं, कथा कनकावती, कथा रूपमंजरी, कथा खिजरखां शाहिजादे वा देवलदे की चौपाई, कथा कलंदर, कथा तमीम अंसारी, कथा अरदेसर पातिसाह की, कथा छबिसागर, कथा निरमल, कथा कामरानी, 'ग्रंथ विरहमंजरी', ग्रंथ बारहमासा तथा 'ग्रंथ वियोगसागर' आदि के नाम उल्लिखित किये जाते हैं। जान कवि के गुरु पीर शेख मुहम्मद चिश्ती थे। इनके कुतबा में कुतुब जमाल, शेख मुस्तफा और उस्मान का उल्लेख भी कवि ने किया है। पीर जलाल मुहीउद्दीन का भी उल्लेख कवि ने किया है। इनका समय जहांगीर एवं शाहजहां का शासन-काल अनुमानित किया जाता है यद्यपि कवि ने औरंगजेब का भी उल्लेख किया है। जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कवि जान के लिखे हुए ७६ ग्रंथ बताये जाते हैं। ऊपर उल्लिखित ग्रंथों के अतिरिक्त अन्य कृतियां में चंद्रसेन राजा शीलनिधान की कथा चौपाई, कथा सुभट राय की, ग्रंथ बुद्धिसागर, कथा पातसाहजादे, कथा देवलदेवी, कथा कौतूहली, कथा सतवंती, कथा नारंगी, कथा कुलवंती, कथा कलियुग की, मदद्या के गुनाह कवि जान कृत, षट् ऋतु वर्णन, षट् ऋतु पवंगम, घूघटनामा, शृंगार सत, भावसत, विरहसत, दरसनामा, अलपनामा, प्रेमसागर, वियोगसागर, कंद्रप कल्लोल, भाव कल्लोल, मानविनोद, विरही के मनोरथ, प्रेमनामा, रस कोश, शृंगार तिलक, रस तरंगणी, वतननामा, सिफतनामा, सुधासिंध, 'बुद्धिसागर', बुधि दीप, सतनामा, वननामा, उत्तम शब्द, छबिसागर, धरनामा, जफरनामा, अलफनामा, नाममाला, बाजनामा, कवलनामा, गुरु ग्रंथ, रसावली, वस्तु निर्णयनामा तथा पाहन परीक्षा आदि हैं। उपर्युक्त कृतियों में से कवि जान के प्रमुख प्रेमाख्यानों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

कथा रतनावली —

जान कवि लिखित कथा रतनावली शीर्षक प्रेमाख्यान की कथा संक्षेप में इस प्रकार है। अमृतपुरी का राजा जगतराय निःसंतान होने के कारण निराश होकर वनवास लेने का विचार करता है। प्रमुख ज्योतिषी उसे ऐसा करने से रोकते हैं और बताते हैं कि यदि वह राजा उज्जैन की पुत्री जगरानी से विवाह कर ले तो उसके पुत्र उत्पन्न होगा। यह जानकर राजा अपने मंत्री जगजीवन के हाथ धन सहित विवाह का प्रस्ताव भेजता है जिसे स्वीकार कर लिया जाता है। यथासमय जगरानी के पुत्र

जन्म लेता है। परन्तु ज्योतिषी बताता है कि जीन्द्रह वर्ष के पश्चात उसके बड़े भाग धारक नक्षत्र है। संयोगवश नगरी का नाम भी गुपुरी नाम था। राजा पुत्र का नाम महिमोहन तथा मन्त्री पुत्र का नाम उत्तम रखा जाता है। सौ ७ वर्षों के पश्चात राजा अपने पुत्र को एक नामा तथा पुष्पित करता है। महिमोहन नाम पर चित्रित चित्र को देखकर अनुरक्त हो जाता है और उसी का चिन्तन करता हुआ ग्लान बना रहता है। वह बड़े प्रयत्न से उसका उपचार करना है और अन्त में वस्तुस्थिति बताता है। राजा जाम में चित्रित उस चित्र में चित्र में अंकनाओं के कथन को स्मरण करता है और उसी के अनुसार फुलवारी नगर के राजा सूरज की पुत्री रतनावती की खोज में दूतों को भेजता है। दूतों के असफल रहने पर राजकुमार महिमोहन स्वयं रतनावती की खोज में निकल पड़ता है। मन्त्री तथा मुख्य सहायक अनुसार पर वठकर उसके साथ जाते हैं। चीन में पहुंचने पर जब उस रतनावती का कोई पता नहीं लगता तब वह चित्रपुरी पहुंचता है। चित्रपुरी में उसे रूपरेखा का निर्देश मिलता है। इस यात्रा में जलयान नष्ट हो जाता है और महिमोहन अकेला रह जाता है। इस समय वह एक जोगी के कुंजर में पहुंच जाता है। जोगी की स्त्री महिमोहन पर आसक्त हो जाती है। वहां से किसी प्रकार पीछा छुड़ाकर महिमोहन प्रेत अप्सराओं दानवों आदि के सम्पर्क में आता हुआ अनेक कष्टों को सहकर पास पहुंचता है। उनकी कृपा से वह एक महल में पहुंचता है जहां किसी दैत्य की बंदिनी पद्मिनी से उसकी भेंट होती है। पद्मिनी उसे अपनी सखी रतनावती के विषय में समस्त सूचनाएं देती है। महिमोहन दैत्य को परास्त करके पद्मिनी को मुक्त करता है और सिंहल पहुंचता है। वहां उसे अपना मित्र उत्तम भी मिल जाता है। वहीं पर पद्मिनी उसकी भेंट रतनावती से कराती है। रतनावती के जाने पर महिमोहन का एक देव रूपपुरी में रूपरम्भा के पास उठा ले जाता है। रूपरम्भा रतनावती के माता पिता को उसका मोहन से विवाह के लिए राजी करने का प्रयत्न करती है। इधर महिमोहन द्वारा परास्त दैत्य का भाई उसे पकड़ लेता है। रतनावती इस पर अत्यन्त व्यथित होती है। उसकी पीड़ा देखकर राजा सूरज सभी दैत्यों को परास्त करके महिमोहन और रतनावती का विवाह कर देता है। रतनावती के आग्रह पर उसका विवाह पद्मिनी से भी हो जाता है। अन्तत वह अपनी दोनों पत्नियों सहित घर आकर सुख शांति से रहने लगता है।

जान कवि लिखित कथा रतनावती शीर्षक प्रेमाख्यान की रचना कवि ने शाहजहां के शासन काल में की थी। इसमें कवि ने निर्गुण ब्रह्म की वन्दना के पश्चात सरल और सुबोध भाषा शैली में कथा का वर्णन किया है। कवि ने आरम्भ में ही इस कथा की व्यापकता और उद्देश्य के विषय में भी संकेत किया है। कथा के मूल उद्गम स्रोत के विषय में भी जान कवि ने इसमें व्यापक विवरण प्रस्तुत किया है। इस प्रेमाख्यान के कुछ काव्यांश उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

अब्द असतुति कहु स्याम कविअर आजम तारी नाम।
भल दप कर समय कुरान की अंसन मत बखान।

नाइ नान्त्र धग्म वावाग नाक समथाओ मभार।
सेप महिमद पीर हमारा जाजमतस जगत उजियारी।
सप महिमद हामवा पार हमारा आहि।
इगामान परगटे भए सब जग पूजत ताहि॥

— — —

रहत आगर माहि पनमाहि सवन दाप म ग्यपन ताहि।
सब घर जाव इगिपान स्म स्याम का आव भान।
मीर मान उजवक औ वावास दण्ड हहिन पन्च अरदास।
नियो दौलाबाद गमाए इन्द्रपुरी नवन पहराइ।

— — —

कहैन जान नाव कथा ग्वास करत कथा अनुपम प्रकास।
नाव सुनत हाए सुप प्रान सुक सुक लइ सुशीरख कान।
अगर मरन मरन हा भाव ममपन हा बाग चित चाव।
वनग मगन हाइ सुत्र भापा तारा सब धरै अभिलापा।
हवा गुनारथ समनया जानत साघ नर प सरवन सुगनन।
भापारथ निम धन्नु जान सहसकृत है सुगन बपान।
सस्कृत जाम घाट टाय भापा कविन कहीं कह बिन नाव।
धार है पम रुप सुप या माग कासु सुबात जुगा माहि नाहा।

कथा पुहुपवरिषा —

नान कवि निखिन कथा पुहुपवरिषा का रचना सम्वत १६८८ म हुइ था। इसम कवि न राजा भूपाल और रानी पावती क बड़ पुत्र पाद प पावान उत्पन्न पुत्र पुहुपासम की प्रम कहानी का वरान किया है। एक बार पुहुपासम एक अग्निाव प णी का एकता है और उन पकड़ लता है। वह पक्षी उस अपना कथा सुनात हुए बताती है कि मैं प्रमपुरी क राजा जगमन और रानी रूपनिधि की पुत्री सुरमी अथवा सुरामी हूँ। ककनपुरी का राजा दय सिंह और रानी रुपावती क पुत्र का नाम सुर पति है। एक बार किसी व्यक्ति न सुरपति क सामन पद्मिनी तथा इन्द्राणी आदि क रूप का चर्चा करत हुए सुरमा क सौन्दर्य का वरान किया। उसस प्रभावित होकर सुरपति अपन मित्र महानन्द क साथ नाना स्थान म घूमा करता है। मित्र स बिछड़ कर वह अनक कष्ट भागता है परन्तु सुरमा का पता नहीं लगता। एक बार नगर म वह एक दुखियारी स्त्री का दखता है। वह बताती है कि मर पिता का नाम चतुभज और माता का नाम गिरिजा है। मरा नाम निमलद है और मरी एक बहिन परमानन्द नाम का है। निमलद न सुरमा क विषय म सूचना दन का आश्वासन दता है। वह उस अपनी बहिन परमानद क पास चतुरगरी भेज दता है। राजकुमार निमलद का सलाह स प्रभावित होकर चतुरागी चल दता है। वहीं राजकुमार का भेंट अपन बिछुड़ मित्र महानन्द

से भी हो जाती है। निमलदे गुरोसी ना सारी कथा बताती है। पुरुषोत्तम से उसकी भट भी होती है। परन्तु मुग्धा की माता इस बात पर रोष प्रकट करती है और उसे पक्षी बना देती है। अ त म प क्षी कहती है कि मैं तब स मान मे इसी प्रकार पक्षी बनी हुई भटक रही हू । सारी कथा सुनकर पुरुषोत्तम उस अपनी धर्म बहिन बनाकर गुरुपति की खोज म चल पडता है। खोज म वह प्रभपुरी पहुचता है। अन्त पुरुषोत्तम के प्रयत्न स मुग्धा और गुरुपति का विवाह हो जाता है। पुरुषोत्तम और निमलदे तथा महानन्द और परमानन्द भी परस्पर विवाहित होकर सुखपूवक जीवन यतीत करने लगते है।

मूल कथा क साथ साथ प्रासगिक रूप म लेखक न इस ग्रथ म अनक अय वणन भी समाविष्ट किय हैं जिनम नखशिख वणन पनघट वणन तथा बारामास आदि हैं। इस कथा म दोहे और चौपाई छन्द का प्रयोग किया गया है। इसके कुछ काव्यांश इस प्रकार है

रछया निह परवे करतार।
जाने ह्य आव उपगार॥

काऊ थिर नाहिन रह जो उपज्यो ससार।
अमर रहत है जगत म जान सुजस उपकार।

— — —

जाके अग मग लाग है सुपन वहै जग नारि।
बिरहनि बपुरी नागि है ज्यो फागुन तरमारि।

'कथा रतनमजरी —

कवि जान लिखित कथा रतनमजरी की नायिका रतनमजरी और नायक मधुसूदन है। व दोनो एक दूसरे का स्वप्न म देखकर परस्पर अनुरक्त हो जाते है। एक बार शिकार के समय मधुसूदन का एक पक्षी उडा ल जाता है। इस पर उसके पिता अजयचन्द आत्म हत्या कर लेते है और उसकी माता रानी चन्द्रावती शोकाकुल हो जाती है। बन्त दर जाने पर मधुसूदन प क्षी स बचकर एक बाग म पहुचता है। वही पर उस रतनमजरी क दशन होते है। रतनमजरी क पूछने पर वह उसे अपना परिचय देता है। रतनमजरी क पिता उन दोनो का विवाह कर देत है। कुछ समय पश्चात रतनमजरी किसी पक्षी पर मोहित हो जाती है और मधुसूदन जब उसे पकडने जाता है तो वह प क्षी उस लकर उसी स्थान पर छोड आता है जहा से पहले लाया था। वन पर मधुसूदन को एक जोगी मिलता है जिससे दीक्षा लकर वह स्वय भी जोगी बन जाता है। वहा पर मधुसूदन की भट एक देव स होती है जो रतनमजरी का प्रमी था। वह देव रतनमजरी क प्रति उसके दृढ प्रम को देखकर उसे पहाड पर फेंक देता है। वहा उस गुफा म मधुसूदन की भेंट एक सिद्ध स होती है। सिद्ध के दिये हुए दो बाणो को लकर मधुसूदन फिर लौटता है और अनक विघ्न बाधाओ पर विजय पाता हुआ आग बढता है। वह उदयभान क भाई को भी देवो स मुक्त कराता है और फिर

रतनमंजरी के साथ सुखपूर्वक लौटकर निवास करने लगता है। इस शृंगारिक प्रेमकथा में कवि ने कहीं-कहीं आध्यात्मिक तत्वों का निरूपण भी किया है। इसके कुछ काव्यांश इस प्रकार हैं

अब नैनन सौं सुनहु निकाई पवन करन मान चतुराई।
के संग भूलि परयो जिम छौना के कंठ दृग मैं रामन गाना।

— — —

नैननि के रसना नहीं बरनत रूप सुभाइ।
रसना बिन देखी कहै, तातैं कह्यो न जाइ॥

— — —

गुरु बिन मारग कौन बतावै को आतम दरसन परखावै।
कठिन पंथ पुनि पूरित कुस्ना गुरु बिन्नो बिन चलत न चना।
काम क्रोध तिसना सुबल माया मोह जंजार।
मारग चलि नाहिन सकै जो सिर परि दस मार॥
गुरु बिन को मेटै चित चिन्ता गुरु बिन कौन मिलावै मित।

— — —

आप काजिय आप तजि तौ निज पन्थ जाइ।
जब लग आपु न दूर है कौन लाज को लाइ।

'कथा छीता'—

जान कवि लिखित कथा छीता नामक प्रेमाख्यान में देवगिरि के देव की रूपवती कन्या छीता की कहानी है। उसके सौन्दर्य की चर्चा सुनकर राम नामक एक राजा ब्राह्मण वेष में आया और राजा देव के पुरोहित के यहाँ रहने लगा। पुरोहित के प्रयत्न से एक दिन राम ने छीता के दर्शन किए। बाद में उसने अपना वास्तविक परिचय राजा देव पर प्रकट किया। राजा देव ने छीता की सगाई करके तीन वर्षों बाद विवाह करने का निश्चय किया। सगाई के पश्चात राम अपने नगर लौट आया। उधर राजा देव ने अपनी पुत्री और जामाता के लिए अलाउद्दीन के चित्रकारों को बुलाकर चित्रमहल बनवाया। चित्रकारों ने छीता की छवि देखकर ... एवं चित्र बनाकर अलाउद्दीन के पास भेज दिया। अलाउद्दीन ने ... मुग्ध होकर राजा देव पर आक्रमण कर दिया। गढ़ पर विजय न प्राप्त कर सकने पर राघव चेतन नामक पंडित की सलाह पर अलाउद्दीन दास के वेष में गढ़ में प्रविष्ट हुआ। छीता ने दर्शन करते समय उसे पहिचान लिया और बन्दी बनवा दिया। छूटने के पश्चात राजा वापस दिल्ली लौटने लगा परन्तु अपने कुछ सैनिकों को गढ़ में जानकर उसने पुनः गढ़ घेर लिया। फिर उसने छलपूर्वक छीता का हरण करवा लिया। उसके अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी छीता उस पर प्रसन्न नहीं हुई और उसने अपनी सगाई की बात अलाउद्दीन को बता दी। दूसरी ओर राजा देव से सारा समाचार जानकर राजा राम जोगी के वेष

म अलाउद्दीन के पास पहुचा। वहाँ पर उसने अपना परिचय देकर अलाउद्दीन ने उनको सम्मान सहित विदा कर दिया।

कथा कामलता —

जान कवि लिखित कथा कामलता शीर्षक प्रेमाख्यान का रचना काल सम्वत् १६७८ माना जाता है। यह एक लघु कृति है। इसकी कथा नायक पुन्नपात्र नगरी का राजा रसाल है। एक बार राजा स्वप्न में किसी सुन्दरी को देख लेता है। तब उसका मंत्री बुधवत न उसे जगा दिया। इस पर राजा क्रुद्ध हो गया। बुधवत ने उसकी पीड़ा को समझकर उसके वर्णन के अनुसार ही स्वप्न सुन्दरी का एक चित्र बनाया। फिर मार्ग में इस उद्देश्य से रख दिया गया कि यदि कोई व्यक्ति इसका परिचय जानता हो तो राजा को सूचना दे। एक दिन एक पथिक ने उस चित्र को पहचान कर सूचना दी कि वह सुन्दरपुरी की रानी कामलता है जो आजीवन अविवाहित रहने का प्रण कर चुकी है। यह सूचना पाकर राजा रसाल और मंत्री बुधवत सुन्दरपुरी पहुँचते हैं। वहाँ पर बुधवत बड़े कौशल से रसाल का चित्र बनाकर कामलता को दिखाता है और बताता है कि वह भी अविवाहित रहना चाहता है। कामलता राजा से भेंट करने की इच्छा प्रकट करती है और फिर उन दोनों का विवाह हो जाता है। यह प्रेमाख्यान एक प्रतीकात्मक रचना है। इसमें कवि ने यह अभिव्यक्त करने की चेष्टा की है कि समस्त सारी सृष्टि परम ब्रह्म रूपी चित्रकार की ही रचना है। इस रचना में कवि ने व्रज भाषा का प्रयोग किया है। छन्दों में दोहे और चौपाइयों का ही प्रयोग हुआ है।

कथा कनकावती —

कवि जान लिखित कथा कनकावती शीर्षक प्रेमाख्यान का रचना काल सन् १६१८ है। यह समय जहाँगीर के शासन का था। यह एक लघु आख्यान है जिसकी रचना कवि ने केवल तीन दिनों में की थी। इसमें दोहा और चौपाइयों का प्रयोग किया गया है। इसकी कथा का सम्बन्ध राजा भरत के पुत्र परमरूप से है। परमरूप एक बार स्वप्न में किसी अनजान सुंदरी को देख कर उस पर मुग्ध हो जाता है। उसके विवरण के अनुसार एक चित्रकार उस सुन्दरी का चित्र बनाता है। एक विप्र इस चित्र को देखकर यह सूचना देता है कि परमरूप के राज से चार सौ कोस की दूरी पर सिंधपुरी है जहाँ की राजकुमारी कनकावती का वह चित्र है। परमरूप यह सूचना प्राप्त करने के पश्चात् विप्र को कनकावती के पास भेज देता है और वह कनकावती से परमरूप के विषय में बताता है। परमरूप जोगी के वेष में स्वयं भी सेना सहित चल पड़ता है। उसके पिता भरतराय अग्निवर्ण राय से कनकावती के लिए युद्ध भी ठान लेते हैं। इस युद्ध में भरतराय की पराजय होती है। परमरूप को कोई संन्यासी अपने साथ ले जाता है परन्तु विप्र परमरूप और कनकावती के मध्य पत्र सम्बन्ध बनाये रखता है। एक बार परमरूप संन्यासी से सीखी हुई कल्पनिधि नामक विद्या के बल पर सिंध नगर पहुँच जाता है। उन दोनों का वहीं विवाह भी हो जाता है। कुछ समय पश्चात्

परमरूप को अपनी गलतियों का स्मरण होता है और वे दोनों वापस आ जाते हैं। जगपतिराय को जब यह सूचना मिलती है तो वह सेना लेकर आक्रमण कर देता है। वह एक सुरंग के द्वारा आधा नगर नष्ट कर देता है जिससे वहां प्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो जाता है। परमरूप स्वयं बह जाता है और जगराय नामक व्यक्ति उसकी रक्षा करता है। बनरावती बहती हुई जगपतिराय के पास पहुंच जाती है। कुछ समय पश्चात जगराय द्वारा प्रेषित विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया जाता है और उन दोनों का विवाह हो जाता है। इस प्रकार से उनके सुखपूर्वक जीवन के साथ इस कथा का अन्त होता है। यह कथा काल्पनिक है और अन्य प्रेमाख्यानों की धारा पर ही लिखा गया है। रचना एवं काल का इस प्रकार है

भाषा अपनी जो सुख आई खागिन मनसा धाई।
निपट हूँ स नहिन अनुराग परम नहीं रसना अरसाव।

ग्रन्थ बुद्धिसागर अथवा कथा मधुकर मालती—

कवि जान लिखित ग्रन्थ बुद्धिसागर अथवा कथा मधुकर मालती शीर्षक प्रेमाख्यान अयोध्या के एक सौदागर रतन के पुत्र मधुकर और मालती नामक एक कन्या की प्रेम कहानी है। मधुकर संयोगवश मालती का अध्यापक नियुक्त हो जाता है। जब रतन को मधुकर के इस प्रेम-व्यापार का पता लगता है तब वह उसे नगर से बाहर चला जाता है। दूसरी ओर मालती को भी कोई विदेशी सौदागर क्रय कर ले जाता है। मधुकर के पिता की विदेश में मृत्यु हो जाने के पश्चात मधुकर लौट आता है। मालती की खोज करने पर उसे मार्ग विवरण ज्ञात होता है। वह उसे खोजते हुए यह सूचना पाता है कि मालती ने जब बादशाह के सभी प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिये तब बादशाह ने पुनः तुर्किस्तान के शासक के हाथ उसे बेच दिया। इस बार मालती के साथ मधुकर भी तुर्किस्तान पहुंच गया। वहां पर तुर्किस्तान के शासक ने अपनी कन्या की दासी के रूप में मालती को रख लिया। मालती के रूप पर उस कन्या का पति मुग्ध हो गया और मालती द्वारा तिरस्कृत होने पर उसने उसे संदूक में बन्द करके पानी में फेंक दिया। इस संदूक को एक अरमनी ने निकाला। अरमनी के भी प्रस्ताव को मालती ने अस्वीकार कर दिया। मधुकर इस समय भी किसी प्रकार खोज करता रहा। एक बन्दरगाह पर वहां के प्रधान मंत्री ने मालती के रूप पर मुग्ध होने और उसके सौन्दर्य की चर्चा सुनने पर वहां के बादशाह ने उसे क्रय कर लिया। बादशाह ने मालती की अनुमति जानने में न रुककर उसे मधुकर की ही अमानत समझकर सौंप दिया। किसी प्रकार अनेक कष्टों के सहने के पश्चात मधुकर और मालती एक नाव में वहां से भाग निकलने में सफल हुए। दुर्भाग्यवश नाव के नष्ट हो जाने पर वे पुनः अलग अलग होकर भटक गये। बड़ी कठिनाई के पश्चात वे दोनों बगदाद पहुंचे जहां के बादशाह हारूनरशीद के यहां नौकरी करने लग गए। बादशाह को जब उनके प्रेम की सूचना मिली तो उसने उन दोनों का विवाह करके उन्हें घर पहुंचा दिया। यह कथा भी पूर्णतः काल्पनिक है।

कथा कवलावती —

कवि जान लिखित कथा कवलावती शीर्षक प्रेमाख्यान रूपपुरी के राजा रूपराज तथा रानी रूपरेखा के पुत्र इन्द्रवदन और कवलावती के प्रेम पर आधारित है। राजा ने अपने पुत्र के विवाह के लिए उसकी इच्छानुसार और गुणियों के चित्र मगवाये। इन्द्रवदन ने उनमें से किसी को भी पसन्द नहीं किया। तब बार तब तोते के द्वारा इन्द्रवदन को मल्लनगरी के राजा मल्लराज और उसकी रानी मल्लरेखा की पुत्री कवलावती के सौन्दर्य की सूचना मिली। उसने यह भी बताया कि सहस्रों स्त्रियों में उसने भी किसी राजकुमार को पसन्द नहीं किया। तोते की प्रेरणा से इन्द्रवदन और कवलावती के मध्य चित्रों का आदान प्रदान हुआ और फिर दोनों का विवाह हो गया। विवाह के उपरान्त एक दिन ... का ... दोनों को सुप्तावस्था में ... ले गया। वहां से लौटते समय एक देव कवलावती को ... ले गया। जागने पर इन्द्रवदन जोगी बनकर कवलावती को खोजने लगा। ... पशु ... हाथी सांप नाहर भूत प्रेत पिशाच आदि से किसी प्रकार अपनी रक्षा करते हुए इन्द्रवदन कवलावती के पास पहुंचा। वहां पर देव से उसने उसे मुक्त कराया। आगे चलकर उसने रत्नसागर नाम के एक राजा से भी उसकी रक्षा की। इनकी नाव एक बार भवर में टूट जाने पर वे दोनों फिर बह गये। कवलावती तो बहकर अपने पति के नगर में पहुंच गयी। परन्तु इन्द्रवदन को अप्सराएं ले गयीं। तोते के माध्यम से ही उन दोनों को पुनः एक दूसरे के पत्र प्राप्त हुए। गरुड़ से प्रार्थना करने पर इन्द्रवदन पुनः अपने यहां आ सका और फिर वे दोनों सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। इस प्रेमाख्यान का एक काव्यांश उदाहरणार्थ इस प्रकार है

मुख आनी जो जिय में आई भाषा जो आई सो आनी।
रहयो बागर भाऊ विभ भाषा आव भनी।
य दिन ... ज्यों ... तसी भाषा उक्ति दिन।
उक्ति विसेष साचु कै जानहु भाषा जाव सो मानहु।
उक्ति भनी भाषा में आव तौ वह सोना सुगन्ध बहाव।
संस्कृत ... बिनावी मध्य विनाय न साजबजावी।
मह ... कठिनाइ ताते कहि यह जुगति ... ।

कथा मोहिनी —

कवि जान लिखित कथा मोहिनी शीर्षक प्रेमाख्यान राजकुमार मोहन और राजकुमारी मोहिनी के जीवन पर आधारित है। मोहिनी सभी वरों से कुछ प्रश्न पूछती थी और वे उसका उत्तर न दे पाते थे। जब मोहन ने उसके प्रश्नों का उत्तर दे दिया तो मोहिनी का उससे विवाह हो गया। इस कथा में कवि जान ने आध्यात्मिक ज्ञान आदि का भी सात्विक विवेचन किया है। नीचे लिखी हुई पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है

रूपवन्ति अति मोहिनी माह्या सब संसार।
और इस पर ध्यान का आवत नाहिन पार।
मसिविद पुनि प्राकित पढ़ा कथा ध्यान की जाति।
कोविद जित जहान में कोऊ नाहिन होत।
वाचा वानें अति विकट अरथ सहज पर बाद।
बुद्धि आगर नागरि सुभग एसो भेद न होद।
जन ध्यानी जगत में सबको उपजा हाँस।
जप माहना माहनि रावत हैं निस धाँस।

कथा नलदमयन्ती —

कवि जान लिखित कथा नल-दमयन्ती प्रसिद्ध पौराणिक आख्यान पर आधारित है। इसमें कवि ने राजा वीरसेन के नल और पुष्कर नामक दो पुत्रों में से नल की कथा लिखी है जिसका विवाह विदर्भ के राजा भीम की कन्या दमयन्ती से हुआ था। एक हंस के माध्यम से इन दोनों का परिचय हुआ था और दमयन्ती के स्वयंवर में देवताओं तक की उपस्थिति होने पर भी नल का पाणिग्रहण हुआ था। जुए में हार जाने के पश्चात् राजा नल और रानी दमयन्ती को जिन विपत्तियों का सामना करना पड़ा था उनका भी इसमें उल्लेख है। कथा का अन्त नल के स्वावास लौटने के पश्चात् दमयन्ती के साथ प्रसंग तक है। इसके कुछ काव्यांश इस प्रकार हैं

वाचा मैं जु प्रयन माहि सब भाति पाद प नाहि।
सबही की मति चुनि चुनि लायो चतुरन हन अरगजा वाचा।
कन्त मिलौना मिल सुवास अति सुगन्ध है नल प्रकास।

— — —

भूषन प्यास उनास रहै नित भोजन भूख नाहिन कहै।
फूल की माल जो सूधन बास जरे ते तन उसास जु रहै।
जोवन कम बनें बनिता को अब जु पियार की नाहिन पै।
मन करो अति मन तें कामन जो त्रिय पास रो मन जहै।

कथा लैला मजनू —

कवि जान लिखित कथा लैला-मजनू प्रसिद्ध प्रेम कथा पर आधारित है। लैला मजनू का प्रेम एक पाठशाला में ही आरम्भ होता है। जब लैला का पाठशाला आना बन्द कर दिया जाता है तब मजनू मित्रों के रूप में लैला से मिलता है। मजनू का पिता उसे अपने साथ लेकर मक्का चला जाता है। उसका लैला के प्रति प्रेम देख कर वह लैला के पिता के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है। वह विवाह के लिए कुछ शर्तें रखता है। मजनू उन्हें पूरा करने का यत्न करता है तभी इब्नसुलाम लैला पर मुग्ध होकर उससे विवाह कर लेता है। मजनू को जब इस विवाह की सूचना मिलती है तो वह बहुत दुखी होता है। कुछ समय पश्चात् अपने पति की मृत्यु हो जाने पर लैला

भी सती हो जाती है। मजनू भी उसकी समाधि के पास ही आ प्राण दे देता है।

'कथा कलावती —

कवि जान लिखित कथा कलावती शीर्षक प्रेमाख्यान विजयपुर के राजा विक्रम तथा रानी चन्द्रावती के पुत्र पुरन्दर और कलावती के प्रेम पर आधारित है। पुरन्दर एक बार शिकार खेलते समय एक रात एक व्यक्ति से राजा सुरंगम कनकपुर तथा रानी प्रेम की पुत्री कलावती के सौन्दर्य के विषय में जानकारी प्राप्त करता है। यह सुनकर पुरन्दर उसके रूप की कल्पना कर उसकी खोज में चल पड़ता है। विविध कठिनाइयाँ सहकर वह राजा और राजकुमारी को विरहभरी वार्ता सुनाकर मुग्ध कर लेता है। अन्त कलावती से उसका विवाह हो जाता है।

'कथा रूपमंजरी

कवि जान लिखित कथा रूपमंजरी शीर्षक प्रेमाख्यान का रचना काल अज्ञात है। इस ग्रंथ में कवि ने हस्तिनापुरी के राजा हंससेन और उसकी पटरानी पद्मावती के पुत्र ग्यानसिंह और कंचनपुर के राजा ... और रानी ... हंसावत की पुत्री राजकुमारी रूपमंजरी की कथा वर्णित है। ग्यानसिंह के मित्र न्यायसिंह का भी उल्लेख कवि ने इसमें प्रासंगिक रूप से किया है। एक बार दोनों मित्र रात में बातचीत करते हुए जब सोये तो ग्यानसिंह ने एक स्वप्न देखा। कुछ समय बाद जब उसने वैसा ही स्वप्न पुनः देखा तब उसने पता लगाया कि जिसको वह स्वप्न में देखता है वह रूपमंजरी है। उसके हेतु वह घर छोड़कर चल पड़ता है। चार माह के बाद वह अपने ननिहाल पहुंच कर वहां भी रूपमंजरी का चित्र देखता है। इसके बाद दो महीने बाद वह कंचनपुर पहुंच कर मालिन की सहायता से रूपमंजरी से भेंट करता है। वह गुप्त रूप से रूपमंजरी के साथ विवाह करके लौट पड़ता है और तपस्वियों की सहायता से कुशलपूर्वक अपने घर लौट आता है। प्रसंगतः इस प्रेमाख्यान में कवि ने विविध आध्यात्मिक विषयों का भी वर्णन किया है। इसके कुछ काव्यांश इस प्रकार हैं

पान बसन की सोभा रूपन फल सो पहिरि आभूषन।
मधुरबचन मधुकर बहु बोलत अवर पत पौन लगि भाल।
मन पाव तरवर तरे तरन चौप मन माहि।
रूपमंजरी आइहै करे बिछौना छाहि।

— — —

जो गुर की सेवा करे इक मन इक जिय होय।
इछया पूजे प्रान की चिंता रहे न कोय॥

— — —

देत प्यारी मंजरी कुंवर करत है पान।
सबन सुनी मुख उचरी लग तीन ही जाम॥

कथा पिजरपा साहिजादे वा देवल दे की चौपई—

कवि जान लिखित प्रस्तुत प्रेमाख्यान का रचना काल सन १६४८ माना जाता है। कहा जाता है कि इसका लिपि काल सन १७२०-२१ है और इसके लिपिकार फतहचन्द हैं। इसकी रचना दो चौपाइयों में हुई। कवि ने ग्रंथ में सुलतान अलाउद्दीन के पुत्र पिजरपा साहिजादे का उल्लेख किया है। उसके मामू अलफखाँ थे। सुलतान ने अनेक राज्यों को पराजित करके अपने अधीन कर लिया। अन्त में अलफखाँ ने सुलतान के आदेश पर करनराइ पर आक्रमण किया और उसे पराजित किया। करनराइ अपने परिवार को छोड़कर भाग गया। उसकी स्त्रियों को अलफखाँ दिल्ली ले आया जिनमें से रानी कवलदे को सुलतान अलाउद्दीन ने अपनी पटरानी बना लिया। कवलदे ने सुलतान से अपनी बिछुड़ी हुई पुत्री देवलदे की खोज कराने का अनुरोध किया। सुलतान के आदेश पर अलफखाँ उसको खोजकर ले आया। उस समय पिजरपा की अवस्था दस और देवलदे की अवस्था आठ वर्ष की थी। वे दोनों एक साथ रहने लगे और उनमें परस्पर प्रेम हो गया। सुलतान ने यह देखकर पिजरपा की माँ से कहा कि साहिजादे का विवाह उसके मामू अलफखाँ की पुत्री से कराया जाय और देवलदे से उसका मिलना जुलना बन्द करा दिया जाय। पिजरपा की माँ ने यह बात मानकर देवलदे को किसी अन्य स्थान पर पहुँचवा दिया। अब वे दोनों चम्पा करनी कुजा तथा गुलाल नामक दूतियों के माध्यम से एक दूसरे के पास अपने प्रेम पत्र भेजने लगे। पिजरपा की माँ ने देवलदे को और भी दूर भेज दिया। साहिजादे ने यह जानकर बहुत आत्मवेदना अनुभव की। सुलतान ने उसके विवाह की विधियाँ सम्पन्न कीं और पिजरपा का विवाह साहजादी से हो गया। विवाह के पश्चात पिजरपा मन में देवलदे को ही याद करता रहा। उनके सच्चे प्रेम का पता जब सुलतान को लगा तो उसने उन दोनों का मिलन करवा दिया। साहिजादा अपनी दोनों पत्नियों के साथ रहने लगा। यह अधिकांशतः कल्पित तथ्यों पर ही आधारित है और इसके अनेक वर्णन इतिहास सम्मत नहीं हैं। इसके कुछ पद्यांश इस प्रकार हैं—

रूपवंत बाल नर-नार धरना की छबि भई अपार।
सावन सुत सावन बात जिय को रूप दिखायो आन।
रूपवंत का नगर के लोचन सब मझार।
नागनि की त्यों रूप है भावत हहा जघार॥

— — —

पान मार दे अधर को नैननि अंजन सार।
भूषन अति साज नगे नागि गहा धरि हार।

शेखनबी—

ज्ञानदीप नामक प्रेमाख्यान के रचयिता कवि शेखनबी हैं। यह जिला के [illegible]

जहाँगीर के समकालीन थ। इस ग्रथ का रचना काल सन १६१८ है। ज्ञानदीप म कवि ने भगवत नाम स्मरण की महिमा वर्णित की है। इसकी कथा म मैंगिनार मिथिल के राजा राय सिरोमनि क पुत्र ज्ञानदीप तथा विद्यानगर के राजा सुरदेव की कन्या देवजानी के प्रेम व्यापार का वर्णन है। ज्ञानदीप एक बार शिकार के समय अपने साथियो से भटक जाता है। सिद्धनाथ जोगी उसे राग रागिनियो की शिक्षा देते हैं। राजा सुरदेव ज्ञानदीप को जोगी के वेश म देखकर उसके उद्धार का प्रयत्न करता है। राजकुमारी देवजानी की सखी सुरतानी उस रतनागम्या म जाती है। वह उसके सौन्दर्य के विषय म देवजानी को सूचना देती है। देवजानी ज्ञानदीप के रूप पर मुग्ध हो जाती है। कई प्रयत्न के बाद वह देवजानी स भेंट करता है। ज्ञानदीप रूप स एक दिव्य घोड़े पर सवार होकर वह नित्य देवजानी स भेंट करने लगता है। एक बार राजा के चलाए हुए बाण से ज्ञानदीप घोड़े पर से गिर पड़ता है और राजा के पूछने पर मिथ्या कारण बता देता है। राजा उसे मृत्युदण्ड की आज्ञा देता है परन्तु बाद म मंत्री की सलाह स उसे एक बाद के सदूक म बन्द करके पानी म बहा देता है। ज्ञानदीप राजा मानराय की राजधानी पहुँचता है और वहाँ म स निकाल कर राजसभा म प्रस्तुत किया जाता है। राजा उसे अपने पुत्र के रूप म रख लेता है। देवजानी ज्ञानदीप के विरह म आत्मघात करने का प्रयत्न करती है परन्तु भगवान शकर की कृपा से बच जाती है। उन्ही की प्रेरणा स राजा ज्ञानदीप की खोज करता है और अन्त म देवजानी के स्वयवर की घोषणा करता है। ज्ञानदीप वहाँ आता है और उसका देवजानी स विवाह हो जाता है। बहुत समय तक वे दोनो सुखपूर्वक वहाँ रहने लगते है। तत्पश्चात राजा मानराय की मृत्यु हो जाती है और उसकी ३६ रानियाँ अपनी सहेलियो सहित सती हो जाती हैं। राजा मानराय की पुत्री दामावती का योग्य वर स विवाह करने के पश्चात ज्ञानदीप राजकाज देखने लगता है। देवजानी की सहेली सुरतानी भी अपनी सहेली के पास चल पड़ती है। अनेक प्रासगिक कथाओ और देवजानी के सुन्दरसेन नामक राजा द्वारा हरण ज्ञानदीप के आक्रमण सुन्दरसेन की पराजय और अतत ज्ञानदीप के स्वदेश वापस लौटने की कथा इसम वर्णित है। अवधी भाषा म यह काव्य दोहे चौपाई छन्दो म लिखा गया है। इसके कुछ काव्यांश इस प्रकार है

एहो जुगुति दिन बीतेउ भारी निसि आय विरहिन दुखमारी।
देखत चन्द चन्द बिसारा पपिहा बोल सबद जिउ मारा।
बोलहि मोर सोर वन माहा कीन्ही यकनि काम तन दाहा॥
कोकिल कूकत कलरव बानी विरह पसीजि भीजि तन चोली॥

— — —

भए सजाइन तुरग चन्द हस्तिन पपरी वाहन मढ।
घुमरहि घटा जनु सावन आय अकुस कीन्ह तुरत चमकाये॥
घमरहि घन जनु बाजु निसाना जनु बगुपाति फरहरा बाना॥

भाँट बाजन में सहनाई मानहु आरग सबद सुनाई ॥

— — —

तिय जोबन जस नद को पानी उतरि गये का मत्र आनी ।
तिरिया जानि दूध की नाईं बिनस बहुरि सवाद न पाई ।
तिरिया कंवल पुष्प सम तूला पानी गये न सो रंग फूला ॥
तिरिया कदलि पत्र की नाईं, एक बार फर हाथ मिटि जाई ॥
तिरिया माटिक बासन जस पाग छुनि रसाइ न पस ।
तिरिया जस मांगी की गगरी माटर बूंद पत्न पन बिगरी ॥
औगुन भरी सो तिरिया सती गुन अधार ।
सत करि चित भीतर जो पुरवहि करतार ॥

कासिमशाह—

भक्तियुगीन सूफी प्रेमाख्यान काव्य की परम्परा में कासिमशाह लिखित 'हंसजवाहिर' नामक रचना का नाम भी उल्लेखनीय है। कासिमशाह लखनऊ जिले के अन्तर्गत दरियाबाद नामक स्थान के निवासी थे। उनके पिता का नाम इमानुल्ला था। इस ग्रन्थ का रचना काल सन १७८० है। कासिमशाह दिल्ली के सम्राट मुहम्मद शाह के समकालीन थे। ग्रन्थ के आरम्भ में कवि ने अपने पीर कासिमशाह के साथ-साथ पीर मुहम्मद पीर अशरफ तथा पीर अली का भी उल्लेख किया है। इस प्रेमाख्यान में कवि ने बलखनगर के सुलतान बुरहान शाह के हजरत ख्वाजा के आशीर्वाद से जन्मे पुत्र हंस तथा चीन के राजा आलम शाह और रानी मुताहर की राजकुमारी जवाहिर की प्रेम कथा वर्णित की है। बुरहान शाह की मृत्यु के पश्चात हंस में अराजकता फैल जाती है। हंस को किसी प्रकार उसकी माता सुरक्षित वहाँ से हटा ले जाती है और हंस दूसरे देश में जाकर सम्मानपूर्वक रहने लगता है। वहाँ पर स्वप्न में हंस किसी सुन्दरी को देख कर मुग्ध हो जाता है। दूसरी ओर चीन की राजकुमारी जवाहिर एक परी से परिचय पाकर हंस के नाम से उसे अपने पास रख लेती है। जवाहिर का विवाह सुलतान भोगाशाह के पुत्र निनौर से होना निश्चित होता है। लेकिन परी निनौर को ठीक वर नहीं मानती और उपयुक्त वर की खोज में हंस के पास पहुँचती है। हंस स्वप्न में देखी सुन्दरी और जवाहिर के चित्रदर्शन में साम्य देखकर उससे मिलने का प्रयत्न करने लगता है। अन्त में राजकुमारी का पुनः कोई सन्देश नहीं पाती और इसी बीच रानी उसे बन्दी बना लेती है। हंस की उदासीनता देखकर अनेक राजकुमारियों से उसके विवाह का प्रस्ताव किया जाता है परन्तु वह किसी से विवाह करने को तैयार नहीं होता। संयोगवश वह परियाँ जवाहिर के लिए निनौर की बारात में से निनौर को उठाकर हंस को उसके स्थान पर रख देती हैं और स्थान में उन प्रेमियों का विवाह हो जाता है। विवाह के पश्चात वे फिर हंस को उठाकर निनौर को उसके स्थान पर सुला देती हैं। अब जवाहिर निनौर को पति रूप में स्वीकार नहीं

चल पडता है। मार्ग में अनेक कठिनाइयों को पार करता हुआ वह बनजारे से मिलता है और पुन आगे बढ़ता है। उसके सभी साथी पीछे छूट गये होते है। इधर राजकुमारी इन्द्रावती भी स्वप्न में किसी रूपवान योगी को देखती है। मलता नामक मालिन की सहायता से वे दोनों परस्पर भेंट करते हैं। राजकुंवर उसके सौन्दर्य को देखकर अचेत हो जाता है। अन्त में इन्द्रावती उसे प्रतीकात्मक कथा लिखकर उसके पास छोड जाती है। राजकुंवर को इसी बीच दुर्जन राय के द्वारा बंदी बना लिया जाता है। वह तोते के द्वारा इन्द्रावती के पास अपना समाचार भेजता है। राजकुमारी की सलाह से कृपा नामक राजा की सहायता से राजकुंवर मुक्त होता है। अनेक कठिनाइयों के बाद समुद्र की देवी कमला प्रसन्न होती है और राजकुंवर समुद्र से प्राण माती प्राप्त करके लौटता है। राजा जगपति अपनी कन्या से उसका विवाह कर देता है। कथा के उत्तरार्द्ध में राजकुंवर की पूर्व पत्नी सुन्दर के विरह का वर्णन है जिसमें कीर्तिराय नामक पुत्र उत्पन्न होता है। राजकुंवर के वियोग में पीड़ित रानी बड़ी कठिनाई से पुत्र का पालन भी करती है और राजकाज भी चलाती है। रानी को उसकी सहेलियां अनेक प्रकार की कथाएं सुनाती हैं। राजा हंस रम्भा चित्रसेन मालती महाबली राजा नन्द राजवल्लभी आदि की कहानियां सुनाकर रानी किसी प्रकार दिन काटती है। इसी बीच लोभ नामक एक स्त्री कीर्तिराय पर कुछ जादू टोना करती है और दंड स्वरूप देश से निष्कासित कर दी जाती है। वह जतपुर पहुंच कर वहां के राजा काममन से रानी सुन्दर के रूप का वर्णन करती है। कामसेन मोहिनी मालिन को जोगी के वेष में रानी सुन्दर के पास भेजता है परन्तु वह अपने प्रयास में सफल नहीं होती। फलतः राजा कामसेन कालिंजर पर चढ़ाई कर देता है परन्तु युद्ध में मारा जाता है। अन्त में रानी सुन्दर वियोग की पीडा न सहन कर पाकर पवन के द्वारा सन्देश राजकुंवर के पास भेजती है जिसे पाकर राजकुंवर इन्द्रावती सहित लौट आता है और फिर वह सब सुख से रहने लगते हैं। एक बार शिकार के समय राजकुंवर एक तोते से बल्लभ और प्रमा की कथा सुनता है। इस कथा का उसपर ऐसा प्रभाव पड़ता है कि कुछ समय के पश्चात उसकी मौत मृत्यु हो जाती है। उसकी दोनों रानियां उसी के साथ सती हो जाती है।

इस रचना में कवि ने एक कल्पित कथा प्रस्तुत की है जिसका आध्यात्मिक महत्व है। इसके सभी पात्र साधक मोह वासनाओं इन्द्रियों आदि के प्रतीक है। जीव ब्रह्म की साधना करते हुए अनेक प्रकार की बाधाओं से मुक्ति पाकर अन्ततः प्रेम भावना का आश्रय लेकर परम सौन्दर्य का साक्षात्कार करता है। इसमें कवि ने विविध वर्णन रस तत्व और आलंकारिकता आदि का सम्यक रूप से समावेश किया है। इसके कुछ काव्यांश उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं

करौं मुहम्मद साह बखानू। है सूरज देहली सुलतानू।
धरम पंथ जग बीच चलावा। निबर न सबरे सो दुख पावा।

वसुत सरानीन जब वर । आइ महाम वन हैं घर ।
सब काहू पर दाया धरद । धरम सहित सुलताना करई ।

— — —

मत दश मा दश नानि मचारा । मधि पग माहि सब मसारा ।
नगर एक नाव फुलवारी । नगउ तहाँ पुरुष जो नारी ।
दोउ पुरुष भाषा बरनि न जाई । चम पुरुष नगर भुग आई ।
तयी गक दखउ तहि ठाऊ । पूछउ नामा नित्वर नाऊ ।
कहा अहैं राजा औ रानी । इद्रावनि और कुवर गियानी ॥

आगमपुर इद्रावनी कुवर कांतिजर गाय ।
प्रम हुते दाउन्ह वह दौहा अनत्र पिनाय ।

— — —

औ मह पायी क जा वाउ पढ़ह तानि दाया मा तहि सुउ वरन ।
हाइ सुखा जा पढ़ई दुवारी हाइ धना जा पन्ह भिखारी ।
पन विपत्र मों सम्पत पाव बाउर पन नान मन आव ।
पन वियागी हाय सजागी नाम गग पव जा रागा ।
वियार्थी पढ़ चित नाई हाद ताहि विद्या अधिकाद ।

भयउ सम्पूरन पाथी पूजी मन की आस ।
पन लोग मयाथी जब ना माहि मकाम ॥

— — —

भयउ धना हालन सा कारा धरगन भय थाव चमकारा ।
दीन साल धरग चौपाहू धर्लाह बार्गाह चढि मनाहू ।
हान आरया भालना चाहै अरि का हन्न पतान सराहै ।
भाना धरग हल मब काई बान्न धरा टनान्न नान ।
गगन धरग पग सा न्न गयऊ हिन हिन औ धनु हन हन भयऊ ।
भानई धना धूर मौं न्नि मनि न्हा छिपाय ।
तहा महाभारत्थ भा मकन परउ हू हाय ॥

— — —

कहा धरम का रान मचारे ना अधरम मौं दा उबार ।
भगा सिरजनहार पगावा धरम कर का बान जनावा ।
और मह बान कन मौं आइ करै सभापा मग भनाई ।
निग अधर्मी मगा क न्नि आव न्न मन्पादव जन विन ।
बोया आन नरक कुड माहा, महाँ मरीन मजारा नाहा ।

'अनुराग बांसुरी —

कवि नूर मुहम्मद लिखित अनुराग बांसुरी शीर्षक प्रमाख्यान में कवि ने मूरतपुर के राजा जीव के पुत्र अंतःकरण की कथा प्रस्तुत की है। उसके सखा थे चित्त, बुद्धि चित्त तथा अहंकार नामक मित्र थे। अन्तःकरण की पत्नी का नाम महामोहिनी था। अंतःकरण एक बार सर्वमंगला नामक सुन्दरी की मणिमाला देखकर उस पर मुग्ध हो जाता है। मणिमाला पहिनने वाला ब्राह्मण उसे बताता है कि यह माला पहन उसने ज्ञातस्वाद नामक विद्यार्थी के साथ में विद्यापुर नगर में देखा थी। ज्ञानस्वाद से उसे यह ज्ञात हुआ कि सनेहनगर के राजा की कन्या सर्वमंगला ने उसकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर उसे यह माला भेंट की थी। अंतःकरण ब्राह्मण से उस माला को पाकर सर्वमंगला के विरह में पीड़ित रहने लगता है। बूंद नामक भृत्य उसके पिता को राजकुमार के विरह का मूल कारण बताता है। किसी की सलाह भी न मान कर राजकुमार अंतःकरण सर्वमंगला को प्राप्त करने के लिए घर से प्रस्थान कर देता है। सनेही गुरु राजकुमार को अपने निश्चय पर दृढ़ देखकर उसे एक तोता के साथ भेजते हैं। मार्ग में इन्द्रियपुर का राजा मायावी मनभावनी नामक रूपसी की सहायता से उसे लक्ष्य भ्रष्ट करना चाहता है। वह राजकुमार के सनेही रागसनेही तथा कामसनेही नामक साथियों को भी बहका लेता है। परन्तु राजकुमार उसके आकर्षण से अप्रभावित रहकर सनेही नगर पहुंच जाता है। तोते के प्रयास से सर्वमंगला तथा अंतःकरण के मध्य चित्र तथा पत्रों का आदान प्रदान होता है। इधर अन्तःकरण का पिता सर्वमंगला के पिता के पास समस्त सूचनाएं भेजता है जिससे अवगत होकर वह उन दोनों का विवाह कर देता है। फिर अन्तःकरण घर लौटकर सुखपूर्वक दिन व्यतीत करने लगता है।

इस कथा में कवि ने पात्रों का नामकरण विशेष उपयुक्तता की दृष्टि से किया है। अवधी भाषा में लिखा गया यह काव्य चौपाइयों और बरवय छन्दों में लिखा गया है। विविध प्रसंगों के अनुसार इसमें अनेक प्रकार के वर्णन समाविष्ट मिलते हैं। इसके कुछ काव्यांश उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

यह सनेह की बात नीका है अनुराग बांसुरी जी की।
है पुनि सरबमंगला साईं सरबमंगला रागिनि होई।
कामयाब विछु और न भाखा तन मन जीव भेद सब राखा।
परगट राजा रानी बोना के गुप्ताय दुवारा खोला।
जा कर मन मुकुत कर होई महा अरथ मुख देख साईं।
तन मन जिय के मन पियारे पट मन भाव भावन हारे।

— — —

स्तन जमन दाड़िम फल सोहे के बुन्दा गगाजल को है।
कटि अति सान चिहुर की नाईं नाग है कीन्हा जगसाईं।
जो काउ नाहीं देखन चहै ता कटि रूप नाहा अहै।

उरु जमल कनक के खम्भा क पन्वारिज ऊपर रमा ।
रमा क ज ऊपर विन होई दहाँ मिथ नागा सोई ॥

— — —

फूना नव सुरन्टन नाना वृना भरा रतन सा प्याला ।
बहा थर नाना अनुरागा थानिन निय पायसि कहि लागी ।
कहि सनट क दगध अपारा, नाठन नारि हिरन्य म डारा ।
मपा पीन रग लखि वहा कनै पास विन काहा ताहा ॥

— — —

नार एक मूरनि पुर नाऊ राजा जाव रहै तहि टाऊ ।
का बरनी वह नार मुहावन नगर मुहावन सब मनभावन ॥
कहै सरार मुहावन मूरति पूर ।
कहै जाव राजा जिव जान न दूर ॥
तनुज एक राजा क रहा अन करन नाम सब कहा ।
सौम्यनार सुकमार सयाना मा सावित्री स्वात्र समाना ।
नरन मरनि जो सा पग घर नगर नाग मूध पग पर ।
वह पथ जा गाम पाऊ चहै अहव सब हाइ बनाऊ ॥
रन मधाना ताइ पतन ठांव ।
एक मकप विकल्प सा दूसर नांव ॥
बुद्धि विलन हुन मखा सरउ जगन बाध गुन अवगुन न्यय ।
अन करन पास निन आव नमन नरि महागुन पावै ।
अहंकार नहि तासन सखा निरत्र ।
कहउ नारि क अपर तनुज अत्र ॥
अब करन मन एक राना महामा ना नाम सयाना ।
बरनि न पारा सुन्दरताई सकल सुन्दरा नरि नवाई ।
मवमगना नरि अमाप चाहै नावन मध्य धरम ।
रनन नागन कौन नार चउ बिनयन सा चपना मार ।
अरन मनु न्न बह भाग न्याविना जगन मसारा ।
प्रानम प्रम पाइ वह नारी प्रम गविना भइ पियारा ॥
सुना न न्न न्न है अन नमाइ ।
प्रम न्न क नासहि मे घरि जाइ ।

— — —

यह बांसुरी सुन मा का हिरन्य ध्यान गना नहि हार ।
निमगन ना बासना सारा सुनि सुधि पन रहै नहि हाथा ।
सुनन जो यह सबन मनोहर होन अपन हून सुरलीधर ।

यह मुग्धनी जा की बोली जाप न न बात घोमी।
बहुत देवता को नित हर बहु मूरति ओधी हाइ पर।
बग्न दवहरा डाहि गिराय सपनाम की रीति मिराय।
जह इसनामी मुख सा निसरा बात।
तहाँ सबन मुख मगन न यसान ॥

हुसेन अली —

भक्तियुगीन सूफी प्रेमाख्यान की परम्परा म कवि हुसन निखित पुहुपावती शीर्षक ग्रंथ का नाम भी उ लेखनीय है। कवि हुसनअली ने इसम अपन उपनाम सन्त का उल्लेख किया है। कवि का निवास-स्थान हरिगाँव था। उनके काव्य गुरु केशवदास थ। पुहुपावती की रचना काल सन १७३८ था। पुहुपावती शीर्षक एक अन्य कथा दुखहरनदास की लिखी हुई भी बताया जाता है जिसम राजपुर के राजा परजा प्रति क राजकुमार और अनूपगढ़ के राजा अम्बरसेन की राजकुमारी पुहुपावती की प्रेम कथा है। पुहुपावती म कवि न लालमाहि के पुत्र मानिकचन्द और रूपनगर के राजा पदमसेन और रानी कौशल्या की पुत्री पुहुपावती के रूप की चर्चा तथा प्रेम-कथा वर्णित की है। पद्मावती रत्नसेन आदि क म ग्थ म पुहुपावती के रूप की चर्चा सुनकर मानिक चन्द पुहुपावती के पास अपन चित्र को भेजता है। पुहुपावती उस चित्र को देखकर मुग्ध हो जाती है। वह स्वप्न म भी मानिकचद को देखती है। अन्त म पुहुपावती और मानिक चद का विवाह हो जाता है और अपन मंत्री कामसेन की सलाह पर पुहुपावती और मानिकचन्द अपन देश लौट आते है जहा पर उनके दलीनाथ नामक एक पुत्र भी उत्पन्न होता है।

इस कथा के अनेक अश उपल ध होते है। पुहुपावती एक शृंगारिक काव्य है। इसम शृंगार रस के संयोग और वियोग पक्ष अलंकार तत्वों तथा विविध प्रकार के वर्णनों का समावेश है। इसकी भाषा म ब्रज तथा अवधी की प्रधानता है। चौपाइयाँ और दोहा छन्द म यह का य लिखा गया है। इसके कुछ काव्यांश इस प्रकार हैं

विरह विन्ध्य जा पर फराना हु उस तन अगूर अमोना।
तेद गजक जनु करहिं बनाव सीन सजाग ज दय नसाई ॥
छवि मन्भाव भय सनगार गये उधरि पट नाज क वारे।
हँसि हँसि हरत मद मन्मान बरसि बरसि मुख निकसहि बात ॥
बातन बचन नजर निपटाहीं मान ननन फिरहि फिराहीं।
निपटि नजानी नवल सुरवाना हँसि हँसि यक हिए मन्पाला।
छाइ मन छवि पर न छाकू अस मन पिया न हर विपाकू ॥

— — —

महाराज देख्या रनिवासू का वरना जानो कबिनासू।
कनक खाभ नाग चन आरा औ मनिनान जनी तहि कोरा।
जगमग जगमग निस दिन होइ सूरज चाद जात उन खोई।

अनु को देख व सब नारी मो नैं जहि दद उतारी।
रानी कोसिल जनमी बारा जगमग जानि जगत उजियारी।

— — —

विधि अस्रा एहा विधि हाग वग जा काया चूकहि मारा।
प यह जानि मनहि न आनिय अन्त वहै याता किन गानिय।
मूठ काया हम निजु जानी मूठे आपा आपु बजाना।
अहै न काया अपना ओ नहि पागा काइ।
एक रूप सखी जहाँ तजो गरम जग माइ॥

'शेख निसार'—

भक्तियुगीन सूफी काव्य प्रवत्ति क अन्तगत शेख निसार लिखित यूसुफ जुलखा शीपक प्रमाख्यान का नाम भी उल्लेखनीय है। शेख निसार शेखपुर गाँव क निवासी थ जिस अकबर के समकालीन शेख हबीबुल्लाह न बसाया था। उनक पुत्र शेख मुहम्मद शेख निसार क बाबा और शेख गुलाम मुहम्मद उनके पिता थे। शेख निसार न अपन समकालीन दिल्ली सुलतान शाहआलम का उल्लेख किया है। यूसुफ जुलखा की रचना कवि ने सवत १७८० के लगभग की थी। इसक अतिरिक्त उनक लिखे हुए अन्य ग्रन्थो म महरनिगार रस मनोज 'दीवान अहमन जौहर' नामी नव तथा नमाव आदि क नाम उल्लेखनीय हैं। यूसुफ जुलखा म कवि न नबी याकूब क पुत्र यूसुफ और थमूम सुलतान की पुत्री जुलखा की प्रमकथा वर्णित की है। यूसुफ अपन बारह भाइयो म सबस छोट थ और उनक भाई उनस ईर्ष्या करत थ। एक बार व सब मिलकर उन्हें कुयें म गिरा देत हैं और दूसरो को यह सूचना देत हैं कि यूसुफ को भेड़िया खा गया। इस दुघटना के फलस्वरूप नबी याकूब को इतनी पीड़ा होती है कि व अंधे हो जात हैं। इधर यूसुफ को कुछ व्यापारी वहाँ म निकाल लेत हैं परन्तु यूसुफ क भाइ उन व्यापारियो स यह कह कर रुपया वसूलत हैं कि वह उनका दास था। शाहजादी जुलखा स्वप्न म यूसुफ क दशन करक उसस प्रम करन लगती है। परन्तु भ्रमवश वह मिस्र क वजार को ही युसुफ समझकर उसस विवाह कर लेती है। यूसुफ को सौदागर लोग मिस्र क बाजार म दास क रूप म बेचन पहुँचत हैं। जुलखा उसक सौन्दय की चर्चा सुनकर उस खरीदती और पहिचान लेती है। वह अपन पति स आग्रह करक उस गुलाम बना लेती है। परन्तु यूसुफ अब भी उदास रहता है। वह पिता की याद मे व्याकुल रहती है। कई बार वह भागने की भी चेष्टा करता है परन्तु सफल नहीं होता। वह अपन पिता क पास एक सन्देश भिजवाता है। इधर जुलखा की अत्यन्त हीन दशा है और वजीर उस त्याग देता है। कुछ समय पश्चात यूसुफ को सुलतान खुश होकर अपना मत्री बना लेता है। अब वह अपने पिता से भेंट करता है और आग चलकर मिस्र का सुलतान भी बन जाता है। अपन वियोग म अंधी हो गयी जुलखा को एक बार वह देखकर पहिचान लेता है। उसके पिता अपन आशीर्वाद स उस पुनः सुन्दरी बना देत हैं और उन दोनो का विवाह हो जाता है।

यह प्रमाख्यान फारसी के कवि निजामी की लिखी "युसुफ जुलेखा" शीर्षक रचना पर आधारित बताया जाता है जो सन १४८ में लिखा गया था। कवि ने युसुफ और जुलेखा की प्रेम कथा के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम का निरूपण किया है। यह भी कहा जाता है कि यह कथा कुरान में भी वर्णित है। इसमें कवि ने शृंगार के संयोग और वियोग पक्षों के माध्यम से प्रेम का निरूपण किया है। आलंकारिकता तथा विविध वर्णनों का समावेश भी इसमें है। यह ग्रन्थ अवधी भाषा में लिखा गया है। इसमें दोहा और चौपाई के साथ सोरठा और कवित्त भी मिलते हैं। इसके कुछ काव्यांश उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं:

नाम धरम सब छाडि के आया मिसिर के देस।
कहो प्रानपत मार जो काहू बस परवस॥

पानी हर गया पियासा देतो देख सा भयो तरासा।
काह बाहित कि बाहन पारा बाहित फटयो जात मझधारा।
भयो काठ वह प्रान अधारा बूडत बहत सो नाहि मझारा।
जब वह काठ नियर भा आई कान सरूप भयो सुखदाई।

— — —

अनख छाड चित उन सो लावै तो वर फल मानुस अस पावै।
दीन दयाल करै जस दाया त्यि अनख सुखी घर आया।
तहि दयाल कहे दरब विसारे देख निमन्ति सदन सिधारे।
फुलवारी बहु फूल लगाये एक तो एक सुरंग बनाये।
जो मन पुन्य एक तिन लावै जाये मग कछ हाथ न आवे।
चित्र अनक जो रच्यो चितेरे माति होय रूप रंग हेरे।
आवे चित्र काज कछ नाही चित्र काज सवारै मन माही।
कान न चित्र चितेरे लावहि चित विचित्र रूप निरमावहि।
जो कुछ रहै न होय मन तहि चित दीजिय काउ।
जा न मरै नहि बीछुरै तहि ते प्रीति लगाउ॥

— — —

काउ कहै अहै तम राजा साहे तहवा लाल विराजा।
काउ कहे अहै निवस माहावा बरन लत काति ो आवा।
कोउ कहै कि नागिन कारी दीन्ह छाडि मन सा उजियारी।
काउ कहै श्याम अलि मोहा पुन्य पराग जाय तहि सोहा।

शाह नजफअली सलोनी—

मतियुगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति के अंतर्गत शाह नजफअली सलोनी लिखित प्रेम चिनगारी नामक प्रमाख्यान का भी उल्लेख किया जा सकता है। शाह नजफअली रीवा नरेश विश्वनाथ सिंह के आश्रय में रहते थे। इनका रचना काल संवत १८८ के

लगभग अनुमानित किया जाता है। कहा जाता है कि [illegible] अंधे थे। इस ग्रन्थ में कवि ने आरम्भ में निर्गुण का समर्थन करते हुए कुछ प्रासंगिक उल्लेख किए हैं। इसके पश्चात कवि ने बाँसुरी की ध्वनि की महत्ता कथा प्रस्तुत की है। कवि ने बताया है कि प्रेम की यह बाँसुरी वस्तुतः निर्गुण पंथ का निर्देश है। कवि हजरत मूसा और एक चरवाहे की कथा के माध्यम से बाँसुरी की ध्वनि और वास्तविकता और उसके माध्यम से परम ब्रह्म के बोध का निर्देश करता है। यह ग्रन्थ वस्तुतः निर्गुण सिद्धान्त का निरूपक है जिसमें कवि ने सैद्धान्तिक व्याख्या भी प्रस्तुत की है। इसमें कवि ने मौलाना रूमी की [illegible] का [illegible] विवरण प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ की रचना अवधी में हुई है। इसके कुछ काव्यांश उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं

सुनो कथा बाँसुरिया गाव। बिछुड़न का गति रोय सुनाव।
बन सों काट भए हम न्यारो। सबद सुनत रोव नर नारी।
छाती टूक टूक कर पाऊँ। तौ बिरहा के बात सुनाऊँ।
पिय से मिल बिछुड़े जो कोई। पर मिलन जो है निज सोई॥

— — —

कथा अस कथा नहिं कोऊ [illegible] और मारग पाऊ।
कथा अस धुनि सुनतनहारा प्रेमी नहा नवी समारा।
कथा के भाषा सुनत [illegible] मत्त मगन है रहत सो रोना।
प्रेम कथा कथा जब गाव मजनूँ के बिरही बौराव॥

ख्वाजा अहमद—

भक्तियुगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति के अंतर्गत ख्वाजा अहमद लिखित 'नूरजहाँ' शीर्षक प्रेमाख्यान का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। कवि ख्वाजा अहमद [illegible] गाँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम मुहम्मद तथा बाबा [illegible] थे। इनके गुरु का नाम मुहम्मद अमान था। 'नूरजहाँ' की रचना कवि ने संवत् [illegible] में की थी। नूरजहाँ में कवि ने एक कल्पित प्रेम-कथा प्रस्तुत की है। ईरानगर के सुलतान [illegible] शाह और उनकी बेगम [illegible] पुत्र वियोग में व्यथित रहते हैं। तपस्या करने पर दस्तगीर नामक पीर के स्मरण और आशीर्वाद के फलस्वरूप उनके [illegible] शाह नामक पुत्र का जन्म होता है। [illegible] शाह एक बार स्वप्न में किसी सुन्दरी को सोने के सिंहासन पर बैठा हुआ देखता है और फिर उसके वियोग में पीड़ित रहने लगता है। दूसरी ओर [illegible] शहर के सुलतान की पुत्री [illegible] भी उसे स्वप्न में देखकर अनुरक्त हो जाती है। [illegible] शहर के सुलतान [illegible] शाह और उनकी पत्नी [illegible] की सुन्दरी कन्या नूरजहाँ का [illegible] पुत्र [illegible] नूरजहाँ के अनुराग में [illegible] जोगी बनकर [illegible] जाता है। वह नूरजहाँ में [illegible] का बयान कर [illegible] है। [illegible] विरह में समाधि लगाकर बैठ जाता है और फिर बाद में अपने साथियों सहित नूरजहाँ की

खोज करने लगता है। वही पद्मिनी इसमें वह प्रेम तथा सुन्दरता है जहाँ उसका विवाह उसकी अनिच्छा से ही गन्धर्व में कर लिया जाता है। गुणवान का परिया उस से जाती है। इसके पश्चात् तत्पश्चात् पटुवर नरनाहों में विवाह कर लेता है। बाद में उस गन्धर्व भी मिल जाती है। अन्त में वह अपनी दोनों पत्नियों सहित घर लौट आता है और राज्य का उत्तराधिकारी बनकर मध्य में रहने लगता है। इस ग्रन्थ में कवि ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है। प्रेमाख्यानों की अन्य सामान्य विशेषतायें भी इसमें विद्यमान हैं। इसके कुछ काव्यात्मक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

अवसर सुमति तहाँ अस पावा हाथ मुरति न करन उगावा ॥
आई पास पाट गुनताना नेह मुनि को साज माना।
तब ना हाथ मुरति ध दी हा धामन बान मुरति तहि की न ॥
नित्र सी रूप ठरान बिलसा आनि सपन मूरति लग नया।

— — —

हिरदै प्रेम प्रीत उनयानी प्रेम कथा अब लिखा कहानी।
पवन सा देस बस जन मरी जनि र नगन होन दुख दूरी ॥
दसउ यदि काजा ते माहा दूसर पार अवर बन नाहीं।
काया माथ नयनपुर घाटा नेहउ सरनदीप के वाटा ॥
इस खनन नाओ के (नन) माता काओ माथ भार और साता।
सब गनपति काओ के माही दहर ठाउ नवा बन नहीं ॥
नरजहा काओ म जोती काओ मधुर ताप जहु माती ॥

शेख रहीम—

भक्तियुगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत शेख रहीम लिखित भाषा प्रेमरस शीर्षक प्रेमाख्यान का नाम भी उल्लेखनीय है। शेख रहीम जरवल नगर के निवासी थे। यह शेख अंसारी के वंशज थे। इनके पिता का नाम यारमुहम्मद तथा बाबा का नाम शाह रमजान था। बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण इनके नाना इलाहदाद ने इनका पालन पोषण किया था। इनके गुरु निजामुद्दीन थे जो मखदूम गाजीशाह के वंशज थे। इनके समय में सम्राट एडवर्ड सप्तम की मृत्यु हो चुकी थी और जार्ज पंचम गद्दी पर बैठ गये थे। इन्होंने अपने ग्रन्थ में अपने मित्र वाजिद अली निरत बिहारी माथुर रामनाथ तथा बक्श बज बहादुर आदि का उल्लेख किया है। भाषा प्रेमरस का रचना काल सं० १९१८ है। इस ग्रन्थ में कवि ने प्रेमसेन तथा चन्द्रकला की प्रेम कथा का वर्णन किया है। रूपनगर के राजा रूपसेन और उनकी रानी रूपमती को बड़ी साधना के पश्चात् चन्द्रकला नामक पुत्री की प्राप्ति होती है। उनके मंत्री गुणसेन के यहाँ प्रेमसेन नामक पुत्र उत्पन्न होता है। वे दोनों बचपन से ही परस्पर प्रेम करने लगते हैं। राजा यह समाचार पाकर उन पर प्रतिबन्ध लगा देता है। प्रेमसेन बड़ी कठिनाई से अपने मित्र बसंतसेन के द्वारा मोहिनी नामक

मालिन के माध्यम से चन्द्रकला के पास संदेश भिजवाता है। प्रेममन स्त्री रूप में रनिवास में पहुँचकर चन्द्रकला से मिलता भी है। लौटकर वह आग बनाने अपने पिता को बताता है जो रुष्ट होकर उसे घर से निकाल देते हैं। संसार से विरक्त होकर प्रेममन जंगल में चला जाता है और सहपाल को अपना गुरु बनाकर साधना करने लगता है। इधर उसके वियोग में पीड़ित चन्द्रकला को एक दैत्य उठा ले जाता है। अनेक नाटकीय घटनाओं के पश्चात् दैत्य से चन्द्रकला की मुक्ति होती है और प्रेममन से उसका विवाह हो जाता है। इधर चन्द्रकला की मालिन देश से निष्कासित होने पर रूपनगर के सुलतान अविद्य के यहाँ पहुँचकर उसे चन्द्रकला के सौन्दर्य माधुर्य के विषय में बताती है। वह रूपनगर पर आक्रमण कर देता है परन्तु चन्द्रकला के पवित्र सौन्दर्य को देखकर फकीर बन जाता है। अब प्रेममन फिर अपने पत्नि और उर्वशियों सहित सुखपूर्वक रहने लगता है। इस ग्रन्थ में कवि ने शृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों के साथ-साथ अन्य अनेक विषयों का प्रासंगिक रूप में समावेश और वर्णन किया है। अवधी भाषा में लिखे गये इस ग्रन्थ में अरबी फारसी की शब्दावली भी मिलती है। दोहा छन्द चौपाई का प्रयोग कवि ने इसमें किया है। इसके कुछ काव्यांश उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

प्रेम को पाठ जगत ते न्यारा। जिहिते प्रेम पाठ गुन सारा।
प्रेम पाठ साधु नहिं आवे। जाव आप तो आप नसावे।
जगत पाठ तेहि आग जरा। प्रेम पाठ बिन नर पशु सरा।
प्रेम पाठ हरि रूप दिखावे, पढ़ि तुम्हार जनि ये दिन आवे।

— — —

रसना दोहू पाठ कर मूरा, बिन रसना यह देह अधूरा।
जो न होते रसना मुख माहीं कोई स्वाद नर पावत नाहीं।
बिन रसना को भेद बतावत भांति स्वाद कस नर पावत।
रसना से भा वेद पुराना रसना राज नर कर जाना।
रसना राजपाट बढ़ावे, रसना नरकहु माथ मढ़ावे।
बिन रसना यह जनम अकारथ रसना ते घर परमारथ।

— — —

कपट त्याग ईश्वर मन लावो साँच रहो तो वाको पावो।
जब लग प्रेम न होई साँचा होत मिले न कबहूँ काँचा।
एक दिन कपट साथ निर सबा जाऊ मिले होय दिन दूना।
यह विधि कपट प्रेम को मन परेमन फिर गुरु औ चेरु।

नसीर—

कवि नसीर गाजीपुर जिले के अन्तर्गत उस्मानिया नामक गाँव के निवासी थे। जीवन में अनेक कष्ट उठाने के पश्चात् इनकी भेंट मुहम्मद अली नामक एक फ़कीर से हुई।

से हुई थी। उसने इन्हें अनेक कथाएँ सुनाई थी जिससे यह बहुत प्रभावित हुए। फारसी कवि जामी की लिखी हुई यूसुफ जुलेखा जीवन कृति के हिन्दी तथा कवि ने उर्दू अनुवाद इश्कनामा के आधार पर दोहा अपनी काव्य की रचना की थी। इन्होंने अपने ग्रन्थ में एनुल अहदी नामक पीर की प्रशंसा की है जो कवि के गुरु थे। इस ग्रन्थ का रचना काल सवत् १६७४ है। ग्रन्थ में जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कवि नसीर ने यूसुफ जुलेखा की प्रसिद्ध प्रेम कथा का ही वर्णन किया है। यूसुफ का जन्म किनआ नगर में हुआ था। इनका लालन पालन इनकी माता की मृत्यु के कारण फूफी के घर हुआ था। फूफी उसे अपने पास रखना चाहती थी और पिता अपने पास। अतः फूफी की मृत्यु के पश्चात ही वह पिता के पास आये। दूसरी ओर तैमूर शाह की मुलतान की पुत्री जुलेखा स्वप्न में यूसुफ को देखती है। वह यूसुफ से मिलने की आशा में मिस्र के वजीर के पास पहुँचती है परन्तु तब उसे मालूम होता है कि वजीर यूसुफ नहीं है। यूसुफ अपने भाइयों की ईर्ष्या का पात्र बनकर अनेक कष्ट उठाता है। सौदागर के द्वारा यूसुफ की मुक्ति होती है और मिस्र में जुलेखा उसे दास के रूप में बिकते हुए देखकर पहिचान लेती है। सौदागर की लड़की तथा जुलेखा दोनों ही यूसुफ से प्रेम करती हैं परन्तु वह विरक्त रहता है। अन्त में यूसुफ मिस्र का वजीर बना दिया जाता है और वह जिब्रील के आदेश से पुनः यौवना जुलेखा से विवाह करके सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगता है। उसकी मृत्यु के पश्चात् जुलेखा भी अपने प्राण छोड़ देती है। इस शृंगारिक काव्य की रचना अवधी भाषा में दोहा चौपाई छन्दों में हुई है। अलंकार निरूपण नखशिख वर्णन तथा अन्य प्रसंग भी इसमें विविध स्थलों पर समाविष्ट हुए हैं। इसके कुछ काव्यांश इस प्रकार हैं

> खरग कटारी विष भरे सेत श्याम रतनार।
> वह व्यक्ति नहिं बचत जहिं चितवत एक बार।।
>
> — — —
>
> केश रही अस नागिन कारी तहि कर डस नहीं जाये नारी।
> दोउ लट माँग जात उजियारा जमुना मांज भई गंग धारा।।
>
> — — —
>
> अचरज रूप की रही वह बारी तह की सवन साजी रही बारी।
> बोलत बहुत रंग रहे पाखी उन्ह तरवर पर साखी साखी।।
> कतौं गुलाब कतौं जही बना अचरज रूप रहे वहा खना।
> चम्पा फूल कतौं पर बिकस बास सुवास बसर कतौं निकस।।
> कतौं में हरी कतौं बिकसे नाना कतौं सौंधी दसमन महं जाना।।

अन्य कवि—

भक्तियुगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत उपर्युक्त कवियों के अतिरिक्त कुछ अन्य कवियों और उनकी रचनाओं का उल्लेख भी किया जा सकता है। इनमें

तथा अनात कवि की लिखी हुई कामरूप तथा कवि अनामुराद की लिखी हुई क्रिया कुंवरावत आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कामरूप की कथा में अवध के राजा राजपति और रानी सुन्दर के पुत्र कामरूप तथा कामकला के प्रेम का वर्णन है। कामरूप नामक मंत्री के परामर्श से बहुत दान-पुण्य करने पर कामरूप उत्पन्न होता है। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी के अनुसार अवस्था प्राप्त होने पर कामरूप एक बार स्वप्न में सरनदीप के राजा कामराज की पुत्री कामकला को देखता है। कामकला भी इसी प्रकार स्वप्न में उसके दर्शन करती है। दोनों एक दूसरे के विरह में पीड़ित रहते हैं। धरमचंद के पुत्र दावानचंद की योजना के अनुसार भण्डारा करके यात्रियों से काम कला का परिचय पाने की चेष्टा होती है। कामकला की व्यथा देखकर पुरोहित सुमति उसकी सहायता करता है। वह कामरूप को लेकर वापस लौटता है। मार्ग में राजा मगन कामरूप को समझाता है परन्तु वह अपने हठ पर दृढ़ रहता है। अन्त में यात्रा में विघ्नों के कारण वह एक स्त्री राज्य में पहुंचता है जहां पर रानी रानता राज्य करती थी। रानी उसके रूप पर मोहित होकर उसे जाने देती नहीं। रात में चन्द्रमुखी उस पर मुग्ध होकर उसे वहां से ले जाती है। बाद में उसे तसमय नामक व्यक्ति के बंधन में रहना पड़ता है। कहीं कठिनाई से उसे अपना मित्र चंद मिलता है। आगे चलकर उन्हें नाना विचित्र चित्रण गन्धर्वराज कंवलरूपमिसर आदि मिलते हैं। अन्त में कामकला के स्वयंवर में वह पहुंचता है और कामकला उसे वर लेती है। दूसरे राजाओं के विरोध के कारण कामकला का पिता उसे बंदी बना लेता है परन्तु बाद में उसका विवाह हो जाता है और वह कामकला सहित अपने देश पहुंचकर सुखपूर्वक रहने लगता है। इस कथा में अनेक गम्भीर आध्यात्मिक दृष्टि से भी महत्व के हैं। इस ग्रन्थ की भाषा मिली जुली है जिसमें खड़ी बोली तथा अरबी-फारसी के शब्द अधिक हैं। इसके कुछ काव्यांश उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं

पताहा बियावान जान मन कुंवर बिन कमारानी कम गन।
खिदमत दिल बन न बात मरा कनाकाम रानी कुंवर से जुदा।
जगत में सुन तब कुहन का कुंवर के विरह का डंग तन में सुन।

— — —

सुन में चला हुआ सुख दे बिना कुंवर हमरा मार रखना सुना।
कुंवर दिल में माता से बाता वचन सुख नित रहे इस तुम्हारी लगन।
परा भई जब तक आकाश है तुम्हारे चरन को सुख आस है।
तू माता बिना सुन अब चलो सरनदीप में जा कना न मिलो।
विरह के सुन्दर न तब कहा निगाबा कवर के सगुन का रहा।
रहा नहीं माता न देखा दिया सगुन से कुंवर का बिना तब किया।

— — —

सुन रना था पद्मिनी का एक अंग, बिजली सा चला रहे एक संग।
गुर्दिशा की चाल जब पग उठा बज पग में घुंघरू महल झनझना।

ही एक सीढ़ी है। जो प्रेम के रहस्य को नहीं जानता और जो प्रेम से साधना नहीं करता वह जीवात्मा परमात्मा से पृथकत्व के कारण विरह का अनुभव नहीं करता और फलस्वरूप साधना के अभाव में ईश्वर को नहीं प्राप्त कर सकता। कबीरदास के इन सिद्धान्तों का समकालीन तथा परवर्ती हिन्दी साहित्य पर जो व्यापक प्रभाव पड़ा वह भी इसके महत्व का परिचायक है।

— ० —

अध्याय ४

भक्तियुगीन राम-काव्य की प्रवृत्ति

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तियुग के अन्तर्गत राम काव्य की प्रवृत्ति का सम्यक् रूप में विकास मिलता है। यह काव्य प्रवृत्ति सगुण भक्ति की निष्पत्ति है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से राम काव्य की परम्परा भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीन है। यहाँ तक कि वैदिक काल में भी राम कथा के विभिन्न पात्रों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद, अथर्ववेद, तैत्तिरीय आरण्यक, ऐतरेय ब्राह्मण, रामायण, महाभारत, शतपथ ब्राह्मण, जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण, छान्दोग्य उपनिषद्, बृहदारण्यक उपनिषद्, कौषीतकी उपनिषद्, शांखायन आरण्यक, वायुपुराण, पद्मपुराण आदि ग्रन्थों में राम कथा के अनेक पात्रों का समावेश हुआ है। संस्कृत के ग्रन्थों में भी महावीरचरित तथा उत्तररामचरित में राम कथा का वर्णन है। संस्कृत साहित्य में राम कथा का सबसे अधिक परिष्कृत और सुयोजित रूप वाल्मीकि की रामायण में मिलता है जिसका रचना काल ग्यारहवीं बारहवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व अनुमानित किया जाता है। इसके पश्चात् महाभारत में भी राम कथा का सूत्रगत उल्लेख मिलता है। बौद्ध साहित्य में दशरथ जातक, अनामक जातकम् तथा दशरथ कथानकम् में राम कथा का उल्लेख मिलता है। जैन धर्म से सम्बन्धित साहित्य में भी हेमचन्द्र लिखित जैन रामायण, जिनदास लिखित राम पुराण, पद्मदेव विजयगणि लिखित रामचरित, देवविजयगणि लिखित रामचरित में भी राम कथा का समावेश हुआ है। उत्तरपुराण तथा अग्निपुराण में भी रामकथा मिलती है। प्राकृत ग्रन्थों में भी रामकथा का तात्त्विक समावेश हुआ है। योगवासिष्ठ रामायण, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण, कालनिर्णय रामायण, अग्निवेश रामायण, 'ममदा[illegible]' रामायण, धर्मनिरूपण रामायण, रामायण सार, रामायण रहस्य, राम हृदयम्, राम पातकम्, अन्य रामायण, रामायणतात्पर्यदीपिका, रामाश्वमेध, कालनिर्णयसूचिका, रामायणसंग्रह, गौड रामायण, भुशुण्डीरामायण, मूल रामायण, आदि रामायण, चित्रकूट महात्म्य, महारामायण, हिन्दुत्व, मन्त्ररामायण, बंगाल रामायण आदि ग्रन्थों में भी राम

कथा उपलब्ध होती है। इसके अतिरिक्त मिथिलामाहात्म्य मैरावणचरित अथवा हनुमद्विजय सहस्रमुखरावणचरित्रम लंका विजय आश्चर्यरामायण शतमुखरावणचरित्रम सत्योपाख्यान हनुमत्संहिता महारामायण चम्पूरामायण आदि में भी रामकथा का उल्लेख मिलता है। इनके अतिरिक्त महारामायण संवृत रामायण लोमश रामायण अगस्त्य रामायण मंजुल रामायण सौपद्म रामायण रामायण महामाला सौहार्द रामायण रामायण मणिरत्न सौर्य रामायण चान्द्र रामायण मैन्द रामायण स्वायम्भुव रामायण सुब्रह्म रामायण सुवर्चस रामायण देव रामायण श्रवण रामायण दुरन्त रामायण चम्पू रामायण चम्पू में भी विविध प्रसंगों तथा संवादों के आधार पर राम कथा का विवरण उपलब्ध होता है। संस्कृत महाकाव्यों में रघुवंश रावणवह अथवा सेतुबन्ध भट्टिकाव्य अथवा रावणवध रामचरित रामायण मंजरी दशावतार चरित उदार राघव जानकी परिणाम तामिल रामायण रामलिंगामृत राम रहस्य अथवा रामचरित आदि में राम कथा का समावेश है। संस्कृत नाटकों में उत्तर रामचरित कुन्दमाला महावीर चरित अनर्घराघव महानाटक अथवा हनुमन्नाटक प्रतिमा नाटक यज्ञफल रामायण कृष्ण गीतिकाव्य प्रसन्न राघव आश्चर्य चूड़ामणि अभिषेक नाटक रामाभ्युदय उन्मत्तराघव छलित रामायण कृत्यारावण मायापुष्पक स्वप्नदशानन जानकीराघव रघुविलास राघवाभ्युदय दूतांगद उन्मत्तराघव तथा जानकी परिणय आदि में राम-कथा से सम्बन्धित अनेक विवरण समाविष्ट हुए हैं। इनके अतिरिक्त रामचरित राघवपाण्डवीय राघवनैषधीय राघव पाण्डव यादवीय सहस्रनाम स्तोत्र रामकृष्णविलोमकाव्य यादवराघवीय राघवयादवीय रामनाम गमन चित्रबन्धरामायण हंससन्देश अथवा हंसदूत भ्रमरदूत भ्रमर सन्देश कपिदूत गोपिका सन्देश चन्द्रदूत, रामगीत गोविन्द गीता राघव जानकी गीता रामविलास संगीत रघुनन्दन राघव विलास रामशतक रामायणशतक तथा आर्यारामायण आदि स्फुट काव्यों खण्डकाव्यों चित्रकाव्यों तथा शृंगार काव्यों आदि में भी रामकथा की निहिति मिलती है। कथा साहित्य में वृहत्कथा कथा सरित्सागर आदि में भी रामकथा का समावेश है। चम्पू काव्य के अन्तर्गत चम्पू रामायण उत्तररामचरित चम्पू उत्तररामायण चम्पू आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। संस्कृत गद्य रचनाओं में रामपत्तन्म शीर्षक ग्रन्थ का भी उल्लेख किया जा सकता है। अन्य भारतीय भाषाओं में तामिल रामायण कम्बन रामायण रंगनाथ रामायण उत्तर रामायण भास्कर रामायण मोल्ल रामायण गोपीनाथ रामायण रामचरितम इरामचरितम कण्णश्श रामायण अध्यात्म रामायण केरलवर्मा रामायण तोरावे रामायण मैरावणचरित निर्वहणम काश्मीरी रामायण कृत्तिवास रामायण चन्द्रावती कृत रामायण रामानन्द कृत रामलीला बलरामदास कृत रामायण रामानन्द कृत रामलीला कवि चन्द्र कृत अंगदरवर रघुनन्दन गोस्वामीकृत राम

रामायन, जगतराम कृत रामायण, जगमोहन रामायण, जनरामदास रामायण, दर्शीरामायण, विनका रामायण, विचित्र रामायण, भावार्थ रामायण, रामविवाह, 'रामबालचरित', सीता हरण, रावण मन्दोदरी संवाद, रणयज्ञ, सीता विरह, रामायणसार, रामविजय, गीतिरामायण, 'रामायण आदिकाव्य', रामकीर्तन तथा कथारामायण के नाम उल्लेखनीय हैं। विदेशी साहित्य में भी तिब्बती रामायण, खोतानी रामायण, रामायणककाविन, चरितरामायण, हिकायतसेरीराम, रामकेर्ति, सेरतकाण्ड, पालकपालाराम कथा, सेरतराम, रामकियेन, रामजातक, 'रामयागन', यामप्वे आदि में भी राम कथा विविध रूपों में उपलब्ध होती है।

गोस्वामी तुलसीदास—

भक्तियुगीन राम-काव्य की प्रगति के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण नाम गोस्वामी तुलसीदास का है। उनके जन्म के विषय में विद्वानों के पृथक पृथक अनुमान हैं। संवत् १५८९ उनके जन्म की तिथि अपेक्षाकृत अधिक मान्य है। तुलसीदासजी की मृत्यु तिथि संवत् १६८० मानी जाती है। तुलसीदास ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। अपने विषय में उन्होंने अपनी कुछ कृतियों में उल्लेख किया है। उनके जन्म स्थान के विषय में भी राजापुर तथा सोरों का विवाद है। तुलसीदास की बाल्यावस्था बड़ी कठिनाई में व्यतीत हुई थी। माता पिता के वियोग के कारण उन्हें भिक्षावृत्ति करनी पड़ी थी। अनेक कठिनाइयों के पश्चात् उन्होंने एक हनुमान मन्दिर में आश्रय लिया था। नरहरिदास से तुलसीदास ने राम भक्ति की दीक्षा ली थी। उन्होंने विवाह भी किया था परन्तु विवाह के पश्चात् स्त्री के व्यंग्य वचन से प्रभावित होकर वे संसार से विरक्त हो गये थे। चित्रकूट में रहकर उन्होंने भक्ति-साधना की थी। विविध अवसरों पर उन्होंने अन्य अनेक तीर्थों की भी यात्रा की। काशी में उनका स्वर्गवास हुआ। तुलसीदास जी की रचनाओं में रामलला नहछू, रामाज्ञाप्रश्न, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, गीतावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका, बरवैरामायण, दोहावली, कवितावली, हनुमान बाहुक, वैराग्य संदीपनी, सतसई, कुण्डलिया रामायण, छन्दावली, बजरंगबाण, संकट मोचन, भरतमिलाप, विजय दोहावली, ब्रह्मविवाह, छप्पय रामायण, छन्दरामायण, धर्मराय की गीता, ध्रुव प्रश्नावली, ज्ञानदीपिका, हनुमानाष्टक, हनुमानचालीसा, हनुमानपंचक, रामसलाका, रामसुतावली, पदबन्धरामायण, रसभूषण तथा तुलसीदासजी की संकटमोचन, सतभक्तिप्रकाश, रसभूषण, तुलसीदास आदि अनेक स्पष्ट होने आदि के नाम उल्लिखित किये जाते हैं। इनकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में भी विभिन्न विद्वानों में मतभेद है। तुलसीदास जी श्रीरामानन्दजी की परम्परा में हुए थे। जिसमें उनसे पूर्व क्रमशः शठकोपमुनि, सनातनमुनि, परिमलमुनि, मधुनाथमुनि, नाथमुनि, पुण्डरीक, राममिश्र, पराङ्कुश, यामुनाचार्य, रामानुजस्वामि

पठकोपाचार्य कुरेशाचार्य लोकाचार्य शलशाचार्य पुण्यासमाचार्य गंगाधरानन्द द्वारानन्द देवानन्द श्यामानन्द श्रुतानन्द नित्यानन्द पूर्णानन्द हर्यानन्द श्रेयानन्द हरिवर्यानन्द राघवानन्द रामानन्द सुरेश्वरानन्द माधवानन्द गरीयान लक्ष्मीदास गोपालदास तथा नरहरिदास हुए थे।

तुलसीदास जी ने अपने काव्य में राम भक्ति और राम कथा का वर्णन करने के साथ-साथ सैद्धान्तिक रूप से काव्य के स्वरूप पर भी विचार किया है। उन्होंने काव्य रूपी सरोवर के पांच कमल मानते हुए अलंकार रीति गुण दोष तथा वर्णना को महत्व दिया है। रामचरितमानस में मानस के रूप का वर्णन भी कवि ने प्रस्तुत किया है जिसमें काव्य के सभी अंगों का समावेश हुआ है। यह इस प्रकार है

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना। ग्यान नयन निरखत मन माना॥
रघुपति महिमा अगुन अबाधा। बरनब सोइ बर बारि अगाधा॥
राम सीय जस सलिल सुधा सम। उपमा बीचि बिलास मनोरम॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई। जगति मजु मनि सीप सुहाई॥
छंद सोरठा सुदर दोहा। सोइ बहु रंग कमल कुल सोहा॥
अरथ अनूप सुभाव सुभासा। सोइ पराग मकरंद सुबासा॥
सुकृत पुंज मंजुल अलि माला। ग्यान बिराग बिचार मराला॥
धुनि अवरेब कबित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहु भाती॥
अरथ धरम कामादिक चारी। कहब ग्यान बिग्यान बिचारी॥
नवरस जप तप जोग बिरागा। ते सब जलचर चारु तडागा॥
सुकृत साधु नाम गुन गाना। ते बिचित्र जल बिहग समाना॥
संत सभा चहु दिसि अवराई। श्रद्धा रितु बसत सम गाई॥
भगति निरूपन बिबिध बिधाना। छमा दया दम लता बिताना॥
सम जम नियम फूल फल ग्याना। हरि पद रति रस बेद बखाना॥
औरउ कथा अनेक प्रसगा। तेइ सुक पिक बहु बरन बिहगा॥

तुलसीदास जी ने काव्य का शिवत्व के तत्व से युक्त होना आवश्यक बताया है। इसलिए उन्होंने नर काव्य की रचना नहीं की। अपने अधिकांश ग्रन्थों में तुलसीदास ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है। संस्कृत के उच्च ज्ञान के कारण उनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठता अपेक्षाकृत अधिक मिलती है। अवधी के साथ साथ ब्रज भाषा का आंशिक समावेश भी उनके काव्य में मिलता है। कुछ कृतियों विशेष रूप से कवितावली गीतावली दोहावली तथा विनयपत्रिका में तो ब्रज भाषा अत्यंत परिमार्जित रूप में मिलती है। तुलसीदास की भाषा में से संस्कृतनिष्ठ भाषा ब्रज प्रधान भाषा एवं अवधी के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है

यत्र कुत्रापि मम जन्म निज कर्मवश भ्रमत जगजोनि संकट अनेक।
तत्र त्वद्भक्ति सज्जन समागम सदा भवतु मे राम विश्राममेक।

प्रयत भव जनित त्रयाधि भपज भगति भक्त भपत्यमद्वंतरसी।
सत भगवत अतर निरनर नही किमपि मति मलिन कह दास तुलसी ॥

— — —

कबहू न जात पराए धामहिं।
खनत ही देखा निज आगन सग सहित बलरामहिं।
मेरे यातु कहा गोरस को नवनिधि मंदिर यामहिं।
ठाला ग्वालि आरहन के मिस आइ कवहि बेकामहिं।
हौं बलि जाउ जाहु कितहू जनि मातु सिखावति स्यामहिं।
बिनु कारन हठि दोप लगावति तात गए गह तामहिं।
हरि मुख निरखत पुरुष वानी मुनि अधिक अधिक अभिरामहिं।
तुलसीदास प्रभु देख्याइ चाहति थी उर ललित ललामहिं ॥

— — —

आल हि बामन माडव मनिगन पूरन हो।
मानिन्ह मालरि लागि चहु दिसि झूलन हो।
गगाजल कर कलस तो तुरत मगाइय हो।
जुवतिन्ह मगल गाइ राम अन्हवाइय हो ॥

राम कथा का विस्तृत रूप से वर्णन करते हुए तुलसीदास जी ने आध्यात्मिक और दार्शनिक विषयों पर भी विस्तार से विचार किया है। ब्रह्म माया अवतार जीव मुक्ति ज्ञान भक्ति आदि के विषय में तुलसीदास जी के विचार महत्वपूर्ण हैं। भगवान राम को तुलसीदास ने विष्णु का अवतार माना है। उनके नाम और रूप को उन्होंने ईश्वर की उपाधि बताया है। ब्रह्म के निर्गुण और सगुण रूपों की तुलना में राम नाम का महत्व उन्होंने विशेष रूप से प्रतिपादित किया है। माया को तुलसीदास ने एक शक्ति माना है जो निर्गुणभक्ति को सगुणभक्ति में परिणत कर देती है। लौकिक और आध्यात्मिक दोनों ही अर्थों में कवि ने माया के प्रभावों का वर्णन परम ब्रह्म की रचना शक्ति के अर्थ में किया है। विद्या माया और अविद्या माया का विवेचन करते हुए कवि ने जीव और जगत के सम्बन्ध में माया की सत्ता स्पष्ट की है। माया से मुक्ति तब तक असम्भव है जब तक जीव के हृदय में ज्ञान और भक्ति के साथ-साथ रामकृपा का प्रकाश न हो। कवि ने ब्रह्मा विष्णु और महेश को भगवान राम के अंग उपांग बताया है। स्वयं हनुमान ने एक स्थल पर रावण को चेतावनी देते हुए उससे कहा है कि राम के प्रतिकूल न होने पर महेश, शिव, विष्णु तथा ब्रह्मा भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते। तुलसीदास जी ने भगवान राम के अवतार का कारण ब्राह्मणों ऋषियों मुनियों आदि की रक्षा तथा अन्याय अधर्म आदि का निमूलन बताया है। जीव के विषय में गोस्वामी तुलसीदास जी का यह मत है कि वह ईश्वर का अंश है इसलिए वह ईश्वर के आधीन रहता है। जीव की जागृत स्वप्न तथा सुषुप्ति तीन

'कवितावली'—

गोस्वामी तुलसीदास की लिखी हुई कवितावली शीर्षक रचना में ब्रज भाषा में लिखे हुए कवित्त और सवैया छन्द संगृहीत हैं। तुलसीदास के विविध अन्य काव्य ग्रन्थों की भाँति इसमें भी राम भक्ति तथा आध्यात्मिक दार्शनिक विषयों से सम्बन्धित छन्द मिलते हैं। इसमें भी कवि ने छन्द विभाजन रामकथा के विविध काण्डों के अनुरूप ही सात भागों में किया है। रामकथा का क्रम निर्वाह इसमें भी हुआ है यद्यपि विविध प्रसंगों के अनुसार कहीं कहीं विषय में अत्यन्त संक्षिप्तता और कहीं पर अत्यन्त विस्तार भी मिलता है। ईश्वर के प्रति भक्त के आत्म निवेदन के पद इसमें भी मिलते हैं। तुलसीदास जी के विविध काव्य ग्रन्थों में से कुछ प्रसंग उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

प्रबल प्रचण्ड बरिबंड बाहुदंड बीर
धाए जातुधान हनुमान लियो घेरि कै।
महाबल पुंज कुंजरारि ज्यों गरजि भट
जहाँ तहाँ पटके लंगूर फेरि फेरि कै॥
मारे लात तोरे गात भागे जात हाहा खात
कहैं तुलसीदास ' राखि राम की सौं टेरि कै।
ठहर ठहर परे कहरि कहरि उठै
हहरि हहरि हर सिद्ध हँसे हेरि कै॥

— — —

रीझि आपनी बूझि पर खीझि विचार विहीन।
ते उपदेस न मानही मोह महोदधि मीन॥
लोगन भलो मनाव जो भलो होन की आस।
करत गगन को गेंडुआ सो सठ तुलसीदास॥
की तोहि लागहि राम प्रिय की तु राम प्रिय होहि।
दुइ महँ रुचै जो सुगम सोइ कीबे तुलसी तोहि॥

— — —

अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भवरुज परिवारू॥
सुकृतसंभु तनु विमल विभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किए तिलक गुन गन बस करनी॥

— — —

जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिवर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।

जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन ॥
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ।
करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥
बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥ (रामचरितमानस 'वंदना')

— — —

मनि मानिक मुकुता छबि जैसी । अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी ।
नृप किरीट तरुनी तनु पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकाई ॥
तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं । उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं ।
भगति हेतु बिधि भवन बिहाई । सुमिरत सारद आवति धाई ॥
राम चरित सर बिनु अन्हवाए । सो श्रम जाइ न कोटि उपाए ॥
कबि कोबिद अस हृदय बिचारी । गावहिं हरि जस कलिमल हारी ।
कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना । सिर धुनि गिरा लगत पछिताना ॥
हृदय सिंधु मति सीप समाना । स्वाति सारदा कहहिं सुजाना ।
जौं बरषइ बर बारि बिचारू । होहिं कबित मुकुतामनि चारू ॥
दो०—जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं राम चरित बर ताग ।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग । (रामचरितमानस)

— — —

जब ते राम प्रताप खगेसा । उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा ॥
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका । बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका ॥
जिन्हहि सोक ते कहउँ बखानी । प्रथम अबिद्या निसा नसानी ॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
बिबिध कर्म गुन काल सुभाऊ । ए चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा । इन्ह कर हुनर न कवनिहुँ ओरा ॥
धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना । ए पंकज बिकसे बिधि नाना ॥
सुख संतोष बिराग बिबेका । बिगत सोक ए कोक अनेका ॥
दोहा—यह प्रताप रबि जाकें उर जब करइ प्रकास ।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नास ॥ (रामचरित मानस)

— — —

नाम भरोस नाम बल नाम सनेह ।
जनम जनम रघुनंदन तुलसिहि देह ।

जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसिहि देहु।
तहँ तहँ राम निबाहिब नाम सनेहु॥ (बरवै रामायण)

— — —

राम बाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यानमय सुरतरु तुलसी तोर॥
रामनाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरहुँ जौ चाहसि उजियार॥
हिय निर्गुन नयनन्हि सगुन रसना राम सुनाम।
मनहु पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम॥
नाम राम को कलपतरु कलि कल्यान निवास।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदास॥ (दोहावली)

— — —

बासव बरुन बिधि बन तें सुहावनो
    दसानन को कानन बसंत को सिंगार सो।
समय पुराने पात परत डरत बात
    पालत लालत रति मार को बिहार सो॥
देखे बर बापिका तड़ाग बाग को बनाव
    रागबस भो बिरागी पवनकुमार सो।
सीय की दसा बिलोकि बिटप असोक तर
    तुलसी बिलोक्यो सो तिलोक सोक सार सो॥ (कवितावली)

— — —

बालधी बिसाल बिकराल ज्वाल जाल मानो
    लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है।
कैधौं ब्योम बीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु
    बीर रस बीर तरवारि सी उघारी है।
तुलसी सुरेस चाप कैधौं दामिनी कलाप
    कैधौं चली मेरु तें कृसानु सरि भारी है।
देखे जातुधान जातुधानी अकुलानी कहैं
    कानन उजार्‌यो अब नगर प्रजारी है॥ (कवितावली)

— — —

राघौ एक बार फिरि आवौ।
ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावौ॥
जे पय प्याइ पोखि कर पंकज बार बार चुचुकारे।
क्यों जीवहिं मेरे राम लाड़िले ते अब निपट बिसारे॥

भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।
तदपि दिनहिं दिन होत झावरे मनहु कमल हिम मारे॥
सुनहु पथिक ! जो राम मिलहिं बन कहियो मातु सँदेसो।
तुलसी मोहिं और सबहिन तें इहको बड़ो अँदेसो॥ (गीतावली)

— — —

ऐसो होहु जानति भृंग।
नाहिन काहू लह्यो सुख प्रीति करि इक अंग॥
कौन नीर जो नीरदहिं जेहि लागि रटत बिहंग ?
मीन जल बिनु तलफि तनु तज सलिल सहज असंग॥
पीर कछु न मनहिं जाके बिरह बिकल भुजंग।
ब्याध बिसिख बिलोकि नहिं कलगान लुबुध कुरंग॥
स्यामघन गुनबारि छबिमनि मुरलि तान तरंग।
लग्यो मन बहु भाँति तुलसी होइ क्यों रसभंग ?॥ (श्रीकृष्ण गीतावली)

हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हो।
साधन धाम बिबुध दुरलभ तनु मोहि कृपा करि दीन्हो॥
कोटिहु मुख कहि जाय न प्रभु के एक एक उपकार।
तदपि नाथ कछु और मागिहौं दीजै परम उदार॥
बिषय बारि मन मीन भिन्न नहि होत कबहुँ पल एक।
तातें सहिय बिपति अति दारुन जनमत जोनि अनेक॥
कृपा डोरि बनसी पद अंकुस परम प्रेम मृदु चारो।
एहि बिधि बेधि हरहु मेरो दुख कौतुक राम तिहारो॥
है श्रुति विदित उपाय सकल सुर केहि केहि दीन निहोरै ?
तुलसिदास यहि जीव मोह रजु जोइ बाँध्यो सोइ छोरै॥ (विनयपत्रिका)

अग्रदास—

स्वामी अग्रदास जी राम भक्ति के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अष्टयाम' के प्रणेता थे। यह भक्तमाल के लेखक स्वामी नारायणदास या नाभादास के भी गुरु थे। विद्वानों ने इनके विषय में एक उल्लेख किया है जिसके अनुसार य० आमेर के राजा मानसिंह के समकालीन थे जो अकबर के दरबारी थे। इसी अनुमान पर अग्रदास जी का समय सन् १५५६ के लगभग अनुमानित किया जाता है। इन्होंने राम भक्ति में माधुर्य भाव या मधुरोपासना का अनुसरण किया था। इनकी एक प्रामाणिक शिष्य परम्परा थी। जिसमें प्रयागदास विनोदी पूरनदास बनवारीदास नरसिंहदास भगवानदास दिवाकर किशोर जगतदास जगन्नाथदास राघवदास धर्मदास [illegible] आदि थे। इनके जीवन के सम्बन्ध में जो विवरण उपलब्ध है उसके अनुसार यह गलता में रहते थे। बचपन में यह श्रीकृष्णदास पयहारी के शिष्य हो गए। बाद में इन्होंने अपना

पृथक गद्दी बनायी जिसमे नाभादास देवमुरारि पूर्णवैराग्री न्विासर तथा भगवन्नारायण आदि आचार्य हुए। राम भक्ति परम्परा के अन्तगत जो मधुरोपासना का विकास हुआ उसमे यह अग्रअली के नाम से भी प्रसिद्ध थे क्योंकि इस परम्परा मे अली शब्द की छाप प्राचीनतम है। अग्रदास जी की लिखी हुई कृतियों मे 'ध्यान मजरी अथवा रामध्यान मजरी कुडलिया अथवा हितोपदेश उपखाण बावनी शृगार रस सागर अथवा अग्रसागर आदि के नाम विशेष रूप मे उल्लेखनीय हैं। संस्कृत मे इन्होने अष्टयाम नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी। अग्रदास जी के काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

देखो झूलत राघो डोल।
जनक सुता सीने सग सोभित गौर स्याम तन नोल।
हीरा पन्ना नाग विराजत रतन खचित अमोल।
क्रीडत राम जानकी दोऊ बज दुदभी ढोल॥
हसत परसपर प्रीतम प्यारी आनन्द बन्यो सजोल।
श्री अग्रअली सुनि मुनि सुख पावनि बोलहि मीठे बोल॥

नाभादास—

नाभादास अग्रदास जी के सर्वप्रमुख शिष्य के रूप मे उल्लिखित किये जाते हैं। अग्रदास के पूर्व इनकी गुरु परम्परा मे कृष्णदास पयहारी अनन्तानन्द तथा रामानन्द हुए थे। कहा जाता है कि इनकी भक्ति भावना और सिद्धि से प्रभावित होकर इनके गुरु ने इन्हे भक्तमाल नामक ग्रन्थ की रचना करने की प्रेरणा दी थी। इनके जीवन के सम्बन्ध मे जो विवरण उपलब्ध होता है उसके अनुसार यह बचपन से ही नेत्रहीन थे। पाच वर्ष की अवस्था मे ही इनकी मा ने अकाल के समय इन्हे किसी वन मे छोड दिया था। सयोगवश कील्ह तथा अग्रदास ने इन्हे उस मार्ग से गुजरने पर उठा लिया और कमडल के जल के छींटे देकर इनके नेत्र ठीक कर दिये। फिर महात्माओं के सत्सग मे इनका पालन पोषण हुआ। प्रियादासजी इन्हे अनुमान वश का बताते हैं। तुलसीराम तथा तपस्वीराम ने इस वश के प्रवर्तको मे रामदास का नाम लिया है। इस वश के सम्बन्ध मे अनेक विद्वानो के भी पृथक पृथक मत हैं। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत इनका नाम नाभाअली था। इसके पूर्व इनके नारायणदास नाम का भी उल्लेख किया जाता है। भक्तमाल के अतिरिक्त इनकी एक अन्य रचना रामाष्टयाम शीर्षक से भी प्रसिद्ध है। रामचरित सग्रह नामक एक अन्य ग्रन्थ भी इनका रचा हुआ बताया जाता है। भक्तमाल शीर्षक ग्रन्थ का राम भक्ति परम्परा मे बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस ग्रन्थ की अनेक टीकाए की गयी हैं और उनकी एक पृथक परम्परा सी विकसित हुई है। भक्तमाल मे रामानन्द सम्प्रदाय का सपूर्ण विवरण उपलब्ध है। यह ग्रन्थ ब्रजभाषा मे लिखा गया है जिसमे छप्पय दोहा छद आदि का प्रयोग है। भक्तमाल की टीकाओ मे प्रियादास लिखित भक्तिरसबोधनीटीका लालचन्द्रदास

लिखित 'भक्तउरवसी' बल्देवदास लिखित भक्तमालटिप्पणी गुमानीदास लिखित फारसी भक्तमाल कालिसिंह लिखित गुरमुखीभक्तमाल तुलसीराम लिखित 'भक्तिप्रकाश' प्रतापसिंह लिखित भक्तिरसकुसुम रघुराज सिंह लिखित 'रामरसिकावली' जीवाराम लिखित रसिकप्रकाश भक्तमाल भारतेन्दु लिखित भक्तमाल छप्पय, तपस्वीराम लिखित रसूजमहावली "वानीप्रसाद" मिश्र लिखित हरिभक्तप्रकाशिका पुण्डरीकदास लिखित भक्तनामावलीध्रुवदास तथा भानुप्रताप तिवारी लिखित अग्रजामक्तमाल आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। दासा एक रचना को उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

जा दिन सीता जनम भयो।
ता दिन ते सब ही नागरि को मन को सूल गयो॥
अम्बर आदि अवनि ते उपजी दिवि दुन्दुभी बजाय।
बरषत कुसुम अपार शब्द जै व्योम विमानन छाय॥
जनक सुता दीपत कुलमण्डन सकल सिरोमनि नारी।
रावन सत्रु कुमति असुरन गण अभयदान भय हारी॥
सुन्दर सील सुहाग भाग की महिमा कहत न आय।
परम उदार राम की प्यारी पदरज नाभा पाय॥

बालकृष्ण—

बालकृष्णजी बालअली के नाम से भी विख्यात थे। यह विनोद स्वामी अथवा विनोदीजी ध्यानदास और चरणदास की शिष्य परम्परा में थे। इनका रचनाकाल संवत १७२६ से संवत १७४८ के मध्य बताया जाता है। इनकी लिखी हुई रचनाओं में ध्यानमंजरी। नेहप्रकाश सिद्धान्त-तत्वदीपिका दशधामंजरी उत्सवपदावली प्रेमपहेली प्रेम पचीसी तथा चरनाम्बरी आदि कृतियाँ हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण मात्र प्रस्तुत किया जा रहा है

दुलहिया दूलह बन सिंगार।
सोने कनक ताल में चन्दा भाल बनि बनी दोउ उर हार॥
निमि वंश कर चन्द्रिका प्रगट अवध किया उजियार।
श्री बालअली रघुनन्द राय की जीवन प्राण अधार॥ ६
अति अद्भुत माधुरी मूरति लिखि नागरि के तन।
जहँ देखत न देखहि तात के असमर नैन मन॥
सिया पति रघु रहत प्यार नहिं लगत सुगावत।
धन्य जननी जनक मातु मन में नहिं भावत॥
अति सुकुमार स्वरूप बरनि कहि कविजन न सक।
हग पागरी प्रीति पराग सरस सम जगत॥

तन गुगध मो भत परतु हैं अति उर रा।
देखत सिय पर जव अनिन प अनिरा उणा ॥
तव हंसि ववर मुजान पानि निज निर्राट उडारा।
भूपन अनव मवारि मान छिन छिर उपजावत ॥

रूपलाल—

बालकृष्णजी के शिष्य रूपलाल थ जिनका सम्प्रदाय के अ तगत रूपसखी नाम प्रसिद्ध है। इनकी एक कविता का उदाहरण इस प्रकार है

फागुन भागन परि उन्यो अति बढ्यो अनुराग।
अब हिलिमिलि हम खेलिबो नगी नाल मग फाग॥
नालन नालन की जरी भरी रग पिचकारि।
असि छाडी छवि सा बिहसि सिय उर ओर निहारि॥
दुरि बिमला तब दौरि के पिय सिर बसरि गोरि।
हा हा हारा क उठी हिलि मिलि नवल किसोरि॥

बालानन्द—

स्वामी बालानन्द का जन्म सवत १७१० म हुआ था। यह राजपूताना क निवासी थ। बचपन स हा यह ससार स विमुख हो गय थे। इन्होंने महात्मा बिरजानन्द को अपना गुरु मानकर उनस म दीक्षा ली थी। रामभक्ति म इन्होंने राम क बाल रूप की उपासना का समथन किया है। इनकी एक रचना उदाहरणाथ इस प्रकार है

सुमिरो मन राम सच्चिदानद।
जो सुमिर त्रयताप हरतु है परत न जम क फन्द॥
ऋषिमख राखि निशाचर मार अभय किये मुनि ब द॥
पद रज परसि सिला भई सुदरी धाय उबार गय द॥
जनक स्वयवर पावन की हो तोन्यो धनुष प्रचण्ड॥
सिया जी बिवाहि अवध हरि आय घर घर भयो है अनद॥
मात कौशल्या करत आरती निरखत मुख के चन्द॥
जयजयकार भयो सुरपुर म गावत बालानद॥

कृपानिवास—

कृपानिवास जी दक्षिण भारत क निवासी थ। इनक पिता का नाम सीतानिवास तथा माता का नाम गणशीला था। इनका बचपन का नाम श्रीनिवास था। बाल्यावस्था म ही इन्होंने आनन्दविलास जी स दीक्षा ली थी। मधुराचाय क प्रिय शिष्य नियाचाय स भी इनकी भेंट हुई थी। दामोदर प्रपन्न रामानुज स भी इनका सत्सग हुआ बताया जाता है। इनक ग्र था म गुरु महिमा प्रार्थनाशतक नखशिख पच्चीसी युगलमाधुरी प्रकाश भावनाशतक जानकीसहस्रनाम रामसहस्रनाम अनन्तार्चनामणि

'समय प्रबन्ध नियमसुख रहस्यापाध्य, वर्षों नव पचाविता स्फुटमामृतनिधु 'रसप्रारप्रथ रहस्य पचाविता सिद्धान्त पचाविता उनकी अष्टक तथा अनुमत पच्चीसी आदि कृतियाँ बताई जाती हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

सुरखि पिया मादरी सिया की मुसकानि।
नव खिल मुख बिकस मनोहर रसजरङ्गनि घरि आन॥
अधरनसन छविहिस असन की रमित राम के अन्तर प्रान।
कृपानिवास सहज बस करना प्यारी की यह बान॥

प्राणचन्द चौहान—

प्राणचन्द चौहान दिल्ली के निवासी थे। इन्होंने रामायण महानाटक नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की थी। इसका रचना काल सन् १६१० है। यह नाटक दोहा और चौपाइयों में लिखा गया है। इसमें नाटक के से पूरे गुण नहीं किया प्रस्तुत की है। यह हिन्दी का सर्वप्रथम काव्यनाटक माना जाता है। इनकी रचना का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

कातिक मास पच्छ उजियारा। तीरथ पुन्य सोम कर बारा॥
ता दिन कथा कीन्ह अनुमाना। साह सलेम दिलीपति थाना॥
संवत सोरह से सत साठा। पुन्य प्रगास पाप भय नाठा॥
जो सारद माता कर दाया। बरनौं आदि पुरुष की माया॥

छत्रसाल—

महाराज छत्रसाल पन्ना के राजा चम्पतराय के पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १७०६ में हुआ था। इनकी लिखी हुई अनेक कृतियाँ प्रसिद्ध हैं जिनमें रामावतार के कवित्त, रामध्वजाष्टक, हनुमान पच्चीसी, राधाकृष्ण पच्चीसी, कृष्णावतार के पद, महाराज छत्रसाल द्वारा अवतरित ग्रन्थ, नीतिसार तथा राजनीति शाही समूह प्रमुख हैं। ये ग्रन्थ 'छत्रसाल ग्रन्थावली' में संग्रहीत हुए हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

सीतानाथ सेतुनाथ सत्यनाथ समनाथ
नाथ नाथ देव नाथ दीन नाथ दासनति।
रघुचन्द जदुचन्द अवधचन्द देवचन्द
विश्वचन्द भानुचन्द ध्यामचन्द चन्द्रनि॥
रनधीर रणबीर जदुबीर बलवीर
बलबीर बीरबीर धरमबीर नामसनि।
रामपति रम्पति, रमापति उमापति
राधापति रमापति स्यामापति सम्पति॥

रामप्रिया शरण प्रेमकला—

श्री रामप्रिया शरण प्रेमकली मिथिला के निवासी थे। इनके गुरु महन्त नामक

रहते थे। इनके लिखे हुए एक प्रबन्ध काव्य सीतायन का उल्लेख मिलता है जिसका रचनाकाल सन १७०३ है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

छबीली जनक नन्दिनि री जोरी।
करि सिंगार निरखति नयनन भरि ... गात ...।
छम छम चलति अरनि पुनि दौरति मणि प्रतिबिंब ...॥
पुनि तेहि ते बतरानि बात मृदु ... जिमि ... ...।
हसति हसावति अति मन भावति ... छवि निधि ...॥
यहि विधि बालविनोद करति सब ... परस्पर ... ...।
'प्रियाशरण' अलबेलिन की छवि नाहि बरनती थोरी॥

जानकीरसिक शरण रसमाला —

श्री जानकीरसिक शरण अयोध्या के निवासी थे। ... ... रसमालिनि तथा रसमालिका के नाम से भी विख्यात थे। इनके लिखे हुए एक ग्रंथ का उल्लेख मिलता है जिसका शीर्षक अवधीसागर है। इसकी रचना सन १७० ... में हुई थी। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

सिय राम रूप अपार पूरन अवधि सागर यह महा।
रस मास जाम तरंग दम्पति केलि सुख सम्पति जहा॥
रसखानि रसिक नरेस जानकि जानराय कृपा ...।
सिय स्वामिनी अनुगामिनी रसमालिका ... ...॥

रामप्रपन्न मधुराचार्य —

श्रीरामप्रपन्न मधुराचार्य मधुरप्रिया के नाम से भी विख्यात हैं। यह आचार्य ... स्वामी की शिष्यपरम्परा में हुए थे। इनके लिखे हुए चार सम्प्रदाय ... का उल्लेख मिलता है जो भगवतगुण दर्पण माधुर्यकेलि कादम्बिनी वाल्मीकि रामायण की टीका तथा रामतत्वप्रकाश है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

सखि मैं आजु गई सिय कुंज।
लखि नपति बिसार दौर धरि ... पुंज॥
तब ... मैं सुनहु ... ...।
फाग मिस ... ... चोरी ... हमरे संग॥
मधुर प्रीतम आज तुमकौं जीतिहौं रतिरंग॥

हर्याचार्य हरिसहचरी —

श्री रामप्रपन्न मधुराचार्य की शिष्य परम्परा में हर्याचार्य हरिसहचरी तथा हरिदास के नाम उल्लेखनीय हैं। हर्याचार्य के नामों में हरिसहचरी के अतिरिक्त जन हरिया हरि तथा हरिकवि भी प्रसिद्ध है। इनके लिखे ... ग्रंथों में ... तथा जानकी गीत प्रमुख हैं। स्वामी हरिदास अयोध्या के निवासी रामप्रसाद के प्रशिष्य हनुमानदास के शिष्य थे। इनके लिखे हुए ग्रंथों में रामतापनीयोपनिषद तथा राम

रतवराजभाष्य के नाम उल्लेखनीय हैं। हृपाचार्य तथा हरिदास के काव्य का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

माई री राम रच्यो सरजू तट नाम सघन वन छाहा।
नाचत राम गोपाल ... सीता ...॥
रागिनि मैं अनुराग जना ... वन प्रमोद के माहा।
हरि सहचरि मुख चहत पहत ... सुधि नाहा॥ (हृपाचार्य)

— — —

राम मवगुणापन्न ... गति ...।
द्विभुज धनुपाणस जानकारमित भज॥
जानकीम जगदानाना ब्रह्माण्डान्सिविनाम।
चिद्रपा द्विभुजा श्यामा भजह रामवन्नमाम॥ (हरिदास)

सूरकिशोर—

आचार्य कीन्ह स्वामी के पौत्रशिष्य सूरकिशोर का उल्लेख भी यहाँ किया जा सकता है जो जयपुर के निवासी थे। इनका रचा ... मिथिलाविलास ग्रन्थ में उपलब्ध होता है जिसका रचनाकाल सन् १७ ... बताया जाता है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

निबही तिहु लोक में सूर किशोर किशोर ... निमिवंश ... का।
जिस ... रह्यो ... दीप ... यथा ... का।
मिथिला बसि राम सहाय चहै तो उपासक कौन ... ।
जिनके कुल बीच ... महा ... का॥

प्रयागदास—

इसी परम्परा में स्वामी सूरकिशोर के शिष्य सामा प्रयागदास का भी उल्लेख किया जा सकता है। इनके काव्य में इनके नाम का छाप परागदास के नाम से मिलती है। इनके रचे हुए काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

परागदास ... पीपर ... राधा ... ।
आठ पहर ... दशरथ के पुत्रवार॥
पुनि पुनि ... नहिं पावत ... ।
परागदास ... ॥

हृदयराम—

श्री हृदयराम पंजाब के निवासी थे। इनके पिता का नाम कृष्णदास था। इन्होंने हनुमन्नाटक ... की रचना की थी जिसका समय सन् १६२० है। इसके अतिरिक्त ... भी उपलब्ध हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

... श्री रघुबार ... सुधि है सिय की छिनि माही।
हे प्रभु ... बिना ... की छाही॥

जीवित है ? की दई मा नाथ यथा न मनी रमा कि गही।
प्रान बस पग्गकज म जम आवत है पर पावत ना॥ ॥

रामसखे —

स्वामी रामसख का समय १८वी शता दी का प्रारम्भिक काल माना जाता है। यह आचाय वशिष्ठगोत्र के शिष्य थ। इनके शिष्या म त्रिविधि शर्मागह आदि थ। रामसख जी की रची हुई कृतियां म तमूपण द्वावली रूपरसामृतसिन्धु नृत्य राघवमिलन दोहावली नत्यराघवमिलन कवित्तावली राम्यपद्धति रामगीता बानी मगलशतक तथा राममाला आदि हैं। इनकी पश परम्परा म आग चलकर स्वामी अवधशरण भी हुए थ जिनक पिता का नाम रामध्यान था। इन्होने स्वामी लक्ष्मणाचाय स दीक्षा ली थी। इ होन प्रसिद्ध न्यायशास्त्री गिरधर भट्ट का शास्त्राथ म पराजित किया था। महाराज रघुराज सिंह प० रामाधीन प० उमापति आदि भी इनक सपक म रहे थ। यह अपन सम्प्रदाय म लाल साहब क नाम स भी प्रख्यात थ। इनके लिख हुए ग्रथो म सत्यसिद्धचन्द्रोदय प्रसिद्ध है। अवधशरण क का य का एक उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

आजु की हाल सुनो सजनी मन्य प्रगट यक कौतुक भारी।
जेंवत नारि बराति सब रघु नाथ नखो मिथिलेस अगारी॥
श्री रघुबीर का छबि सरूप भई मति विभ्रम गावनि हारी।
भूलि गइ अवधेस को नाम तो देन लगी मिथिलेस को गारी॥ (रामसखे)
यथा एका हमो निखिलवनयाद्याभरणना
लत वल्ही तापान परिणमति लिप्यामसदम।
नवनव तय विविधरसम्य परिणनम
प्रमाभ्यन्ता ह्रापा यपल्लिशति नमितिमतया॥ (अवधशरण)

प्रमसखी—

स्वामी प्रमसखी न चित्रकूट क महात्मा रामदास गूदर स दीक्षा ली थी। इनक लिख हुए ग्रंथो म हाली कवित्तादिप्रबंध तथा श्री सीताराम नखशिख आदि हैं। इनके का य का एक उदाहरण इस प्रकार है

बागन तौ न उग घर ते कर सखनी कपित कौन उठाव॥
लालन दृष्टि परी जब ते प्रिय नाम सुने असुवा झरि लाव॥
प्रमसखी मधु की मखिया मन जाय फस्या अब हाय न आव॥
मूरत श्री रघुनन्दन की निरखे न बन लखते बनि आव॥

सियासखी—

स्वामी नाभादास सम्प्रदाय म सियासखी क नाम से विख्यात थ। य नारूदास जी क शि य थ। सीताराम मन्दिर की गद्दी अपने अनुज चन्द्रजी को देकर यह चित्रकूट म रहन लग थ। इनके अनुज चन्द्रजी का नाम बलदेव दास था जिनकी एक रचना

शृंगाररस रहस्य तथा अष्टयामवर्तिका की रचना की थी। स्वामी जनकराज किशोरी शरण रसिक अली के नाम से भी विख्यात हैं। इनका जन्म सन १८१८ ई लगभग तथा मृत्यु १८४८ में हुई थी। यह काठियावाड़ के निवासी थे। बचपन में ही यह अयोध्या आकर रहने लगे थे और रामचरणदास से दीक्षा लेकर उन्हें अपना गुरु बना लिया था। आगे चलकर यह रामचरणदास के शिष्य हो गये थे। तभी यह रसिकअली के नाम से विख्यात हुए थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में सिद्धान्तमुक्तावली, आत्मसम्बन्धदर्पण, आन्दोलरहस्यदीपिका, तुलसीदासचरित, विवेकसारचन्द्रिका, सिद्धान्तचौंतीसा, बारहखड़ी, ललितशृंगार दीपक, कवितावली, जानकी करण भरण, प्रार्थना, राम रहस्यदर्पणी, आत्मसम्बन्धदर्पण, होलिकाविनोद, वेदान्तसार, श्रुतिदीपिका, श्रीरामरासदीपिका, दोहावली, रघुवरकरुणाभरण, मिथिलाविलास, अष्टयामप्रबन्ध, वर्षोत्सव पदावली, विनयावली, श्रीसीताराम सिद्धान्त तरंगणी तथा अमर रामायण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों के काव्य का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सब तजि अवधपुरी रहिए।
राम रूप हिय राम नाम मुख कर सेवा गहिए।
मज्जन पान सदा सरयू की समदुख सुख सहिए॥
जहँ तहँ रामचरित सुनिए नित सहज सुखहिं लहिए।
श्री रामचरण रघुबीर कृपा ते कछु फल नहिं चहिए॥ (विदुराचार्य)

जय श्री चन्द्रकला अलबेली।
अति सुकुमारि रूप गुन आगरि नागरि नवल नवेली।
निमि कुल प्रगटि संग सिय प्यारी प्रियकारी रसकेली।
चन्द्रप्रभा जी के सुकृत कल्पतरु उलही लता नवेली॥
कंचन बन कमला प्रमोद बन लीला लहरी मेली।
मोहन जन बीन स्वर टेरति प्रतिमा चित्त निबेली॥
युगल प्रिया अनुराग सदा सम्बन्ध राग की चेली॥ (युगलप्रिया)
राघव रंगभरी अँखियाँ अवलोकनि रंगहि में जनु बोरी।
रंगभरी मुसकानि मनोहर पान बिरी मुख रंग रंगोरी॥
रंग भरे मुख बना बन्ने गज चाल चल रस राचि रह्यो री।
अंगहि के रंग भीजि रही हम नाहक जरत हो रंगरोरी॥ (रसिकअली)

शिवलाल पाठक—

स्वामी शिवलाल पाठक गोरखपुर जिले के निवासी थे। इनका जन्म सन १७५६ में हुआ था। इनके पिता देवीदत्त पाठक और माता जानकी देवी थी। इन्होंने शिवलोचन शास्त्री से शिक्षा प्राप्त की थी। स्वामी रामप्रसाद से भी इन्होंने ज्ञानार्जन किया था। इनकी रचनाओं में मानसमयंक, मानसअभिप्रायदीपक तथा बाल्मीकि

'अष्टयामपदावली' नाम से उल्लिखित की जाती है। सियासखी जी के पुत्र रामानुज दास रूपसरस के नाम से विख्यात थे। इनके शिष्य चन्द्रा के युवराज मातारामशरण के नाम से प्रसिद्ध हुए थे। रूपसरसजी की कृतियों में सीताराम रहस्यचंद्रिका, रसमंजरी, गुरुप्रतापपचीसी' तथा श्रीगुरुकृपामाहात्म्य आदि हैं। सियासखी, चन्द्रकला तथा रामानुजदास के काव्य का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सिया बाई जू सुनिया अरज हमारी।
औरन के तो और भरोसो म्हारे आस तिहारी ॥
बल्ली की तुम ओर न ल्खो अपनो बिरद सम्हारी।
ऐसो होय नहीं या जग में नाम हुम न तारी ॥
रंगमहल में आवन दीजो मुलो पिया अवध बिहारी।
सियासखी के सरवस तुम हो और जग नहिं सारी ॥ (सियासखी)

जयति मिथिला मांझ भरी।
माधव शुक्लपक्ष पूरण तिथि वासर चन्द्रधरी।
चित्रा नखत लगन शुभ घड़ि घड़ि बड़ भाग की घरी ॥
राजा चन्द्रकान्ति नृप अरिजित सुकृत की रति करी।
जन्म भामिनीता जननी चन्द्रकला अनुसरी ॥ (चन्द्रकला)
रतन जड़ित पिंजरन में बोलत खग गन मधुरी बानी।
उठहु लाल जागहु सियवल्लभ नागर बर सुजानी ॥
बाढ़ि अनंत सुधा जुरि आई दरसन हित अकुलानी।
रूप सरस मुख देखो चाहत आहि ता आवन होनी ॥ (रूपसरस)

रामप्रसाद—

स्वामी रामप्रसाद बिन्दुकाचार्य के नाम से विख्यात हैं। इनके गुरु आचार्य बालानन्द थे। आप चित्रकूट के प्रसिद्ध महात्मा रामदास से दीक्षित थे। इनके पुत्र का नाम रामगुनाम तथा पुत्री का नाम रामरत्ना था। इनकी रचनाओं में विनयपत्री तथा नवरत्नविनय उल्लिखित की जाती है। इनकी शिष्य परम्परा में महात्मा मनिराम भी हुए थे। कहा जाता है कि यह स्वामी रामचरण दास के सम्पर्क में भी आये थे जो रघुनाथ प्रसाद के शिष्य थे। रामचरणदास की कृतियों में अमरनाथ नवरत्नानिका, रसमलिका, रामनवरत्ना, सियाराममंगलदल, नवावलि, छन्द रामायण, अवधार संग्रह, वरदवि हुं, कवितावली, अष्टयाम आदि तथा विरहशतक, बरावन्तर, नामावली, उपासनादि, विवेकसार, अष्टयाम नवावलि, कवितावली, काव्यसंग्रह, नुमन, पौराह, राम परिमानक की टीका तथा रामनवरत्न नसार हैं। इनके शिष्यों में आचार्य गुणविराज, अनन्तराम हिनाहीराम, रसिकदास और हरिदास के नाम उल्लेखनीय हैं। आचारामजी चन्द्रदास के पुत्र थे। इन्होंने रसिकप्रकाश, भक्तमाल, पदावली,

शृंगाररस रहस्य तथा अष्टयामवर्तिका की रचना की थी। स्वामी जनकराज किशोरी शरण रसिक अली के नाम से भी विख्यात हैं। इनका जन्म सं० १७१८ के लगभग तथा मृत्यु १८४८ में हुई थी। यह काठियावाड़ के निवासी थे। बचपन में ही यह अयोध्या आकर रहने लग थे और रामचरणदास के शिष्य हो गये थे। आगे चलकर यह रामचरणदास के शिष्य हो गये थे। तभी यह रसिक अली के नाम से विख्यात हुए थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में सिद्धान्त मुक्तावली, अनन्यतरंगिणी, आन्दोलरहस्यदीपिका, तुलसीदासचरित, विवेकसारचन्द्रिका, सिद्धान्तचौंतीसा, बारहखड़ी, ललितशृंगार दीपक, कवितावली, जानकी शरण भरण, भ्रमरगीता, राम रहस्यतरंगिणी, आत्मसम्बन्धदर्पण, होलिकाविनोद, वेदान्तसार, शुभचन्द्रिका, भक्तिदीपिका, श्रीरामरासदीपिका, दोहावली, रघुबरकरणभरण, मिथिलाविलास, 'अष्टयामप्रबन्ध', वर्षोत्सव पदावली, जिज्ञासारत्न, श्रीसीताराम सिद्धान्त तरंगिणी तथा अमर रामायण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों के काव्य का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सब तजि अवधपुरी रहिए।
राम रूप हिय राम नाम मुख कर सदा गहिए।
मज्जन पान सदा सरयू को समदुख सुख सहिए॥
जहं तहं रामचरित सुनिए नित सहज सुपंहि लहिए।
श्री रामचरण रघुबीर कृपाते कछु फल नहि चहिए॥ (विदुकाचार्य)

जय श्री चन्द्रकला अलबली।
अति सुकमारि रूप गुन आगरि नागरि गव गहेली।
निमि कुल प्रगटि सग सिय प्यारी प्रियकारी रसकेली।
चन्द्रप्रभा जी के सुकृत कल्पतरु उलही लता नवेली॥
कंचन बन कमला प्रमोद बन लीला लहरी मेली।
मोहन जन्त्र बीन स्वर टरति प्रतिमा चित्त निवेली॥
युगल प्रिया अनुराग सदा सम्बन्ध राग की वेली॥ (युगलप्रिया)
राघव रंगभरी अंखिया अवलोकनि रंगहि में तनु बोरी।
रंगभरी मुसकानि मनोहर पान बिरी मुख रंग रंगोरी॥
रंग भरे मुख बना वढ गज चाल चन्द्र रस रचि रहोरी।
अंगहि के रंग भीजि रहो हम नाहक नारत हो रंगरोरी॥ (रसिकअली)

शिवलाल पाठक—

स्वामी शिवलाल पाठक गोरखपुर जिले के निवासी थे। इनका जन्म सन १७५६ में हुआ था। इनके पिता देवीदत्त पाठक और माता सारवी देवी था। इन्होंने शिवलोचन शास्त्री से शिक्षा प्राप्त की थी। स्वामी रामप्रसाद से भी इन्होंने नानाजन किया था। इनकी रचनाओं में मानसमयंक, मानसअभिप्रायदीपक तथा बाल्मीकि

रामायण की भावप्रकाश टीका आदि हैं। इनकी रचना का एक उदाहरण इस प्रकार है

श्रीसीतारमण रसिक जन प्रसिध भक्त रसराज।
रचो समास विचारि कै तुलसी रवि कर राज।।
प्राति विराजत भानु नगि श्री सरयू के पार।
पाठक श्री शिवलाल उर बसत उपासन हार।।
क्षर अक्षर अक्षर रहित जानि निरक्षर पार।
पार निरक्षर बठि निज जनक सुता उर धार।।

केशवदास—

आचार्य केशवदास की जन्म तिथि के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों में मतभेद है। इनका जन्म संवत् १६०८ संवत् १६१८ संवत् १६१२ तथा संवत् १६१८ आदि माना जाता है। इनकी मृत्यु संवत् १६८० में हुई थी। केशवदास जी ओरछा के महाराज इन्द्रजीत सिंहजी के राजकवि थे। उनके पिता का नाम काशीनाथ था जो मधुकर शाह के राजपुरोहित थे। राम-काव्य की परम्परा में केशवदास की लिखी हुई रामचंद्रिका नामक प्रबंधकाव्य विशेष महत्व रखता है। रामचंद्रिका में केशवदास ने राम काव्य की पूर्ववर्ती कथा-परम्परा की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से इसमें जो विशिष्ट प्रसंग हैं उन पर संस्कृत के तथा पूर्ववर्ती हिन्दी साहित्य के विशिष्ट ग्रन्थों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। रामचंद्रिका प्रस्तुत राम कथा पूर्ववर्ती प्रभाव से युक्त होते हुए भी पर्याप्त मौलिकता लिए हुए प्रतीत होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि रामचंद्रिका में कवि ने जिन पात्रों का चरित्र योजना की है वह अत्यधिक मानवीय गुणों से युक्त है। रामचंद्रिका में केशवदास ने प्रबंधात्मक तत्वों का निर्वाह करते हुए आलम्बन उद्दीपन अलंकृत मानवाकृति आदि रूपों में प्रकृति का चित्रण किया है। रामचंद्रिका में कवि ने यह स्पष्ट वर्णन किया है कि इसका उद्देश्य राम कथा के प्रसंग की छवि दिखाना है। उन्होंने रामचन्द्र को अपना इष्ट मानकर उनका गुणगान किया है। केशव ने यद्यपि राम कथा प्रायः संपूर्ण रूप में ही प्रस्तुत की है परन्तु उसकी क्रमबद्धता का विशेष विचार नहीं रखा है। अनेक प्रसंग जो पूर्ववर्ती राम काव्य में विस्तार से वर्णित हैं केशव ने उन्हें औपचारिक रूप में ही प्रस्तुत किए हैं। एक अलंकारशास्त्री होने के कारण केशव ने इस ग्रंथ में महाकाव्यत्व के निर्वाह की ओर अधिक ध्यान दिया है कथा की क्रमबद्धता के निर्वाह की ओर उतना नहीं। काव्य-सौष्ठव की दृष्टि से 'रामचंद्रिका' का महत्व निर्विवाद है। रामचंद्रिका के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में कुछ पौराणिक प्रसंग भी सांकेतिक रूप में समाविष्ट किए गए हैं। परवर्ती राम साहित्य पर भी रामचंद्रिका का व्यापक प्रभाव पड़ा है। रसिकगोविन्द लिखित 'रामायण सूचनिका', नवनिधराम लिखित 'रामचन्द्रभूषण', गुरु गोविन्द सिंह लिखित 'गोविन्द रामायण', रामप्रियाशरण लिखित

सीतायन रघुराजसिंह लिखित राम स्वयंवर रसिकलाल बिहारी लिखित रामरसायन जानकीप्रसाद लिखित रामनिवासरामायण, नवलसिंह लिखित राम म द्रविनास रामचरित उपाध्याय लिखित रामचरित चिंतामणि बलदेवप्रसाद मिश्र लिखित कौशल किशोर आदि में राम कथा का निर्वाह मिलता है। केशवदास के इस प्रबंध काव्य के कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं

रह्यो चुप ह्वै सुन कथा न बन जाहु।
न देखि सब तिनके उर दाहु।
जगी अब बाप तुम्हारेहि बाय।
कर उनकी विधि कथा कहि जाय।

— — —

अगस्त ऋषिराज जू बचन एक मेरी सुनो।
प्रशस्त सब भांति भूतल सुदेश जो मैं गुनो।
सुनीर तरु खंड मंडित समृद्ध शोभा घर।
तहां हम निवास की विमल पर्णशाला कर।

— — —

तडाग नीरहीन ते सनीर होत क्शोदास
पुंडरीक झुंड और मंडलीन मंडहीं
तमाल वल्लरी समेत सूखि सूखि के रहे
ते बाग फूलि फूलि के समूल सूल खंड ही।
चित चकोरनी चकोर मोर मोरनी समेत
हंस हंसिनी सुकादि सारिका सब पढ़े।
जहीं जहां विराम लेत राम जू तहीं तहां
अनेक भांति के अनेक भोग भाग सो बढ़े।

रामगुलाम द्विवेदी—

श्री रामगुलाम द्विवेदी मिर्जापुर के निवासी थे। इनके गुरू रामप्रसाद जी थे। इन्होंने कवित्त प्रबंध रामगीतावली नामित नामावली विनय नव पंचक दोहावली रामायण हनुमानाष्टक रामकृष्ण सप्तक श्रीकृष्णपंचरत्नपंचक श्रीरामाष्टक रामाविनय रामस्तवराज तथा बरवा आदि ग्रंथों की रचना की थी। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

देखि हरि हारी रंग रस।
प्रेम मुखनखि सिय सखिन जब मह लखन एक बंध ग्रस।
झमकि लगी ललना गन उतत जनक सुहारे खस॥
नप विदेह पुरत ज आई तिन बहु भांति हस।

जे जग वंदन सकल रंग बार अजन नन घन ।
रामगुनाम जानकी वर के निज जन अवध लन ।।

विश्वनाथ सिंह जू देव—

महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव रीवा नरेश जयसिंह के पुत्र थे । इन्होंने महात्मा प्रियादास से दीक्षा ली थी । इनके लिखे हुए अनेक ग्रंथ हैं जिनमें प्रमुख ... टीका ... तत्त्वमस्यसिद्धान्त भाष्य' राधावल्लभी भाष्य सर्वसिद्धान्त राम रहस्य टीका रामसत्रार्थनिर्णय टीका' सुमागम्तान टीका बीजक टीका विनयपत्रिका टीका वैष्णव सिद्धान्त टीका' 'धनुर्विद्या रामचन्द्रिकाह्निक तिलक' रामतारकाह्निक तिलक 'रागसागराह्निक' 'संगीतरघुनन्दन' मुक्ति मुक्ति सदानन्द दानानिर्णय व्याधार चन्द्रिका भागवत एकादश स्कंध की टीका सुमार्ग की चाम्ना टीका रामपरत्व व्यंग्य प्रकाश विश्वनाथ प्रकाश आह्निकत्रयध्याम धनुर्यात्रविवरणार्थ परमधर्म निर्णय शान्तिशतक', विश्वनाथ चरित्र ध्रुवाष्टक तनिनक गायानक परम तत्व' उत्तमकाव्य प्रकाश गीतारघुनन्दनानिका' रामायण गाथा रघुनन्दन प्रमाणिक' सर्वसंग्रह रामचन्द्र जू की सवारी भजनमाला' तथा आनन्द रघुनन्दन नाटक आदि हैं । इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

नीकी पचवटी महा नरि तकि फूला फल उमग ।
बली बनि नगी सुखुत्र निपना राग पराग टगी ।।
ताप नास मटी अनन्द उपगी गुज्जनदघटा ।।
कल्पोतुल्य घटी जाइ वहि डटी ताहें कुग स्वनग ।।

महाराज विश्वनाथसिंह के पुत्र महाराज रघुराजसिंह भी काव्य रचना करते थे । राम भक्ति में इनकी अनन्य आस्था थी । अनेक राम काव्यकार इनके आश्रय में रहते थे जिनमें लक्ष्मणप्रसाद सत कवि हनुमान प्रसाद बनारा नारायन माधव ... किशोर पुष्कर सिंह जगन्नाथ प्रसाद गोतम गया प्रसाद वायच गोविन्द प्रसाद मजबस सीताराम बालमुकुन्द रसिक नारायण रसिक बिहारी तथा रामचन्द्र शास्त्री आदि थे । रघुराज सिंह की प्रमुख रचनाओं में सुन्दरशतक' विनयपत्रिका रक्मिणी परिणय आनन्दाम्बुनिधि भक्तिविलास रहस्यपञ्चाध्यायी रामरसिकावली राम स्वयंवर विनय प्रकाश रामअष्टयाम रघुपतिशतक' धर्म विलास, रामरंजन 'भ्रमरगीत जगन्नाथ शतक युवराजविलास विनयमाल ... ...क चित्रकूटमहात्म्य मृगयाशतक' पदावली रघुराजविलास आनन्दभावविलास रम्य भावप्रभाव गंगाशतक' यमुनाशतक हनुमच्चरित्र परमप्रबोध सुदर्शनशतक रघुराजचन्द्रावली नव ... आदि हैं । इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

मच्यारा रण महल में ... ।
कहरि कीय कीय नर नारी टिकित उमरि ... ।।

एक ओर रघवणी राज साज अभरण अग ।
एक ओर युवतिन को मडन नी ह बीण म ग ॥
गाइ र के राउ नाचि र है राउ र र गनि ग न ग ।
सरयू भई भारती धारा पाइ गुनान प्रसग ॥
रह्यो न सुरति सम्हार सबन को रग आ अग ।
श्री रघराज मनोरथ पूरण भय मगन रग अग ॥

प्रतापकु वरि बाई—

प्रतापकु वरि बाई गाय दास रघनोत की पुत्री थी। इनके पति मारवाड़ के महाराजा मानसिंह थे। बचपन में ही स्वामी पूर्णदास द्वारा उनके मन में राम भक्ति का उदय हुआ था। विधवा होने पर इन्होंने रामचन्द्र को ही अपना सर्वस्व समर्पण किया। इनकी लिखी हुई पुस्तकों में रामचन्द्र महिमा, रामगुणसागर, रघवर स्नेह लीला, रामसुजस पचीसी, राम प्रेम सुखसागर, पत्रिका, रघुनाथ जी के कवित्त, भजनपद हरजस, प्रताप विनय, श्रीरामचन्द्र विजय, हरजस गायन आदि हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

मणि जटित खभ सुन्दर सवार दहनी रची विद्रुम सुधार।
मोतिन पर मानिक नग लाग चित्राम मनो वन बनि जाग ॥
चहु दिसा विराजत विविध बाग ता माहि कल्पतरु रहे लाग।
ऊचा सिंहासन अति अनूप ता बीच विराजत ब्रह्म रूप।

काष्ठजिह्वास्वामी देव—

काष्ठजिह्वास्वामी 'देव' काशी नरेश ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह के गुरु थे। इन्होंने अनेक ग्रथों की रचना की जिनमें रामायण परिचर्या, विनयामृत, पदावली, रामलगन, वैराग्यप्रदीप, अयोध्या बिन्दु, अश्विनीकुमार बिन्दु, गया बिन्दु, 'जानकी बिन्दु, पचक्रोशमहिमा, मथुरा बिन्दु, रामरग, रामरस, रामसुधा, उदासीसत स्तोत्र आदि है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

सिय जू की टहल में नित रहिहौं।
सतगुर जस कछु राह बताई वाही रहनि स ये अहिहौं।
काम क्रोध को भीत बनहा काहून कबहू न कछ चहिहौं।
वाद विवाद नहीं काहू से सब मत एक कर गहिहौं॥
सियपद में या चचल मन को प्रेम रजु स धरि नहिहौं।
इष्ट देवता सीसिया जू की पद रज स तन म त ह हौं॥

उमापति त्रिपाठी कोविद—

श्री उमापति त्रिपाठी 'कोविद' सीतापुर के निवासी थे। इनके पिता का नाम शकरपति त्रिपाठी था। इनके गुरुओं में श्रीकृष्णराम शेष, धनतरि भट्ट तथा भरवदत्त मिश्र थे। नपाल नरेश सुरेन्द्र विक्रमशाह ने इनका सम्मान किया था। लखनऊ में राजा

बख्तावर सिंह, रीवां के महाराज विश्वनाथ सिंह तथा अयोध्या के राजा दर्शन सिंह ने भी इन्हें सम्मानित किया था। कहा जाता है कि इन्होंने काशी में महादेव मिश्र से ब्रह्म विद्या प्राप्त की थी। इनके लिखे ग्रन्थों में 'न्यायतरंगिणी', 'महातत्वप्रकाश', 'कपिलसूत्रसारोद्धार', 'पतंजलिसूत्रवृत्ति', 'जन्मकल्पलतिका', 'वनप्रकाश', 'भाष्यटिप्पण', 'शब्देन्दुधराधर', 'व्याख्यान्दुधराधर', 'पूर्वपक्षीय', 'वेदस्तुतिटीका', 'सन्ध्यसरोज भास्कर', 'गीतगोविन्द', 'उमापतिशतकत्रय', 'सुधामदाकिनी स्तोत्र', 'सरयू अष्टक', 'सीताशतनाम', 'वर्णमाला', 'रामजानकी स्तोत्र', 'रम्यपदावली', 'शाहावली', 'रत्नावली', 'श्रीधरशतक', 'रूपाष्टक', 'दशनशतक', 'कान्तिकाष्टक', 'अयोध्या विंशतिका', 'करुणा कल्पलता', 'रघुनाथस्तोत्र', 'हनुमदष्टक', 'सर्वेश्वर अष्टक', 'रामस्तोत्र', 'जानकीस्तोत्र', 'रघुनन्दनषोडशक', 'दृष्टान्तमत कुंडलिया', 'विचित्र रामायण', 'रामसंगीत', 'ऋतुवर्णन', 'द्वात्रिंशिका विसर्जन', 'अरमानी भाष्य', 'दशनशतक', 'दिग्विजयशतक', 'रामसहस्रनाम' आदि हैं। इनकी लिखी हुई रचनाओं में से एक उदाहरण इस प्रकार है :

> बनरा रे जनकपुर गैला।
> निज सोभा रन सरम नसा दे सब मनवारा रला॥
> नित्त निमित्त सज सब छूटे वा जाना का मना।
> काविद पानि मीन गति नखियन एसो अजब छनो॥

युगलानन्यशरण हेमलता—

स्वामी युगलानन्यशरण हेमलता का जन्म सन् १८१८ ई० में हुआ था। वह पटना जिले के निवासी थे। इन्होंने कृष्ण नामक गुरु से शिक्षा प्राप्त की थी। वर्तमान मत की प्रेरणा से यह युगलप्रिया जी के शिष्य बने थे। इनके लिखे हुए ग्रंथ एक बड़ी संख्या में उपलब्ध होते हैं जिनमें 'सीताराम स्नेहसागर', 'रघुवर करुणाभरण', 'मधुर मंजुमाला', 'सीताराम नाम प्रताप प्रकाश', 'प्रेमपरत्वप्रभा', 'शाहावली', 'विनय विहार', 'प्रेमप्रकाश', 'नाम प्रेम प्रवर्द्धिनी', 'सत्संग उमंग', 'भक्त नामावली', 'प्रेमानन्द सुमनिप्रकाशिका', 'हृदयहुलासिनी', 'अभ्यासप्रकाश', 'उपासनानिर्णय', 'ग्रन्थप्रबंधलता', 'विलास', 'मजमास्त्रीनामा', 'वन विहार', 'मनबोधपंचक', 'विरतिनाटक', 'वर्णबोध', 'चौमासपत्र', 'पचरंगी पत्र', 'चौतीसा पत्र', 'हर्षप्रकाश', 'अनन्यप्रमोद', 'नवल नाम चिन्तामणि', 'मनवचनविलासिका', 'वातउमंग', 'रूपरहस्य पदावली', 'रूपरहस्यानुभव', 'सतगुरुप्रकाशिका', 'अवधवासपरत्व', 'रामनामपरत्वपदावली', 'सीतारामउत्सव प्रकाशिका', 'अवध विहार', 'सुखसीमा दोहावली', 'उद्गारउपासना पत्रिका', 'नाममय एकादश स्तोत्र', 'वार्तिकयुगरस', 'सुगम वन विलास', 'प्रबोध दीपिका शाहावली', 'सिद्धान्त प्रकाशिका', 'प्रमाणदीपिका शाहावली', 'वनविहारमाला', 'चौतीसी', 'उन्मत्तचरित्रपदावली', 'रामायण रहस्य', 'जानकी स्नेहनाम शतक', 'नामपरत्वप्रकाशिका', 'वन विहार शाहावली', 'मतविनयपत्रक', 'विरतिनाटक', 'विश्ववस्तुबोधावली', 'तत्वउपदेशत्रय', 'बारहराशि सातवार', 'मणिमाला', 'अपापवर्द्धन', 'मन समाहृत', 'पाखण्डकुठारसंवाद', 'सनता शिवा'

शिव अगस्त्य सुतीक्ष्ण सवाद, वैष्णवाभिधानिर्णय, पदानुभव, सहस्र, पूरन पारखी हुलास, ललन हिन्दी बग, नौ नवीनी, पद, मत्र, अष्टयाम, मानुराग, अनन्य प्रमोद, प्रीति प्रकाशिका, नाम प्रकाश, वसाखन वरम, राम रत्न, गुरु महिमा, मत वचनावली, परम भाव, विनोद विलास आदि मुख्य हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

> ललन प्रेमी तिहूँगी मोरी सारी प्रीति।
> जा मोहन हिय बीच प्राण प्रिय तहि पद रत्त गभीत।
> महा मलीन मन मरगहु वपु तामन नह प्रतीत।
> पन अरु यहयो न मानत मम मन रखत रीत विपरीत।
> युगल अन्य शरण तापित मन कीजिय सपदि पुनीत॥

रामवल्लभ शरण प्रमनिधि—

स्वामी युगलानन्यशरण के प्रशिष्य रामवल्लभाशरण प्रेमनिधि का जन्म सन १८४८ में हुआ था। यह बुन्देलखण्ड के रहने वाले थे। इनके पिता रामनाथ और माता रमादेवी थी। इनके घर का नाम धनुषधारी था। इन्होंने रामवचनदास जी से दीक्षा ली थी। महात्मा नरहरिदास, मणिराम, विद्यादास तथा कल्याणदास के सम्पर्क में भी यह आये थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में वहूकाणनयव की टीका, शिवसंहिता की टीका, सर्योदयुवन्नाय की टीका, जानकीस्तवराज की टीका, सुंदरमणि सदर्भ की टीका, रामनवरत्न की टीका, ध्यानमंजरी की टीका, रहस्यत्रय की टीका, तत्वत्रय की टीका, शिक्षापत्री की टीका, रामपटल की टीका, विनयकुसुमांजलि की टीका, सुदामा बारहखड़ी की टीका, रामस्तवराज के श्री हरिदास कृत भाष्य की टीका, रामतापिनी उपनिषद के श्री हरिदास कृत भाष्य की टीका मुख्य है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

> सखिन सिरोमनि चन्द्रकला ताहि विनवी कर जोर।
> रसमय बुद्धि दृढ़ मोहिं बरणी रहस हिलोर।
> रस वर्द्धिनि टीका यह रसिकन स्वाद रसाल।
> हाय जात विख्यात अति मैं तो हौं तव बाल।

बजनाथ पूववशी—

श्री बजनाथ पूववशी का जन्म सवत १८८० में हुआ था। यह बाराबंकी जिले के निवासी थे। इनके पिता का नाम हीरानन्द था। इन्होंने अपने चाचा फकीरेराम से दीक्षा ली थी जिनके गुरु महात्मा जानकीवदास थे। बजनाथ जी के ग्रन्थों में गीतावली की टीका, कायस्थधर्म, कवितावली की टीका, रामचरितमानस की टीका, 'राम सतसया भाव प्रकाशिका, रामसिया सयासपदावली आदि है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

मोरी भइ सुधि माधुरी पागि नग मुजन द्व चकोर मुनना ।
सौम्य चित चित चारि लियो सुधि वजनुनाथ रटी मुमगना ॥
ज्यों मखिया मधु जाइ धम्यो मन होय नहीं मुरझ किमि बना ।
मूरति श्यामन गोर लला की नखान वन प बखान बनना ॥

जानकी प्रसाद 'रसिकबिहारी'—

स्वामी जानकी प्रसाद रसिकविहारी का जन्म सन १८४४ में हुआ था। वह पासी के निवासी थे। उनके पिता का नाम शीधर था। इनके गुरु महन्त प्यारेराम थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में काव्य सुधाकर, मानस प्रश्न, नामरचासी, सुमति पचीसी, आनन्दवलि, पावस विनोद, 'सुयश कन्द', ऋतुरंग, नेह मुन्दरी, रस कौमुदी, विपरीत विलास, 'इश्क अजायब', बजरंग बत्तीसी, विरह दिवाकर, ग्रन्थ प्रभाकर, कानून स्टाम्प, कानून जाप्ता अंग्रेजी, सतरंज विनोद, नवल चरित्र, पटऋतु विनोद, राग पद्मावली, मोदमुकर, कल्पतरु कवित्त, दरिभावन, रामरसायन, कवित्त वर्णविलास आदि हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है:

सुघर सुन्दर वन प्रमोद विराजही ।
विमल सरजू तट अधिक छवि छाजही ॥
भूमि सुचि सुकि पवन पावन नव हैं ।
परत मन मनधार अति छवि देत है ॥

बनादास—

श्री बनादास का जन्म सन १८२१ में हुआ था। वह गोंडा जिले के निवासी थे। उनके पिता का नाम गुरुदत्त सिंह था। इन्होंने महात्मा लक्ष्मणजन से दीक्षा ली थी। इनकी भेंट परमहंस सियावल्लभशरण से भी हुई थी। इनके लिखे ग्रन्थों के नाम अजपविर्या, नामनिरूपण, रामपचाग, गुरुहरिचरणनम, विवेकमुक्तावली, रामछटा, गरजपत्री, माहिनी अष्टक, अनुरागविवर्धन रामायण, पदारथ माला, मुक्तावली, ककहरा अरिल्ल, ककहरा कुण्डला, ककहरा कुण्डलिया, ककहरा चौपाई, खडन खड, विराग विनाम, आत्मबोध, नाममुक्तावली, अनुराग रत्नावली, ब्रह्मायन, विज्ञानमुक्तावली, हनुमबिन्दु वेदान्त, शिवा नवांग वेदान्त, नाशात वेदान्त, अनिर्वाच्य वेदान्त, स्वरूपानन्द वेदान्त, अ रातान वेदान्त, अनुभवानन्द वेदान्त, वेदान्त उपचार, ब्रह्मायन सार, ब्रह्मायन तत्व निरूपण, ब्रह्मायन ज्ञानमुक्तावली, ब्रह्मायन विज्ञानउत्तावली, ब्रह्मायन शान्ति गुप्ति, ब्रह्मायन परमात्मबोध, ब्रह्मायन पराभक्ति परतु, गुडबोध वेदान्त, ब्रह्म चमत्कार, रामराज सहस्रनाम, सीताराम सहस्रनाम, बजरंगविजय, उत्तरखण्ड रामायण, विस्मरण सम्हार, शरणागतावली, नाम परत्व, नाम परतु संग्रह, वाक्य सुधामु धावली, गुरुमहात्म्य, सतसुमिरनी, समस्यावली, समस्या विनोद, भूलनदासी, नित्य नियम, अनुभव विजय, राम रसायन, रामचन्द्र पचासा, महादेव पचासा, द्रौपदी

पचदशी दाम दुचाई, अज पत्रा आदि नाम उल्लेखनीय हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

आसन है सतोप तन्न पर रामघाट के तीर हैं।
आप म आन तारो पार करत कभी नहीं पार हैं॥
अब तो बादशाह नव नारी जुगलमाधुरी दार है।
बनादास सियराम अरास अवधपुरी त बोर है॥

शीलमणि—

स्वामी शीलमणि जी का जन्म सवत् १८७७ म हुआ था। वह कुमायू प्रान्त के निवासी थे। उनके पिता का सुधीरपत और माता का सुमत्रा देवी नाम था। इनके घर का नाम हृपपत था। पयहारीजी से इन्होंने शिक्षा ली थी जिन्होंने इनका नाम सीतारामदास रखा था। रामानन्द दास से भी इन्होंने उपदेश ग्रहण किया था। इनके ग्रन्थों में कनकभवन महात्म्य सम्बन्ध प्रकाश श्रीअवध प्रकाश पदावली सग्रह पावस वर्णन पचीकरण विनयपत्रिका रसमजर दोहावली रत्नमजरी रामकर मुद्रिका स परम दोहा सकरत दर्पण सियावरनाम मणिमाला मंदारकल्प वदिक कवितावली होरी ज्ञान भूमिका सियावर मुद्रिका विवेक गुच्छा आदि का उल्लेख किया जाता है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

सखा छबील नाडित छन छन छन छाय।
छिप रहत हो सावर सीलमनी मन भाय॥
रहन सभारत चित्त को सभरत नाही मीत।
सीलमनी मत दीजिय दरस दरद भर नीत॥

सरयू दास—

महात्मा शीलमणि जी के शिष्य सरयूदास सुधामुखी थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में पदावली सवसारोपदेश रसिकवस्तुप्रकाश तथा भक्तिनामावली है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

वदौ श्री सियाराम पद सकल ज्ञान के धाम।
भक्ति सहचरी पाइय जाहि कृपा अभिराम॥
बिपई को मन ना लग जिहि माना जग सार।
ज्ञान भक्ति वराग्य युत सो नर करहिं विचार॥

सीतारामशरण 'रामरस रगमणि'—

स्वामी सीतारामशरण रामरसरगमणि का जन्म सवत १८१६ म हुआ था। इनके पिता का नाम अवधकिशोर प्रसाद और माता का जगरानी देवी था। इन्होंने कामदेन्द्रमणि जी से दीक्षा ग्रहण की थी। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में श्रीरामस्तवराज टीका श्रीसीताराम मानसीसेवा श्री हनुमत यश-तरगिणी सरयूतरग लहरी

सीताराम नाममंजरी', 'श्रीरामप्रेम पचरत्न', 'हास्यविलास', 'श्रीसीताराम नखशिख', 'गीता बारहवाँ अध्याय भाषा टीका', 'श्रीरामप्रेम परिचया', 'श्रीरामायण बारहखड़ी', 'श्रीरामनाम विलास', 'श्रीरामशत वन्दना', 'ध्यानमंजरी टीका', 'श्रीरामानन्द वंशावली', 'युगलजन्म बधाई', 'बारहमासा महात्म्य', 'श्रीरामलीलासंवाद', 'श्रीसीताराम प्रेमपत्रिका', 'सीताराम नामावली', 'श्रीसीताराम फूलविलास', 'श्रीसीताराम सुख विलास', 'श्री जानकी नामावली', 'श्रीरामजानकी विलास', 'भाषा रामरक्षा स्तोत्र', 'श्रीसीताराम नाममंजरी', 'श्री नाभा जी कृत भक्तमाल की टीका' आदि प्रमुख हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है :

पावस में रसरासि सुप्रासि पग सजि रामसिया सम तूलें।
पावत पान पवावत गावत हासि बयारि परस्पर फूलें॥
दोऊ पुष्ट सुषमा लखि कै रसरंग भरी अपनी सुधि भूलें।
नाम के नाचन नूत नचा लखि वार बिलोचन लोचन झूलें।

सियालालशरण 'प्रेमलता'—

स्वामी सियालालशरण 'प्रेमलता' का जन्म सन् १८७१ में हुआ था। यह ग्वालियर के निवासी थे। इनके पिता नोमीराम थे। इनके घर का नाम बालाराम था। इन्होंने रघुनन्दनदास नामक सन्त से भक्ति की दीक्षा ग्रहण की थी। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में 'रहस्य उपासना रहस्य', 'प्रेमलता पदावली', 'चरित्र चालीसा', 'सीताराम रहस्य दर्पण', 'नाम रहस्यत्रयी', 'नामतत्व सिद्धान्त', 'जानकी स्तुति', 'षट्ऋतु विमल विहार', 'सीताराम नामस्तवराज', 'सीताराम नाम जापक महात्म्य', 'पान पचीसी', 'मिथिला विभूति प्रकाशिका', 'वैराग्य प्रबोधक बहत्तरी', 'हितोपदेश शतक', 'प्रेमलता वागवल्ली', 'नाम उपदेश बहत्तरी', 'नाम प्रभाव प्रकाश चालीसा', 'जानकी विनय नामादि', 'नाम रूप भावना', 'सद्गुरु पंचक प्रबोधिका', 'सन्त प्रसाद महात्म्य', 'अनन्य तरंग', 'निजात्मबोध दर्पण', 'अपार सिद्धान्त', 'पाठ भक्ति', 'सन्तमहिमा दर्पण पत्रिका', 'रघुवर शृंगार', 'अध्याम जानकी बधाई', 'सारसिद्धान्त प्रकाश', 'नित्य प्रार्थना', 'चित्रविनोद वाटिका' आदि हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है :

होरी जनक राम सिया भारी।
इत सिय सखी संग बहु रास रघुवर संग सुखद भारी॥
जनक बन मिथिलापुर माहीं धूम मची अति चहुओरी।
केसर रंग गुलाल पनारे बहत नभ धारी धारा॥
अबिर गुलाल कुमकुमनि मारत पिचकारिन तनु सरबोरी।
प्रेमलता सुर नभ मुनि मन बरषत सुमन सुमिरि भारी।

अन्य कवि—

भक्तिकालीन रामकाव्य की परम्परा के अन्तर्गत उपर्युक्त कवियों के अतिरिक्त अन्य भी अनेक कवियों ने योगदान दिया है। इनमें रामभक्त उपासकों का नाम भी

मधुरअली दपति की पटतर नहि न पग्ग राउ आर ॥
(हनुमानशरण मधुरअली)

— — —

चित ले गयो चोराय जु का म लना ।
हम जानी वे कृपासिंधु हैं तब उनरा भई प्रीति अना ।
बिरही जन हिय दुख उपजावत करत नय नय अजब रना ।
प्रीतिलता प्रीतम बदरदी छाड हम नित गया चना ॥
(जानकीवरशरण प्रीतिलता)

— — —

हौं दासी मिथिलेश नन्दी की ।
प्रिय प्यारी सनेह सुख सरि मह विलसन चह्यो निन प्रम मना री ।
श्री कौसिना सुवन सुन्दर सग विहरत प्यारी सुमन अली की ॥
यह रस स्वाद मगन रहो निसिदिन जानो नाहि कछु मुगति भली री ।
जन्म जन्म चेरी भयो चाहत यहै साध उर प्रमअली की ॥
(सियाशरण मधुकरिया प्रमअली)

— — —

हौ दिलदार यार कब पहौं ।
जाके बिन छन पन न परतु है ताके बिना कस अनम गवह्यो ॥
अग अग लखि मधुर मनोहर ह्व अब पकरि अक कब न रै ।
कामदमणि यह सोच रनि दिन कब क आनन्द माहि समह्यो ॥
(कामदमणि)

— — —

अवधेश किशोर रच होरी मिथिला पुर की सब गारी ।
नव ससुरार नवन नव नेही नव नागर नवना गारी ॥
सिद्धि कुवरि सरहज सखियन न रग गुलाल भरे मोरी ।
कर छन लपट गहे रघुन दन गोल कपोलन मन रारा ॥
कचन कवरि करी मन भाई पीताम्बर नीना छारी । (कचनकुवरि)

उपयक्त रामभक्त कविया के अतिरिक्त इस परम्परा म अन्य भी अनक महात्मा हुए है जिन्होने इस प्रवत्ति के विकास म योगदान दिया है । इनम रामचरित तथा गनेसदव नीना क रचयिता मधर अली हनुमान चरित्र क रचयिता सुन्दरदास रामायण महानाटक के रचयिता प्राणचद चौहान गुणराम रासा के रचयिता माधव दास चारण हनुमन्नाटक के रचयिता हृदयराम हनुमानाटक के रचयिता मानदास भाषा रामायण क रचयिता कपूरचद नयोगवाशिष्ठ के रचयिता कृष्ण जनक पचीसी के रचयिता मडन दशरतराय के रचयिता मुकन्द मिश्र अवधविलास क

रचयिता लालदास, रामचरित्र तथा अल्पियापूर्व प्रमग के रचयिता बारहठ नरहरदास रामायण के रचयिता रामदास, जोगरामायण के रचयिता जोगराम रामायण तथा हनुमत पचीसी के रचयिता भगवत सिंह 'रघुवंशदीपक' तथा कवितावली के रचयिता सहजराम जुगलनखशिख के रचयिता पचम सिंह हनुमानजी की स्तुति के रचयिता हरिसेवक रामविलास रामायण के रचयिता ... 'रामाश्वमेध' के रचयिता मधुसूदन, हनुमत पचीसी के रचयिता इच्छाराम हनुनाटक के रचयिता मनजू सत्योपाख्यान के रचयिता ललकदास रामचन्द्र चरित्र के रचयिता शिवसिंह, 'अनुमान पचक, हनुमान पचीसी लक्ष्मणशतक तथा हनुमत नखशिख के रचयिता जुमान रामरहस्य तथा रससुज ग्रन्थ के रचयिता सदरि कुवर रामचरित वत प्रकाश' रघुराज घनाक्षरी रामगीतमाला के रचयिता क्षमकरण मिश्र रामचरित मानस की टीका के रचयिता हरिचरणदास रामाश्वमेध के रचयिता हरिसहायगिरि 'राम रावण युद्ध के रचयिता मून कवितावली के रचयिता परमेश्वरीदास वाल्मीकि रामायण, श्लोकार्थप्रकाश तथा हनुमतपचीसी के रचयिता गणेश बालकाण्ड रामायण के रचयिता देवीदास कायस्थ रामगुणोदय के रचयिता घनीराम हनुमत बालचरित के रचयिता व्रजनाथ 'मुक्तिदान्नातम तथा कोशलपय के रचयिता रुद्रप्रतापसिंह सीताराम गुणार्णव के रचयिता गोकुलनाथ प्रमप्रधाना के रचयिता जानकी चरण 'रामायन शृंगार के रचयिता शिवव्रतराय अध्याम के रचयिता रामगोपाल, 'रामचन्द्र का नखशिख के रचयिता रूपसहाय रामायण के रचयिता सीताराम रामचन्द्र विलास आल्हा रामायण अध्यात्म रामायण ... रामायण सीता स्वयंवर रामविवाह खण्ड रामायण सुमिरनी तथा मिथिला खण्ड के रचयिता नवलसिंह कायस्थ रामरहस्य रामाभरण के रचयिता भगवतदास रामानुजी जानकी पचीसी के रचयिता रामनाथ अद्भुत रामायण रामकथामृत वाल्मीकि रामायण तथा श्रीरामस्तोत्र के रचयिता गिरिधरदास रामायण सूचनिका के रचयिता रसिक गोविन्द रामरसा प्रधान ... तथा ... रहस्य के रचयिता रामनाथ प्रधान चित्रकूट महात्म्य के रचयिता कृपाराम रामस्वर्गारोहण के रचयिता ...दास रामाष्टक के रचयिता मानाराम जुगल नखशिख के रचयिता प्रतापसाहि भावनामृत का ... रचयिता जुगलमंजरी रसनामसिंगार अवधसिंगार साहित्य सुधासागर तथा रामरत्नावली के रचयिता रत्नहरि कुन्दनराय दोहावली ... महावली रामरहस्य पूर्वार्द्ध तथा रामरहस्य उत्तरार्द्ध के रचयिता रत्नहरि चित्रकूट महात्म्य के रचयिता मोहन, ... रामायण के रचयिता विद्या रत्नाकर टीका नेह प्रकाश के रचयिता जनकलाडिली शरण रामरत्न मंजरी मुगल मंजरी तथा भक्तमालामृत ... के रचयिता सियासखी नित्यमन सिद्धांत सार ... महात्म्य तथा अध्यात्म रामायण के रचयिता किशोरदास, रामा श्वमेध भाषा के रचयिता हरिप्रसाद सहाय रामायण के रचयिता समरदास जानकी पचीसी के रचयिता रामनाथ तुलसी चिंतामणि के रचयिता हरिजन बमरपि

नालोपदेश के रचयिता सियारामशरण सियारामनाटक तथा 'प्रमरत्नाकर' तथा प्रताप रत्नाकर के रचयिता लछिराम रामायण भाषा तथा रामरत्नावली के रचयिता हरिचरण मिश्र रामरत्नावली के रचयिता लक्ष्मण रामयंत्र रहस्य जानकी जी का मंगलाचरण के रचयिता रघुवर शरण जानकी सहस्रनाम के रचयिता श्री निवास रामनवरत्न विनय के रचयिता जानकीप्रसाद (प्रथम) रामायण महात्म्य तथा रामगीता के रचयिता गोपालदास रसिक विलास के रचयिता दयानिधि रामरत्नाकर रामगीता प्रकाश हनुमत भूषण तुलसी भूषण तथा मानस भूषण के रचयिता सरदार कवि वाल्मीकि रामायण भाषा के रचयिता छत्रधारी रामायण तथा रामविलास के रचयिता ईश्वरी प्रसाद रामायण के रचयिता रामतीदास भक्तिविलास भजन विवेक मानस की लेखावलि टीका के रचयिता बाबा हरिदास रसिक प्रकाश भक्तमाल की सुबोधिनी टीका के रचयिता बालकदास रामजस के रचयिता सूरजदास रामाश्वमेध के रचयिता मोहनदास अद्भुत रामायण भाषा के रचयिता गोकुलप्रसाद ब्रज भक्तिसार सिद्धांत के रचयिता रामवल्लभ शरण रामनाम तत्वबोधिनी के रचयिता रामदयाल रामभक्ति प्रकाशिका के रचयिता जानकीप्रसाद (द्वितीय) महारामायण के रचयिता भगवानदास खत्री भक्तमन रंजनी के रचयिता प्रेमसखी (द्वितीय) हनुमान पच्चीसी के रचयिता लालकवि रामायण रामानुरागावली के रचयिता वन्देहीशरण पदावली के रचयिता श्यामसखा वाणी सिद्धांत विचार तथा भक्तनामावली के रचयिता ध्रुवदास मानस शंकावली के रचयिता वन्दन पाठक अवध विलास रामायण के रचयिता इन्द्रजीत अद्भुत रामायण के रचयिता लालमणि गीत रामायण के रचयिता महाबीरदास मिथिला महात्म्य के रचयिता चतुरदास रामचन्द्र नखशिख के रचयिता राघवदास सीताराम विवाह संग्रह के रचयिता श्यामनाथ प्रेमप्रकाश के रचयिता गौरीशंकर विजय राघव खंड के रचयिता यदीन्दीन दीक्षित साता काड रामायण के रचयिता समर सिंह रामरहस्य रामायण के रचयिता पूर्णपूरनदास रामतत्व बोधिनी के रचयिता शिवप्रकाश सिंह रामायण कवित्त के रचयिता शंकर त्रिपाठी राम नखशिख के रचयिता मुनिलाल माधवमधुर रामायण के रचयिता माधव रत्नाकर वाल्मीकि रामायण भाषा के रचयिता महेशदत्त सम्बन्धतत्व भास्कर के रचयिता सीताराम प्रपन्नाचार्य रहस्य तत्व भास्कर के रचयिता पद्मनाभाचार्य संक्षिप्त उपासना कांड के रचयिता मानदमणि रामचन्द्र की बारामासी के रचयिता छेदालाल परशुराम संवाद के रचयिता काशीराम रघुनाथ शतक के रचयिता मुन्नालाल जानकी रामचरित नाटक के रचयिता हरीराम रामचरित्र दोहावली के रचयिता युगलप्रसाद चौबे सियालाल समय रस वर्द्धिनी तथा कवितनाम के रचयिता अली सियारसिक युगल सनेह विलास तथा अमर्षचन्द्रिका के रचयिता रसिक वल्लभ शरण रामजन्म के रचयिता स्वयप्रकाश रामस्तुति विनयसार भक्त विनयसार तथा रामपचासिका के रचयिता गुमानी पंत सरजू अष्टक के रचयिता रामकिशोर

राम अवध विलास के रचयिता विश्वप्रसाद कवि और रामप्रिया विलास के रचयिता रामप्रिया हैं।

महत्व—

इस प्रकार से भक्तियुगीन काव्य के अन्तर्गत रामकथा की एक सुविस्तृत परम्परा मिलती है। जैसा कि इस परम्परा के मुख्य कवियों के उपर्युक्त परिचय से स्पष्ट हो जाता है। यह काव्य धारा मुख्य रूप से मर्यादा, माधुर्य, दास्य, सख्य तथा अन्य अनेक रूपों में राम भक्ति की निरूपक है। इस काव्य प्रवृत्ति पर प्राचीन युगों में लिखे गये संस्कृत तथा अन्य भाषाओं के साहित्य का भी व्यापक प्रभाव है। यह इसकी ऐतिहासिक प्राचीनता का भी द्योतन करता है। इस प्रवृत्ति के प्रसार में अनेक कवियों ने योग दिया जिनमें गोस्वामी तुलसीदास जैसे महान भक्तकवि भी हैं। रामकाव्य में कथात्मक तत्वों के सुनियोजित समावेश के अतिरिक्त आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से भी अनेक विशेषताएँ मिलती हैं। रामचन्द्र को कवियों ने परब्रह्म परमेश्वर ही माना है जो चार रूपों में अयोध्या में अवतीर्ण हुए थे। राम के चरित्र में शील शक्ति और सौन्दर्य का जो अद्भुत समन्वय भक्तकवियों ने निर्दिष्ट किया वह अनुपमेय ही है। जिस प्रकार से प्रकृति और पुरुष की सत्ता होती है उसी प्रकार से सीता भी परमपुरुष राम से अपृथक् उन्हीं की शक्ति के एक रूप में मान्य की गयी हैं। राम और सीता दोनों ही एक तत्व होकर विराट आकार स्वरूप हैं। तुलसीदास जी ने सीता और राम की वन्दना करते हुए उनकी अभिन्नता के विषय में यह लिखा है कि जिस प्रकार से वाणी और अर्थ में तथा जल और लहर में पार्थक्य नहीं होता उसी प्रकार से सीता और राम भी एक ही हैं। राम भक्त कवियों के अतिरिक्त कृष्ण भक्त कवियों ने भी राम कथा का समावेश अपने काव्य में किया है। सूरदास ने भी अपने सूरसागर में राम चरित्र का गान किया है। उन्होंने एक सौ पदों में संक्षेप में राम का भक्तिगान प्रस्तुत किया है। सगुण भक्ति के औचित्य का निरूपण भी सूरदास ने किया है। सगुण भक्ति इसलिए सामान्य जनों के लिए बोधगम्य है क्योंकि निर्गुण अथवा अनन्त वाणी से व्यक्त नहीं किया जा सकता उसे रूप रेखा गुण जाति अथवा वर्ण से भी समझा नहीं जा सकता। इसलिए सामान्य भक्त सगुण रूप का आश्रय चाहता है। श्रीमद्भागवत के नवम् स्कन्ध में सूरदास ने रामकथा का संक्षेप में वर्णन किया है। सूरदास ने राम और उनके भाइयों का चरित्र गान और सीता [illegible] को अनन्त काल बताया है। वे चारों कुमार और बहु रानी [illegible] धन अन्न और [illegible] की निवास भूमि हैं। तुलसीदास ने भी रामकथा के अन्तर्गत आध्यात्मिक और दार्शनिक तत्वों का निरूपण किया है। ब्रह्म को उन्होंने अजर अमर अनन्त अविनाशी निर्विकार मायारहित और अनन्त माना है। सगुण दृष्टिकोण से उन्होंने उसकी कल्पना सच्चिदानन्द रूप में की है। उन्होंने स्पष्टतः यह प्रतिपादित किया है कि निर्गुण और सगुण में कोई अन्तर नहीं है। निर्गुण स्वरूप ही प्रेम भावना से

युक्त भक्ति के कारण सगुण बन जाता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार से जल शीत के कारण हिम बन जाता है। सगुण रूप की उपासना का तुलसी ने अनुगमन किया। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के चरित्र में उन्होंने निर्गुण और सगुण दोनों की निहिति बताते हुए उन्हें विष्णु का अवतार बताया है। राम के नाम की भी उन्होंने असाधारण महिमा प्रतिपादित की। ब्रह्म की शक्ति के रूप में माया का भी विवेचन तुलसीदास ने किया। इसी प्रकार से जीव मुक्ति भक्ति तथा ज्ञान आदि का निरूपण भी उन्होंने राम कथा के विभिन्न सन्दर्भों में किया है। इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि राम काव्य की परम्परा न केवल भारतीय साहित्य में वरन विदेशी साहित्य में भी अत्यधिक प्रशस्त है। उसका प्रसार प्राचीन युगों में सहस्रों वर्षों तक है और वर्तमान काल तक वह अजस्र रूप में प्रवाहशील मिलता है।

—)०(—

अध्याय . ६

भक्ति युगीन कृष्ण-काव्य की प्रवृत्ति

हिन्दी साहित्य में कृष्ण काव्य की परम्परा मुगीयकाल से विकासमान मिलती है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कृष्ण कथा का वर्णन जयदेव ने अत्यन्त सरस रूप में किया था। जयदेव ने राधाकृष्ण की लीला-गान संस्कृत भाषा में किया यद्यपि उनके लिखे हुए कुछ पद हिन्दी में भी उपलब्ध होते हैं। उनके प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ 'गीत-गोविन्द' का परवर्ती कृष्ण काव्य पर उल्लेखनीय प्रभाव बताया जाता है। विद्यापति ने भी इसका प्रसार किया। उन्होंने राधा और कृष्ण के प्रेम के विविध पक्षों को आधार बनाकर काव्य रचना की। विद्यापति के काव्य में शृंगारिकता की प्रधानता है। राधा के नखशिख वर्णन, रूप वर्णन तथा उनके प्रति कृष्ण का अनुराग चित्रण विद्यापति ने अत्यन्त भावात्मक रूप में किया है। कहा जाता है कि विद्यापति का कृष्ण-काव्य इतना अधिक लोकप्रिय था कि चैतन्य महाप्रभु तथा उनके शिष्यगण इसे अत्यन्त भाव विभोर होकर गाते थे और कभी कभी भावातिरेक में चेतनाविहीन तक हो जाते थे। उनके अनुयायी ब्रज प्रदेश में आ रहने थे। इसलिए यह भी कहा जाता है कि परवर्ती कृष्ण-काव्य पर उनका व्यापक प्रभाव पड़ा था। प्रसिद्ध संत नामदेव ने भी कृष्ण काव्य के विकास में योग दिया। इन कवियों के अतिरिक्त अन्य भी अनेक कवि हुए हैं जिन्होंने कृष्ण काव्य की परम्परा के विकास में योग दिया है। इसी सन्दर्भ में भागवत भाषा दशम स्कंध के रचयिता लालचदास हलवाई तथा युगलशतक के रचयिता श्री भट्ट भी हैं। भट्ट जी का लिखा हुआ 'युगलशतक' निम्बार्क सम्प्रदाय में ब्रज भाषा की प्रथम रचना के रूप में मान्य है। इसे आदि वाणी भी कहते हैं। सौ दोहों में लिखा गया इस कृति में सिद्धान्त सुख, ब्रज लीला सुख, सेवा-सुख, सहज सुख, सुरत सुख और उत्साह सुख का वर्णन है। इसमें निम्बार्क सिद्धान्त और उसकी उपासना-पद्धति का सैद्धान्तिक रूप स्पष्ट हुआ है। श्री भट्ट ने युगलमूर्ति राधा कृष्ण की लीला का सरस वर्णन किया है। इनके रचना काल के विषय में विद्वानों में मतभेद है। यह सोलहवीं शती की रचना अनुमानित की जाती है। इन कवियों के पश्चात् इस परम्परा में अमीर खुसरो का नाम भी उल्लेखित किया जा सकता है। वह अलाउद्दीन के युग थे। इनके द्वारा

चगज खा के आक्रमण के कारण बनबन त रा य रात म भारत म बस गये थ । खुसरो मुख्यत अरबी फारसी के कवि थ और उनकी प्राय सभी रचनाएँ इ हीं भाषाओं म उपल ध होती है। हि दी म उ होंने केवल कुछ स्फुट पद्य और पहेलियों की ही रचना की है। व्रज भाषा और खडी बोली का मिश्रित रूप खुसरो के स्फुट काव्य म मिलता है। खुसरो की पहेलियां सूर के दृष्टिकूट प दों की जटिलता लिए हुए हैं।

कृष्ण-काव्य का व्रज भाषा म अष्टछाप के प्रसिद्ध कवियों द्वारा प्रचार होने के समय अथवा उसके पूर्व अनेक धार्मिक सम्प्रदाय प्रचलित थे जिनके अनुगामी इस प्रवृत्ति पर काव्य रचना कर रहे थे। इनम विष्णुस्वामी-सम्प्रदाय भी एक है जिसके प्रवतक आचाय विष्णु स्वामी थे। विष्णु स्वामी के सिद्धान्त अ तवाली विचारधारा से पर्याप्त साम्य रखते हैं। आचाय विष्णुस्वामी भक्ति का मुक्ति की तुलना म अधिक महत्व प्रदान करते थे। वद तत्रोक्त विधान वग न सांख्य-योग तथा वर्णाश्रम धम आदि के अन्तगत निर्दिष्ट सारा विधान उ होंने भक्ति के साधन के रूप म ही मान्य किया है। कहा जाता है कि आचाय विष्णुस्वामी के पश्चात् इस सम्प्रदाय म सात सौ आचाय हुए थे। इनम एक आचाय बिल्वमंगल हुए थे जिनके समकालीन शंकराचाय तथा कुमारिल भट्ट आदि थे। अष्टछाप के वल्लभाचाय पर भी इनके सिद्धांतों का पर्याप्त प्रभाव बताया जाता है। इस सम्प्रदाय के अंतिम स्वामी आचाय ज्ञानेश्वर बताये जाते हैं। इनके अतिरिक्त राजगोपाल विष्णु स्वामी का भी उल्लेख मिलता है। कुछ विद्वानों का यह मत है कि माधवाचाय तथा सायनाचाय के गुरु विद्यारण्य का ही एक नाम विष्णु स्वामी था। इस सम्प्रदाय के अ य समथकों म नामदेव त्रिलोचन, हीरालाल तथा श्रीराम आदि बताये जाते हैं। इसके साथ ही वारकरी सम्प्रदाय का नाम भी उल्लेखनीय है जिस पर विष्णुस्वामी सम्प्रदाय के सिद्धा तों का पर्याप्त प्रभाव मिलता है। निम्बाक सम्प्रदाय के प्रवतक निम्बाकाचाय जी थे जिनका समय बारहवीं शताब्दी अनुमानित किया जाता है। निम्बादित्य निम्बभास्कर तथा नियमानन्दाचाय आदि इनके अन्य नाम भी मिलते हैं। कुछ लोग इन्हें और भास्कराचाय को एक ही व्यक्ति बताते हैं। निम्बार्काचाय जी न वेदान्तपारिजात सौरभ तथा दशश्लोकी नामक ग्रंथों म अपने मत का विवेचन किया है। उपास्य का स्वरूप उपासक का स्वरूप कृपाफल भक्तिरस तथा फल प्राप्ति आदि विषयों के अ तगत ब्रह्म जीव जगत मोक्ष तथा माग के साधना आदि का विवेचन इस सम्प्रदाय म हुआ है। निम्बार्क मत के अनुसार श्रीकृष्ण ही परमब्रह्म है। इस सम्प्रदाय को सनक सम्प्रदाय तथा हस सम्प्रदाय भी कहा जाता है। माध्व सम्प्रदाय के प्रवतक माध्वाचाय जी थे जिन्हें आनन्दतीर्थ तथा पूणप्रज्ञ भी कहा जाता है। माध्वाचाय जी ने मायावाद तथा अद्वैतवाद के सिद्धांतों का खण्डन करके द्वैत मत का पोषण किया। इस सम्प्रदाय म परमात्मा को अन त और असीम गुणों से युक्त माना गया है। परमात्मा आठ प्रकार के कायकर्ता है जो सृष्टि स्थिति सहार नियम आवरण अथवा अज्ञान, बोधन बधन

तथा मार्ग हैं। प्रकृति जीव इन्द्रियाँ माया आदि का भी निरूपण इस सम्प्रदाय में हुआ है। चैतन्य सम्प्रदाय का प्रवर्तन चैतन्य महाप्रभु ने किया था जिनका समय उन्नीसवीं शताब्दी माना जाता है। इनके शिष्यों में नित्यानन्द और अद्वैताचार्य प्रमुख थे। रूप गोस्वामी सनातन गोस्वामी तथा जीव गोस्वामी नामक इनके शिष्यों का उल्लेख भी भक्तमाल में मिलता है। जीवगोस्वामी गोपाल भट्ट ईश्वरपुरी गोस्वामी माधवेन्द्रपुरी गोस्वामी आदि का उल्लेख भी इसी सम्प्रदाय में किया जाता है। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत श्री रूपगोस्वामी ने भक्तिरसामृत सिन्धु उज्ज्वल नीलमणि तथा लघु भागवतामृत आदि ग्रन्थों में भक्ति की वस्तु रूप में विवेचना की है। सनातन गोस्वामी ने 'श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध की टीका' तथा 'बृहद्भागवतामृत' नामक ग्रन्थों की रचना की है। जीव गोस्वामी ने सन्दर्भ ग्रन्थों की टीकाओं के अतिरिक्त [illegible] एवं गोपाल चम्पू आदि ग्रन्थ लिखे। इसी सम्प्रदाय के अन्तर्गत गोपाल भट्ट स्वामी के शिष्य श्री निवासाचार्य भी हुए। अठारहवीं शताब्दी में बलदेव विद्याभूषण ने 'गोविन्द भाष्य' की रचना की। चैतन्य सम्प्रदाय के अनुसार परब्रह्म के तीन रूप हैं स्वयं रूप तदेकात्म रूप एवं आवेश रूप। परब्रह्म स्वयं रूप श्रीकृष्ण ही हैं जो स्वतः सिद्ध हैं। इस सम्प्रदाय में जीव को अणु तुल्य कहा गया है। क्योंकि वह माया शक्ति और स्वरूप शक्ति के मध्य में है। अन्य आध्यात्मिक विषयों के विषय में भी इसी प्रकार से इस मत के पृथक सिद्धान्त हैं।

अनुराग था। सोलह वर्ष की अवस्था में इनका विवाह रुक्मिणी जी से हुआ था। गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी यह अपना अधिकांश समय भगवचर्चा में व्यतीत करते थे। संवत १५९० में यह तीर्थयात्रा करते करते वृन्दावन पहुँचे। वहीं पर इन्होंने अपने सिद्धान्तों का प्रचार किया। इनके लिखे हुए चार ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं जो राधासुधा निधि, यमुनाष्टक, हितचौरासी तथा स्फुट वाणी हैं। राधासुधा निधि ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इसमें २७० श्लोक हैं जिनमें रचयिता ने राधा जी की वन्दना, उपासना, प्रशस्ति, सेवा, पूजा, भक्ति, गोपी आदि का वर्णन किया है। इस ग्रन्थ पर आगे चलकर अनेक विद्वानों ने टीकायें और व्याख्यायें प्रस्तुत की। इनमें कृष्णचन्द्र, तुलसीदास, भतराम, वन्दावनदास, नरसिंह जी, हित हरिलाल, व्यास, लोकनाथ, नन्दीलाल, स्वामिनीशरण, मनोहर वल्लभ, कृपालाल, लाडलीलाल, युगवल्लभ तथा भोलानाथ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। यमुनाष्टक ग्रन्थ यमुना की वंदना में लिखा गया है। यह एक प्रशस्ति काव्य है जिसमें आठ श्लोक हैं। हितचौरासी चौरासी पदों का ग्रन्थ है। राधावल्लभ सम्प्रदाय के सिद्धांतों के निरूपण की दृष्टि से इस ग्रन्थ का बहुत अधिक महत्व है। इसी ग्रन्थ को हरिवंश चौरासी तथा हितचौरासीधनी आदि नामों से भी उल्लिखित किया जाता है। इस ग्रन्थ की भी अनेक टीकाएं गद्य और पद्य में की गयी है। इनमें व्रजभूषणलाल, रसिकलाल, सुखलाल, प्रमदास, हितधरनीधरदास, लोकनाथ, रसिकलाल, चन्द्रलाल, मनोहर वल्लभ, रतनदास, कमल कुंअरि, हितदासी, वृन्दावनदास, कृपालाल तथा लाडिलीदास आदि की टीकाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। स्फुट वाणी में हितहरिवंश की फुटकर रचनाएं संगृहीत हैं। यह सवैया, छप्पय, कुण्डलिया तथा दोहा आदि छन्दों में लिखी गयी हैं। स्वामी हितहरिवंश के काव्य से कुछ उदाहरण यहाँ पर प्रस्तुत किये जा रहे हैं

जोई जोई प्यारो करै सोई मोहि भावै
भावै मोई जोई सोई सोई करैं प्यारे ॥
मोको तौ भावती ठौर प्यारे के नैननि में
प्यारो भयो चाहै मेरे नैननि के तारे ॥
मेरे तन मन प्रानहू ते प्रीतम प्रिय
अपने कोटिक प्रान प्रीतम मोसों हारे ॥
हितहरिवंश हंस हंसिनी सांवल गौर
कहौ कौन करै जल तरंगिनि न्यारे ॥

— — —

प्रीति न काहू की कानि बिचारै।
मारग अपमारग बिथकित मन को अनुसरत निवारै ॥

ज्यों सरिता सावन जल उमगत सनमुख सिंधु सिधार।
ज्यों नादहि मन दिये कुरंगनि प्रकट पारधी मार॥
हितहरिवंश हिलग सारंग ज्यों शलभ शरीरहि जार।
नाइक निपुन नवल मोहन बिनु कौन अपनपौ हार॥

— — —

आज निकुंज मंजु में खेलत नवलकिशोर नवीन किशोरी।
अति अनुपम अनुराग परस्पर सुनि अभूत भूतल पर जोरी॥
विद्रुम फटिक विविध निर्मित घर नव कर्पूर पराग न थोरी।
कोमल किसलय सैन सुपेसल तापर स्याम निवेसित गोरी॥
मिथुन हास परिहास परायन पीक कपोल कमल पर गोरी।
गौर स्याम भुज कलह मनोहर नीवी बंधन मोचत डोरी॥
हरि उर मुकुर बिलोकि अपनपौ विभ्रम विकल मानजुत भोरी।
चिबुक सुचारु प्रलोइ प्रबोधत पिय प्रतिबिंब जनाय निहोरी॥
नेति नेति बचनामृत सुनि सुनि ललितादिक देखत दुरि चोरी।
हित हरिवंश करत कर धूनन प्रणयकोप मालावलि तोरी॥

— — —

तातें भैया मेरी सौं कृष्ण गुण संचु।
कुत्सित वाद विकारहि परधन सुनु सिख मंद परतिय बंचु॥
मणिगण पुंज ब्रजपति छांडत हितहरिवंश करि गहि कंचु।
पायो जान जगत में सब जन कपटी कुटिल कलियुग टंचु॥
इहि परलोक सकल सुख पावत मेरी सौं कृष्ण गुण संचु॥

दामोदरदास सेवकजी —

दामोदरदास सेवकजी का जन्म मध्यप्रदेश के गढ़ा नामक गांव में संवत् १५७७ के लगभग हुआ था। इनके जीवन चरित्र के विषय में भगवतमुदित उत्तमदास तथा प्रियादास आदि ने विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया है। इन्हें बाल्यावस्था से ही भगवत् भक्ति के प्रति अनुराग था। गोस्वामी हितहरिवंश का नाम सुनकर इन्होंने उन्हें ही अपना गुरु बनाने का संकल्प किया। कहा जाता है कि स्वप्न में इन्होंने गुरु के दर्शन किये और उनसे दीक्षा प्राप्त की। 'सेवक वाणी' इनकी प्रसिद्ध कृति है जो सोलह प्रकरणों में विभाजित है। इस ग्रंथ में इन्होंने साम्प्रदायिक भक्ति भावना और सिद्धान्तों को प्रभावशाली रूप में निरूपित किया है। इसमें सरस ब्रज भाषा बुंदेलखंडी तथा अवधी आदि की शब्दावली मिलती है। यह हितहरिवंश के सम्प्रदाय में सर्वनिष्ठ अनुयायी के रूप में प्रसिद्ध हैं। अपने काव्य में इन्होंने अपनी धार्मिक भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति की है। इनका देहावसान संवत् १६०८ में हुआ था। इनके काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार है

जब जब होत धम की हानि तब-तब तनु धरि ।म ? आि
जानि और दूजो नहा।

जा रस रीति सगनत दूरि मा सब विश्व रही अरि पूर।
भूरि सजीव न कहि ॰॰।

— — —

दत्र ज मैं अवतार मअ भजि सहान्त्रा मन नमा न जाई।
गाकुलनाथ महा व्रज बनव लीला अनत न चित्त घटाई॥
एकहि रीति प्रतीति बध्यौ मन मा़ो उर हरिवन वसाई।
जा हरिवन तजो भजो औरहि ता माहि आ हरिवश दुहाई॥

— — —

विपिन नितत रसिक रस राशि।
दपनि अति आनन्द बस प्रममत्त निशव क्रीडत।
बचन भडन कर वरण मन ताल रतिरग क्रीडत॥
पटकत पट चटकिनि चन्क नटतत नट मृदुहास।
पटकत पद उघन्न शव्द अटवत नकटि विलास॥

हरिराम व्यास—

श्री गास्वामी हरिराम यास ओरछा नरेश मधुकर शाह क गुरु थ। इनके जीवन क सन्दभ म जा विवरण उपलब्ध हाता है उसक विषय म विविध विद्वानो के भिन्न भिन्न विचार है। इनका ज म स्थान टीकमगढ राज्य माना जाता है। इनका जन्म सवत १५४८ अनुमानित किया जाता है। इनके पिता समोखन शुक्ल थे। बाल्या वस्था म ही इ्होंने अनक धम ग्र था का पारायण करक भक्ति क प्रति अनुराग प्रकट किया था। इनकी पत्नी का नाम गोपी था। अनक विद्वाना ने इनके दीक्षा गुरु के विषय म विभिन्न स्वामियो के नाम लिय हैं। यास जी क भक्ति सिद्धा ता म राधा वल्लभ सम्प्रदाय क साधना पक्ष की प्रधानता है। व्यास जी ने दाशनिक मत विवाद की तुलना म भक्ति भावना की सहज अभि यक्ति पर अधिक बल दिया है। व दावन पहुचकर उ्होंने हितहरिवश स दीक्षा ग्रहण करन क पश्चात अपन आराध्य का मन्दिर बनवाकर उसम मूर्ति प्रतिष्ठित की थी। श्री हरिराम यास के लिख हुए ग्रन्था मे यास वाणी रागमाला तत्व नवरत्न और स्वधम पद्धति का उल्लेख किया जाता है। व्यास वाणी म कवि न राधाकृष्ण की निकुज लीला का माधुय भक्ति के सन्दभ म वणन किया है। इसम ऋतु वणन शृगार वणन और सौंदय वणन भी समाविष्ट है। उनक अ य दोना ग्र थ प्रकाशित नही है। श्री हरिराम यास का स्वगवास सवत १६८ से १६५५ क मध्य हुआ था। यास जी क का य के कुछ उदाहरण नीच प्रस्तुत किय जा रहे है

श्री राधावल्लभ तुम मेरे हित ।
और सब स्वारथ के मगा गुर चौपरी ~ पापन पित ॥
यह मैं जानि सबनि सौं तोरी तुम सौं जोरी द चरनन चित ॥
इतनी आस ~यास की पुजवहु ज्यो चातक पापन पावस रित ॥

— — —

१
अब न और कछु करन रहन है वन्दावन ।
हानी हाय सो हाय जिनि ~नि ~नि आयु घटति जुठ तन ॥
मिलिहै हित ~तिनाभिक दासी रास न गावत मुनि मन ॥

— — —

सदा वन्दावन सबको आदि ।
रस निधि सुखनिधि जहा विराजत नित्य अनन्त अनादि ॥
गौर श्याम ~ा तरन हरन दुख वदभूत मर्जादि ॥
मुक पिक बकी काक कुरंग कपोत मृगज सनकादि ॥
कीट पतंग विहग सिंह कपि तहा सोहत जनकादि ॥
तरु लता गुल्म कल्पतरु कामधेनु गो जप धमादि ॥
मोहन की बनसी ते प्रकटित अब ~ा कपिलादि ॥
गोपिन को नित नव प्रेम ~ परस्त जन समनादि ॥

— — —

व्यास कनक अरु कामिनी ये ~ाकी तरवारि ।
निकस है हरि भजन कौं बीचहिं ~ान मारि ॥
व्यास कनक अरु कामिनी तजिय तजिय दूर ।
हरि सौं अन्तर पारिहैं मुख ~ जहै धूरि ॥

चतुर्भुजदास—

राधावल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी स्वामी चतुर्भुजदास अष्टछाप के कवि चतुर्भुज दास से भिन्न थे। चतुर्भुजदास जी का जन्म संवत १५८४ में गढ़मण्डल में हुआ था। इनके जीवन की अनेक चामत्कारिक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। इनका एक ग्रन्थ द्वादश यश नाम से प्रसिद्ध है। यह ग्रन्थ ब्रज भाषा में लिखा गया है। इसमें कवि ने ~ ा गवत गुमान-यश धर्म विचार-यश नाम प्रताप-यश ~ि ा-सार-यश हितोपदेश-यश पतितपावन-यश माहिमा-यश अनन्य भजन-यश गाथा-प्रताप-यश मनशिक्षा-यश तथा विमुख मुख भंजन-यश पर विचार किया है। इसमें चतुर्भुजदास जी ने संसार के मोह माया आदि ~ाला ~ा बचन का मुक्ति का प्रयत्न करके कृष्ण भक्ति का अनुमोदन किया है। ~िचार के अन्तर्गत कवि ने प्राचीन वर्णाश्रम धर्म के अनुसार विविध वर्णों के कर्तव्य कर्तव्यों और आचरणों की व्याख्या की है। ~ ार के अन्तर्गत कवि ने

विभिन्न पौराणिक सन्दर्भों के आधार पर भक्ति का महत्व बताया है। चतुर्थ के अन्तगत विभिन्न मुनिजन के उपदेशों के आधार पर सत्संग की महिमा वर्णित है। पञ्चम् के अन्तगत गुरु शिष्य के पारस्परिक सम्बन्ध गुरु का महत्व गुरु की योग्यता शिष्य के कर्तव्य आदि का वर्णन है। षष्ठ के अन्तगत जीव का इस संसार में ८४ लाख योनियों में भ्रमण तथा जन्म मरण आदि से मुक्ति के उपाय वर्णित हैं। सप्तम् के अन्तगत कृष्ण के पतितपावन स्वरूप का वर्णन है। अष्टम के अन्तगत माया के व्यापक प्रभाव और शक्ति को वर्णित किया गया है। नवम् के अन्तगत विशुद्ध भक्ति भावना का अनुमोदन किया गया है। दशम के अन्तगत राधा की महिमा वर्णित की गयी है। एकादश के अन्तगत साम्प्रदायिक भक्ति का सैद्धान्तिक निरूपण किया गया है तथा द्वादश के अन्तगत भक्ति कर्म धर्म आदि की विवेचना है। श्री चतुर्भुजदास के काव्य के कुछ अंश उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

मुख को सुख अरु मोद माद रस को रस एकत कीनो हरि जू।
तुपा-तुपा की गुन को गुन ताको जु सार मथि लीनो हरि जू॥
ता सार को साधि सकल लियो पुनि जु माधुरी कीनी हरि जू।
तब निज आनन्द प्रेम मिले के रुचि की रुचि जिन कीनी हरि जू॥
प्रेम लच्छना नाम तासु सुख सदन भवन बिहारी हरि जू।

— — —

दुर्लभ तन पायो सुरनर करि। गुरु श्रवन हरिनाम नाव धरि॥
सखी कुमति अति तृष्णा विषया जिहि तिहि गति गहि आन हो हरि।
एकनि भरन श्रवन न पठत मोह सज सग सोर हो हरि।
काम क्रोध चर चोर सिख के ज्ञान रतन धन पात्र हो हरि॥

— — —

अबही आन विचारिय जू।
पुत्र कलत्र सजन सुपने सो जाग त कछु न निहारिय जू॥
नाना सुतनु विष सुख भगत भक्ति न कबहू समारिय जू।
सुरतन को फल लह्यो अमरपद तहीं त न गहि डारिय जू॥
जाको बिरद पतितपावन है सो कस निमिष बिसारिय जू।
चतुर्भुज मुरलीधरन जनन बिनु मनुवा जनम हारिय जू॥

ध्रुवदास—

स्वामी ध्रुवदास का जन्म संवत १६३ के लगभग हुआ था। इनके पिता का नाम श्यामलाल था और इनके पितामह बठिनदास थे। कहा जाता है कि इन्होंने स्वप्न में हितहरिवंश को गुरु मानकर उनसे दीक्षा ग्रहण की थी परन्तु गोपीनाथ जी से भी इन्होंने विधिपूर्वक दीक्षा प्राप्त की थी। बाल्यावस्था में ही इनके हृदय में भगवत भक्ति के प्रति अनुराग था। अत दस वर्ष की आयु में ही यह वृन्दावन में आकर रहने

लगे थे। ध्रुवदास जी के लिखे हुए ग्रन्थों में जीव दशा लीला, मन शिक्षा लीला ध्यान हुलास लीला, वृहद् वावन पुराण की भाषा लीला, प्रीति चौवनी लीला, भजनाष्टक लीला, भजन सत लीला, मन शृंगार लीला, सभामण्डल लीला, रस हीरावली लीला, प्रेमावली लीला, 'रहस्य मंजरी लीला, रति मंजरी लीला, बन विहार लीला, रसविहार लीला, रंग विनोद लीला, रहस्यलता लीला, अनुराग लता लीला, रसानन्द लीला, जुगल ध्यान लीला, मान लीला, वैद्यक ज्ञान लीला, वृन्दावन सत लीला, भक्त-नामावली लीला' सिद्धान्त विचार लीला, आनन्दाष्टक लीला, भजन कुंडलिया लीला, भजन शृंगार सत लीला, हित शृंगार लीला, रस मुक्तावली लीला, रस रत्नावली लीला, प्रियाजी नामावली लीला, सुख मंजरी लीला, नेहमंजरी लीला, रंगविहार लीला, रंग हुलास लीला, आनन्ददशा विनोद लीला, आनन्द लता लीला, प्रेमदशा लीला, व्रजलीला, नृत्यविलास लीला, दान लीला' आदि का उल्लेख किया जाता है। अपने भक्तनामावली नामक ग्रन्थ में ध्रुवदासजी ने विभिन्न भक्तों के नामों का उल्लेख किया है। इनमें से गोस्वामी हितहरिवंश के अतिरिक्त गोस्वामी वनचन्द्र, गोस्वामी श्री कृष्ण चन्द्र, गोस्वामी गोपीनाथ, गोस्वामी मोहनचन्द्र, गोस्वामी सुन्दरवर, जयदेव, श्रीधर स्वामी, स्वामी हरिदासजी, श्री विट्ठलनाथ, श्री कृष्ण चैतन्य, श्री रूपगोस्वामी, श्री सनातन गोस्वामी, श्री जीव गोस्वामी, श्री रघुनाथदास, कृष्णदास, प्रबोधानन्द सरस्वती, श्री गोपालभट्ट, घमंडी घमंडदेव, श्री भट्ट, श्री गदाधर भट्ट, श्री नाथ भट्ट, श्री गोविन्द स्वामी, श्री गंग स्वामी, श्री गिरधर स्वामी, श्री विट्ठल विपुल, श्री बिहारीदासजी, श्री व्यासजी, श्री सेवकजी, श्री नरवाहन, चतुर्भुजदास, वल्लभदास, परमानन्द, नागरीदास, बालकृष्ण, ध्यान् मोहनमद, मोहनदास, बीठलदास, सुन्दरदास, नेही नागरीदास, नागर चिन्तामणि, चतुरदास, हरिदास, नन्ददास, सरस, नागरीदास, परमानन्दन, माधव, मुदित, सूरज, किशोर, कल्याण, घटापुन, राघवदास, मीराबाई, [illegible], यमुना, कुम्भनदास, कृष्णदास, जसवन्त, हरिदास, कुंवर, गोविन्ददास, परमानन्ददास, अष्टछाप, सूरदास, छीत स्वामी, माधव, [illegible], राम, [illegible] बरसानिया, सूरदास मदन मोहन, धनाजी, नामदेवजी, पीपाजी, धन्ना, रैदास, कबीर, माधो, [illegible], [illegible], विश्वमंगल, रामानन्दजी, हरिदास, देव, छीत स्वामी, [illegible], नरसीजी आदि के नाम भी हैं। ध्रुवदास के काव्य में भावात्मकता की मात्रा अधिक मिलती है। उन्होंने नित्य विहार और निकुंज लीला के साथ उज्ज्वल प्रेम के स्वरूप का भी वर्णन किया है। उनके काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

प्रेम आशा धरि चित में कहत यथामति मोर।
वृन्दावन सुख रंग को काहुन पायो ओर ॥
दुर्लभ दुर्घटना सबनि तें वृन्दावन निज मौन।
नवल राधिका कृपा बिनु कहियो पावे कौन ॥

वन्दावन दुतिपत्र की उपमा को कछ नाहि।
कोटि कोटि बकुठ हू नहि सम कहे न जाहि॥

— — —

फूलि फूलि रहे सब फूल फुलवारी म न
रोमि रोमि छवि आइ पाइनि म परी है।
नाडिलो नवली अलबेली मुख सहज ही
निरखि निकुज तें अनूप भाति धरी है।
नखसिख भूषन लावण्य ही क जगमग
दीठ सों छवत सुकुमार ताहू डरी है।
हित ध्रुव मुरनि हरत बिराइ रहे
दामिनी की दुति अहोरन हरी है॥

— — —

प्रम मत्न का मुख जहा सहज प्रम सिगार।
आदि मध्य अवसान इक इक रस विमल विहार॥
प्रमी बिछुरत नाहि कहू मिल्यो न सो पुनि आहि।
तौन एक रस प्रम को कहि न सकत ध्रुव ताहि॥
अग अग सब लाग क चकत प्रिया की ओर।
सहज प्रम को ठर परयो बध नह की डोर॥

नही नागरीदास—

स्वामी नहि नागरीदास वृन्दावन के निवासी थे। चतुभजदासजी स सत्सग होन पर यह वृ दावन आकर बस गय। इनका जन्म सवत १८८० के लगभग अनुमानित किया जाता है। इनके जीवन तथा भक्ति के सम्बन्ध म अनेक किंवदन्तियाँ भी प्रचलित है। इन्होन सिद्धान्त दोहावली पदावली तथा रस पदावली नामक ग्रथो म अपने पद सगहीत किये है।

इनके काव्य म प्रम और भक्ति के क्षत्र म अनन्यता पर सबस अधिक गौरव दिया गया है। काव्य भावना की दृष्टि स भी भाषा शली रस छद अलकार आदि का परमार्जित स्वरूप इनके काव्य म मिलता है। ऋतु वर्णन के भी कुछ प्रसग अच्छे बन पडे हैं। इनके काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार है

सदा सोच म मन रहे परी जाय जिय याखि।
वह चितवन कछ और है प्रम जु बीधी आखि॥
प्रम गह्यो ज्यो जासु को ताहि न और सुहाइ।
तिनही तन खोजत फिर जग कहै सातगी वाइ॥

— — —

बिना कृपा राधा रानी के क्याव सुगन हित जू की पाव।
जाका नाम सुनत परवस ह्वै स्याम सहित स्यामा उर आवै॥
दंपति रूप रसासव पीवै धर्मी धर्म बिन और न भावै।
नागरीदास श्री व्यास सुवन बल नित्यविहार औरनि दरसावै॥

— — —

प्रेम पपीहा की बलि हौं री।
रटत रहत मेरो सुभग सांवरो इकटक तेरो सौंरी।
मगन भयो तन मन गुन गावै परो है रूप उर जोरी॥
नागरी छिनक परी है कर्मैं तो बिनकरन वहि धौरी।
रतनों श्रवन सुनत आतुर ह्वै नैना भरा मग हौरी॥
नागरीदासि मिलि प्रीतम सो ललितादिक रह मौरी॥

कल्याण पुजारी—

गोस्वामी कल्याण पुजारी वनचंद्रजी के शिष्य थे। इनका जन्म संवत १६०० के लगभग हुआ था। इनकी भक्ति में भी अनन्यता उनकी बड़ी विशेषता है। इनके जीवन और भक्ति से सम्बन्धित अनेक किंवदन्तियां प्रचलित हैं जो इनके महत्व का परिचय देती हैं। इन्होंने भगवत भक्ति में एकनिष्ठता पर बल दिया है क्योंकि इनके विचार से केवल निष्काम मन ही विशुद्ध भक्ति से परिपूर्ण हो सकता है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

माहि सांझ दंति सामु नंद बहू बारंबार
साँवरे में गाढो लल जिनि न निहारे री।
आंखि मूंदि मूंदि कहो कहा नी तेरी रो माई
कहा आय आयो नाम बानिन ते मारे री।
कबहूँ बजावै बेन कबहूँ नचावै नैन
मृदु मुसिकाय पढ़ि मोहनी डारे री।
मनु तौ कल्याण एक छाड़ हरि हाथ पर्यो
होनी हो सु भई गई बात पर पारे री॥

भगवानदास अनन्यअली—

श्री अनन्य अली बाल्यावस्था से ही संसार से विरक्त होकर भगवत चरणों में अनुरक्त रहने लगे थे। स्वप्न में इन्हें राधा जी ने ... नाम के ... थे। बाद में यह वृन्दावन आकर रहने लगे थे। इनके सम्बन्ध में ... के सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि जब इनको राधाजी के ... तब ... इनका नाम भगवानदास से बदल कर अनन्यअली रख दिया था।

अनन्यअली के लिखे हुए ... बताये जाते हैं श्री स्वामी विहार (पदावली) ... मन शिक्षा ... श्री हरिवंशाष्टक

वृंदावन वास चरण प्रताप लीला श्रीराधा सर गान प्रतिबिंब लीला श्री लाडिली जू की नामावली श्री लालजू की नामावली वन विहार रसधारी लीला बंशी विलास लीला परिचर्या विलास लीला सब ऋतु लीला मंगल लीला रहसि वचन विलास लीला सुरतांत विलास लीला मगन विलास लीला रस विलास लीला, स्नान विलास लीला सिंगार विलास लीला राजभोग लीला उत्थापन समय विलास संध्या समय विलास शयन समय विलास वसंत ऋतु लीला ग्रीष्म ऋतु लीला पावस ऋतु लीला शरद ऋतु लीला शिशिर ऋतु लीला हिम ऋतु लीला फूल रचना विलास तिल नाग नाभा विलास चित्र महाशीतल विनोद विलास चक खेल विलास जलनौका विलास लीला जलविहार लीला चरन अष्टक नवल जुगल विलास लीला पान विलास लीला चौपर खेल लीला शतरंज खेल विलास चकनौरा खेल लीला गेंद खेल लीला भडडू खेल विलास लीला आंख मिचौनी खेल (अपूर्ण) वचन विलास हास विलास विरह विलास मगन विलास लीला छवि चंद्रावली लीला सुहाग विलास लज्जा विलास मान विलास दान विनोद लीला रूप विलास सखा विलास छवि लता विलास लीला ललिता लता विलास लीला माधुरी लता विलास लीला रुक्मी लता विलास लीला लावण्य प्रभा विलास लीला रचन लता विलास चन्द्रलता लीला मृदुला विलास लीला सुकुमारिता की सीमा मोहनता की सीमा नवल विलास लीला विमल विलास लीला सौरभ विलास लीला चातुर्य विलास लीला भोरता विलास लीला नव विलास लीला दरस विलास लीला आदि हैं।

इनके काव्य में सिद्धांत निरूपण नित्य विहार रास लीला वृन्दावन महिमा षट ऋतु वर्णन नखशिख-वर्णन आदि के कलात्मक प्रसंग मिलते हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

बदन चंद की माधुरी निरखत नवल किशोर।
पान करत छवि की सुधा तृपित न होत चकोर।।
पग तल कन की माधुरी नवल विमल चमकंत।
तिनमें सुंदर स्याम मुख प्रतिबिम्बित झमकंत।।
परसन को कर तरसही दरसन दृग ललचाइ।
हाल परी भज नन सौं लपट अति तरसाइ।।

रसिकदास—

रसिकदास नाम से अनेक भक्ति कवि वल्लभाचार्य सम्प्रदाय में हुए हैं। इनमें से प्रथम रसिकदास गोस्वामी दामोदरवर के शिष्य थे। द्वितीय रसिक दास हरिलाल जी के शिष्य बताये जाते हैं। ततीय रसिकदास नागरीदास जी के समकालीन थे। चतुर्थ रसिकदास धमदासजी के गुरुभाई थे। पंचम रसिकदास गोस्वामी धीरीधर के

सागर अम पहेली भक्ति प्रा ना ब ती राधा प्र प्रताप वे ली मा पराता बेली राधा रूप नाम उत्पत बली वावर प्रम विलास ली कृष्ण नाम रूप मगन बली इष्ट मिलन उत्कंठा बेली हरिभक्ति मीरा नी ग्रन्थ विहार गवार भक्ति परिचयावली सेवक जस विरदाव ली रसिक परि यावली गुरुपरम्परा नामावली कृष्ण चरणाष्टक यमुना स्तव अष्टक कुसुम्बली अष्टक दन स्तुति सेवक बाणी स्वामिनी चरण प्रतापाष्टक प्रिया नाम अष्टक बारह मासा विहार बेली, कृपा मनोरथ पत्रिका कुंज महात्म पच्चीसी मवरा प्रतापाष्टक सुन्दर महात्म्य करुणा (सिद्धान्त) पद अभिलाष बत्तीसी वनिता प्रम पहेली दुर्बल अष्टक हित कृपा विचार सार बेली नन्द अध्याय स्वामी जी चरण चिह्न प्रतापाष्टक श्रीकृष्ण चरण चिह्न प्रतापाष्टक कुमाराष्टक मगन पारी वहन गौनाचार (नाडिनावान की) कवित्त पच्चीसी हित कल्पतरु भ्रमर गीत पदबंध छदम पाठ्शी जोगी लीला। इनमें से एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

इच्छा कही जि भाग्यफल जिहि कुल परयो विदेस।
हियो भयो अति गाढ़रो उज्जवल भय ज वेस॥
छिन उबत उछरत ज छिन प्राण बिना स नेत।
जा दिन त सीमा तजी वन्दा कानन खेत॥

तन ज भयो अति दूबरो मन दूबरो बिराट।
डगमगानि है नावरी अब नगाइय घाट॥
जरा ग्रसित यह तन भयो लीनो रोग दबाइ।
यह व्रजभूमि भ्रमर सम चलो कौन क पाइ॥

हरिदास रसिक —

स्वामी हरिदास जी ने कृष्ण भक्ति परम्परा म एक पथक सम्प्रदाय का प्रवतन किया जिसे हरिदासी सम्प्रदाय अथवा सखी सम्प्रदाय कहते हैं। इन्होंने राधा कृष्ण की युगल उपासना के क्षेत्र म सखी भाव को प्रधान रखा। इनके जीवन के विषय म अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित है जो इनके महत्त्व का द्योतन कराती है। कहा जाता है कि उच्च कोटि के कवि और भक्त होने के साथ साथ यह एक महान संगीतज्ञ भी थे जिनकी संगीत कला का मान अकबर भी करता था। प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन इन्हीं का शिष्य था। इनके सम्प्रदाय म इनके अतिरिक्त बिटठलविपुल बिहारनीदास सरसदेव नरहरिदेव रसिकदेवी तथा ललितकिशोरी आदि अन्य गुरुओं के नाम भी उल्लिखित किये जाते है। हरिदासजी के लिखे हुए ग्रन्थों म साधारण सिद्धान्त और रास के पद नामक प्रसिद्ध है। इनम से प्रथम म गोस्वामी जी ने अपने सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का निरूपण किया है और द्वितीय म भावपूर्ण पदों को संग्रहीत किया है।

वल्लभाचार्य—

कृष्ण भक्ति की परम्परा में महाप्रभु वल्लभाचार्य का नाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इनके पूर्वज काकरवाड नामक गांव के रहने वाले ब्राह्मण थे। वल्लभाचार्य जी के पिता का नाम लक्ष्मण भट्ट था। इनकी माता इल्लम्मागारू थी। वल्लभाचार्य का जन्म संवत १५३५ में हुआ था। इनकी शिक्षा दीक्षा काशी में हुई। ग्यारह वर्ष की अल्पायु में ही इन्होंने शास्त्र ज्ञान प्राप्त कर लिया था। अपने पिता के देहावसान के पश्चात इन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों की अनेक बार यात्राएं की और शास्त्रार्थ में प्रमुख आचार्यों को पराजित किया। कहा जाता है कि विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय ने एक बड़े शास्त्रार्थ का आयोजन किया था जिसमें आचार्य व्यास तीर्थ और आचार्य विद्यातीर्थ जैसे पण्डित थे। इस शास्त्रार्थ में वल्लभाचार्य जी ने अपने प्रकाण्ड पाण्डित्य का परिचय दिया। इसलिए इन्हें विष्णु सम्प्रदाय का आचार्य घोषित करते हुए राजा कृष्णदेवराय द्वारा कनकाभिषिक्त किया गया। इन्होंने मथुरा काशी और दक्षिण की अनेक यात्राएं की थी। कहा जाता है कि संवत १५४८ में उन्होंने श्रीनाथ जी का मंदिर बनवाया था। उनकी प्रेरणा से संवत १५५६ में पूरनमल खत्री ने श्रीनाथ जी का एक विशाल मन्दिर भी बनवाया था। वल्लभाचार्य जी ने विवाह भी किया था और उनकी पत्नी का नाम महालक्ष्मी था। उनके दो पुत्र गोपीनाथ तथा विट्ठलनाथ थे। वल्लभाचार्य जी ने वल्लभ सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। वैष्णव धर्म में उनकी शाखा पुष्टिसम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुई जिसका मूल दार्शनिक सिद्धान्त 'शुद्धाद्वैतवाद' कहलाता है। वल्लभाचार्यजी के शिष्यों में ८४ का जीवन विवरण चौरासी वैष्णवन की वार्ता में उपलब्ध होता है। उनके प्रमुख ग्रन्थों में तत्वार्थदीपनिबन्ध, पूर्व मीमांसा भाष्य अथवा जैमिनी सूत्र भाष्य, प्रकरणानि, भागवत टीका, अणु भाष्य, सुबोधिनी, षोडश ग्रन्थ (यमुनाष्टक, बालबोध, सिद्धान्त मुक्तावली, पुष्टिप्रवाह मर्यादा भेद, नवरत्न, सिद्धान्त रहस्य, अन्तःकरण प्रबोध, विवेक धैर्याश्रय, कृष्णाश्रय, चतुःश्लोकी, भक्ति वर्धिनी, जलभेद, पंचपद्य, संन्यास निर्णय, निरोध लक्षण, सेवाफल) पत्रावलम्बन, शिक्षाश्लोक, मधुराष्टक, न्यासादेश, प्रेमामृत, पुरुषोत्तम सहस्रनाम, त्रिविध नामावली, उपासना विवरण आदि हैं।

वल्लभाचार्य जी ने अपने सम्प्रदाय में परम ब्रह्म में ही उभय धर्मों की स्थिति स्वीकार की है। उनके मतानुसार ब्रह्म समय समय पर सृष्टि में अपने अंश रूप आत्मा का स्वरूप धारण करता है तथा चित और आनन्द नामक स्वरूपों का आविर्भाव और तिरोभाव भी वह स्वयं ही करता रहता है। वल्लभ सम्प्रदाय में कृष्ण को ही परम ब्रह्म स्वीकार किया गया है जिनकी लीलाएं नित्य हैं। वल्लभाचार्य जी का स्वर्गवास संवत् १५८७ में हुआ था।

गोपीनाथ—

गोपीनाथ जी का जन्म संवत् १५६८ में हुआ था। महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के पश्चात उनके ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ उनके उत्तराधिकारी हुए। गोपीनाथ जी ने अपने

सिद्धान्तों का कुछ समय तक प्रचार किया परन्तु उनके एकमात्र पुत्र पुरुषोत्तम का निधन उन्हीं के जीवन काल में हो गया था। पुरुषोत्तम के अतिरिक्त उनके अन्य सन्तान सत्यभामा तथा लक्ष्मी थीं। इसके पश्चात् संवत् १५९५ में २८ वर्ष की छोटी अवस्था में गोपीनाथ जी का भी देहान्त हो गया।

गोपीनाथ जी ने अपने सम्प्रदाय के धर्म भावना का प्रचार मुख्यतः गुजरात प्रान्त में किया था। गोपीनाथ जी के ग्रन्थ 'साधनदीपिका' के नाम से उल्लिखित किया जाता है। गोपीनाथ जी की मृत्यु आरम्भ में ही जगन्नाथ में हुई थी। सम्भवतः यह अपनी गद्दी पर अधिक समय तक न रह सके और उन्होंने सुदूर प्रान्तों की यात्रा करके पुष्टि सिद्धान्त का प्रचार किया।

विट्ठलनाथ—

श्री विट्ठलनाथ जी का जन्म संवत् १५७२ में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा काशी में हुई थी। इनकी प्रथम पत्नी का नाम रुक्मिणी था। इस विवाह से इनके छः पुत्र हुए थे जिनमें संवत् १५९७ में गिरधर जी, संवत् १५९९ में गोविन्दरायजी, संवत् १६०६ में बालकृष्णजी, संवत् १६०८ में गोकुलनाथ जी, संवत् १६११ में रघुनाथ जी तथा संवत् १६१५ में यदुनाथजी हुए थे। संवत् १६१६ में उनकी पत्नी की मृत्यु हो गया। कहा जाता है कि संवत् १६२४ में रानी दुर्गावती के आग्रह से उनका दूसरा विवाह हुआ। उनकी दूसरी पत्नी का नाम पद्मावती था। इस विवाह से संवत् १६२८ में उनके घनश्याम नामक पुत्र का जन्म हुआ। उनके सातों पुत्रों के लिए आगे चलकर सात पृथक् गद्दियों की स्थापना हुई। गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के लिखे हुए प्रमुख ग्रन्थों में विद्वन्मण्डन, निबन्ध प्रकाश टीका, अणुभाष्य का अन्तिम डेढ़ अध्याय, सुबोधिनी की पूर्ति और टिप्पणी, भक्तहंस, भक्तिहेतु, भक्ति निर्णय, षोडश ग्रन्थ पर टीका, विज्ञप्ति, शृंगार रस मण्डन, निर्णय ग्रन्थ, स्फुट स्तोत्र तथा टीकाएँ आदि हैं। गोस्वामी विट्ठलनाथ जी की भक्ति परम्परा में अनेक भक्त तथा शिष्य हुए जिनमें २५२ प्रमुख थे। इनके सम्बन्ध में विस्तृत विवरण २५२ वैष्णवों की वार्ता में मिलता है। गोस्वामी विट्ठलनाथ का एक महत्त्वपूर्ण कार्य अष्टछाप की स्थापना था। यह आठों कवि तथा भक्त अष्टसखा भी कहे जाते थे। इनमें चार महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य थे और चार गोस्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य थे। वल्लभाचार्यजी के शिष्यों में कुम्भनदास, सूरदास, परमानन्द दास तथा कृष्णदास थे और विट्ठलनाथजी के शिष्यों में गोविन्द स्वामी, नन्ददास, छीत स्वामी तथा चतुर्भुज दास थे। विट्ठलनाथ जी ने अपने सातों पुत्रों के लिए सप्तगृह अथवा सप्तपीठ की स्थापना की। उनका स्वर्गवास संवत् १६४२ में हुआ।

गोकुलनाथ—

गोस्वामी गोकुलनाथ का जन्म संवत् १६०८ में हुआ था। यह गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के चौथे पुत्र थे। इन्होंने वल्लभ सम्प्रदाय के पुष्टि मार्ग का प्रचार

किया। यों गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र गिरधर जी प्रमुख आचार्य हुए थे परन्तु सम्प्रदाय के मत का समर्थन करने वाले ज्ञाता के रूप में गोकुलनाथ जी ही विख्यात थे। वार्ता-साहित्य के प्रवर्तनकर्ता का श्रेय भी इन्हीं को है। इनका स्वर्गवास संवत् १६८७ में हुआ था। इनके अतिरिक्त विट्ठलनाथ जी के दूसरे पुत्र गोविंद राय के वंशजों में कल्याणराय तथा हरिराय ने भी इस सम्प्रदाय के सैद्धान्तिक प्रचार कार्य में योग दिया। हरिरायजी ने रसिकराय, हरिधन तथा हरिदास नाम से भी ग्रंथ रचना की थी। वल्लभ-सम्प्रदाय के सैद्धान्तिक पक्ष की व्याख्या तथा प्रचार की दृष्टि से इन सबों के नाम विशेष रूप से उल्लिखित किये जाते हैं।

कुम्भनदास—

अष्टछाप के आठ कवियों में कुम्भनदास सर्वप्रथम थे जिन्होंने वल्लभाचार्य जी से दीक्षा ग्रहण की थी। इनका जन्म संवत् १५२५ में हुआ था। चौरासी वैष्णवन की वार्ता तथा अष्टसखान की वार्ता में इनके जीवन से सम्बन्धित विवरण उपलब्ध है। कुम्भनदास जी के जीवन काल में अकबर और मानसिंह से उनकी भेंट हुई थी। वह जाति के क्षत्रिय थे। संवत् १५५६ में उन्होंने वल्लभाचार्य जी से दीक्षा ग्रहण की थी। इनके पुत्र चतुर्भुजदास थे जो अष्टछाप में दीक्षित हुए थे। इनके जीवन की सादगी और सरलता के सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। संवत् १६४० में कुम्भनदास की मृत्यु हुई थी। कुम्भनदास के लिखे हुए पद रागकल्पद्रुम तथा रागरत्नाकर आदि ग्रंथों में संगृहीत हैं। इन्होंने सेवा उत्सव कृष्ण जन्म राधा बसंत होरी दान मान, सुरत विरह आदि विषयों से सम्बन्धित पदों की रचना की है। कुम्भनदास शीर्षक से भी प्रकाशित ग्रंथ में इनके पद संगृहीत हैं। कुम्भनदास के काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

आई रितु चहुँ दिसि फूले द्रुम कानन
कोकिला समूह मिलि गावत बसंतहि।
मधुप गुंजरत मिलत सप्त सुर
भयो है हुलास तन मन सब जंतहि॥
मुदित रसिक जन उमगि भरे हैं
नहिं पावत मनमथ सुख अंतहि।
कुम्भनदास स्वामिनी बेगि चलि
यह समएँ मिलि गिरिधर नव कंतहि॥

— — —

रास बिलास रंग भरि नाचत नवलकिसोर नवलकिसोरी।
एकहि वस्त्र रूप सम लहहि गिरधर स्याम राधिका गोरी॥
नव पट पीत अरुन नव भूषन नव किंकिनि धुनि कटि डोरी।
सकल सिंगार अनूप बिराजत सोभा त्रिभुवन थोरी॥

तान मान बधान सप्त सुर विधाता रची है सुन्दर आगी।
कुंभनदास प्रभु गोवर्धन धर मुरली बजि करारी भारी॥

— — —

सखी री जिनि वा सरोवर जाहि।
अपन रस को तजि चकवाका बिहरि चरति मुख चाहि॥
सकुचत कमल अनार पाइ कै अति व्याकुल दुख गाहि।
तेरे सहज आनि यहै गति यह अपराध काहि काहि॥
यह अद्‌भुत सरि रच्यो विधाता सरस रूप अनुगाहि।
कुंभनदास प्रभु गिरधर सागर उमगत उमगत ताहि॥

— — —

सरद सरोवर सुभग अंग में बदन कमल चारु फूल्यो री माई।
ता ऊपर बैठ जुगल खंजन मत्त भये माना करत लराई॥
कचित केस सुदेस सखी री मधुपन की माला जुरि आई।
कुंभनदास प्रभु गिरवरधरन लाजन है सुरतिन सुखदाई॥

— — —

'सूरदास'—

भक्तियुगीन कृष्ण काव्य की परम्परा में सबसे महान व्यक्तित्व सूरदास जी का है। सूरदास जी के जन्म आदि के विषय में अन्तःसाक्ष्य तथा बाह्यसाक्ष्य के आधार पर अनुमान लगाया जाता है। उनका जन्म संवत् १५३५ में हुआ बताया जाता है। चौरासी वैष्णवन की वार्ता के आधार पर उनके जीवन के सम्बन्ध में पर्याप्त विवरण उपलब्ध हो जाता है। भावप्रकाश नाम की टीका तथा वल्लभदिग्विजय नामक ग्रन्थों के आधार पर भी उनके जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाएं ज्ञात होती हैं। कुछ विवरण प्रियादास की भक्तमाल की टीका, भक्तविनोद, भक्तनामावली तथा पदप्रसंग माला आदि से भी ज्ञात होती है। सूरदास जी की बादशाह अकबर से भेंट का उल्लेख भी किया जाता है। इनके जन्म के सम्बन्ध में भावप्रकाश में जो विवरण मिलता है उसके आधार पर यह कहा जाता है कि उनका जन्म दिल्ली के निकटवर्ती सीही नामक ग्राम में हुआ था। यह जाति के सारस्वत ब्राह्मण थे। यह जन्मांध थे। बाल्यावस्था में ही यह घर से अलग एक तालाब के किनारे रहने लगे थे। सगुन बताने तथा संगीत में प्रवीण होने के कारण इनके अनेक भक्त और सेवक बन गये। अठारह वर्ष की अवस्था में यह जीवन से विरक्त होकर मथुरा चले गये और फिर यमुना के किनारे गऊ घाट पर रहने लगे। यहां पर उनकी महाप्रभु वल्लभाचार्य से भेंट हुई थी। वल्लभाचार्य ने उन्हें पुष्टि मार्ग में दीक्षित किया था। वल्लभाचार्य से ही श्रीमद्भागवत विषयक ज्ञान प्राप्त करके सूरदास ने कृष्ण लीला सम्बन्धी पदों की सूरसागर के रूप में रचना की। सूरसागर के अतिरिक्त उनकी कुछ रचनाओं का पद्य रूप में भी उल्लेख किया जाता है

तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई आपुन रहे छपाई।
तब ठाढ़ जे सखा सग ते तिनको निय बोलाई।
बठारे ग्वालन की मतर आपुन फिर फिर देखत।
बड़ी बार भई कोऊ न आई सूर श्याम मन मखत॥

रास लीला का महत्व लौकिक और आध्यात्मिक सदभ म है। श्रीमद्भागवत म भी इसका वणन मिलता है। सूर न इसका जो रूप प्रस्तुत किया है उसम कृष्ण का वशी वादन गोपियो का आगमन कृष्ण गोपी-सवाद रास गोपियो का मद कृष्ण का राधा सहित अन्तर्धान होना गोपियो का विरह राधा से मिलन तथा पुन कृष्ण का प्रकट होना आदि प्रसग है। सूरदास की वशी रास लीला के सदभ म आध्यात्मिक स्तर पर जीवो का आवाहन करती है। उसम कृष्ण का चित्रण परब्रह्म परमश्वर के अथ म किया गया है। रास की भावना और आध्यात्मिकता के सदभ म सूर का यह पद दष्टव्य है

रास रस रीति बरन नहिं आव।
कहा वसी बुद्धि कहाँ वह मन लहौ कहाँ यह चित्त भ्रम भुलाव।
जो कहो कौन मने अगम जो कृपा बिन नहिं या रसहि पाव।
भाव सो भज बिन भाव म ए नही भाव ही माहि भाव यह बसाव।
यहै निज मत्र यह ज्ञान यह ध्यान है दरस दम्पति भजन सार गाऊँ।
इहै माग्यो बार बार प्रभ सूर के नन दोउ रहे अरु निरय नर देह पाऊ॥

सूर का य म राधा का चित्रण विशिष्टता रखता है। राधा के मान म सम्बधित जो प्रसग सूरदास ने चित्रित किय हैं उनस भी उनकी मौलिक कल्पना प्रकट होती है। राधा के मान क विभिन प्रसग पृथक पथक सन्दर्भो म वणित किय गय हैं। राधा कृष्ण का आरम्भिक परिचय सूरदास न मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता स दिया है। राधा के साथ ही गोपियो की भी चर्चा की जा सकती है जिनके विषय म अनेक प्रसग सूरदास न विभिन लीलाओ म प्रस्तुत किये हैं। भ्रमरगीत म गोपियो के प्रम और भक्ति की अन यता का परिचय मिलता है। इस प्रसग म एक पद उदाहरण के लिए यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

सुने है श्याम मधुपुरी जात।
सकुचति कहि न सकत काहू सो गुप्त हृदय की बात।
शकित बचन अनागत काऊ ज गई अवरात।
नीद न पर घटे नहिं रजनी कब उठि देखो प्रात।
नदनदन तो ऐस लाग ज्यो जल पुरइन पात।
सूर श्याम सग ते बिछरत है कब एहै कुशलात॥

सूरदास न सगुण पद्धति को स्वीकारा था क्योकि उनके विचा स वह निगुण की तुलना म अधिक बोधगम्य है

अवगति गति कछ कहत न आव।

ज्यों गूंगे मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर अमित तोष उपजावै।
मन बानी कौं अगम अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप रेख गुन जाति जुगति बिनु निरालंब कित धावै।
सब बिधि अगम बिचारहिं तातें सूर सगुन पद गावै।

कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित प्रसंगों में सूरदास ने अनेक प्रभावशाली रूपक बाँधे हैं जो जीव और ब्रह्म के पृथकत्व से जीव के कलेश को व्यक्त करने वाले हैं। सूर का विचार है कि भगवान की लीला का रहस्य यही है कि वह भक्तों के लिए ही अवतार धारण करते हैं

भक्त हेतु अवतार धरयो।
धर्म कर्म के बस मैं नाहीं योग यज्ञ मन में न करयो।
दीन गुहारि सुनी श्रवणनि भरि गर्व वचन सुनि हृदय जरयो।
भाव अधीन रहौ सबही के और न काहू नेक डरौं।
ब्रह्मा कीट आदि लौं व्यापक सबको सुख दै दुखहि हरौं।
सूर श्याम तब कही प्रगट ही जहाँ भाव तहँ तें न टरौं॥

ब्रह्म के सगुण रूप की उपासना करते हुए सूर ने ईश्वर के प्रति अनन्यता के भाव का समर्थन किया है। भक्त की ओर से यह अनन्यता होने पर उसे भगवान की अनुकम्पा प्राप्त होती है। सूरदास ने अपने विनय और भक्ति के पदों में भगवान की भक्तवत्सलता का वर्णन करते हुए निरंतर भगवत भक्ति की ही कामना की है जो मुक्ति का बाधक कही जा सकती है। सूरदास की सगुण भक्ति मुख्यतः नाम कीर्तन गुरु भक्ति लीला गान, नित्य कर्म भगवान का रूप स्मरण भगवान के प्रति शांति प्रीति प्रेम अनुकम्पा कांता या मधुरा भगवतरति भाव आदि हैं।

शांति भक्ति में सूर ने वैराग्य भावना का प्राधान्य इंगित किया है। यह वैराग्य सांसारिक वस्तुओं के प्रति है। भगवान के प्रति यह भी रागात्मक रति ही है। सूर सागर में दास्य भक्ति के भी अनेक पद मिलते हैं। सख्य भक्ति की उसमें प्रधानता है क्योंकि इसमें गोपसखाओं और कृष्ण का सम्बन्ध है। वात्सल्य और मधुर भक्ति के भी अनेक उदाहरण मिल जाते हैं। सूर ने इस समस्त प्रपंच के माध्यम से कृष्ण को परब्रह्म परमेश्वर के रूप में राधा को उनकी शक्ति या प्रकृति के रूप में गोपियों को जीवात्माओं के रूप में मुरली को योगमाया के रूप में रास को जीव के ब्रह्म में लय होने के रूप में चित्रित किया है। सूरदास ने कृष्ण की जितनी भी लीलाओं का वर्णन किया है उन सब में यही रूप आधारभूत रूप में विद्यमान है। सूर के अनुसार कृष्ण पर ब्रह्म पूर्ण ब्रह्म या पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। वह भक्त के लिए अवतार लेते हैं। सत चित आनन्द गुणों से युक्त होकर वह सुगत अजर और अमर हो रहते हैं। उनका यह भी मत है कि ब्रह्म आनन्द के लिए लीला करता है और उसी से जीवात्माओं की सृष्टि

होती है। वल्लभ सम्प्रदाय में मोक्ष के लिए कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्ति योग तीनों का ही महत्व स्वीकारा गया है। माया जीवों को भ्रमित करती है जिसकी मार्मिक दारुण याचना सूर के इस पद में मिलती है

अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल।
काम क्रोध को पहिरि चोलना कंठ विषय की माल।
महामोह को नपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल।
भरम भय मन भयौ पखावज चलत कुसंगत चाल।
तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि दै ताल।
माया कौ कटि फेंटा बाँध्यौ लोभ तिलक दियौ भाल।
कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहिं काल।
सूरदास की सबै अविद्या दूरि करौ नंदलाल॥

सूरदास के असाधारण महत्व का सबसे बड़ा कारण उनका वात्सल्य वर्णन है। हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में सूरदास का वात्सल्य वर्णन अपूर्व और विशिष्ट है। उनके पूर्ववर्ती और परवर्ती किसी भी कवि ने वात्सल्य भावना का इतना मर्मस्पर्शी और प्रभावशाली चित्रण नहीं किया है। वात्सल्य रस का आलंबन सूरदास ने अपने काव्य में श्रीकृष्ण को परब्रह्म मानकर उनकी लीलाओं के माध्यम से किया है। कृष्ण का बाल रूप सौंदर्य, उनकी शिशु सुलभ क्रीड़ाएँ, उनके तोतले वार्तालाप प्रसंग, उनके सहज कौतूहल से भरे हुए सुख दुख के प्रसंग, उनके धार्मिक संस्कार और संसार की प्रत्येक वस्तु के प्रति उनकी सहज जिज्ञासा आदि का भी वर्णन सूरदास ने विस्तार से किया है। यह वर्णन मूल रूप में श्रीमद्भागवत पर आधारित अवश्य है परन्तु उसकी तुलना में सूरसागर में इसका विस्तार कहीं अधिक है। कहीं पर यह वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक और सरल अभिव्यंजनाओं से परिपूर्ण है और कहीं पर उसमें आलंकारिकता और चमत्कारिकता का समावेश है। जहाँ जहाँ सूरदास ने कृष्ण की अलौकिक शक्ति का परिचय दिया है वहाँ पर भी उनकी लीलाएँ सामान्य बालकों के समान ही चित्रित की हैं। सूरदास द्वारा वर्णित कृष्ण की बाल छवि का एक उदाहरण इस प्रकार है

हरि जू की बाल छबि कहौं बरनि।
सकल सुख की सींव कोटि मनोज सोभा हरनि।
मंजु मेचक मृदुल तनु अनुहरत भूषन भरनि।
मनहु सुभग सिंगार सिसुतरु फरयौ अद्भुत फरनि।
लसत कर प्रतिबिम्ब मनि आंगन घुटरुवनि चरनि।
जलज संपुट सुभग छबि भरि लेति उर जनु धरनि।
पुण्यफल अनुभवति सुतहि बिलोकि कै नंद घरनि।
सूर प्रभु की बसी उर किलकनि ललित लरखरनि।

संक्षेप में भक्तियुगीन कृष्ण काव्य की परम्परा में सूरदास का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने श्रीमद्भागवत के आधार पर सूरसागर की रचना करके उसमें श्रीकृष्ण की

लीला का गान किया है। सूर का विनय भावना तथा भक्ति-भावना के साथ-साथ यह सांगोपांग काव्य रचना की उत्कृष्टता की दृष्टि से भी महत्व रखता है। वर्णनात्मकता का इस काव्य में विशेष रूप से समावेश हुआ है। विविध शारीरिक वर्णन, बाल वर्णन, रूप वर्णन, नगर वर्णन, उत्सव वर्णन आदि के साथ-साथ स्वयं प्रकृति-वर्णन, प्रभात-वर्णन, वर्षा-वर्णन, वसन्त वर्णन, रास वर्णन तथा यमुना-वर्णन आदि के प्रसंग भी समाविष्ट हैं। सूरसागर के विनय और भक्ति के पदों में शान्त रस तथा कृष्ण की बाल-लीला एवं रास लीला के वर्णन में वात्सल्य और शृंगार रसों की प्रधानता है। अन्य रस भी स्थान स्थान पर सन्निविष्ट हुए हैं, परन्तु वे स्वतन्त्र प्रसंगिक और अस्थायी रूप में ही मिलते हैं। आलंकारिकता की दृष्टि से रूपक, उपमा तथा उत्प्रेक्षा का प्रयोग सूरदास ने विशेष रूप से किया है। अन्य अलंकार अप्रधान रूप से प्रयुक्त हुए हैं। भ्रमरगीत आदि के प्रसंग में सूर ने गोपियों से सम्बन्धित उनके पद हैं, आलम्बन मानकर लिखे हैं। मुरली के सम्बन्ध में भी सूर ने बहुत से पद लिखे हैं। इनके माध्यम से सूरदास ने भगवत प्रेम की अनन्यता की अभिव्यक्ति की है। कृष्ण की वंशी योग माया के रूप में वर्णित हुई है। उसकी ध्वनि जीव मात्र के हृदय में पावन प्रेम का स्फुरण करने वाली है। निर्गुण और सगुण से सम्बन्धित पद उद्धव के प्रसंग में मिलते हैं। इस प्रकार से सूरदास ने अपने इष्टदेव श्रीकृष्ण को पूर्ण पुरुषोत्तम मानकर उनके निर्गुण और सगुण दोनों रूप बताये हैं। इस संसार में जो कुछ भी है, चाहे वह जीव रूप में हो चाहे जगत रूप में और चाहे सगुण देवता रूप में वह सब उसी परब्रह्म का अंश है। परब्रह्म अपने रूप से अपनी आदि शक्ति राधा के साथ विहार करते हैं। सूर ने ब्रह्म, प्रकृति और पुरुष का इस प्रकार से अद्वैतता स्वीकार की है। अपने इष्टदेव श्रीकृष्ण के प्रति सूर ने अनन्य भक्ति भाव अभिव्यक्त करते हुए उनके गुणगानों में भी अगाध श्रद्धा व्यक्त की है। सूर के विचार से सभी देवता तथा भक्ति मार्ग कृष्ण प्रेम की प्राप्ति का साधन है। इन सभी प्रसंगों से सम्बन्धित पद सूरसागर में प्रचुर रूप में उपलब्ध होते हैं जिनका उल्लेख ऊपर भी किया जा चुका है।

परमानन्द दास—

श्री परमानन्ददास जी का जन्म संवत् १५५० में और मृत्यु संवत् १६४१ में हुई थी। उनका जन्म-स्थान कन्नौज था। वह एक निर्धन ब्राह्मण कुल में उत्पन्न थे। कहा जाता है कि इनके जन्म के दिन इनके माता पिता को एक धनपात्र धन प्राप्त होने के कारण उन्होंने परमानन्द मनाया था, इसलिए इनका नाम परमानन्द रखा गया। बाद में वह जब धन खत्म हो गया तब यह आजीविका के उद्देश्य से प्रयाग चले गये। इनका प्रारम्भिक जीवन कन्नौज में ही बीता था। बाल्यावस्था से ही भगवद्भक्ति के प्रति इनकी रुचि थी। एक बार स्वप्न में प्रेरणा पाकर यह महाप्रभु वल्लभाचार्य के दर्शन करने अरैल गये और वहीं उन्होंने दीक्षा ली। परमानन्ददास जी की लिखी हुई कृतियों में दान लीला, ध्रुव चरित्र, परमानन्ददास जी का पद, वल्लभ

है। भगवान के प्रति सख्य भाव से दृष्टान्त उनकी बाल क्रीडा गोचारण प्रसंग तथा कृष्ण की राधाजी के साथ आमोद प्रमोद वर्णित किया है। बाल लीला में कुछ पद भी दृष्टान्त दिये हैं जिनमें दृष्टान्त आत्मोत्सर्ग तथा दैन्य भावना की अभिव्यक्ति की है और भगवान से बुद्धि काम क्रोध आदि विकारों का हरण करके अपनी भक्ति का अनुग्रह प्रदान करने की विनती की है। वल्लभाचार्यजी की दृष्टान्त हरि रूप में वन्दना की है। इनके काव्य में कलात्मकता और भावनानुभूति का प्राधान्य मिलता है। कृष्णदास अधिकारी के काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

निकुंज में बेनु मधुर बजावें।
सप्त सुरन में रसिकराय पिय रागिनि राग सुनावें॥
सरद चन्द रजनी स्याम रंजित मनमथ मोह बढ़ावें।
औघर तान मान सपूरन समीन सुर उपजावें॥
वृन्दा विपिन विविध कुसुमावलि मधुप दम्पति उरगावें।
कोकिल मोर चकोर सोर सुक मयन सब्द सुनावें॥
सुन्दर सुभग सुखद जमुना तट रसिकन को जिय भावें।
कृष्णदास गिरधर सुख सागर आय बन्द नाईं पावें॥

— — —

नीकी माहि नाच्यौ श्री गिरधर गावें।
ततथई ततथई ततथई ततथई अरथ राग मिलि मुरली बजावें॥
नाचत नव वृषभान नन्दिनी औघर गति तरंग उपजावें।
नूपुर रनित कुनित मनि कंकन जुवति जूथ रस रासि बढ़ावें॥
सुरति दान मधु मत्त मधुप कुंज एक तान सब के जिय भावें।
गिरधर पिय प्यारी के पद रज कृष्णदास न्यौछावरि पावें॥

— — —

जगन्नाथ मन मोह लियो रे।
घर अंगना मोहे कछु ना भावे लाक लाज सब छांड दियो रे।
नील चक्र पर ध्वजा बिराजे परसत ही आनन्द भयो रे॥
सांवरी सूरत रंग नपटानी नाम दुसासा आड लियो रे।
श्री वलभद्र सहोदरा समहि कृष्णदास बलिहार कियो रे॥

गोविन्द स्वामी—

गोविन्द स्वामी का जन्म संवत १५६२ तथा मृत्यु संवत १६२२ में हुई थी। यह भरतपुर के आनतरो गांव के निवासी थे। जाति के यह सनाढ्य ब्राह्मण थे यद्यपि इनके माता पिता के वंश और परिवार के विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा के विषय में भी कोई विशेष विवरण उपलब्ध नहीं होता है परन्तु काव्य और संगीत शास्त्र का यह उच्च कोटि का ज्ञान रखते थे। संवत १५८२

में यह गोकुल आये और गोस्वामी विट्ठलनाथजी से दीक्षा लेकर सम्प्रदाय में सम्मिलित हो गये। इनकी बहिन कानबाई भी इन्हीं के साथ सम्प्रदाय में सम्मिलित हुई थी। संगीत शास्त्र के यह इतने बड़े अधिकारी थे कि तानसेन भी इनका शिष्य बन गया था। इन्होंने भगवान के प्रति अनन्य भाव से भक्ति की। इनके भाव विमुग्ध पदों पर लोग मुग्ध रहते थे। कहा जाता है कि एक बार अकबर बादशाह भी वेष बदलकर इनका गायन सुनने आये थे।

इनके लिखे हुए स्फुट पद ही उपलब्ध होते हैं। इनके काव्य में जगत की उत्पत्ति जगत तथा ईश्वर के साथ उनके सम्बन्ध आदि के सम्बन्ध में कोई स्वतन्त्र दार्शनिक विचार नहीं मिलते। इन्होंने अपने एक पद में संसार को 'विषम विष सागर' के रूप में वर्णित किया है। इसमें उन्होंने यमुना से काम क्रोध आदि अज्ञान के अंधकार तथा दैहिक दैविक और भौतिक तापों से मुक्ति की प्रार्थना की है। इनके पदों में अविद्या अथवा विद्या माया का भी उस रूप में विवेचन नहीं मिलता जैसा कि इस सम्प्रदाय के अन्य कवियों में। इन्होंने प्रेम भक्ति की महिमा बहुत अधिक बताई है। इनका विश्वास है कि प्रेम भक्ति से ही भगवत् प्राप्ति होती है। प्रेम भक्ति की वह स्थिति अन्तिम है जब भक्त केवल भगवत्-सेवा को ही प्रधान समझ कर उसमें परितोष करने लगता है। गोचारण गोदोहन माखनचोरी तथा पालना आदि के पद यह विशेष रूप से गाया करते थे। इन्होंने कृष्ण की भक्ति दास्य भाव से नहीं की थी। इसी से बाल लीला गोचारण माखनचोरी आदि का जो वर्णन इन्होंने प्रस्तुत किया है वह इनकी सख्य भक्ति भावना का परिचायक है। बाल-लीला के जो पद इन्होंने लिखे हैं वे इनकी उत्कट भाव से भक्ति को नहीं सिद्ध करते। इनके शृङ्गारिक पदों में गोपियों का स्वकीया भाव से ही चित्रण मिलता है। गोविन्द स्वामी के पदों में गुरु के प्रति ईश्वर भाव भी मिलता है। गोविन्द स्वामी के काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

कहा करूँ बैकुण्ठहि जाय।
जहँ नहिं कुञ्ज लता अलि कोकिल मन्द सुगन्ध न वारि बयार॥
नहिं वंशी मुनिमन मोहन वारी धुनि कृष्ण न मुरली अधर लगाय।
धारत हम मोर नहिं बालक वन की बतियाँ कौन सुहाय॥
जहाँ कहाँ ब्रज वृन्दावन बाधिन गोपी नन्द जसोदा माय।
गोविन्द प्रभु गोपाल चरनन को ब्रज रज तजि कहाँ जाय बसाय॥

— — —

आज सखी अति बने गिरिधरन।
निरखि मदन विपरीत मद आनी निदित नख रति चरन॥
कनक दाम उर विराजत हार गिरि हरित चारु अवतंस करन।
शिखर शोभ शिर नागन कंचन सम अंग अंग धरन॥
नवल कुसुम माल हृदय कुवलयित अरु अति छवि पीत ज्योत्स्ना हरहरन।

गोविंद प्रभु चित चोरयो चितै करि ऐसे हाव दिखावी जवतिन मनहरन ॥

— — —

पदम नहिं कोऊ बुलावत भया।
मोहन मुरली जो सबन सुनत ही जहाँ तहाँ ते उठि धया ॥
आवत आवहु सखा निमिटि सब पाई है इतरया।
गोविंद प्रभु नंददाऊ मो रहत जान अर घर जो बस या ॥

नंददास—

नन्ददास का जन्म संवत १५७० तथा मृत्यु संवत १६४० में हुई थी। यह गूकर क्षेत्र के रामपुर गाँव में जन्मे थे। जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनके पिता जीवाराम और चाचा आत्माराम थे। इनके सगे भाई चन्द्रहास थे और चचेरे भाई तुलसीदास। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा नरहरि पंडित द्वारा हुई थी। एक बार यह एक साधु के साथ मथुरा पहुँचे। वहाँ से यह गोकुल आये। गोकुल में विट्ठलनाथ जी से उपदेश से इन्हें शांति मिली और उन्हीं से इन्होंने संवत १६०० में दीक्षा ग्रहण की। नन्ददासजी के ग्रंथों में अनेकार्थ मंजरी अथवा अनेकार्थ नाममाला अथवा अनेकार्थभाषा मान मंजरी अथवा नाममंजरी अथवा नाममाला अथवा नामचिन्तामणिमाला रसमंजरी रूपमंजरी विरह मंजरी श्याम सगाई सुदामा चरित्र रुक्मिणी मंगल भ्रमर गीत रास पंचाध्यायी सिद्धांत पंचाध्यायी तथा दशमस्कंधभाषा आदि है।

नन्ददासजी वल्लभ सम्प्रदाय के अनुसार अक्षर ब्रह्म के समर्थक थे और कृष्ण को ही परब्रह्म मानते थे जो गोकुल अथवा गोलोक में रस रूप में लीला करते रहते है। उन्होंने कृष्ण के अपार रूप गुण और कर्म बताये है। सृष्टि की रचयिता माया रूपी शक्ति भी कृष्ण की अनुगामिनी है जो संसार का सृजन पालन और संहार करती है। कृष्ण ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान और वैराग्य षट गुणों से युक्त होकर समय समय पर अवतार धारण करते है। वह अजन्मा है और अनंत रूप है। उन्होंने कृष्ण को परमपुरुष के रूप में समस्त जड़ चेतन का कारण बताया है। अस्तु प्रस्तुत सारा संसार उन्हीं का रूप है और संसार का विस्तार उन्हीं की लीला का विस्तार है। वह सर्वव्यापी और अंतर्यामी है। नन्ददास ने समस्त जड़ और चेतन सृष्टि के मूल में एक ही शुद्ध तत्व स्वीकार किया है जो परब्रह्म श्रीकृष्ण रूप है। उन्होंने अविद्या माया से प्रभावित संसार को सारहीन बताया है। माया का वर्णन करते हुए उन्होंने उसका एक रूप वह बताया है जो ब्रह्म की आदि शक्ति स्वरूपा है। यह माया सृष्टि का सृजन पालन और संहार करती है। उसका दूसरा रूप वह है जो समस्त संसार को विमोहित किये रहता है। जब अविद्या माया को पृथक कर दिया जाता है तो प्रकृति माया का माध्यम रूपी दर्पण भी हटा दिया जाता है तब ब्रह्म के शुद्ध गुण ही दर्शित होते है। जब संसार की माया के दुख से जीव छूट जाता है तब प्रेम भक्ति से ही परम आनन्द की अनुभूति होती है।

काव्य कला की उत्कृष्टता की दृष्टि से नन्ददास का स्थान अष्टछाप के कवियों में सूरदास के पश्चात सर्वप्रमुख है। उन्होंने अपने 'रसमंजरी' नामक ग्रंथ में नायिका भेद, हाव भाव, हेला, रति तथा स्त्री अंग का वर्णन किया है। यह कृति नन्ददास ने भानु कवि लिखित संस्कृत ग्रंथ 'रसमंजरी' के आधार पर लिखी है। यह रचना उनके काव्य शास्त्रीय ज्ञान और आचार्यत्व का भी परिचय देती है। 'अनेकार्थ मंजरी' में कवि ने दार्शनिक विचारधारा को प्रकट किया है जिसका सम्बन्ध शुद्धाद्वैत से है। इसमें उन्होंने कृष्ण भक्ति के उद्देश्य, कृष्ण का नाम महिमा, भगवत भजन की कामना, मान विकारों के परित्याग आदि का उपदेश दिया है। 'मान मंजरी' और 'नाममाला' में कवि ने राधा के मान का प्रसंग वर्णित किया है। 'दशम स्कंध' में उन्होंने 'श्रीमद्भागवत' के आधार पर विविध विषय वर्णित किये हैं। 'गोवर्धन लीला' में कवि ने इन्द्रपूजा के अवसर पर कृष्ण के चरित्र की एक अलौकिक घटना का वर्णन किया है। 'सुदामाचरित्र' नामक कृति की प्रेरणा भी श्रीमद्भागवत से ली है। यह एक अत्यन्त लोकप्रिय काव्य है। 'विरह मंजरी' में कवि ने एक ब्रज बाला की वियोग दशा का भावात्मक चित्रण किया है। 'रूपमंजरी' एक कथा आख्यान है जिसमें रूपमंजरी के लौकिक प्रेम का परित्याग और कृष्ण के प्रति प्रेम भाव का वर्णन है। इसके आधार पर नन्ददास ने अपने आध्यात्मिक विचारों को भी प्रकट किया है। 'रुक्मिणी मंगल' की कथा भी श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध से ली गयी है जिसमें राजा भीष्मक की रूपवती कन्या रुक्मिणी का हरण और कृष्ण से विवाह वर्णित है। 'रासपंचाध्यायी' में नन्ददास ने अपनी आध्यात्मिक विचारधारा और अलौकिक शृंगार की भावना अभिव्यक्त की है। इसमें उन्होंने आध्यात्मिक दृष्टि से कृष्ण को परब्रह्म और गोपियों को उनकी अंशरूपी आत्मा माना है। 'भ्रमर गीत' में गोपी विरह तथा उद्धव संवाद का वर्णन हुआ है। सगुण और निर्गुण उपासनाओं की विवेचना इसमें विस्तार से हुई है। नन्ददास के अन्य ग्रंथों में 'गुरु महिमा', 'यमुना-स्तुति', 'बाल रूप', 'पालना', 'गोचारण', 'पनघट', 'हिंडोला', [illegible], [illegible], 'राधा कृष्ण रूप-वर्णन' तथा 'उत्सव-वर्णन' आदि के प्रसंग हैं। नन्ददास के काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

राम कृष्ण कहिये उठि भोर।
अवध ईस वे धनुष धरे हैं, ये ब्रज माखन चोर॥
उनके छत्र चवर सिंहासन भरत शत्रुहन लछमन जोर।
इनके लकुट मुकुट पीताम्बर नित गायन सँग नंद किशोर॥
उन सागर में शिला तराई इन राख्यो गिरि नख की कोर।
नन्ददास प्रभु सब तजि भजिये जैसे निरखत चंद चकोर॥

— — —

सुन्दर स्याम पावन सुन।
जो मेरे लाल मनोहर सुन्दर कहि कहि मधुरी बानी॥

माखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई जा।।
छगन मगन तुम करहु कलेऊ मेरे सब गुण ना।।
जननि वचन सुनि तुरत उठे हरि कहत बात ररानी।
नन्ददास की हौ बलिहारी जसुमति मन हरषानी।।

— — —

जो गिरि रुच तो बसो श्री गोवर्धन ग्राम रुच तो बसो नन्द गाम।
नगर रुच तो बसो श्री मधुपुरी सोभा सागर अति अभिराम।।
सरिता रुच तो बसो श्री यमुना तट सकल मनोरथ पूरन काम।
नंददास काननहिं रुच तो बसो भूमि वृन्दावन धाम।।

छीत स्वामी—

छीत स्वामी का जन्म संवत् १५७२ और मृत्यु संवत् १६४२ में हुई थी। इनका जन्म स्थान मथुरा था। उनके माता पिता अथवा परिवार के विषय में कोई उल्लेख नहीं मिलता। वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होने के पूर्व यह गायन विद्या के ज्ञाता थे। गोस्वामी बिट्ठलनाथ जी ने इन्हें दीक्षा दी थी। इनके लिखे हुए स्फुट पद ही उपलब्ध होते हैं जो विभिन्न संग्रहों में संग्रहीत हैं। इनके काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

मेरी अखियन के भूषन गिरिधारी।
बलि बलि जाउ छबीली छबि पर अति आनन्द सुखकारी।।
परम उदार चतुर चिंतामनि दरस परस दुखहारी।
अतुल सुभाव तनक तुलसी दल मानत सेवा भारी।।
छीतस्वामी गिरिधरन बिसद जस गावत है कुलनारी।।
कहा बरन गन गाथ नाथ के श्री विट्ठल हृदय बिहारी।।

— — —

जे बसुदेव किय पूरन तप तेई फल फलित श्री विट्ठल देव।
जे गोपाल हुते गोकुल में सोई अब आनि बसे निज गेह।।
जे वे गोप बधू ही ब्रज में सो अब वेद ऋचा भई यह।
छीतस्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल तेई एई एई तेई कछु न सदेह।।

चतुर्भुजदास—

चतुर्भुजदास का जन्म संवत १५७५ और मृत्यु १६४२ में हुई थी। यह गोवर्धन के निकटवर्ती जमुनावता नामक ग्राम के निवासी थे। यह जाति के क्षत्रिय थे और इनके पिता अष्टछाप के कवि कुम्भनदास थे। इन्होंने अपने पिता से बाल्यावस्था में ही काव्य और संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। भगवत भक्ति की ओर भी इनकी रुचि थी। अष्टछाप में यह भी अपने पिता के साथ सम्मिलित किये गये थे। इनके एक पुत्र का उल्लेख मिलता है जिसका नाम राधादास था। इनकी भक्ति भावना अनन्य थी और उसी में

यह बराबर साथ रहते थे। इनके लिखे पदों के कई संग्रहों का उल्लेख किया जाता है जिनमें चतुर्भुज कीर्तन संग्रह, कीर्तनावली तथा दानलीला हैं। इनके अतिरिक्त इनकी लिखी हुई मधुमालती तथा भक्ति प्रताप नामक दो अन्य कृतियों का भी उल्लेख मिलता है जिनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है। चतुर्भुज दास के काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

माई मन लग्यो जा मन रावे माव।
सखि माखन चाखत लडुवा चा मुख त ते हैं बाकी जितनो आव ।।
पठना पूजत तन स्व आराध्यौ जतन अनन वारि धन्हजन ग्राव ।
उरवत ताहि सखा आ मर नाहर गाविन पा पा बान बिलाव ।।
यह अनिनाथ तन गिन प्रति तव लगी मोहन धनु चराव ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल को निरखि निरखि लोचन सिरात ।।

— — —

प्यारी अंग अंग छबि नित नयन पाव सुजान ।
मुरलि परम्पर तन गति म मुरलि
रा गति राज गिरिधरन गुन निधान ।।
चन्द्र मुरली धनि सो बिन मधुर सुर
राग रंग भान गाव और तान बखान ।
चतुर्भुज प्रभु स्याम स्यामा की सम्पति छबि
मोह उर ना लग धरिव धाम बिनाव ।।

मीराबाई—

भक्तियुगीन कृष्ण काव्य की परम्परा में मीराबाई का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके पदों का प्रचार अखिल भारतीय स्तर पर है। यह राजस्थान की रहने वाली थी। इनके जीवन में सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं तथा इनकी तिथियों के विषय में विभिन्न विद्वानों में पारस्परिक मतभेद है। मीरा का जीवन अत्यन्त दुखमय था। बाल्यावस्था में ही इनकी माता की मृत्यु हो गयी थी। इनके पितामह दूदा ने इनका पालन पोषण किया था। दूदा के स्वर्गवास के पश्चात् इनके पुत्र वीरमदेव ने मीरा का विवाह भोजराज से कर दिया। कुछ ही वर्ष में मीरा बहू विधवा हो गयी। इनके पिता रत्नसिंह भी एक युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए तथा उनके श्वसुर राणा सांगा का भी स्वर्गवास हो गया। इसके पश्चात् भोजराज के छोटे भाई रत्नसिंह की मृत्यु होने पर मेवाड़ का आधिपत्य इनके सौतेले भाई विक्रमादित्य के हाथ में आ गया। मीरा की भक्ति भावना और साधु संतों का सत्संग इन्हें अच्छा नहीं लगता था इससे उन्होंने अनेक बार मीरा को मार डालने का प्रयत्न किया परन्तु भगवान श्री कृष्ण के कारण मीरा का कोई अहित नहीं हुआ। मीरा की गुरु दीक्षा के विषय में भी विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग इनका गुरु संत रैदास को कुछ लोग गोस्वामी विट्ठलनाथ

की, कुछ लोग तुलसीदास की तथा कुछ नाभा जीव गोस्वामी की मानते हैं। मीरा की कृतियाँ म नरसीजी रो माहिरो गीत गोविन्द की टीका राग गोविन्द मीराबाई का मल्हार गर्वा गीत राग विहार तथा फुटकर पद आदि हैं।

मीरा ने माधुर्य और माधव भावन भगवद् भक्ति की। इनके पदों म विरह की आतुरता और माधुर्य भावना का मार्मिक रूप म चित्रण मिलता है। इनकी भाषा म राजस्थानी व्रज और गुजराती के साथ साथ पंजाबी और खड़ी बोली के शब्द भी मिलते हैं। इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना मीरा पदावली के नाम से विख्यात है। मीरा के काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार है

मन रे परसि हरि के चरण ।
सुभग सीतल कवल कोमल त्रिविधि ज्वाला हरण ।
जिण चरण प्रहलाद परसे इन्द्र पदवी धरण ।
जिण चरण ध्रुव अटल कीन्हे राखि अपनी सरण ॥

— — —

माई री म लीयो गोविन्दो मोल ।
कोई कहै छाने कोई कहै चोडे लियो री बजता ढोल ।
कोई कहै महँगो कोई सहगो लियो री तराजू तोल ।
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो लियो री आखी खोल ।
याही कू सब लोग जाणत है लियो री आँखी खोल ।
मीरा कू प्रभु दरसन दीज्यो पूरब जनम को कोल ॥

— — —

हे री म तो दरद दिवाणी होइ दरद न जाण मेरो कोइ ।
घायल की गति घायल जाणै की जिण लाई होइ ।
जौहरि की गति जौहरी जाणै की जिन जौहर होइ ।
सूली ऊपर सेज हमारी सोवणा किस विध होइ ।
गगन मण्डल प सेज पिया की किस विध मिलणा होइ ।
दरद की मारी बन बन डोलूं बेद मिल्या नहिं कोइ ।
मीरा की प्रभु पीर मिटेगी जब बैद सवलिया होइ ॥

रसखान—

भक्तियुगीन कृष्ण काव्य की परम्परा म रसखान का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह जाति के मुसलमान थे। इनका जन्म सवत १६१८ तथा मृत्यु सवत १६८५ म हुई थी। इनके जीवन के विषय म अनेक किवदन्तियों का प्रचार है। दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता म भी इनका जीवन विवरण उपलब्ध है। कहा जाता है कि इन्होंने अपने व्याकुल चित्त की शान्ति के लिए गोकुल जाकर श्रीनाथ जी के दर्शन किये। वहाँ इन्होंने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से दीक्षा ग्रहण की। विट्ठलनाथ जी ने इन्ह

अपने २२५ प्रमुख शिष्यों में स्थान दिया। इनकी दो कृतियां उपलब्ध हैं जिनके शीर्षक प्रेम वाटिका तथा 'सुजान रसखान' हैं। इनकी रचनाओं में जो उल्लेख मिलते हैं उससे यह मुगल बादशाह जहांगीर के समकालीन सिद्ध होते हैं।

इनकी भाषा ब्रज है और इन्होंने अपने काव्य में दोहा, कवित्त और सवैया छंदों का प्रयोग किया है। भावन प्रेम की मार्मिक और अनुभूति से युक्त रूप इनके काव्य में उपलब्ध होता है। इनके काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

मानुष हौं तो वही रसखान, बसौं सग गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बसु मेरो चरौं नित नंद की धेनु मझारन॥
पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरि छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदि कूल कदम्ब की डारन॥

— — —

सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रहे पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियां छछिया भर छाछ पै नाच नचावैं॥

नरोत्तम दास—

नरोत्तमदास जी के जीवन के विषय में जो विवरण उपलब्ध है उसके आधार पर यह सीतापुर के निवासी सिद्ध होते हैं। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि यह संवत १६०२ में जीवित थे। जाति के यह ब्राह्मण थे। इनके ग्रंथों में सुदामा चरित्र ध्रुव चरित्र तथा विचारमाला का उल्लेख किया जाता है। इनमें से 'सुदामाचरित्र' अपनी मार्मिकता और भावाभिव्यंजना के कारण इनकी कीर्ति का मुख्य कारण रहा है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

कै वह टूटी सी छानी हती कहँ कंचन के अब धाम सुहावत।
हाय महादुख पाए सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए॥
देखि सुदामा की दीन दसा करुना करिके करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सों पग धोए॥

महत्व—

भक्तियुगीन कृष्ण-काव्य की परम्परा में उपयुक्त कवियों के अतिरिक्त अन्य भी अनेक कवि हुए जिन्होंने कृष्ण को परब्रह्म मानकर उनकी भक्ति-सम्बन्धी काव्य की रचना की। इनमें सूरदास मदन मोहन श्रीभट्ट अनन्य भगवत रसिक नागरीदास तथा नरहरि दास आदि कवियों के नाम उल्लेखनीय हैं। जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा अत्यन्त समृद्ध है। प्राचीनता की दृष्टि से भी इसका प्रसार लगभग दो हजार वर्ष पूर्व तक माना जाता है। महाभारत में ही श्रीकृष्ण ब्रह्म के रूप में मान लिए गए हैं। उपनिषदों में कृष्ण को विष्णु भी बताया गया है।

अंतगत पखरोनी नामक ग्राम में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत भाषा में हुई थी। उनकी मृत्यु संवत् १६६७ में हुई थी। उनके लिखे ग्रन्थों में रुक्मिणी मंगल छप्पय नीति और कवित्त संग्रह आदि हैं। नाम नहिं है गीता संग्रह राधा कृष्ण गोपी विरह बारहमासा कृष्ण लीला उद्धव रूप वर्णन के साथ साथ नीति और उपदेश विषयक पद भी लिखे हैं। नरहरि की रचनाओं में से कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत की जा रही है

कहै लोह सुन कनक यतन पखवनि गढ़उ बनु।
माहि न, समय सभो न भमरि म-अउ निरजायनु॥
तोहि बिठठ नर धुपत्ति हो जा हृत्यर अरि दावन।
गुन सरूप ज कहै उर है उरप्पहु तिन रावन॥
सम जहि न नेउ जय पतु हुठि कन्नि दुग्ट ताहि दि अरउ।
रहु भरम माथि तेहि धरनि तर सो ही समत्थ कहु रहि डरउ॥

— — —

जाति भन छल नाऊ तन निन्दहि नत्थि अब।
सिसु कुमार जआ बिरय चडत चन्दउ पिताव सब॥
अगिनि परत नहु कनुप रहो वसि बसन मचि सुप।
अरु मटो बचन अरम्सु सुपद सुम्भो सा साहि सुप॥
सुभ सगुन प्रहि नर नपति माहि तनु नाउ असगुन कहत।
जानहि न निपट हारो जितो सो बादि बादु रहि गुन गुनत॥

— — —

लज्जा कहै न मग्गिए भूप कहै तू मगू।
इहु झगरो अति कठिन है नरहरि बन न सगू॥
नरहरि बने न सगू नगु नाहा ऐहि मीतन।
नाज रहै पच च्याइ भूप आतुर अतिइ तन॥
जहा गयो इहु याउ सुनत सो भूपति भ या।
कवन नन अजनीस करो जस रहै नया॥

टोडरमल—

राजा टोडरमल का जन्म संवत १५८ में और मृत्यु संवत १६४६ में हुई थी। यह अकबर बादशाह के प्रसिद्ध वजीरों में से थे। अकबर के दरबार में जाने से पहले इन्होंने शेरशाह के समय में भी महत्वपूर्ण प्रशासकीय कार्य किया था। बंगाल के सूबेदार का पद भी इन्होंने कुछ समय तक सम्भाला था। सरकारी दफ्तरों में इन्होंने फारसी का प्रचलन अनुमोदित किया था। इनके स्फुट पद उपलब्ध होते हैं जिनका विषय नीति विवेचना ही है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

जार का विचार कहा गनिका का लाज कहा
गदहा का पान कहा आंधरे का आरसी।
निगुनी का गुन कहा दान कहा दारिद का
सेवा कहा सूम की अरन्न की डार सी।
मद्पी का सुचि कहा साच कहा लंपट का
नीच को बचन कहा स्यार की पुकार सी।
टोडर सुकवि ऐसे हठी तो न टारे टरै
भाव कहो सूधी बात भाव कहो पारसी॥

बीरबल—

राजा बीरबल का जन्म संवत् १५८५ में हुआ था। यह अकबर के दरबार के प्रसिद्ध नौ रत्नों में थे। इनका वास्तविक नाम ब्रह्मदास, ब्रह्मदत्त अथवा ब्रह्मकवि था। यह जाति के ब्राह्मण थे। इनके जीवन के विषय में अनेक किंवदन्तियों का प्रचार है। इनके दो पुत्रों का भी उल्लेख मिलता है जिनमें से एक का नाम लाला तथा दूसरे का हरम राय था। इनकी एक पुत्री भी थी जो भगवत भक्ति में बड़ी अनुरक्ति रखती थी। बीरबल ने कृष्ण की बाल लीला के साथ साथ नीति विषयक पद भी लिखे हैं। इनकी रचनाएँ स्फुट रूप में ही मिलती हैं। इनके पदों में इनकी छाप ब्रह्म नाम से मिलती है। बीरबल की रचनाओं के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

चतुरानन हू चतुरानन है परि पायो न भेदु न बेदन गायो।
हारि हिए हर लौ पचि के कछु हारि रहे हरि हाथ न आयो॥
ब्रह्म भनै मुनि मौन के मन मारन लौं मन ना मन लायो।
ऐसो बड़ो भाग जसोमति को कलताड़ दै दै करताल नचायो॥

— — —

काहू के आँगन जाऊँ सखी अपने घर बैठिय लाज नहीं री।
मो पति मोहन तें कछु घाटि है काहे को यह उराहनो दे री॥
ब्रह्म भनै कोऊ कैसो कहो कहत री कहा कछु जोर नहीं री।
जो चितए चित आइ परै तो कहा इन नैननि मूँदि रहों री॥

— — —

नंद के नंदन सों विपरीति कै लखना प्रिय रंग सिगार।
काम के तार ते तोरि कपोलनि चूमत स्याम महा सुख पार॥
ब्रह्म सुधाधरि का मुख ओप प्रिया आनन के ढिग या छवि पार।
मनो सरदिंदु अमी निज बिंदु चकोर को चोंच में चारो चगारै॥

तानसेन—

कविवर तानसेन अकबर के दरबार के अत्यन्त प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। इनका

जमला एसी प्रीति नर जैसी नस नराय।
नं नाला नं ऊजना जब तक सिर रखू जाय॥

— — —

मनसा ता गाहक भग नना भग दलान।
धनी बसत यच नहीं वित विध बन जमार॥

रहीम—

कविवर अब्दुर्रहीम खानखाना अकबर के दरबार के प्रसिद्ध नौ रत्नों में से थे। यह तुर्कमान जाति के थे। इनके पिता इतिहास प्रसिद्ध बैरम खाँ खानखाना थे। इनका जन्म संवत १६१३ में हुआ था। बैरम खाँ के स्वर्गवास के पश्चात् अकबर ने इनके पालन पोषण की व्यवस्था की। इनकी शिक्षा दीक्षा भी अकबर के ही संरक्षण में हुई। इनका विवाह अकबर की धाय जीजी महमअगा की कन्या माहबानू से हुआ था। अकबर ने इन्हें मिर्जा खां की उपाधि तथा पांच की मनसबदारी और मीरअर्ज का पद भी प्रदान किया था। खानखाना का खिताब भी अकबर ने इन्हें प्रदान किया था और इसके कुछ समय पश्चात् इन्हें वकील का पद भी दिया था। अकबर की मृत्यु के पश्चात जहांगीर ने भी इन्हें वही सम्मान प्रदान किया। इनका अधिकांश जीवन ऐश्वर्य और वैभव में व्यतीत हुआ था। परन्तु नूरजहां के शासन काल में इन्हें बहुत कठिन दिन देखने पड़े। इन्हें अपमानित भी होना पड़ा। आखिर कठिनाइयों ने भी इन्हें बहुत त्रस्त किया। इनका परिचय तुलसीदास से भी हुआ बताया जाता है। इनके जीवन के सम्बन्ध में जो अन्य किंवदन्तियां उपलब्ध होती हैं वे भी अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालती हैं। रहीम का काव्य अनेक ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। इनमें रहिमन विलास रहिमन विनोद रहीम कवितावली रहीम रहिमन चंद्रिका रहिमन शतक रहीमरत्नावली दोहावली नगरशोभा बरवै नायिका भेद खानखाना कृत बरवै मदनाष्टक खेत कौतुकजातकम शृंगार सोरठा तथा रहीम काव्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। रहीम के काव्य में शृंगारिक भावनाओं और नायिका भेद आदि के साथ साथ नीति तत्वों का जो निरूपण मिलता है वह इनके महत्व का प्रधान कारण है। इनके काव्य के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं

रहिमन कबहु बडन को, नाहि गर्व को लेस।
भार धरे ससार को तऊ कहावत सेस॥

— — —

रहिमन गली है सांकरी दूजो न ठहराहि।
आपु अहै तो हरि नहीं हरि तो आपु न जाहि॥

— — —

रहिमन रिस को छाड़ि कै करौ गरीबी भेस।
मीठो बोलो नै चलो, सबै तुम्हारो देस॥

— — —

तबही लौं जीबो भलो दीबो होय न धीम।
जग में रहिबो कुचित गति उचित न होय रहीम॥

— — —

कमल-दल नैनन की उनमानि।
बिसरत नाहिं सखी मो मन तें मंद मंद मुसकानि।
बसुधा की बस करी मधुरता सुधापगी बतरानि॥
मढ़ी रहै चित उर बिसाल की मुकुतमाल थहरानि।
नृत्य समय पीताम्बर हू की फहर फहर फहरानि॥
अनुदिन श्री वृन्दावन ब्रज तें आवन जावन जानि।
अब रहीम चित तें न टरति है सकल स्याम की बानि॥

कादिर—

इनका जन्म संवत् १६३५ में हुआ था। इनका पूरा नाम कादिरबख्श था। यह हरदोई जिले के अन्तर्गत पिहानी के निवासी थे। इनके गुरु सय्यद इब्राहीम थे। इनका लिखा हुआ कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होता, केवल स्फुट कवित्त ही मिलते हैं। इनके काव्य का मुख्य विषय नीति विचार है जो सामान्य और व्यावहारिक भाषा के कारण प्रचलित हो गये। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है—

गुन को न पूछै कोऊ औगुन की बात पूछै
कहा भयो दई? कलिकाल यों खरानो है।
पोथी औ पुरान ज्ञान ठट्ठन में डारि देत
चुगुल चबाइन को मान ठहरानो है॥
कादिर कहत यासों कछु कहिबे की नाहिं
जगत की रीति देखि चुप मन मानो है।
खोलि देखो हियो सब ओरन सों भाँति भाँति
गुन ना हिरानो गुनगाहक हिरानो है॥

बनारसीदास—

कविवर बनारसीदास का जन्म संवत् १६४३ में हुआ था। इनके पिता का नाम खरगसेन था। यह श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इनके गुरु का नाम भानुचन्द्र था। आगे चलकर यह [illegible] से प्रभावित होकर दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के अनुयायी बन गये। इनके जीवन का चित्र विवरण इन्हीं की रचना अर्धकथानक में उपलब्ध होता है। इनके रचे ग्रन्थों में अर्धकथानक के अतिरिक्त

नवरस नाममाला नाटक समयसार बनारसी विलास ज्ञानबावनी जिन सहस्र नाम सूक्त मुक्तावली कर्म प्रकृति विधान अजितनाथ के छन्द परम छत्तीसी नाम पच्चीसी ध्यान बत्तीसी पदी बन्ध निर्णय पंचाशिका वैसठ शलाका पुरुषों की नामावली मार्गणा विधान साधु वन्दना मोक्ष तिथि तेरह काठिया अध्यात्म गीत पंचपद विधान मोह विवेक युद्ध तथा बनारसी पद्धति आदि का उल्लेख मिलता है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

काया सों विचार प्रीति माया ही में हार जीति
लिए हठ रीति जैसे हारिल की लकरी॥
चंगुल के जोर जैसे गोह गहि रहै भूमि
त्योंही पाय गाड़ै पै न छाड़ै टेक पकरी॥
मोह की मरोर सों मरम को न ठौर पावै
धावै चहु ओर ज्यों बढ़ावै जाल मकरी॥
ऐसी दुरबुद्धि भूलि झूठ के झरोखे झूलि
फूली फिरै ममता जंजीरन सों जकरी॥

रत्नावली—

रत्नावली के सम्बन्ध में जो किंवदन्ती प्रचलित है उसके अनुसार यह गोस्वामी तुलसीदास की धर्मपत्नी थी। यह भारद्वाज गोत्र की थी। इनके विषय में यह कहा जाता है कि इन्होंने तुलसीदास को विरक्ति की भावना दी थी। इनका उल्लेख प्रिया दास लिखित भक्तमाल की टीका तथा तुलसीचरित और गोसाईंचरित आदि ग्रन्थों में मिलता है। कहा जाता है कि इन्होंने कुछ नीतिपरक स्फुट काव्य लिखा था। तुलसी के प्रति कहे गये इनके दो दोहे उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

लाज न लागत आपको दौरे आयहु साथ।
धिक धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौं मैं नाथ॥

— —

अस्थि चर्ममय देह मम तामें जैसी प्रीति।
तैसी जो श्रीराम महं होति न तौ भवभीति॥

महत्व—

भक्ति युग में नीति काव्य की प्रवृत्ति का जो विकास हुआ उसका संक्षिप्त विवरण ऊपर प्रस्तुत किया गया है। यह काव्य प्रवृत्ति स्फुट रूप से पूर्ववर्ती तथा परवर्ती काव्य परम्पराओं में भी उपलब्ध होती है। जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है प्राचीन युग में संस्कृत साहित्य तक और आधुनिक युग में वर्तमान काव्य तक में इसका समावेश विविध काव्य धाराओं के अन्तर्गत मिलता है। भक्ति-युग में जो नीति-काव्य लिखा गया वह अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है। अनेक भक्त कवियों ने जहाँ एक ओर ईश्वर के सगुण और निर्गुण रूपों की उपासना से सम्बन्धित काव्य

की रचना की वहाँ दूसरी ओर बहुत से अन्य भी कवि हुए जिन्होंने तन्मय भाव से विरक्ति सूचक पद लिखे। भक्ति युग के पश्चात रीति काल में जो कवि हुए उन्होंने भी इस काव्य प्रवृत्ति का प्रश्रय लेते हुए स्फुट रूप में नीति-पद्यों की रचना की। इनका उद्देश्य उदात्तपरक था। सामाजिक विकास की स्वस्थ दिशाओं की ओर प्रवृत्त करते हुए मानव का उन्नयन इन नीतिपरक कविताओं का प्रधान लक्ष्य था।



अध्याय ८

भक्ति युगीन लक्षण काव्य की प्रवृत्ति

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्ति युग के अंतर्गत जिन प्रवृत्तियों का परिचय पूर्व अध्यायों में दिया गया है उनके अतिरिक्त लक्षण काव्य की प्रवृत्ति भी स्पष्ट रूप से विकासशील दिखाई देती है। इस युग में अनेक ऐसे कवि हुए जिन्होंने शृंगारिक काव्य की रचना की और लक्षण ग्रंथ लिखे। यह काव्य प्रवृत्ति विशिष्ट रूप में रीति युग में ही प्रशस्त हुई परन्तु इसका आविर्भाव भक्ति युग में ही हो गया और इस युग के अनेक कवियों ने उसे प्रशस्त किया। किसी भी भाषा के साहित्य में सैद्धांतिक रूप में लक्षण ग्रंथों का आरम्भ इस तथ्य का द्योतक होता है कि वह साहित्य कलात्मक उच्चता के धरातल को स्पर्श करने लगा है। संस्कृत साहित्यशास्त्र में विविध काव्य सम्प्रदायों के अंतर्गत भिन्न भिन्न साहित्य सिद्धांतों की रचना की गयी प्रायः उन्हीं के अनुकरण पर भक्ति युग के कुछ आचार्य कवियों ने लक्षण ग्रंथों की रचना की। आगे चलकर इन्हीं नियमों के आधार पर हिंदी रीति साहित्य भी रचा गया। संस्कृत में रस सिद्धांत, अलंकार सिद्धांत, रीति सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत तथा ध्वनि सिद्धांत आदि से सम्बद्ध जो शास्त्र परम्पराएँ थीं उन्हीं के आधार पर हिंदी के कवियों ने भी लक्षण ग्रंथों की रचना की। यहाँ पर संक्षेप में इस प्रवृत्ति के अंतर्गत आने वाले प्रमुख कवियों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

कृपाराम—

भक्ति युगीन लक्षण काव्य की प्रवृत्ति के अंतर्गत सर्वप्रथम कृपाराम का नाम उल्लेखनीय है। इनकी लिखी हुई हिततरंगिणी नामक पुस्तक हिंदी साहित्य के क्षेत्र में लक्षण ग्रंथों की परम्परा में सर्वाधिक प्राचीन मानी जाती है। इसका रचना काल सन १५४१ बताया जाता है। कृपाराम के विषय में अन्य विवरण उपलब्ध नहीं है। अपनी इस कृति में उन्होंने मुख्य रूप से नायिका भेद विषय का निरूपण किया है। इस ग्रंथ में लेखक ने दोहा छंदों का प्रयोग किया है। इसके कुछ दोहे उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

लोचन चपल कटाच्छ सर अनियारे विषपूरि।
मनमृग बधैं मुनिन के जगजन सहत बिसूरि॥

— —

आज सबारे हौं गई नन्दलाल हित ताल।
कुमुद कुमुदिनी के भटू निरखे औरै हाल॥

— —

पति आयो परदेस तें ऋतु बसंत को मानि।
झमकि झमकि निज महल में टहलैं करै सुरानि॥

— —

अंग अंग जोवन छयो नवल बधू के आज।
लघु सिसुता त्यों देखिए आर तरवन माज॥

— —

मांहि रह मोद कर अति उदार त्यों जानि।
मो मनसा पर है सदा करो दान विधि मान॥

— —

छिन रोवै छिन में हँसै छिन में चढ़ै बनराइ।
गहै मौन छिन में बकै छिन मृगजल उपजाइ॥

बलभद्र मिश्र—

बलभद्र मिश्र ओरछा के निवासी सनाढ्य ब्राह्मण वंश में जन्मे थे। इनके पिता का नाम काशीनाथ था। यह प्रसिद्ध आचार्य केशवदास के बड़े भ्राता थे। इनका जन्म सन् १५४३ ई० के लगभग अनुमानित किया जाता है। नखशिख ग्रंथों की परम्परा के अन्तर्गत इनके लिखे हुए दो ग्रंथों का उल्लेख मिलता है जो नखशिख तथा रस विलास है। अनुमान किया जाता है कि इनका रचना काल सन् १५८३ से पूर्व रहा था। सन् १८ ४ में इनके नखशिख की टीका गोपाल कवि ने प्रस्तुत करते हुए इनके लिखे हुए चार अन्य ग्रंथों का उल्लेख किया है जिनके नाम बलभद्री व्याकरण, हनुमन्नाटक और गोवर्द्धन सतसई टीका है। इन ग्रंथों के अतिरिक्त इनकी एक रचना दूषणविचार नामक भी उल्लिखित की जाती है। बलभद्र मिश्र ने मुख्य रूप से नखशिख वर्णन ही किया है। इन्होंने रस विवेचन भी शृंगार रस को विशेष रूप से प्रस्तुत करते हुए किया है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

मरकत के सूत कैधौं पन्नग के पूत, अति
राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं।
मखतूल गुनग्राम सोभित सरस स्याम
काम मृग कानन कै कुहू के कुमार हैं॥

गोप की विरा है अनजराज तीर पर
उपमा अनेक पाइ नवल सिगार है।
गोरे गरारे मोती माथ मों गुरथ नाग
तन बलभद्र ब्रजबाला के बार है॥

मोहनलाल मिश्र—

मोहनलाल मिश्र के विषय में कोई प्रामाणिक जीवन विवरण उपलब्ध नहीं होता। अनुमान किया जाता है कि यह चरखारी के निवासी थे। इनके लिखे हुए एक मात्र ग्रन्थ शृंगारसागर का उल्लेख किया जाता है जिसका रचना काल सं० १५८८ है। इस ग्रन्थ में नवरस और नायिका भेद विषयों का निरूपण किया है। यह कृति अनुपलब्ध है।

केशवदास—

आचार्य केशवदास का जन्म सन् १५६१ में तथा मृत्यु सन् १६२१ में हुई थी। हिन्दी के विद्वानों में इनकी तिथियों के विषय में पर्याप्त मतभेद है। केशवदास ने अपने एक ग्रन्थ कविप्रिया में अपने वंश का परिचय दिया है। उसके अनुसार इनके पूर्वजों में कुम्भवार, देवानन्द, जयन्त, दिनकर, गया, गदाधर, जयानन्द, तिविक्रम, भाव शर्मा, सुरोत्तम, या शिरोमणि, हरिनाथ, कृष्णदत्त, काशीनाथ तथा बलभद्र थे। इनके वंशजों में कल्याण का नाम भी इसमें लिया गया है। इनके वंश के मूल पुरुष का नाम वेदव्यास बताया गया है। यह भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण थे। ओरछा के महाराज इन्द्रजीत सिंह के आश्रय में यह रहते थे। वीरसिंह देव भी इनके आश्रयदाता बताये जाते हैं। इनकी रचनाओं में रसिकप्रिया, कविप्रिया, रामचन्द्रिका, वीरचरित अथवा वीरसिंह देव चरित, विज्ञानगीता, जहांगीर जस चन्द्रिका, रतनबावनी, छन्दमाला, राम अलंकृत मंजरी आदि हैं। इनमें से छन्दमाला की रचना काल अज्ञात है तथा राम अलंकृत मंजरी अप्राप्य है। कुछ अन्य रचनाओं का भी उल्लेख इनके नाम के संदर्भ में किया जाता है जिनमें जयमुनि की कथा, कान्ह चरित, हनुमान जन्म लीला, रसललित और अमीघूट आदि हैं। विद्वानों का अनुमान है यह रचनाएं केशवदास की प्रामाणिक कृतियाँ नहीं हैं।

केशवदास जी ने अपने लक्षण ग्रन्थों में नायिका भेद, रस निरूपण, वर्ण वस्तु विवेचन, मात्रा वृत्त विवेचन, अलंकार विवेचन आदि विषयों का समावेश किया है। केशवदास का विचार था कि काव्य के लिए कोमल शब्दावली, सुन्दर छन्द योजना, आलंकारिकता तथा मोहकता आवश्यक है। वह सरस काव्य रचना के लिए चिंतन, मनन और शब्द शोधन आवश्यक समझते थे। काव्य दोषों से मुक्त रचना को वह श्रेयस्कर समझते थे। काव्य में अनेक तत्वों का समावेश आवश्यक मानते हुए भी वह अलंकार योजना को सर्वाधिक महत्व देते थे। उनका यह मत है कि यदि काव्य में ध्वनि, गुण, शब्द योजना, सरसता और निर्दोष छन्द आदि का प्रयोग हुआ है तब भी

अलंकार विहीन होने पर उसकी शोभा कम हो जाती है। उन्होंने कविप्रिया में लिखा भी है—

जदपि सुजाति सुलच्छनी सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न बिराजई कविता बनिता मित्त॥

केशवदास ने ब्रज भाषा में काव्य रचना की थी। संस्कृत के प्रकांड पंडित होने के कारण उनकी भाषा में संस्कृत शब्दों की अधिकता भी मिलती है। समकालीन परिचय और प्रभाव के कारण अरबी फारसी आदि के शब्द भी उनकी भाषा में जहाँ तहाँ मिलते हैं। संस्कृत साहित्य का परिचय होने से भी उनकी भाषा समर्थ है। उन्होंने श्लेष अलंकार के अन्तर्गत ऐसे अनेक छन्द लिखे हैं जिनके दो से अधिक अर्थ निकलते हैं और यहाँ वहाँ तो पाँच अर्थ तक निकलते हैं। केशव की भाषा दुरूहता तथा काठिन्य से युक्त है। परन्तु उसमें सरसता और कलात्मकता भी समान रूप से विद्यमान है। भाषा के अन्य गुण भी उसमें उत्कृष्ट रूप से विद्यमान मिलते हैं। इस दृष्टि से उनका निम्नलिखित पद द्रष्टव्य है जिसमें नाकनाथ अथवा ब्रह्मा, त्रिलोकनाथ अथवा कृष्ण, नाग-नाथ अथवा शिव, रघुनाथ तथा अमर सिंह की प्राप्ति मिलती है—

पावक परम हंस जात गन सुनि सुख
पावन पुरान भाव विबुध बखानिये।
सुखद सरनि धरे अमर सनेही बहु
विदित पद कथा केशवदास जानिये।
राज द्विजराज पद भूषन विमल कमला
धन प्रधान परिवार प्रिय मानिये।
एकु नाकनाथ कै त्रिलोकनाथ नाथ
नाथ कथा रघुनाथ कै अमरसिंह जानिये॥

छन्द-योजना की दृष्टि से भी केशवदास का काव्य विशिष्टता रखता है। उनके काव्य में जितने प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है वैसा भक्ति अथवा रीति युग के किसी भी कवि के लिए सम्भव नहीं हो सका है। यद्यपि अनेक स्थलों पर केशवदास की छन्द योजना केवल प्रभावात्मकता की सृष्टि के लिए हुई है परन्तु फिर भी अनेक प्रसंगों के अनुसार औचित्यपूर्ण छन्द प्रयोग में केशव के काव्य सामर्थ्य का भी परिचय मिलता है। विविध रसों के अनुसार केशव ने छन्द प्रयोग करके रस व्यंजना के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। वातावरण अथवा प्रसंग के अनुकूल भी छन्द प्रयोग केशव की एक विशेषता है। यहाँ भक्ति का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है जो हरिलीला छन्द में लिखा गया है और जिसमें कोमलता तथा माधुर्य के गुण विद्यमान हैं। भगवान राम को प्रणाम करने के लिए नादात्मक ध्वनियों से युक्त यह छन्द प्रसंग के सर्वथा अनुकूल प्रयुक्त किया गया है—

आदिर त्रिलोक देव देव देव राम देव
भार मना मुनि देव भक्त प्रेम पाय।

ब्रह्मा मन म त्र वण विष्णु हृ य गार पर
र हृ य रमर मित्र जग गी गार ।
गगर उनि रवि अन त मुरारि ।।िरा
छ छ छवि छा हा ौर ौर र ।
मानहु पर न ब्रह्म प ि प्रत
ठौर ठौर म जिमा जा भूप मार ।।

ऊपर यह सरत किया गया है कि रावगाग का य म अरार याजना का महत्त्व सर्वोपरि मानत थ यद्यपि का य म अ य सभी गुण भी पर आधारि होते हैं। इस कथन का आशय यह नहीं है कि शवदास का य क अ य तत्वों का महत्त्व नहीं स्वीकार करत थ। उनक विपरीत श वदास का यह विचार था कि अ य तत्वों म अरार तत्व का यायाजन और समन्वय ही उत्कृष्ट का य की रचना म सहायक हो सकता है। केशवदास ने शब्द अलकार का प्रयोग सबसे अधिक किया है जो चमत्कारिकता उत्पन्न करने म सर्वाधिक सहायक होता है। यमक परिसख्या विरोधाभास आदि अलकारों का प्रयोग भी उन्होंने बहुलता से किया है। उपमा रूपक उत्प्रेक्षा सन्देह विभावना तथा अपह्नुति आदि अर्थालकार भी उनके का य म अधिकता से प्रयुक्त हुए हैं। नीचे केशवदास द्वारा प्रयुक्त यमक अलकार का एक उदाहरण रसिकप्रिया से उद्धत किया जा रहा है

हरित हरित हार हरत हियो हरत
हारी हो हरिननी हरि न कहू नहो।
बन माली ब्रज पर बरसत बनमाली
बनमाली दूरि दुख केसव कस सहो।
हृदय कमल नन देखि क कमल नन
होहुगी कमननि और हो कहा कहो।
आप घन घनस्याम घन ही स होत घन
सावन क द्योस घनस्याम बिन क्यो रहो।।

केशवदास ने अपने काव्य म शृगार तथा वीर रसो को अधिक प्रश्रय दिया है। रामचद्रिका रसिकप्रिया कविप्रिया आदि ग्रन्थों म जहा उन्होंने शृगार के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किय है वहा दूसरी ओर वीरसिंह देव चरित रतनबावनी तथा रामचन्द्रिका म वीर रस के विशिष्ट उदाहरण भी उपलब्ध होते हैं। केशव ने शृगार रस का जो वणन किया है उसका मूल आधार कृष्ण और गोपियों को आलम्बन मान कर नायक नायिका किया गया प्रेम वर्णन है। सयोग और वियोग शृगार क सभी पक्षों का चित्रण केशवदास ने किया है। रसिकप्रिया से इसका एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सो० दिखाय दिखाय सखी इक बारक कानन आन बसाय।
जान मा केशव कानन ते बिन हूव हरि नैनन माझ सिधाय।

लाज के साज धरइ रहे तब नैनन लै मन ही सौं मिलाय।
कैसी करौं अब क्यों निकसै री हरइ हरे हिय में हरि आय॥

वीर रस का चित्रण केशवदास के 'वीरसिंह देव चरित' 'रतनबावनी' तथा 'रामचंद्रिका' नामक ग्रंथों में मिलता है। वीर के साथ-साथ रौद्र और भयानक रसों के उदाहरण भी केशव के काव्य में मिलते हैं। शांत रस की अभिव्यंजना भी किन्हीं स्थलों पर मिलती है। केशव का वीर रस-वर्णन रस परिपाक की दृष्टि से सफल कहा जा सकता है। नीचे 'वीरसिंह देव चरित' से भयानक रस का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है

ह्वै गयो बिहाल बल मुगल पठाननि को
भभरि भगोरियाउ सम्भ्रम हिय छयो।
सूख मुख सबनि के सरयोइ खिसायो खरो
गाढ़ो गह्यो गाढ़ पाउ एको न इत ग्यो।
वीरसिंह नाती जीति पति रामसिंह को
तुसार कैसो मारयो मारे केसोदास ह्वै गयो।
हाथीमय हयमय हसम हथियारमय
दाहमय गाथिमय भूतल सब भयो॥

भक्तियुगीन लक्षण काव्य की इस परम्परा में केशवदास का योगदान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। वह हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख आचार्य के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने अपने 'रसिकप्रिया' नामक ग्रंथ में नायिका भेद तथा रस निरूपण प्रस्तुत किया है। प्रियजू तथा प्रियजू की प्रशस्ति करते हुए इसमें कवि ने मौलिक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। 'कविप्रिया' में केशवदास ने काव्य शिक्षा दी है। 'रामचंद्रिका' में मुख्यतः राम-कथा का वर्णन है। 'छन्दमाला' में अनेक उन्होंने वर्णवृत्त और मात्रा-वृत्तों का विवेचन किया है। 'वीरसिंह देव चरित' में उन्होंने मुख्यतः ओरछा नरेश वीरदेव सिंह देव का जीवन चरित्र प्रस्तुत किया है। 'विज्ञान गीता' में कवि ने संस्कृत के प्रमुख नाटक के आधार पर विषय प्रस्तुत किया है। 'जहाँगीर जस चन्द्रिका' में मुगल बादशाह जहाँगीर के ऐश्वर्य और वैभव का वर्णन है। 'रतनबावनी' वीर काव्य है जिसमें रतनसेन के शौर्य का वर्णन है। केशवदास ने 'रसिकप्रिया', 'कविप्रिया' और 'छन्दमाला' नामक ग्रंथों में ही मुख्यतः काव्यशास्त्रीय विषयों का विवेचन किया है। इन ग्रंथों का मूल आधार पूर्ववर्ती संस्कृत-साहित्य रहा है। केशवदास के ग्रन्थ ब्रज भाषा में लिखे गए हैं। उन्होंने यथार्थ रूप में हिन्दी-लक्षण काव्य की परम्परा का प्रचार किया है जिसके कारण उनका महत्त्व इस परम्परा के क्षेत्र में अत्यधिक है। उनके काव्य के कुछ अंश उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

कामद अमलता की रणभूमि कधौ यह
नाभिरंड आपन के माथा के मुण्ड को।

बाजत नगारे घन ताल दत नदी नार
झींगुरन झांझ भरी भूगन बजाई है।
कोकिल अलाप चारी नीलग्रीव नृत्यकारी
पौन बीन धारी चाटी चातक लगाई है ॥
मनिमाल जगुनू मुबारक तिमिर थार
चौमुख चिराग चारु चपला जराई है।
बालम बिदेस नए दुख को जनम भयो
पावस हमारे लायो बिरह बधाई है ॥

सुन्दर—

कवि सुन्दर ग्वालियर के निवासी थे। वह जाति के ब्राह्मण थे। उनके जीवन आदि के विषय में प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है। यह शाहजहाँ के समकालीन बताये जाते हैं जिन्होंने उन्हें अपने दरबार में स्थान देकर महाकविराय की उपाधि प्रदान की थी। इनका लिखा हुआ एक प्रसिद्ध ग्रन्थ सुन्दरशृंगार सोपान में उपलब्ध है इस ग्रन्थ में इन्होंने शृंगार रस नायिका भेद तथा नखशिख आदि विषयों का निरूपण किया है। यह ग्रन्थ सन १६३१ में लिखा गया था। सुन्दरशृंगार के अतिरिक्त सुन्दर कवि के लिखे हुए दो अन्य ग्रन्थों का उल्लेख भी मिलता है जिनके नाम बारहमासी तथा ध्रुवलीला है। इनके साथ ही साथ सिंहासन बत्तीसी नामक एक और रचना उल्लिखित की जाती है। कवि सुन्दर की भाषा ब्रज थी जिसका प्रौढ़ रूप इनकी कृति में मिलता है। उन्होंने दोहा कवित्त छन्द तथा सवैया छन्दों का प्रयोग अपने काव्य में किया है। इनके काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

काहे गए बसन पलटि आए बसन सु
मेरो कछु बस न रसन उर लाग हो।
भौहैं तिरछौहैं कवि सुन्दर सुजान सोहैं
कछू अलसौहैं गौहैं जाके रस पागे हौं ॥
परसों मैं पाय हुते परसों मैं पाय गहि
परसों वे पाय निसि जाके अनुराग हो।
कौन बनिता के हौ जू कौन कौन बनिता के हौ सु
कौन बनिता के बनि ताके संग जाग हो ?

— — —

प्रीतम गौनु किधौं जिय गौनु कि
भौनु कि भारु भयानक भारौ।
पावस पावक फूल कि सूल
पुरंदरचाप कि सुंदर आरौ।
सारी बयारि किधौं तरवारि है
बारिद बारि कि बान बिषारौ।

चातक बार कि चाट नुभ चित
इन्दवू कि चकोर की चारा ॥

छीहल—

भक्तियुगीन लौकिक काव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत कविवर छीहल का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। इनकी लिखी एकमात्र कृति 'पंचसहेली' शीर्षक से उपलब्ध होती है। इस कृति का रचना काल संवत् १५७५ है जैसा कि इस कृति शीर्षक से ही स्पष्ट है इस ग्रंथ में कविवर छीहल ने पाँच सखियों का संयोग और वियोग भावनाओं का निरूपण प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ की भाषा राजस्थानी है। 'पंचसहेली' के अतिरिक्त कविवर छीहल लिखी हुई एक अन्य कृति भी बतायी जाती है जिसका शीर्षक 'बावनी' है। यह रचना अनुपलब्ध है।

सेनापति—

कविवर सेनापति की जन्म सम्बन्धी तिथियाँ अज्ञात हैं। इनकी प्रसिद्ध कृति 'कवित्त रत्नाकर' शीर्षक से उपलब्ध है जिसका रचना-काल संवत् १७०६ है। इनके पितामह परशुराम दीक्षित थे। इनके पिता का नाम गंगाधर था। प्राप्त विवरण के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि यह जिला बुलन्दशहर के अन्तर्गत अनूपशहर नामक स्थान के निवासी थे।

सेनापति ने अपने 'कवित्त रत्नाकर' नामक ग्रंथ में सर्वप्रथम मंगलाचरण प्रस्तुत किया है। इसमें कवि ने राम चरित्र का वर्णन विस्तार से किया है। इसमें कुछ छंद कृष्ण तथा शिव आदि पर भी लिखे गये हैं। इनके काव्य में भक्ति और रीति-तत्व का समन्वय है। इसीलिए इसमें जहाँ एक ओर भक्ति आध्यात्म तथा वैराग्य सम्बन्धी पद उपलब्ध होते हैं वहाँ दूसरी ओर शृंगारिक काव्य के भी सुन्दर उदाहरण प्राप्त होते हैं। मुख्य रूप से उनका काव्य आलंकारिकता के प्रति इनकी अभिरुचि का द्योतक है। 'कवित्त रत्नाकर' वस्तुतः स्फुट छंदों का संग्रह है। इसमें राम चरित्र से सम्बन्धित जो कथायें हैं उनमें सीता स्वयंवर परशुराम संवाद राम रावण युद्ध आदि का वर्णन है। कवि ने राम के प्रति भक्ति भावना को श्रद्धा के साथ व्यक्त किया है। इस ग्रंथ की दूसरी और तीसरी तरंगों में कवि ने शृंगार वर्णन और ऋतु-वर्णन प्रस्तुत किया है। नायक-नायिका भेद के अन्तर्गत स्वकीया मध्या गर्विता मत्ता मुग्धा आदि नायिकाओं का निरूपण है। संयोग और वियोग के चित्रण में आलंकारिकता प्रधान रूप से मिलती है। प्रकृति सौन्दर्य विषयक चित्रण भी इसमें विद्यमान है। सेनापति की भाषा ब्रज थी और उसमें संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग हुआ है। सेनापति ने मुक्तक छंद अनुप्रास उपमा उत्प्रेक्षा यमक श्लेष मुद्रा उदाहरण प्रतीप सन्देह विभावना परिकर व्यतिरेक तथा अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। भाव चित्रण के अन्तर्गत कवि ने रति उत्साह क्रोध भय तथा निर्वेद आदि का चित्रण किया है। सर्वविध वर्णन भी उनके काव्य में चामत्कारिक रूप से वर्णित है। छ । में सेनापति ने

कवित्त छप्पय सवैयों तथा दोहे का प्रयोग किया है। सेनापति के काव्य से कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं

बिरह हुतासन बरत उर तार रहे
बान मही पर परी भूषन गहति है।
सवती कुसुम हू ते कोमल मदन अंग
मून सेज रत काम बनि री बरति है।
प्रानपति हेत गह अंग न सुधार जाने
धरी हैं बरम तन मन न सरसति है।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जु
भामिनि की सरि का बियोगिनी लहनि है॥

— —

कौन बिरमाए चित छाए अजहू न आए
कब सुधि पाऊ प्यारे मदन गुपाल की।
नोचन जुगल मेरे ता दिन सफल ह्वै है
जा दिन बदन छबि देखौ नदलाल की।
सेनापति जीवन अधार गिरिधर बिन
और कौन हर बलि बिथा मो बिहाल की।
इतनी कहत आसू बहत फरकि उठी
लहर लहर दृग बाई ब्रज बाल की॥

— —

अब आयो माह प्यारे लागत है नाह रवि
करत न दाह जसो अब रेखियत है।
जानिय न जात बात कहत बितात दिन
छिन सो न तात तनको बिरेखियत है।
कलप सी राति सो तो सोए न सिराति क्योहू
सोइ सोइ जाग प न प्रीत पेखियत है।
सेनापति मेरे जान दिन हू त राति भई
दिन मेरे जान सपने म देखियत है॥

— —

परत तुसार भयो मार पतझार रही
पीरी सब डार सो बियोग सरसति है।
बोलत न पिक सोइ मौन ह्वै रही है आस
पास निरजास नैन नीर बरसति है।

सेनापति फैली बिन मूल री सहनी माह
मास न अकली बन वली विलसति है।
बिरह तैं छीन तन भूषन विहीन गीन
मानत बसत वत काज तरसति है॥

महत्व—

इस प्रकार से भक्ति युगीन लक्षण काव्य की प्रवत्ति के विकास में योग देकर उपयुक्त कवियों ने हिन्दी में शृगारिक काव्य की परम्परा का प्रवतन किया। जसा कि ऊपर सकेत किया जा चुका है यह काव्य प्रवत्ति इस युग में आरम्भ होकर विशेष रूप से रीति युग में प्रशस्त हुई। इस युग में इस प्रवत्ति के विकास में योग देने वाले जिन कवियों का सक्षिप्त परिचयात्मक विवरण ऊपर प्रस्तुत किया गया है उनके अतिरिक्त भी अन्य अनेक कवियों ने इसके विकास में योगदान किया। छीहल हाल राम आलम आदि कवियों ने भी अपने काव्य सृजन में इस प्रवत्ति के विकास में योग दिया। परवर्ती युग में जो रीति शास्त्र लिखा गया सैद्धान्तिक दृष्टि से उसका आधार संस्कृत साहित्य शास्त्र रहा परन्तु प्रेरणा और परम्परा की दृष्टि से इसी काव्य प्रवत्ति ने उसके विकास की सम्भावनाएं प्रस्तुत की।

—)०(—

अध्याय : ९

रीति युगीन शृंगार काव्य की प्रवृत्ति

हिन्दी काव्य में स्वरूपगत वैशिष्ट्य की दृष्टि से शृंगार काव्य की परम्परा का विकास रीति काल में हुआ था जिसका प्रसार संवत १७०० से लेकर लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक हुआ है। यदि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से शृंगार भावना के विकास पर विचार किया जाय तो यह ज्ञात होगा कि स्फुट रूप में इसका समावेश पूर्ववर्ती साहित्य में भी हुआ था। भारतीय साहित्य में शृंगार रस का शास्त्रीय निरूपण संस्कृत में भरत मुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' नामक ग्रंथ में, धनंजय ने 'दशरूपक' नामक ग्रंथ में, भोज ने 'शृंगार प्रकाश' नामक ग्रंथ में, विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' नामक ग्रंथ में तथा जगन्नाथ ने 'रसगंगाधर' नामक ग्रंथ में प्रस्तुत किया है। शृंगार वर्णन के विभिन्न रूप प्राचीन भारतीय साहित्य में भी उपलब्ध होते हैं। वैदिक साहित्य के अंतर्गत ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में इसका प्रसंग उपलब्ध होता है। वाल्मीकि की रामायण में तथा व्यास के महाभारत में भी शृंगार निरूपण मिलता है। संस्कृत साहित्य में 'मालविकाग्निमित्र', 'मालती माधव', 'दशकुमार चरित', 'कादम्बरी' आदि ग्रंथों में भी शृंगार भावना के विविध रूप चित्रित किए गए हैं। सिद्ध साहित्य व जैन साहित्य में भी शृंगार भावनाओं का निरूपण है। श्रीमद्भागवत में भी राधा कृष्ण को आधार बनाकर शृंगार तत्व का समावेश किया गया है। हिन्दी साहित्य में वीरगाथा काल, भक्ति काल तथा रीति काल में शृंगार भावना का विकास हुआ। विद्यापति और जयदेव ने अपने काव्य में शृंगार को ही मुख्य आधार बनाया। प्रेमाख्यानात्मक काव्य में भी शृंगार तत्वों का समावेश है। कृष्ण काव्य के अंतर्गत भी शृंगार भावना का विकास हुआ। संत काव्य परम्परा में ब्रह्म और जीव को आधार बनाकर लौकिक आध्यात्मिक स्तर पर विप्रलंभ शृंगार का चित्रण किया गया। राम काव्य परम्परा में भी शृंगार के संयोग और वियोग पक्ष विवेचित हुए। उपर्युक्त पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीति युगीन शृंगार काव्य की परम्परा का आविर्भाव हुआ। यह समय ऐतिहासिक दृष्टि से सांस्कृतिक समृद्धि का युग था। इसलिए अनुकूल परिस्थितियों में इसका सम्यक रूप में विकास हुआ। वीरगाथा काल तथा भक्ति काल में हिन्दी कविता का जो स्वरूप विकसित हुआ था उसकी कलात्मक उच्चता का धरातल असंदिग्ध था। इसलिए रीति युग में काव्य

समृद्धि के क्षेत्र में प्रयत्न किये गये। नीचे इस प्रवृत्ति के विकास में योग देने वाले प्रमुख कवियों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

चिंतामणि—

रीति युगीन शृंगार-काव्य की परम्परा के अंतर्गत आचार्य चिंतामणि त्रिपाठी का नाम उल्लेखनीय है। इनका जन्म सन् १६०८ में हुआ था। इनके तीन अन्य भाइयों में भूषण तथा मतिराम प्रसिद्ध कवि थे, जटाशंकर काव्य रचना नहीं करते थे। इनका जन्म-स्थान कानपुर जिले के अन्तर्गत तिकुवापुर नामक स्थान बताया जाता है। इनके पिता रत्नाकर त्रिपाठी थे। यह शाहजहाँ, रुद्रसिंह सोलंकी, जैनदी अहमद, मकरन्दशाह आदि के आश्रय में रहे थे। इनके लिखे हुए प्रामाणिक ग्रन्थों में 'काव्य विवेक', 'कविकुलकल्पतरु', 'काव्य प्रकाश', 'रामायण', 'छन्दविचारपिंगल' तथा 'रसमंजरी' आदि हैं। इनके अतिरिक्त इनके तीन अन्य ग्रंथ भी उल्लिखित किये जाते हैं जिनके नाम 'कविकल्पतरु', 'पिंगल' तथा 'शृंगारमंजरी' हैं।

चिंतामणि के काव्यशास्त्र विषयक ग्रंथों में इनकी प्रसिद्धि का मुख्य आधार 'कविकुलकल्पतरु' नामक ग्रंथ है। यह ग्रंथ उनके आचार्यत्व का सम्यक् परिचय देने में समर्थ है। चिंतामणि ने केशव की भाँति संस्कृत के भामह तथा दंडी आदि आचार्यों की उद्भावित परम्परा का अनुगमन न करके मम्मट और विश्वनाथ आदि आचार्यों का विचारिक अनुशासन किया। अपने 'कविकुलकल्पतरु' नामक ग्रंथ में चिंतामणि ने काव्य उस शब्दार्थ को बताया है जो गुण और अलंकार से युक्त और दोष रहित हो। काव्य-पुरुष का रूपक बाँधते हुए चिंतामणि ने शब्द और अर्थ को स्वरूप, आत्मा के निश्चल धर्म उपमा आदि अलंकारों को शब्दार्थ रूप शरीर के शोभाकारक धर्म, रीति को मानव स्वरूप और वृत्ति को मानव वृत्ति के समान उल्लिखित किया है। चिंतामणि के विचार से काव्य के दो भेद हैं जो गद्य और पद्य के नामों से जाने जाते हैं। चिंतामणि ने अपने 'कविकुलकल्पतरु' नामक ग्रंथ के पंचम प्रकरण में शब्दार्थ निरूपण के अन्तर्गत शब्द शक्तियाँ बतायी हैं। उन्होंने तीन प्रकार के अर्थ वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य बताये हैं। ध्वनि की व्याख्या करते हुए चिंतामणि ने लिखा है कि वाच्य और लक्ष्य अर्थ से भिन्न अर्थ की प्रतीति का नाम ध्वनि है। ध्वनि के अविवक्षित वाच्य तथा विवक्षितान्यपरवाच्य नामक दो भेद चिंतामणि ने बताये हैं। चिंतामणि का रस विवेचन मम्मट के ग्रंथ 'काव्यप्रकाश' पर आधारित है। नायक-नायिका भेद प्रसंग का समावेश भी चिंतामणि ने अपने 'कविकुलकल्पतरु' नामक ग्रंथ में किया है। यह विवेचन विश्वनाथ और धनंजय के सिद्धान्तों पर आधारित है। चिंतामणि ने बताया है कि नायक धन, धर्म और विनय से परिपूर्ण होता है और नायिका कला प्रवीण, विनोदिनी तथा सुन्दरता की खान होती है। चिंतामणि ने 'कविकुलकल्पतरु' के चतुर्थ प्रकरण में मम्मट निर्दिष्ट 'काव्यप्रकाश' के आधार पर काव्य दोषों का निरूपण किया है। उसी ग्रंथ के द्वितीय और तृतीय प्रकरण में चिंतामणि ने अलंकार निरूपण प्रस्तुत किया है। इस

प्रकार न हि ो रीति युग क सवप्रथम आचाय कवि चिंतामणि ने काव्य शास्त्र क लग भग सभी पक्षो का विश्लषण अपन ग्रथ म प्रस्तुत किया है। उनक काव्य क कुछ उदाहरण नीच प्रस्तुत किय जा रह ह

राधा ज क अग सग दनि त्यो गॅार बागु
गुलाबन क रग दनि सौरभनि मा भरी।
चितहि चरावनि मु रानि रा बाना लगी
बानन चितौन प्रम मन री मनो तिरी।
चिन्तामनि मो ही ह रगान मोर कुजनि म
अनि क पजन मु मानो मुनिआ निरी।
बात के बीच सरसाई आइ सिसिर म
माघ मुदी पचमी म ज्यो बसन्त री सिरी॥
— —
बसरि बारहि बार उताग्न
बर्सरि अग अगावनि लागा।
आई ह ननि चचलता
दग अचन वाम छपावनि लागी।
दूलह क अवलाकन का बा
अगनि पराग्न आवनि लागी।
द्यौस दा तीनक त बनिया
मनभावन की मनभावन लागी॥
— —
देख न क्यो सुख मानि घनो मन
जा मुख मान की सार भयो है।
सावरो सुन्दर जा गिगरी
ब्रज नारिन का नित चार नयो है।
आपुने आइ अटा म भट
घनघोर घगन को मार भयो है।
नन्द किसार झराख की आर
मु ता मुख चन्द चकार भयो है॥
— —
का महा मुन्द छबनी क अगन
जाय परयो ज्यो ससारो वहीर मैं।
ठान अठान अधीन जा आपत
ताहि का धानि सब धुनि ठौर मै।

जावन पूर विलासन रंग
उठ मन मोद उमग समीर में।
मन उरोज त कूदि परयो मनु
जाइ प्रभा नदि भौर गंभीर म।

बिहारी लाल—

रीति युगीन शृंगार काव्य म बिहारी का नाम विशेष रूप म उल्लेखनीय है। उनका जन्म सन १५९५ हुआ था। वह ग्वालियर क निवासी थ। उनके पिता का नाम केशवराय था। इनके कोई सन्तान न होन क कारण इन्होंन अपन भतीज निरंजन को गोद ल लिया था। बताया जाता है कि यह आचाय केशवदास स काव्य शिक्षा ग्रहण करते थ और ओरछा म रहकर ही इन्होंन भाषा और साहित्य का अध्ययन किया था। अब्दुर्रहीम खानखाना क सम्पर्क म इनका रहना भी अनुमानित किया जाता है। इन्होंन संस्कृत प्राकृत उर्दू तथा फारसी का अध्ययन किया था। दिल्ली आगरा जोधपुर,बूदी आदि अनेक रियासतों स इनका सम्मान मिला था। परन्तु सबसे अधिक जयपुर क महाराज जयसिंह तथा उनकी पटरानी अनन्तकुमारी द्वारा यह आश्रित किय गय थ। जयपुर क राजकुमार रामसिंह का विद्यारम्भ संस्कार भी इन्होंन ही सम्पन्न किया था और यह दरबार क राजकवि बनाय गय थ।

इनकी लिखी हुई एकमात्र रचना सतसया मिलती है। इस ग्रन्थ म इनके लिख हुए ७१३ दोह तथा सोरठ संग्रहीत हैं। इनके लिख कुछ स्फुट कवित्त भी उपलब्ध होत हैं। इस ग्रन्थ म इन्होंन समाज राजनीति धम ज्योतिष वैद्यक दशन गणित लोकज्ञान, शास्त्र ज्ञान काव्य ज्ञान रीति शृंगार प्रम नखशिख भक्ति आदि सभी विषयों का निरूपण किया है। बिहारी का काव्य उनकी कलात्मक सुरुचि और रसात्मक वृत्ति का परिचायक है। यद्यपि वह एक आश्रित कवि थ परन्तु उन्होंन अनेक दोहों म कटु यथाथ का स्पष्ट परिचय दिया है। विषय भेद क अनुसार यदि बिहारी सतसई का विश्लेषण किया जाय तो उसम नारी-सौन्दर्य नारी चेष्टाओं प्रमानुभूतियों संयोग विरह प्रकृति, नायिका भेद शृंगार भक्ति नीति दशन तथा ज्योतिष आदि विषयों के साथ-साथ महाराज जयसिंह स सम्बन्धित भी सात दोह सम्मिलित हैं। लगभग ६०० दोह शृंगार रस स सम्बन्ध रखत हैं। इसलिए य मुख्यत शृंगारिक कवि ही कह जा सकत हैं। बिहारी न राधा कृष्ण का आश्रय बनाकर प्रम भावना की अभिव्यंजना की। उन्होंन प्रमानुभूति को जीवन का सबस बड़ा धन मानत हुए उसकी महानता सिद्ध की है

गिरि त ऊंच रसिक मन बूड़ जहां हजार।
वहै सदा पसु नरनु को प्रम पयोधि पगार॥

— —

जो न जुगति पिय मिलन की धूरि मुकति मुह दीन।

जो नहिय सम सजत तो परत रस हू बीर ॥

— —

पर पाये १४ रारर नगर परे नम।
मुग्धो पया पुहुमि म गर्‌े मुहो रि॥म ॥

बिहारी ने अपने काव्य में शृंगार निरूपण करते हुए नायिका के सौन्दर्य का चित्रण उसके विभिन्न अंगों का चित्रण नायिका की विभिन्न अवस्थाओं व दशाओं आदि का चित्रण किया है। नखशिख वर्णन हाव भाव चेष्टाओं तथा मुद्राओं का चित्रण भी इसी के अंतर्गत किया गया है। यह चित्रण परम्परानुकूल होने हुए भी मौलिकता से परिपूर्ण है। कुछ स्थलों पर बिहारी ने नायिका के सम्पूर्ण सौन्दर्य का चित्रण कर दिया है। उसके पृथक-पृथक अंगों का चित्रण करके रूप व्यंजना की है। नायिका भेद निरूपण प्रस्तुत करते हुए बिहारी ने स्वकीया परकीया आदि के अनेक भेद प्रस्तुत किये हैं। बिहारी का नायिका भेद-वर्णन मुख्यतः परम्परानुकूल ही कहा जा सकता है। उद्दीपन के रूप में बिहारी ने प्रकृति-वर्णन करते हुए वसंत ग्रीष्म वर्षा शरद हेमंत तथा शिशिर आदि का वर्णन किया है। विरह वर्णना तथा भाव दशाओं का चित्रण भी उनके काव्य में हुआ है। नीचे इन विषयों से सम्बन्धित कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं

छिनुक चलति ठठुकति छिनुकु भुज प्रीतम गर डारि।
चढ़ी अटा देखति घटा बिज्जु छटा सी नारि॥

— —

अंग-अंग छबि की लपट उपटति जाति अछेह।
खरी पातरीऊ तऊ लगै भरी सी देह॥

— —

बिलखी लखै खरी खरी भरी अनख बैराग।
मृगनैनी सैनन भजै लखि बेनी के दाग॥

— —

बात कहा नानी भई नोइन कोइनु माह।
नाह तुम्हारे दगनु की परी दगनु मैं छाह॥

— —

भो यह ऐसो ई समो जहां सुखद दुख दत।
चैत चाद की चादनी डारति किए अचेत॥

बिहारी ने जो शृंगार काव्य लिखा है वह विविध अलंकारों के उदाहरणों के रूप में नहीं रचा गया है। फिर भी उनके काव्य में लक्षणों के अनुरूप ही अलंकार के उदाहरण मिलते हैं। बिहारी के विचार से काव्य में अलंकार का समावेश अर्थ गौरव में सहायक होना चाहिए। उनकी सतसई में रस योजना का भी सम्यक निरूपण है। ध्वनि के भी उपयुक्त उदाहरण विविध भेदों के अनुसार उनकी रचनाओं में मिलते हैं।

भाव पक्ष के अन्तर्गत बिहारी ने शृंगार की अभिव्यंजना ही की है। जैसा कि ऊपर संकेत किया गया है, शृंगार रस के सभी पक्ष बिहारी के काव्य में निरूपित हुए हैं। बिहारी ने शुद्ध ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। अन्य प्रान्तिक भाषाओं के भी प्रभाव उनकी भाषा पर यत्र-तत्र मिलते हैं। यमक, अनुप्रास, वीप्सा आदि अलंकारों का चामत्कारिक प्रयोग भी उनके काव्य में हुआ है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि रीतियुगीन शृंगार-काव्य की परम्परा में बिहारी का स्थान बहुत ऊँचा है। उनकी सतसई की परम्परा में ही शृंगार पर अनेक सतसइयाँ लिखी गयीं जिनमें मतिराम सतसई, शृंगार सतसई, विक्रम सतसई आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनकी टीकाएँ भी बहुत अधिक लिखी गयीं। कहा जाता है कि जितनी टीकाएँ बिहारी के इस ग्रन्थ पर लिखी गयीं उतनी किसी अन्य ग्रन्थ की नहीं लिखी गईं। बिहारी-सतसई की हिन्दी, संस्कृत, फारसी, गुजराती तथा उर्दू आदि भाषाओं में लगभग ५० से अधिक टीकाएँ लिखी गयी बतायी जाती हैं। यह तथ्य भी बिहारी के महत्त्व का द्योतक है। बिहारी के काव्य से कुछ उदाहरण नीचे उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै स्यामु हरित दुति होइ॥

—　—

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं ज्यौं बूड़ै स्याम रंग त्यौं त्यौं उज्जलु होइ॥

—　—

अंग अंग नग जगमगत, दीपसिखा सी देह।
दिया बढ़ाए हू रहै बड़ो उज्यारो गेह॥

—　—

अनियारे दीरघ दृगनु किती न तरुनि समान।
वह चितवनि औरै कछू जिहिं बस होत सुजान॥

—　—

सटपटाति से ससिमुखी घूँघट पट ढाँकि।
पावक झर सी झमकि कै गई झरोखा झाँकि॥

—　—

मुँह धोवति एड़ी घसति हँसति अनगवति तीर।
धसति न इन्दीवर नयनि कालिन्दी के नीर॥

—　—

नासा मोरि नचाय जे करी कका की सौंह।
काँटे सी कसकति हिय गड़ी कटीली भौंह॥

—　—

दिन दै ध्यान कहा कहा रहा कहा ह्वै नारि।
भागु भागु हा आरसी नचि रासनि निसारि॥

मतिराम—

कविवर मतिराम का नाम रीति काल के प्रमुख कवियों में लिया जाता है। यह चिंतामणि और भूषण के भाई थे। जिला कानपुर के अन्तर्गत तिकवांपुर नामक स्थान में उनका जन्म संवत १६७४ में हुआ था। इनके आश्रयदाता बूंदी के महाराज भाऊ सिंह थे। इन्हीं के राज्याश्रम में रहते हुए ही इन्होंने अपना ललित ललाम नामक ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त इन्होंने छन्दसार, रसराज, साहित्य सार, लक्षण शृंगार तथा मतिराम सतसई आदि ग्रन्थ भी लिखे। छन्दसार नामक ग्रन्थ महाराज शम्भुनाथ सोलंकी को समर्पित किया गया है। इन ग्रन्थों में रसराज और ललित ललाम रस और अलंकार के सैद्धान्तिक विवेचन और सरस उदाहरणों के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध है। मतिराम के काव्य की विशेषताएं सरसता, स्वाभाविकता, मौलिकता, सरलता एवं आनुप्रासिकता आदि हैं। उनकी भाषा शैली में भी अभिव्यंजना सौष्ठव विद्यमान है। अपने काव्य में इन्होंने शुद्ध ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। माधुर्य और प्रसाद गुण उनकी भाषा में स्वाभाविक रूप से विद्यमान मिलते है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, दीपक, दृष्टान्त, व्यतिरेक, अपह्नुति तथा अतिशयोक्ति आदि अलंकार उनके काव्य में बहुलता से समाविष्ट हुए है। शृंगार रस के साथ साथ अन्य रसों का परिपाक भी उनके काव्य में मिलता है। छंद योजना के क्षेत्र में उन्होंने दोहा, कवित्त और सवैया का प्रयोग अधिकता से किया है। प्रकृति के चित्र तथा ऋतु-वर्णन भी इनके काव्य में उपलब्ध हैं। मतिराम के काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है

बारन सघन एक रोरी ही की आड पर
हा हा न पहरि आभरन और अंग में।
कवि 'मतिराम' जस तीछन कटाछ तेरे
ऐसे कहा सर है अनंग के निखंग में॥
सहज सुरूप सुघराई रीझो मन मेरो
डोलत है तेरी अदभुत की तरंग में।
सेत सारी ही सो सब सौतें रंगी स्याम रंग
सेत सारी सो रंग स्याम लाल रंग में॥

— —

प्रान पिया मन भावन संग
अनंग तरंगनि रंग पसारे।
सारी निसा मतिराम मनोहर
केलि के पुंज हजार उघारे॥
होत प्रभात चल्यो चहै प्रीतम
सुंदरि के हिय में दुख भारे॥

चंद को आनन ओप सों दीपति
स्याम सरोज से नैन निहारे ॥

सकल सिंगार साज संग ले सहेलिन कों
सुन्दरि मिलन चली आनंद के कंद कों ।
कवि मतिराम मग करति मनोरथनि
पेखो परजंक पै न प्यारे नंद नंद कों ॥
नेह ते लगी है देह दाहन दहन
गेह बाग को बिसारि भूषन बनिता के बृंद कों ।
चंद को हँसत तब आयो मुख चंद अब
चंद लाग्यो हँसन तिया के मुखचंद कों ॥

कमल मुखनि कुवलय दृगनि कुमुद मधुर मुसक्यानि ।
लखो ताल ऊपर मन्द कमलाकर मुसक्यानि ॥

अधर रंग बसरि मुकुत मानिक बानिक नैन ।
हँसत बदन दीपति बगरि होति हार छबि सेत ॥

नखतावलि नभ इंदु मुख तनु दुति दीप अनूप ।
होति निसा नदलाल मन नैन निहारो रूप ॥

जानति सौति अनीति है जानति सखी सुनीति ।
गुरुजन जानत लाज है, प्रीतम जानत प्रीति ॥

कुलपति—

आचार्य कुलपति मिश्र का रचना-काल सन् १६६७ से १६८६ तक अनुमानित किया जाता है। इनके पिता का नाम परशुराम मिश्र था। यह आगरे के निवासी थे। महाकवि बिहारीलाल इनके मामा कहे जाते हैं। कविराज इनके मामा थे। कुछ समय तक विष्णुसिंह नामक किसी शासक के आश्रय में रहने के पश्चात् यह महाराज रामसिंह के आश्रय में रहे। इनकी ख्याति का मुख्य कारण इनका 'रस रहस्य' नामक ग्रन्थ है जिसकी रचना सन् १६७० में हुई थी। इसके अतिरिक्त इनके लिखे हुए अन्य ग्रन्थों में 'द्रोणपर्व', 'युक्ति-तरंगिणी', 'नखशिख' तथा 'संग्राम सार' आदि भी गिनाये जाते हैं। कुछ विद्वान 'दुर्गा भक्ति चन्द्रिका' तथा 'गुण रस रहस्य' को भी इन्हीं का मानते हैं।

आचार्य कुलपति ने अपने 'रस रहस्य' नामक ग्रन्थ में काव्य के तीन भेद उत्तम मध्यम और अधम माने हैं। उन्होंने शब्द के गुणों का निरूपण करते हुए शक्ति विभिन्न

तथा अभ्यास को काव्य रचना का कारण बताया है। उन्होंने यश सम्पत्ति आनन्द प्राप्ति दुरित-नाश चातुर्य ज्ञान तथा सेवा को रस में करना आदि काव्य के प्रयोजन बताये हैं। शब्द शक्ति निरूपण करते हुए उन्होंने शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर बताया है। उन्होंने अभिधा लक्षणा व्यंजना तथा तात्पर्य नामक चार शब्द शक्तियों के रूप में मान्य किया है। उन्होंने ध्वनि को काव्य पुरुष का जीव शब्दार्थ को शरीर माधुर्य आदि गुणों को गुण अलंकारों को भूषण और काव्य दोषों को दूषण बताया है। कुलपति ने रस विवेचन के प्रसंग में विभाव अनुभाव संचारी भाव स्थायी भाव आदि को चार अंगों के रूप में मान्य किया है। इनमें से विभाव अनुभाव और संचारी भाव को उन्होंने रसाभिव्यक्ति का साधन माना है। कुलपति ने काव्य दोष उसको बताया है जहाँ उसमें कविता विरस हो जाती है। कुलपति ने अलंकार निरूपण करते हुए लिखा है कि अलंकार शब्दार्थ रूपी शरीर का आभूषण है। इस प्रकार से कुलपति के काव्य में आचार्यत्व और कविता का अनुपम संयोग मिलता है। उनके काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

मोहन के अभिलाष सी बस
नम बय के सम रूप कयो है।
रूप समान गुनाई विराज
गुनाई सो जी म सुजान प यो है।
जसी सुजानता तसी विचार के
कृष्णकुमार सो नेह तयो है।
नेह समान नहे मुत्रराज
सु राध को जीवन ध्यान कयो है॥

— —

लोचन लजाहैं लाहै होत न सचीन हू सो
बातन में बीजत अनूप सुरभंग की।
मन मन आनद मगन हुव बिहसति
याही तें सहनी न सुहात कोऊ संग की।
डगमगी डगे पग मपकि थपकि नग
कह देत गति तन चल अनंग की।
आनी और आभा आज नई है बदन पर
जगर मगर जाति होति अंग अंग की॥

— —

फनति है कोई लपटेगी बन चातुरी सो
फून पांचो बातन जाम दख मेन भाम म।
फूलत है पंकज विचित्र चित्र चंद दखि

उपबन जाव सब होत अनुराग म ।
बगि बगि माला नभ छाय रहा लाला
टुमराजा विराजी नजि मपति मुहाग म ।
बिनहिं बसन्त रति बत मयनत होत
तग मुख दखें बसत होत बाग म ॥

सुखदव मिश्र—

कविवर सुखदव मिश्र जिला फरुखाबाद क अन्तगत कम्पिला नामक स्थान क निवासी थ । जाति क यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थ । इनका रचना-काल सन १६३३ स १७०८ तक बताया जाता है । इनक काव्य गुरु काशी निवासी कवीन्द्राचार्य सरस्वती थ । इन्होंन असाथर क राजा भगवतराय खीची, डौंडिया खर क राव मदन सिंह, अमठी क राजा हिम्मत सिंह तथा औरंगजब क मंत्री फाजिल अली आदि स विशष मान-सम्मान प्राप्त किया था । जीवन क अन्तिम काल म यह मुरारमऊ क राजा दवीसिंह क आश्रय म रहन लग थ । कहा जाता है कि इन्ह राजा राजसिंह गौड़ न कविराज की उपाधि दी थी । कुछ विद्वानों का अनुमान है कि यह उपाधि इन्ह अनहवार था द्वारा प्रदान की गयी थी । आचार्य सुखदव मिश्र क लिख हुए ग्रन्थों म 'अध्यात्म प्रकाश' 'फाजिल अली प्रकाश' 'नखशिख' 'म ान रसार्णव' 'ज्ञान प्रकाश', 'रस रत्नाकर' 'पिंगल छन्द विचार' 'पिंगल वृत्त विचार' तथा 'छन्दविचारसार' आदि हैं । इनम कवि न रस और छन्द विवचन विशष विस्तार क साथ प्रस्तुत किया है । इनक काव्य क कुछ उदाहरण नीच प्रस्तुत किय जा रह हैं

जो कछु कीन्हों अचानक चोट सु,
चोट सही न सकी क दुकूल है ।
दह दप मुह पारी परो सा कह सा नहि,
सु रह गया हिय मूल है ।
मास ग्रास न जानि लख्यो
जगिराज जहा उपमा मुखमूल है ।
कौन है क्यास धनार अनार
निबुक द्रुम एम चनदन फूल है ॥

— —

शूलि रह बनबारा सबै लगि,
फूलनि फूलि रह्यो मन मरो ।
फूलनि हो को बिछावना कै
रहना किया फूलनि हो का घनरा ।
मार पनारुन न पर बार त
मन प्रसार किया मन मरा ।

ऐसेहि मन पनाइ पनाइ
भयो श्रृंगुराज रा माना रो ।।

देव—

महाकवि देव का पूरा नाम देवदत्त था । इनका जन्म सं० १६७३ में अनुमानित किया जाता है । इन्होंने भवानीदत्त वैश्य के आश्रय में रहकर भवानी विलास नामक ग्रन्थ की रचना की थी । औरंगजेब के पुत्र आजमशाह के सम्पर्क में भी यह रहे थे । फफूंद के राजा कुशल सिंह के आश्रय में इन्होंने प्रेमतरंग नामक ग्रन्थ की रचना की थी जो कुशलविलास शीर्षक से भी उल्लिखित किया जाता है । इनके प्रमुख आश्रयदाता भोगीलाल थे जिन्होंने लाखों रुपये देकर सम्मानित किया था । देव ने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ रस विलास उन्हीं को समर्पित किया था । उद्योत सिंह नामक आश्रयदाता को देव ने प्रेम चन्द्रिका नामक ग्रन्थ समर्पित किया है । इसी प्रकार से सुजान मणि को उन्होंने सुजान विनोद नामक ग्रन्थ भेंट किया था । सुमिल विनोद नामक ग्रन्थ में देव ने अपने हिमायतुल्ला खाँ नामक आश्रयदाता का भी परिचय दिया है । कहा जाता है कि देव के अंतिम आश्रयदाता अकबर अली खाँ थे जिनको उन्होंने अपना सुखसागरतरंग नामक ग्रन्थ समर्पित किया था । देव के लिखे हुए अन्य प्रमुख ग्रन्थों में भाव विलास, रसानन्द लहरी, काव्य रसायन, विराग, अष्टयाम, प्रेमदीपिका, राधिका विलास, सुन्दरी सिंदूर, राग रत्नाकर, देव चरित, जाति विलास, वृक्ष विलास, पावस विलास, देव शतक, प्रेम दर्शन, शिवाष्टक आदि हैं ।

महाकवि देव ने शृंगार को रसराज मानकर उसे अपने काव्य में सर्वोपरि स्थान दिया है । उनके सभी काव्य ग्रन्थों में शृंगार रस के भेद प्रभेदों के रूप में विद्यमान हैं । भाव विलास में देव ने शृंगार रस का महत्व एवं उसके अंगों का वर्णन करते हुए नायक नायिका भेद प्रस्तुत किया है । भवानी विलास में उन्होंने शृंगारेतर रसों का भी समावेश किया है । काव्य रसायन अथवा शब्द रसायन में रसराज शृंगार का विस्तृत वर्णन है । रस विलास का प्रधान विषय नायिका भेद है । सुख सागर तरंग नायिका भेद विषयक अन्यतम कृतियों में है । सुजान विनोद में देव ने ऋतु वर्णन के प्रभावशाली प्रसंग प्रस्तुत किये हैं । प्रेम चन्द्रिका तथा देव शतक में कवि ने प्रेम भावना की अभिव्यंजना की है । देव चरित में कृष्ण भक्ति के अनुराग और विरागमय चित्र मिलते हैं । भाव विलास तथा काव्य रसायन नामक ग्रन्थों में देव ने रस अलंकार शब्द शक्ति रीति तथा छन्द आदि का विवेचन किया है । इस प्रकार से देव के काव्य में उनके युग की सभी काव्य शास्त्रीय तथा शृंगारिक प्रवृत्तियाँ समाविष्ट हैं । देव का आचार्यत्व और कवित्व दोनों ही उनकी ऊँची प्रतिभा के द्योतक हैं । उनके काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

पायनि नूपुर मंजु बजै
कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई ।

सावर अग नम पट पात
हिय तुलस बनमाल सुहाई।
माथ किरीट बड न्ग रचन
मन्द हसी मुख चन्द जुहाई।
ज जग मन्दिर दीपक सुन्दर
श्री व्रजदूलह न्व जुहाई॥

— —

दव मैं सीस बसायो सनेह क
भाल मगम्मद बिंदु क भाख्यो।
कचुकी म चुपरयो करि चोवा
लगाय लियो उर सों अभिलाख्यो।
क मखतूल गुह गहन
रस मूरतिवत सिगार क चाख्यो।
सावर लाल को सावरो रूप
मैं ननिन को कजरा करि राख्यो॥

— —

रीझि रीझि रहसि रहसि हसि हसि उठ
सास भरि आसू भरि कहत दई दई।
चौकि चौकि चकि चकि औचकि उचकि दव
जकि जकि बकि बकि परत बई बई।
दुहुन को रूप गुन दोऊ बरनत फिर
घर न थिरात रीति नेह की नई नई।
मोहि मोहि मोहन को मन भयो राधा मय
राधा मन मोहि मोहि मोहन मई मई।

— —

जो न जीभ प्रम तब बोल उनमम,
कज मुख पर तब नजम बिमथिर।
आज तहा पी की तब आसन हो बाजिरन
सामन क सामन को नूर पति पाथर।
नथ तें निग्रा सों सब स्याम मइ बाम मई,
बाहिर सों भीतर न दूजो न्व न्गिग।
जाग करि मिरैं जो बिचार होय बानम
जमा न हरि होय तब ध्यान धरि न्जिय॥

— —

धाई धारि-धारि त बधाई दिय आरन रा
मुनि कारिकारि रम भामिनि भगति है।

मारि मारि बन्न निहारती बिहार भूमि
मारि घोरि आग्न भरी सी उघरति है।
देव भर जारि जोरि बदत सुरन
मुख नामनि म सारि सारि पाग्र परति है।
तारि तारि मान पूर मोतिन का पोज
निवछावरि का छारि छारि भूपन धरति है॥

— —

राजत राजत मन रच्यो बजि कपलाम
सान मनि सिखर सुमदहि समान्रे।
रग रग अगन अगन रग महन
उन्ति रग राध रति रभा का निरा र।
भाति भाति कोरनि अमद चन्दाति पाति
चद का दरस दव बरसति बादर।
बरनि सापाननि ऊपर रह्यो भू पर का
चारिहू तरफ फहराती रस चादर॥

सुरति मिश्र—

सुरति मिश्र का जन्म सन १६८३ म हुआ था। यह आगरे के निवासी थ। इनके पिता का नाम सिहमनि था। इन्होने गगसजी से काव्य शिक्षा ग्रहण की थी। इनके शिष्यो म शिवदास और अलीमुहीमखा प्रीतम आदि थ। यह अनेक लोगो क राज्याश्रय म रह थे जिनम दिल्ली क बादशाह मुहम्मद शाह जोधपुर के दीवान अमरसिंह बीकानेर के राजा जोरावर सिंह तथा नसिरुल्लाहखा के नाम विशेष रूप स उल्लेखनीय हैं। उन्होने अनेक ग्रन्थो की रचना की जिनमे काव्य सिद्धान्त अलकार माला रसमाला सरस रस रसग्राहक चद्रिका रस रत्नाकर शृगार सार रसरत्नमाला नखशिख प्रबोध चन्द्रोदय नाटक भक्तविनोद बताल पच्चीसी रास लीला तथा दान लीला आदि है।

काव्य सिद्धान्त शीर्षक ग्रन्थ म लेखक ने काव्य शास्त्र के विविध पक्षो का सम्यक निरूपण किया है। कवि शिक्षा का समावेश भी इस ग्रन्थ म लेखक ने कर दिया है। अन्य ग्रन्थो म अलकार रस शृगार तथा नखशिख आदि से सम्बन्धित विवेचन किया है। भक्तमाल आदि ग्रन्थो की रचना के साथ साथ उन्होने बिहारी सतसई की एक टीका अमरचन्द्रिका शीर्षक से की। केशवदास की कविप्रिया तथा रसिकप्रिया नामक कृतियो पर भी इन्होने टीकाए लिखी। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तेरे ये कपोल बाल अति ही रसाल
मन जिनकी सदाई उपमा बिचारियत।

काऊ न समान जाहि कोउ उपमान
अरु बापुरे मधूकन की देह जारियत है।
नकु दरपन समता की चाह करी कहू
भरा अपराधी ऐसा चित धारियत है।
मूरति सो याही तें जगत बीच आजहू तो
उनके बदन पर छार डारियत है॥

श्रीपति—

श्रीपति कालपी के निवासी थे। जाति के यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके लिखे हुए प्रमुख ग्रंथों में काव्य सरोज, कविकल्पद्रुम, रस सागर, अनुप्रास विनोद, विक्रम विलास, सरोज कलिका तथा अलंकार गंगा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन ग्रंथों में काव्य शास्त्र के विविध पक्षों का विवेचन किया गया है। इनके विचारों पर आचार्य केशवदास का पर्याप्त प्रभाव था। परवर्ती आचार्यों में इन्होंने भिखारीदास आदि को बहुत प्रभावित किया है। स्वाभाविक अभिव्यंजना-सौन्दर्य ने इनके काव्य को रसात्मक प्रौढ़ता प्रदान की है। इनके काव्य से कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

कंत बिन भावत सदन ना सजनि
मोपै बिरह प्रबल मनमथ काप्यो बान सें।
'श्रीपति' कलोल सोर कोकिल अमोर
चोर मोर मोठ छाय गौन रोय आन आड़ सें।
दुर्हरि हहरि हिय, कहरि कहरि करि
थहरि थहरि दिन बीते जिय गाड़ सें।
लहरि लहरि बिज्जु फहरि फहरि आई
घहरि घहरि उठें बादर अगाड़ सें॥

— —

पावर की धूमरि उमड़ि घाट चूनरी की
पावन मयूख मयपख करजारे की।
भृकुटी बिकट छूटी अलकें कपोलन पै
बड़ी बड़ी आँखिन में छबि नारे तारे की।
तरवन तरल जगाऊ जरवारे जोर
स्यन्दन लसित कलित मुख मारे की।
भूल्यो न भामिनी को भावन गुमान भरी
गावती में शारदि मनावन हिहारे की॥

भिखारीदास—

रीतियुगीन शृंगार काव्य की परम्परा में आचार्य भिखारीदास का नाम विशेष

रूप से उल्लेखनीय है। यह प्रतापगढ़ के राजा पृथ्वीपतिसिंह के छोटे भाई हिन्दूपतिसिंह के आश्रय में रहते थे। इनके पिता कृपालदास थे तथा प्रपितामह रामदास थे। चैनलाल इनके भाई थे। इनके पुत्र का नाम अवधेशलाल तथा पौत्र का गौरीशंकर नाम था। इनकी जन्म तिथि आदि के विषय में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि इनका रचनाकाल सन् १७२१ से लेकर सन् १७६१ था। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की है जिनमें रससारांश नाम प्रकाश छन्दोर्णव पिंगल काव्य निर्णय शृंगार निर्णय विष्णु पुराण भाषा शतरंजशतिका छन्दप्रकाश बागबहार राग निर्णय ब्रजमहात्म्य नखशिख पदपारख्या वर्ण निर्णय तथा रघुनाथ नाटक आदि हैं। इन ग्रन्थों में से कुछ की प्रामाणिकता संदिग्ध है। विद्वानों का अनुमान है कि उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर भिखारीदास जी के लिखे हुए केवल सात ग्रन्थ प्रामाणिक कहे जा सकते हैं जो काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय छन्दोर्णव पिंगल विष्णु पुराण भाषा रससारांश अमरकोश अथवा शब्द-नाम प्रकाश तथा शतरंजशतिका हैं।

भिखारीदास ने अपने इन ग्रन्थों में रससारांश के अन्तर्गत शृंगार रस विवेचन काव्य निर्णय के अन्तर्गत ध्वनि रस अलंकार गुणीभूत व्यंग्य गुण दोष विवेचन तथा छन्दोर्णव पिंगल के अन्तर्गत छन्द शास्त्र का विवेचन प्रस्तुत किया है। इनमें भिखारीदास का आचार्य रूप तो स्पष्ट है ही साथ ही उनकी कवित्वशक्ति भी स्पष्ट है। इनकी भाषा अत्यन्त परिमार्जित थी। शृंगार वर्णन में इन्होंने शृंगारमयता के साथ साथ मर्यादा का भी विचार रखा है। रसात्मक दृष्टि से भी इनका काव्य उच्च स्तर का है। इनके काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

है रति को सुखदायक मोहन
　　या मकराकृत कुंडल साज।
चित्रित फूलन को धनुबान
　　त्यों नागन भौर की पाँति को भ्राज।
सुभ्र स्वरूपन में मनो एक
　　विवेक हुन तिय सन समाज।
दास जू आज बने ब्रज में
　　ब्रजराज सदेह अनंग बिराज॥

—　　—

आनन है अरविन्द न फूले
　　अलीगन भूले कहा मडरात हो।
कीर तुम्हें कहा बाय लगी
　　भ्रम बिम्ब के ओठन को ललचात हो।
दास जू ब्यारी न वनी बनाव है

पापी कलापी कहा इतरात हौ।
बोलती बाल न बाजती बीन
कहा सिगरे मग घरत जात हौ॥

— —

यातें स्यामा स्याम की न कसी अब आतो
स्याम स्यामा तजि आज स्यामा स्यामा सो जरा रहे।
अब तो लगाई कर स्यामा को बदन स्याम,
स्याम के बन्न लागी स्यामा की टकी रहे।
दास अब स्यामा के सुनाय मन छाए स्याम
स्यामा स्याम सामन क आमद छनी रहे।
स्यामा के बिलोचन में है री स्याम तारे अरु
स्यामा स्याम लोचन की साहित चकोर है॥

भूपति—

कविवर भूपति का पूरा नाम गुरुदत्त सिंह था। यह अमेठा के राजा थे। यह एक उच्च कोटि के कवि काव्य शास्त्री तथा कवियों के आश्रयदाता थे। प्रसिद्ध कवि उदय नाथ कवी इन्द्र इन्ही के आश्रय में रहते थे। इनका रचना काल सन १७३८ के लगभग अनुमानित किया जाता है। इन्होंने कण्ठ भूगारपरक दोहों की रचना की है जिनका एक संग्रह सतसई शीर्षक से उपलब्ध है। सतसई के अतिरिक्त इनके लिखे हुए दो ग्रन्थ और उल्लेखित किये जाते हैं जो कण्ठाभूषण तथा रस रत्नाकर हैं। इनकी वीरता के अनेक प्रसंग भी प्रचलित है जिनका वर्णन उदय नाथ ने स्वयं भी अपने काव्य में किया है। इनके लिखे हुए दो दोहे उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

घूघट पट की आड़ में हसति जब वह दार।
ससि मंडल ते कढ़ति छनि जनु पियूष की धार॥

— —

भए रसाल रसाल हैं भरे पुष्प मकरन्द।
मान सान तोरत तुरत भ्रमत भ्रमर मद मन्द॥

तोषमणि—

कविवर तोषमणि के जीवन काल के विषय में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है। यह सिंहरौर के निवासी थे। इनके पिता चतुर्भुज शुक्ल थे। इनके लिखे हुए तीन ग्रन्थ उल्लेखित किये जाते हैं जो सुधानिधि, विनय शतक तथा नखशिख है। इनकी भाषा बहुत परिमार्जित और सौष्ठवयुक्त थी। काव्य प्रतिभा और शास्त्र ज्ञान के सम्यक समन्वय ने इनको कविता को उच्च कोटि की कलात्मकता प्रदान की थी। आलंकारिकता तथा रसात्मकता इनके काव्य के मुख्य गुण हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

भूषन भूषित दूषन हीन प्रवीन महारस मैं छवि छाई।

पूरी अनर प रार तें अहि म परमारथ स्वारथ पाई।
ओ उन त मुख। उन्ही नहि ताग अाग धरी चतुराई।
होत सब सुख की जनिता वहि आवहि जो बनिता नवताई॥

सोमनाथ—

आचाय सामनाथ न ज म काल तथा ज म स्थान न विषय म प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहा है। यह अनुमान लगाया जाता है कि इनका रचना काल सं० १७९३ स लेकर १८१३ तक रहा होगा। सोमनाथ नीलकंठ मिश्र क पुत्र और गगाधर मिश्र क अनुज थ। इनका नाम शशिनाथ भी था। यह जयपुर नरश महाराज रामसिंह क मत्र गुरु थ। भरतपुर क महाराज बदन सिंह क छोट पुत्र प्रतापसिंह क आश्रय म यह रहे थ जिनक आश्रय म रहते हुए ही इन्होंने रसपीयूषनिधि की रचना की थी। इस ग्र थ क अतिरिक्त इनकी अन्य कृतिया म कृष्ण लीला पचाध्यायी सुजानविलास तथा माधवविनोद नाटक हैं।

अपने रसपीयूषनिधि नामक ग्र थ म सोमनाथ न काव्य के स्वरूप का विवेचन करत हुए काव्य उस कवि कम को कहा है जिसम छन्दोबद्ध व्यग्य गुण तथा अलकार सहित और दोष रहित रूप म प्रस्तुत किया गया है। काव्य पुरुष रूपक म सोमनाथ न व्यग्य को काव्य का प्राण शब्द तथा अथ को उसका शरीर और दोष गुण और अलकार नामक काव्यागो का क्रमश ... ो का उपमान माना है। उत्तम मध्यम और अधम नामक तीन काव्य भेद सामनाथ ने बताय है। रसपीयूषनिधि म ही सामनाथ न शब्द शक्ति निरूपण भी किया है। इस प्रसग म उन्होंने सवप्रथम शब्दाथ का निरूपण किया है क्योकि शब्दाथ काव्य पुरुष का शरीर है और उस पर प्रथम दृष्टि पडती है जीव का ज्ञान बाद म होता है। सोमनाथ ने बताया है कि जिस श्रोत द्वारा ग्रहण किया जाय वह शब्द है और जिस चित्त द्वारा ग्रहण किया जाय वह अथ है। सोमनाथ न शब्द की तीन शक्तियाँ अभिधा लक्षणा और व्यजना मानी हैं। ध्वनि विवेचन करते हुए सोमनाथ ने व्यग्य प्रधान काव्य को उत्तम काव्य कहा है जिसका दूसरा नाम ध्वनि काव्य है। सोमनाथ ने रस विवेचन का समावेश अपने रसपीयूषनिधि तथा शृगार विलास नामक ग्रथो म किया है। उन्होंने भाव को रस का मूल बताते हुए हृदय मे वासना रूप से स्थित चित्त वृत्ति को ही भाव कहा है। भाव के उन्होने स्थायी भाव सचारी भाव विभाव तथा अनुभाव नामक भेद बताय है। नायक नायिका भेद का प्रसग भी सोमनाथ न रसपीयूषनिधि तथा शृगार विलास म किया है। सोमनाथ क विचार म नायक शुचि धनवान उदार अभिमानी उन्नत भक्ति गुणी स्वावलम्बी चतुर और नवित होता है। नायिका सुन्दरी केलिकला चतुरा सलक्षण सलज्जा सरसा और आभूषणभूषिताग्गा होती है। सोमनाथ ने काव्य दोषो की व्याख्या करत हुए उन्हे रस का घातक बताया है। उन्होंने चार प्रकार के दोष बताये हैं जो शब्दगत वाक्यगत अथगत तथा रसगत होत हैं। सामनाथ न शब्दालकारो और अर्थालकारो का भी विवेचन अपन

ग्रन्थ में किया है। इस प्रकार से काव्य शास्त्र के प्रायः सभी अंगों का विवेचन सोमनाथ ने करते हुए अपने पांडित्य और काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। सोमनाथ के काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

छटिक कटि रचक छीन भई
गति नैननि की तिरछान लगी।
ससिनाथ कहैं उर ऊपर तें
अचरा उघरें ते लजान लगी।
लरकाई के खेलि पछेलि कछूक
सयानि सयीन पत्यान लगी।
पिय नाम सुनें तिय चौंकि कै तें
उरिक मुरिक मुसक्यान लगी॥

— —

धरि हैं नाह के मन चाव्यो,
कहिके उर मैं मति औरई ठानी।
यों बहकाइ कै गेह बड़ाइ
मयनमुखी रति मंदिर आनी।
त्यों न तरें ससिनाथ सुजान
कछूक तहां ठटकी ठकुरानी।
ह्वै न सयान रही भर हू
अनकनी तऊ हिय मैं अकुलानी॥

— —

उनई है मन, यातें सुध न परत प्रान
अंग अरसात भुरहरें उठि आए हौ।
रसमगी अंखियाँ अनूप रूप चोरें लाल,
सोमनाथ आछें यहि रूप सखि पाए हौ।
हम सों तौ विहँसि बिलासिबो बिसारयौ पिय,
सब बिधि उनई के हाथन बिकाए हौ।
काहू को नगन, कहैं बनत प्रकट हाल,
अनुराग जिनको लिलार धरि आए हौ॥

रसलीन—

रसलीन का पूरा नाम सय्यद गुलाम नबी था। इनका जन्म सन् १६८६ में अनुमानित किया जाता है। इनके पिता सय्यद मुहम्मद बाकर थे। यह हरदोई जिले के अन्तर्गत बिलग्राम नामक स्थान के निवासी थे। रसलीन के मामा मीर अब्दुल जलील ने भी हिन्दी में काव्य रचना की थी। कहा जाता है कि इन्हीं के यहां से रसलीन को भी हिन्दी में काव्य रचना की प्रेरणा मिली थी। रसलीन नवाब सफदर जंग की सेना

म रहते थ । उ ही की ओर स एक बार पन्ना म युद्ध रत हुए सन् १७८० म इनकी मत्यु हो गयी। इनके लिख हुए तीन ग्रन्थ मिलता है जो अग दपण तथा रसप्रबोध हैं। अग दपण की रचना का सन १७३७ है। इसम कवि ने नखशिख विवचन प्रस्तुत किया है। रसप्रबोध की रचना सन १७४१ म हुई थी। इसम रस भाव नायिका भद षड्ऋतु वर्णन तथा बारहमासा आदि प्रसग समाविष्ट हैं। रस लीन के कुछ दोह उदाहरणाथ नीच प्रस्तुत किय जा रह हैं

नन चहै मुख दखिय मन मो कछू दुराइ।
मन चाहत दग मूदि क लीज हिय लगाइ॥

— —

मुख ससि निरखि चकोर अरु तन पानिप लखि मीन।
पद पकज दखत भवर होत नयन रस लीन॥

— —

मोहन लखि यह सखन त ह्व उदास दिन रात।
उमहति हसति जकति डरति बिलखति बिरखि रिसाति॥

— —

ज्यौं वय तिथि बाढ़ति कला जोबन ससि अधिकात।
त्यौं सिसुता निसि तिमिर घन छबि कर टरनि जात॥

— —

दीपक लौ मापनि लगी सदन होति यह बात।
ताहि चलत अब पन लौ बिमसन लाग्यो गात॥

— —

स्वत बसन जुत जो ह म यौ तिय दुति दरसाइ।
मनो चली छीरधि सुता छीर सिंधु म न्हाइ॥

— —

कहाँ गये व जलद ज नित उठि आरत आय।
गाइ मलार बुलाइए तऊ न परत लखाइ॥

दूलह कवि—

दूलह कवि क जन्मकाल क विषय म प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता। इनका रचना काल सन १७४३ स लकर १७६८ तक अनुमानित किया जाता है। यह कालिदास त्रिवदी क पौत्र और उदयनाथ कवीन्द्र क पुत्र थ। दूलह इनकी उपाधि बतायी जाती है। इनका वास्तविक नाम कुछ और था। इनक प्रसिद्ध ग्रन्थ कविकुल कठाभूषण म अलकार शास्त्र का सम्यक निरूपण प्रस्तुत किया गया है। गम्भीर शास्त्रीय विवचन क साथ साथ इन्होंन जो सरस उदाहरण अपन इस ग्रन्थ म प्रस्तुत किय है वह

इनके पांडित्य और काव्य प्रतिभा का प्रमाण हैं। इनके काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

तारा की मरोरैं सब तारा में मिलाय लाही
भूषन को जब जब जब अहियत है।
कहै कवि दूलह छिपाये रूप छवि मुख
नेह रूप भौनिन को नेह दहियत है।
बाला चित्रशाला ते निकसि गुरुजन आगे
काहू चतुराई सों नचाई चहियत है।
सारिका पुकारें हम नाहीं हम नाहीं एजू
राम राम कहौ नाहीं नाहीं कहियत है॥

— —

उरज उरज धसे बसे उर आडे लसे
बिन गुन माल गरे धरे छवि छाए हो।
नैन कवि दूलह हैं राते तुतराते बैन
देखे सुने सुख के समूह सरसाए हो।
जावक सों लाल भाल पलकन पीक लीक
प्यारे ब्रजचंद सुचि सूरज सुहाए हो।
होत अरुनोद यहि कोद मति बसी आजु
कौन घर बसी घर बसी करि आए हो॥

रतनकवि—

रतन कवि गढ़वाल के अन्तर्गत श्रीनगर नामक स्थान के राजा मेदिनीशाह के पुत्र फतेहशाह के आश्रय में रहते थे। इनकी लिखी हुई तीन कृतियाँ उपलब्ध होती हैं जो फतेहभूषण, फतेहप्रकाश तथा अलंकार दर्पण हैं। इनके अतिरिक्त कुछ चातुरी विचार, शुक विवेक तथा शिल्पदर्पण नामक रचनायें भी इनकी बतायी जाती हैं। फतेहभूषण के अन्तर्गत कवि ने शब्द शक्ति, काव्य भेद, ध्वनि निरूपण, रस विवेचन तथा दोष विवेचन आदि प्रस्तुत किया है। फतेहप्रकाश में भी इन्हीं विषयों का समावेश है। अलंकारदर्पण में कवि ने विविध अलंकारों का विवेचन प्रस्तुत किया है। रतन कवि के काव्य में पांडित्य और प्रतिभा का समन्वय मिलता है। रतन कवि के काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

बरनि की कालिमी का जीवन निकर रवि
भुवनय बलि का गरज गुमान है।
भानसरि त्रिपुर है बज का बजु उर है
विबुध वृन्दनि को धनिक कामद है॥

पानिप मनि को रतन रतनाकर को
कुबर पुय जनन को छमा महीधर है ॥
अग को सनाह बनराह को रमा को नाह
महाबाह फतहनाह ऐसे उगरु है ॥

चदनराय—

चदनराय जिला शाहजहापुर के अ तगत पवाया नामक ग्राम के निवासी थे। इनके पिता का नाम धनुर्दास पितामह का नाम धरीरे राम तथा प्रपितामह का नाम भीष्म था। चदनराय के दो पुत्रो का उल्लेख भी मिलता है जिनके नाम प्रमराम तथा जीवन हैं। इनका काव्य काल सन १७५३ से लगभग १८०८ तक अनुमानित किया जाता है। कहा जाता है कि यह हिन्दी के अतिरिक्त सस्कृत तथा फारसी के भी ज्ञाता थे। फारसी मे यह सदल नाम से शायरी करते थे। इनके अनेक कवि शिष्य हुए हैं जिनमे मन भावन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह राजा केशरी सिंह के आश्रय मे रहते थे। अन्य अनेक राजाओ और नवाबो ने इन्हे अपने यहा आमत्रित किया परन्तु यह स्वाभिमानवश कही नही गये। इनकी लिखी हुई अनेक रचनाएँ बतायी जाती है। जिनमे कृष्णकाव्य केशरी प्रकाश राधाजी को नखशिख राग्यविलास काव्याभरण रसकल्लोल तत्वसना पीतमवीर विलास चदन सतसई पथिक बोध शृगार सार नाममाला तत्वसना तथा सीतबसत आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त फारसी मे लिखी हुई कवि की एक रचना दीवान सदन शीर्षक से भी बतायी जाती है। शृगार सार काव्याभरण और रसकल्लोल मे कवि ने रीति निरूपण किया है। चदन सतसई की रचना सतसई परम्परा के आधार हुई है। तत्व सना एव राग्य विलास मे आध्यात्म विषयक विचार हैं। सीतबसन एक लोकप्रिय कथा पर आधारित रचना है। इस प्रकार से इनके काव्य मे पाडित्य और प्रतिभा के साथ साथ वविध्य और मौलिकता भी मिलती है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

ब्रजवारी गवारी द जान कहा यह चतुरता न लुगायन मे।
पुनि बारिनी जानि अनारिनी है रुचि एती न चदन नायन मे।
छबि रग सुरग के बने लग इद्रबधू लघुतायन मे।
चित जो चहै दी चकि सो रहैं दी केहि दी महदी इन पायन मे ॥

देवकीनदन—

देवकीनदन जिला फरुखाबाद के अ तगत मकरद नामक स्थान के निवासी थे। इनके पिता का नाम शिवनाथ और भाई का नाम गुरदत्त था। यह मुख्यत उमराव गिरि महत के पुत्र कवर सरफराजगिरि तथा राजा अवधूत सिंह के आश्रय मे रहे थे। इनकी लिखी हुई रचनाओ मे शृगारचरित सरफराज चन्द्रिका अवधूतभूषण समुरारि पचीसी तथा नखशिख आदि का उल्लेख मिलता है। इन ग्रथो मे से

शृगारचरित के अतगत कवि ने नायक-नायिका भेद भाव विभाव अनुभाव सात्विक भाव तथा सचारी भाव विवेचन काव्य-गुण निरूपण काव्य-वृत्ति निरूपण शब्दाय निरूपण एव अलकार विवेचन प्रस्तुत किया है। सरफराज चद्रिका नामक ग्रथ म कवि ने अलकार शास्त्र का विवेचन किया है। अवधूतभूषण नामक रचना भी अलकार विषयक ही है। समुरारिपचीसी एक शृगारिक काव्य है। इनका काव्य माधुर्य तथा लालित्य आदि गुणो से युक्त होने पर भी कही कही पाडित्य प्रदशन के कारण दुरूह हो गया है। इनकी एक रचना उदाहरणाथ नीचे प्रस्तुत की जा रही है

मोतिन की माल तारि चीर सब चारि डार
फेरि कै न जहों आली दुख विकरार हैं।
देवकीनदन कहै चोखे नाग छौनन के
अलक प्रसून नोचि नोचि निखार हैं॥
मानि मुख चद भाव चोच दई अधरन
तीनो ये निकुजन मे एक तार तार हैं।
ठौर ठौर डोलत मराल मतवारे तैसे
मोर मतवारे त्यो चकोर मतवारे हैं॥

बानराय—

कविवर बानराय जिला रायबरेली के अन्तगत डलियामऊ नामक ग्राम के निवासी थे। इनके पिता निहालराय तथा मामा चन्द्र बन्दीजन थे। यह दलेल सिंह नामक एक जमादार के आश्रय म रहते थे। उसी के नाम पर इन्होने दलेलप्रकाश नामक एक ग्रथ की रचना की है। इस ग्रथ म कवि ने रस विवेचन काव्य गुण विवेचन काव्य दोष विवेचन तथा अलकार निरूपण आदि विषयो का समावेश किया है। इनकी रचना का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

कलुष हरनि सुख करनि सरन जन
बरनि बरनि जस कहत धरनिधर।
कलिमल कलित कलित अघ खगगन
लहत परमपद कुटिल कपटतर॥
मदन कदन सुरसदन बदन ससि
अमल नवल दुति भजन भगतवर।
सुरसरि तव जल दरस परस करि
सुरसरि सु भाति लहत अधम नर॥

बेनी बदीजन—

बनीबन्दीजन जिला रायबरेली के अन्तगत बती नामक ग्राम के निवासी थे। यह महाराज टिकैतराम के आश्रय म रहते थे। इन्होने टिकैतराम प्रकाश नामक ग्रथ की रचना उन्ही के आश्रय म रहते हुए की थी। यह ग्रथ अलकार निरूपण सम्बधी

से भी उल्लिखित किया जाता है। इसमें रति का आकार निरूपण प्रस्तुत किया है। रसविलास नामक ग्रन्थ में कवि ने रस निरूपण के साथ साथ नायक नायिका भेद भी प्रस्तुत किया है। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त कवि का लिखा हुआ एक अन्य ग्रन्थ गंगालहरी नाम से भी बताया जाता है। कवि के कुछ भड़ौवे भी मिले हैं जिनका एक संग्रह भड़ौवा संग्रह नाम से प्रकाशित हुआ है। यह व्यंग्य काव्य है। बेनी बन्दीजन के काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

घर घर पाद पाट बाद बाद ठाट ठट
चला और चुचना फिर चला निज आगणाग।
कविन सा बाद कर भेद बिन नाद करै
महा उनमाद मद धरम करम नाश ॥
बेनी कवि कहैं बिभिचारिन का बादशाह
अतन प्रकाशत न सतन सरम नास।
ललना ललक नैन मन की झलक
हंसि हरत अलक रद पलक पलकदास ॥

पद्माकर—

रीतियुगीन आलंकारिक कवियों की परम्परा में पद्माकर का नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है। इनका जन्म सन १७८३ में हुआ था। इनके पिता का नाम मोहन लाल भट्ट था। जाति के यह तैलंग ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज कवि थे इसलिए इनके वंश का नाम कवीश्वर पड़ गया था। यह अनेक राज्याश्रयों में रहे थे और बहुत सम्पन्न थे। इनके आश्रयदाताओं में विशेष रूप से नागपुर के महाराज रघुनाथराव अप्पासाहब, पन्ना के महाराज हिंदूपति, जयपुर के महाराज प्रतापसिंह, सुगरा के नोने अर्जुनसिंह, गोसाईं अनूपगिरि (उपनाम—हिम्मत बहादुर) उदयपुर के महाराज भीमसिंह ग्वालियर के महाराज दौलतराव सिंधिया आदि मुख्य हैं। पन्ना के महाराज तथा जयपुर के महाराज ने इन्हें कविराजशिरोमणि की उपाधि तथा जागीर भी प्रदान की थी। कहा जाता है कि सितारा के महाराज रघुनाथराव ने इन्हें एक लाख रुपया एक हाथी तथा दस गांव भी प्रदान किये थे। भगवन्त सिंह भी इनके आश्रयदाता बताये जाते हैं। पद्माकर की मुख्य कृतियों में हिम्मतबहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगत विनोद, प्रबोधपचासा, गंगालहरी, रामरसायन, भाषा हितोपदेश, ईश्वरपचीसी, आलिजाह प्रकाश तथा प्रतापसिंह विरुदावली आदि हैं। इनमें से हिम्मतबहादुर विरदावली वीर रस प्रधान काव्य है। जगत विनोद में रस विवेचन हुआ है। पद्माभरण में अलंकार विवेचन किया गया है। प्रबोधपचासा, गंगालहरी तथा रामरसायन काव्य भी अपनी मधुर कल्पना तथा कलात्मकता के कारण महत्वपूर्ण हैं।

पदमाकर ने सरस भाषा में रस वर्णन, ऋतु वर्णन, शृंगार वर्णन आदि प्रस्तुत किया है। मुख्यतः सौन्दर्य और प्रेम के कवि होने के कारण उनके काव्य में भी इन्हीं

विषयों की प्रधानता है। जो भक्ति काव्य पद्माकर ने लिखा उसमें भी शृङ्गारिक काव्य की भाँति रसात्मकता विद्यमान है। छन्द विधान के क्षेत्र में पद्माकर को विशेष रूप से सफलता मिली है। उन्होंने छप्पय, हरिगीतिका, हाकल, डिल्ला, भुजंगप्रयात, त्रिभंगी, पद्धरी, नाराच, दोहा, चौपाई, सोरठा, चौपाया, कवित्त और सवैया आदि छन्दों का प्रयोग किया है। मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग ने पद्माकर की कोमलकान्त पदावली से युक्त भाषा को व्यावहारिकता प्रदान की है। पद्माकर के काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

आनन के प्यारे तन ताप के हरन हार
नन्द के दुलारे ब्रजवारे उमहत हैं।
कहै पद्माकर उरझे उर अन्तर यों
अन्तर चहू हू तें न अन्तर चहत हैं।
नैननि बसे हैं अंग अंग हुलसे हैं
रोम रोमनि रसे हैं निकसे हैं को कहत हैं।
ऊधौ वे गोविन्द कोऊ और मथुरा में
यहाँ मेरे तो गोविन्द मोहि मोहि में रहत हैं॥

— —

मोहि तजि मोहन मिल्यो है मन मेरो दौरि
नैन हू मिले हैं देखि देखि साँवरो सरीर।
कहै पद्माकर त्यों तान मये कान भये
हौं तो रही जकि थकि भूली सी भ्रमी सी बीर।
ये तो निरदई दई इनको दया न दई
ऐसी दसा भई मेरी कैसे धरौं तन धीर।
हौं तो मन हू के मन नैनन के नैन जो पै
प्रानन के प्रान तो पै जानते पराई पीर॥

— —

जाहिर जागत सी जमुना
जब बूड़ै बहै उमहै वह बेनी।
त्यों पद्माकर हीर के हारन
गंग तरंगन को सुख देनी।
पायन के रंग सों रंगि जात सी
भाँति ही भाँति सरस्वति सेनी।
पैरे जहाँ ई जहाँ वह बाल
तहाँ तहाँ ताल में होत त्रिबेनी॥

— —

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में
        क्यारिन में कलिन कलीन किलकंत है।
कहै पदमाकर परागन में पौन हू में,
        पानन में पीक में पलासन पगंत है।
द्वार में दिसान में दुनी में देस देसन में
        देखो दीप दीपन में दीपत दिगंत है।
बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में
        बनन में बागन में बगरो बसंत है॥

ग्वाल कवि—

ग्वाल कवि का जन्म सन १७९२ में हुआ था। ग्वाल कवि सेवाराम बंदीजन के पुत्र थे। यह वृन्दावन के रहने वाले थे। कुछ विवरणों के आधार पर इनके पिता का नाम मुरलीधर राव भी बताया जाता है। इनके गुरु दयाल जी थे। इनके दो पुत्र खूबचंद या रूपचंद तथा खेमचंद थे। इनके आश्रयदाताओं में नाभा नरेश महाराज जसवंत सिंह तथा महाराणा रणजीतसिंह प्रमुख थे। ग्वाल की लिखी हुई पुस्तकों में यमुना लहरी, रसिकानंद, हमीरहठ, राधामाधव मिलन, राधा अष्टक, श्रीकृष्णजी को नखशिख, नेह निबाह, बंशी लीला, गोपी पच्चीसी, कुब्जाष्टक, कवि दर्पण, साहित्यानंद, रसरंग, अलंकार भ्रम भंजन, प्रस्तारप्रकाश, भक्ति भावन अथवा भक्तभावन, साहित्यभूषण, साहित्यदर्पण, दोहा शृंगार, शृंगारकवित्त, दूषणदर्पण, कवित्तबसंत, बंशीबीसा, ग्वालपहेली, रामाष्टक, गणेशाष्टक, दृगशतक, कवित्त प्रथमाला, कविहृदयविनोद, इश्क लहर दरियाव, विजय विनोद तथा षटऋतुवर्णन आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें कवि ने विविध काव्यांगों का विवेचन करने के साथ साथ भक्ति शृंगारमयी कविता भी लिखी है। इनकी रचनाओं के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

मीन मृग खंजन खिसान भरे मैन बान
        अधिक गिलान भरे कंज कल ताल के।
राधिका छबीली की छहर छबि छाक भरे
        छलता के छोर भरे भरे छबि जाल के।
ग्वाल कवि आन भरे सान भरे स्यान भरे
        स्यान भरे कछु अलसान भरे मान के।
लाज भरे लाग भरे लोभ भरे लाभ भरे
        लाली भरे लाड भरे लोचन हैं लाल के।

— —

सीरे सीरे नीर भये न दिन के तीर तीर
        सीरे भये चीर धरा सीरी सब परि गई।

दमहू दिसा तें दिन राज लागी कुहुयान
 पौन सरसान लाऊ तीर सो निकरि गई।
'ग्वाल' कवि एक या हिमत मन आव क्यों
 सो तुम्हें न दाप सलमत औरें अरि गई।
मूर्ख गय फूल थौर उड़ि गय भ्रमर
 भाम की कमान का कमान सी उतरि गई॥

प्रतापसाहि—

रीतिकालीन आचार्यों की अन्तिम कड़ी के रूप में प्रतापसाहि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका रचना-काल सन् १८२४ से लेकर १८ ४ तक था। इनके पिता रतनसेन बन्दीजन थे। यह मुख्य रूप से महाराज छत्रसाल परनापुरन्दर तथा महाराज विक्रमसाहि के राज्याश्रय में रहे थे। इनकी लिखी हुई रचनाओं में व्यंग्यार्थ कौमुदी अथवा विनोद कौमुदी काव्यविलास जयसिंह प्रकाश शृंगारमंजरी शृंगारशिरोमणि, अलंकारचिंतामणि काव्यविनोद जुगल-नखशिख रसचन्द्रिका भाषाभूषण की टीका रसराज की टीका, बिहारी सतसई की रत्नचन्द्रिका टीका, नखशिख की टीका आदि हैं। इस प्रकार से प्रतापसाहि मौलिक कवि काव्य-पंडित तथा टीकाकार थे। प्रतापसाहि ने अपने ग्रन्थ काव्यविलास में काव्य-स्वरूप का निरूपण किया है। उन्होंने काव्य के तीन भेद सम्भूत वृत्ति और सम्भाव बताये हैं। उनके विचार से काव्य के सारा पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति होती है और इनके श्रवण करते यथावबोध होते और बनने करते समय सुख मिलता है। ध्वनि निरूपण करते हुए प्रतापसाहि ने बताया है कि काव्य के तीन भेद उत्तम मध्यम और अधम का आधार ध्वनि की विभिन्न स्थितियाँ हैं। उन्होंने गुणीभूत व्यंग्य का विषय वहाँ माना है जहाँ व्यंग्यार्थ का चमत्कार वाच्यार्थ के चमत्कार की अपेक्षा अधिक न हो अथवा उसके सदृश हो। रस विवेचन के प्रसंग में प्रतापसाहि ने बताया है कि विभाव अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से अभिव्यक्त स्थायी भाव रस कहा जाता है। नायक-नायिका भेद भी प्रतापसाहि ने प्रस्तुत किया है। आचार्य प्रतापसाहि के काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

चाँदनी महल बैठ्यो चाँदनी फरस
 छत्र चाँदना बिछाय छवि चाँदनी रचि रही।
कहै छवि कुन्दरि जहाँ तिनि समाज बीच
 बैन ते चारता बिरह का चित्रै रही।
कहै परकुँवर आय मोहन रसाल स्याम,
 नग सिर धरि करि आनन छिपै रही।
सुघर बिचारि कलानिधि का निहारि

मनुहारि नरि रि मुग पीतम ि ी रही॥

— —

मोचति ही ननजन रैन ि ासा ि ही
गमुति सरोरा मा मो मुग धरिवो।
टूटिगा मुमन सम छूटिमा स ि ा मा
भूमि गरो ओर धरियार रा िन्दिवो।
कहै परताप कौन जान गई पीर
भरी भरी पीर रह्यो जी रो ण जगिवो।
का सा कही ही दुख प्यार निज प्यारो माहि
जागत न नीदो निति मिनिरा विन्दिवो॥

— —

चवर चपना चा नमरा चाग जार
नमि नूमि पुरवा धर्नि परसत है।
सीतल समीर नम टूग्न वियागि हू
मयागि हू समाज सुखमाज सरसत हैं।
कहै परताप अति निविड अधरा माह
मारग चलन नाहि नमु दरसत हैं।
घमण्डि घनानि चहू धा त उमडि आज
धाराधर धारन अपार बरसत है॥

रसिक गोविन्द—

रसिक गोविन्द जयपुर के निवासी थे। इनका वास्तविक नाम गोविन्द था। रसिक इनकी उपाधि थी। इनका रचना काल सन १७९३ से लेकर १८३३ तक अनुमानित किया जाता है। इनके पिता का नाम सालिगराम तथा माता का नाम गुमाना बताया जाता है। कवि ने अपने चाचा मोतीराम और भाई बालमुकुन्द का उल्लेख भी किया है। कहा जाता है कि बालमुकुन्द के पुत्र नारायण के लिए इन्होंने रसिकगोविन्दानन्दघन नामक पुस्तक की रचना की थी। अपने परिवार की आर्थिक दुरावस्था से क्लेश पाकर यह वृन्दावन चले गये जहां इन्होंने निम्बार्क-सम्प्रदाय के आचार्य सर्वेश्वर शरण देव का शिष्यत्व ग्रहण किया। इनके लिखे ग्रन्थों में अष्टदेशभाषा पिंगल समय प्रबंध रामायण सूचनिका अथवा ककहरा रामायण युगलरस माधुरी लछमन चन्द्रिका कलिजुगरासो तथा 'रसिकगोविन्द' आदि मुख्य हैं। इन ग्रन्थों में कवि ने शृंगार तथा भक्ति काव्य के साथ साथ शास्त्र विवेचन भी प्रस्तुत किया है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

आनंद सों मन्द मन्द धरा प धरति पाय
भीतर तें बाहिर न आव नित चाय क।

रावति दृगनि छिन छिन प्रति लाज साज
    बहुत हँसी की मीनी बानि बिसराय के।
बोलति बचन मृदु मधुर बनाय, उर
    अंतर के भाव की गँभीरता जनाय के।
बात सखी सुन्दर गोविन्द की कहात तिहूँ
    सुन्दरि बिलोर बर मधुरा बनाय के॥

अन्य कवि—

रीति युगीन शृंगार काव्य की परम्परा में उपर्युक्त प्रमुख कवियों के अतिरिक्त अन्य भी अनेक कवि हुए हैं जिन्होंने इस प्रवृत्ति के विकास में अपना योग दिया है। इन कवियों में बेनी, जसवन्त सिंह, मंडन, राम, नवाज, चन्द्रनाथ कवीन्द्र, वीर, कृष्ण, रसिक सुमति, गंजन, अली मुहिब, तोषनिधि, दलपति, बंशीधर, कुमार मणि, रघुनाथ, शिवसहाय दास, रूपसाहि, ऋषिनाथ, बैरीसाल, दत्त, हरिनाथ, मनिराम, रामसिंह, यशोदानन्दन, करन, गुरुदीन तथा ब्रह्मदत्त आदि हैं। इनमें से सभी ने स्वतन्त्र शृंगार काव्य की रचना की थी। महाराज जसवन्त सिंह ने भाषा भूषण, अपरोक्ष सिद्धान्त, अनुभवप्रकाश, आनन्द विलास, सिद्धान्तसार तथा प्रबोध चन्द्रोदय नाटक की रचना की। इनकी सब कृतियाँ इकट्ठा विचार कोश में भी उल्लिखित की जाती हैं। इन्होंने अपने भाषाभूषण नामक ग्रन्थ में अलंकार निरूपण प्रस्तुत किया है। जसवन्त सिंह नाम से ही एक और कवि हुए हैं जिन्होंने 'शृंगारशिरोमणि' शालिहोत्र आदि ग्रन्थों की रचना की थी। कवि मंडन बुन्देलखण्ड के निवासी थे और राजा मंगल सिंह के आश्रय में रहते थे। इन्होंने जनकपचीसी, रस रत्नाकर, पुरन्दर माया, जानकी जू को ब्याह, शृंगारकवित्त, बारामासी, नयन पचासा तथा रस विलास नामक ग्रन्थों की रचना की थी। इन्होंने मुख्यतः रस विवेचन तथा नायिका भेद प्रस्तुत किया है। राम कवि का जन्म संवत् १७०३ में हुआ था। इन्होंने शृंगार सौरभ तथा हनुमान नाटक की रचना की थी। शृंगार सौरभ में राम कवि ने नायिका भेद प्रस्तुत किया है। नवाज कवि महाराज छत्रसाल के आश्रय में रहते थे। उन्होंने शकुन्तला नाटक की रचना की थी। चन्द्रनाथ कवीन्द्र ने रस चन्द्रोदय, विनोद चन्द्रिका तथा जोग लीला नामक कृतियों की रचना की थी। वीर कवि ने अपने कृष्ण चन्द्रिका नामक ग्रन्थ में रस विवेचन और नायिकाभेद प्रस्तुत किया है। कृष्ण कवि ने महाराजा जयसिंह के मंत्री राजा आयामल्ल के आश्रय में रहकर बिहारी सतसई की टीका लिखी। रसिक सुमति ने अलंकार चन्द्रोदय नामक ग्रन्थ में अलंकार विवेचन प्रस्तुत किया है। गंजन कवि ने कमरुद्दीन खाँ हुलास नामक ग्रन्थ में रस तथा षट्ऋतु वर्णन प्रस्तुत किया है। अली मुहिब खाँ (उपनाम-प्रीतम) ने खटमलबाईसी नामक कृति की रचना की। दलपतिराय तथा बंशीधर ने उदयपुर के महाराणा जगतसिंह के नाम पर अलंकार

रत्नाकर नामक ग्रंथ की रचना की। कुमार मणि भट्ट ने रसिकरसाल नामक रीति ग्रंथ रचा। शंभुनाथ मिश्र नाम के तीन कवि उल्लिखित किए जाते हैं। इनमें से प्रथम ने रसकल्लोल, रस तरंगिणी तथा अलंकार दीपक नामक कृतियों की रचना की है। शिवसहायदास ने शिव चौपाई तथा लोकोक्तिरसकौमुदी नामक ग्रंथ रचे। रूपसाहि ने संवत् १८१३ में रूपविलास नामक ग्रंथ में पिंगल विवेचन, शृंगार विवेचन तथा नायिका भेद प्रस्तुत किया है। ऋषिनाथ दीवान सदानंद और रघुबर कायस्थ के आश्रय में रहते थे। इन्होंने अलंकार मणि मंजरी नामक ग्रंथ रचा। बैरीसाल ने अलंकार शास्त्र विषयक भाषाभरण नामक ग्रंथ की रचना की थी। दत्त कवि ने चरखारी के महाराज खुमानसिंह के आश्रय में रहकर लालित्य लता नामक अलंकार ग्रंथ की रचना की थी। नाथ अथवा हरिनाथ कवि ने अलंकार शास्त्र विषयक अलंकार दर्पण नामक ग्रंथ संवत १८२६ में लिखा था। मनिराम मिश्र ने छंदछप्पनी तथा आनंद मंगल नामक कृतियों की रचना की थी। महाराज रामसिंह ने अलंकार दर्पण, रस निवास तथा रस विनोद नामक कृतियों में रस विवेचन, अलंकार निरूपण तथा नायिका भेद प्रस्तुत किया है। बेनी प्रवीन ने नवरसतरंग, शृंगार भूषण तथा नानारावप्रकाश नामक ग्रंथों की रचना की थी। करन यशोदानन्दन ने बरवैनायिका भेद नामक ग्रंथ की रचना की थी। करन कवि ने साहित्यरस और रस कल्लोल नामक ग्रंथों में ध्वनि विवेचन, रस विवेचन तथा काव्य के गुण दोष का विवेचन किया है। गुरुदीन पांडे ने बागमनोहर नामक ग्रंथ में काव्य शास्त्र विवेचन प्रस्तुत किया है। कवि ब्रह्मदत्त ने विद्वद्विलास तथा दीपप्रकाश नामक रीति ग्रंथों की रचना की थी। इन सभी कवियों की रचनाओं का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

छहरैं सिर पै छवि मोरपखा उनकी नथ के मुकुता थहरैं।
फहरै पियरो पट बेनी इतै उनकी चुनरी के झबा झहरैं॥
रसरंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहैं लहरैं।
नित ऐसे सनेह सों राधिका स्याम हमारे हिए में सदा बिहरैं॥ (बेनी)

— —

अलंकार अत्युक्ति यह बरनत अतिशय रूप।
जाचक तेरे दान तें भए कल्पतरु भूप॥

— —

पर्यस्त जु गुन एक को और विषय आरोप।
होइ सुधाधर नाहिं यह बदन सुधाधर आप॥ (जसवंत सिंह–प्रथम)

— —

घनन के घोर, सोर चारों ओर मोरन के

अति चितचार तस अकुर मुन रहै।
काकिलन कूक हूक हाति विरहीन हिय
चुक स लगत चीर चारन चन रहैं॥
झिल्ली झनकार तसो पिकन पुकार डारी,
मारि डारा डारा द्रुम अकुर मुन रहैं।
सुन रहैं प्रान प्रानप्यार जसवत बिनु
कार पीर नार ऊचे बान्दर उन रहैं॥ (जसवत सिंह-द्वितीय)

— — —

भलि हौं तो गइ जमुना जल को सो कहा कहौ वार बिपत्ति परी।
घहराय क कारी घटा उनई इतनइ म गागरि सीस धरी॥
रपट्यो पग घाट चढ्यो न गयो कवि मडन ह्व क बिहाल गिरी।
चिर जीवहु नद को बारो जरी गहि बाह गरीब न ठाढ़ी करी॥ (मडन)

— — —

उमडि घुमडि घन छोडत अखड धार
चचला उठति ताम तरजि तरजि क।
विरही पपीहा मक पिक धग टरत हैं
धुनि सुनि प्रान उठ लरजि लरजि क॥
कहै कवि राम लखि चमक खद्योतन की
पीतम को रही मैं तो बरजि बरजि क।
लाग तन तावन बिना री मनभावन क
सावन दुवन आयो गरजि गरजि क॥ (राम)

— —

आग तो कीन्हो लगालगी लायन, कस छिपै अबहू जो छिपावति।
तू अनुराग को साथ कियो ब्रज की बनिता सब यो ठहरावति॥
कौन सकोच रह्यो है नवाज जो तू तरस उनहू तरसावति।
बावरी जो पै कलक लग्यो तो निसक ह्वै क्यो नहि अक लगावति॥ (नवाज)

— — —

गहर मजार हो पहर एक लागि कहै
छोर पै नगर क सराय है उतार की।
कहा कवि मग माग हो परगो गाम
खबर उडानी है बटोही द्वार मार की॥
घर क हमार परदेस को सिधार
याते दया क बिचारी हम रीति राह बार की।
उतरो नदी क तीर बर क तर ही तुम

जोरो जंग जोरी तहां हाहन्ह हमारे की ॥ (उदयनाथ कवीन्द्र)

— —

अह बन्त और परत बिमान बानु
कोर को हिया है हरे सामन जो दग को
प्रबल प्रचंड तिमिचर फिर आग
धूरि नाहन मिनाग स्रवत अध मुख रो ॥
चमर समरभूमि बरछी महन पन
कहन पुकार नव अरु दीह दुख को ।
बलकि बकरि बोल बीर रघुबर धीर
महि पर मीडि मारा आज दसमुख को ॥ (बीर)

— — —

छबि सो फबि सीस किरीट बन्यो रुचिसार हिए बनमाल लसै ।
कर कंजहि मंजु रली मुरली कछनी कटि चारु प्रभा बरसै ॥
कबि कृष्ण कहै लखि सुंदर मूरति यों अभिलाष हिए सरसै ।
वह नंदकिसोर बिहारी सदा यहि बानिक मो हिय माहि बसै ॥ (कृष्ण कवि)

— — —

प्रत्यनीक अरि सों न बस अरि हितूहि दुख देय ।
रवि सों चलत न कंज की दीपति ससि हरि लेय ॥ (रसिक सुमति)

— — —

मीना के महल जरबाफ दर परदा है
हलबी फनूसन में रोसनी चिराग की ।
गुलगुली गिलम गरकआब पग होत
जहां बिछी मसनद लालन के दाम की ।
केती महताबमुखी खचित जवाहिरन
गजन सुकबि कहै बौरी अनुराग की ।
एतामदुदौला कमरुद्दीन खां की मजलिस
सिसिर में ग्रीषम बनाई बड़ भाग की ॥ (गजन)

— —

जगत के कारन करन चारो बदन के
कमल में बस के सुजान ज्ञान धरिकै ।
पोषन अवनि दुख सोषन तिलोकन के
सागर में जाय सोए सेस सेज करिकै ।
मदन जरायो जो सहार दृष्टि ही में सृष्टि
बसे हैं पहार दऊ भाजि हरबरि कै ।
बिधि हरि हर, और इनते न कोऊ, तऊ,

घाट प न साच घटमनन को उरिव ॥ (अलीमुहिब खा प्रीतम)

— —

अरुन हरोन नभ मडन मुलक पर,
सतया अवव चक्रवति ठानि व किन्नि वार ।
आवत हो सावन नक्षत्र नाय धाय धाय
धार घममान करि काम आग ठौर ठौर ॥
धसहर सन भयो सटक्यो सहमि ससो
जामिन नूर जाय गिरे नदरन ओर ।
दुद दवि अरविंद बदोयान तैं भगान
पायक पुनि व मनि मकरन्द धार ॥

(दलपतिराय और बंशीधर)

— — —

गाव बधू मधुर सुर गावन प्रीतम सग न बाहिर आइ ।
छाई कुमार नई छिति म छवि माना बिछाइ नई नरियाइ ॥
ऊष अगा चढ़ि दवि चहू दिशि बादि या बाल गरी मरि आइ ।
कधी करौं हहर हियरा हरि आग नहा नही हरिआइ ॥

(कुमार मनि भट्ट)

— — —

आजु चतुरग महाराज सन साजन ही
धोंसा की धुकार धुरि परी मह माहा न ।
भय क अजागन तें भारत उजार भग
भूत उगी र न अमार जाही थाहा न ।
बार पत बान बरछी न बिरनाला न्ड
धारन न रह्यो नभ मीन हू उिगाही न ।
भूप भगवन्त बार ग्वाहा न यनर सब
स्याहा साइ बन्न समान गातमाहा न ॥

(रामनाथ मिश्र)

— — —

करो रुखाई नाहिन बाम । बगिहि ल आऊँ घनश्याम ॥
कहै पयानो करि अनुराग । बाबा ठाउ कि बूनयो राग ॥
बोल निरन्र दिया बिनु शाम । आजुहि तिय बठा गहि रम ॥
कहै पयाना अहि गहि मान । बन न बूदा कूनी गान ॥

(शिवसहाय दास)

— — —

जगमगाति सारी जरी झलमल भूषन ज्योति ।
भरी दुपहरी तिया की भेंट पिया सों होति ॥
लालन चलि चलो न क्यों ? बिना तिहारे बात ।
मार मरोरनि सों मरति करिए परसि निहाल ॥ (रूपसाहि)

— — —

छाया छत्र ह्वै करि करति महिपालन को
पालन को पूरो फैलो रजत अपार ह्वै ।
मुकुत उदार ह्वै लगत सुख श्रौनन में
जगत जगत हंस हास हीरहार ह्वै ॥
'ऋषिनाथ' सदानंद सुजस बिलंद
तमवृंद के हरैया चंद्रचंद्रिका सुढार ह्वै ।
हीतल को सीतल करत घनसार ह्वै
महीतल को पावन करत गंगधार ह्वै ॥ (ऋषिनाथ)

— —

नहिं कुरंग नहिं ससक यह नहिं कलंक नहिं पंक ।
बीस बिसे बिरहा दही गड़ी दीठि ससि अंक ॥
करत कोकनद मदहिं रद तुव पद हर सुकुमार ।
भए अरुन अति दबि मनो पायजेब के भार ॥ (परोसाल)

— —

ग्रीषम में तपै भीषम भानु गई बनकुंज सखान की भूल सों ।
घाम सों बामलता मुरझानी बयारि करै घनस्याम दुकूल सों ॥
कंपत यों प्रगटयो तन स्वेद उरोजन दत्त जू ठोढ़ी के मूल सों ।
द्वै अरबिंद कलीन पै मानो गिरै मकरंद गुलाब के फूल सों ॥ (दत्त)

— —

तरुनी लसति प्रकास तें मालति लसति सुबास ।
गोरस गोरस देत नहिं गोरस चहति हुलास ॥ (नाथ)

— —

भोर ही न्योति गई तो तुम्हैं वह गोकुल गाँव की ग्वालिनि गोरी ।
आधिक राति लौं बेनी प्रबीन कहा ढिग राखि करी बरजोरी ॥
आवै हँसी मोहिं देखत लालन भाल में दीन्हीं महावर घोरी ।
एते बड़े ब्रजमंडल में न मिली कहुँ माँगेहु रंचक रोरी ॥ (बेनी प्रबीन)

— —

अहिरिनि मन के गहिरिनि उतरु न देइ ।
नैना करे मथनिया मन मथि लेइ ॥

तुरकिनि जाति हुरकिनी अति इतराइ।
छुवन न देइ इजरवा मुरि मुरि जाइ॥

पीतम तुम कच लाग्या, हम उजवारि।
छारत के अमि जारिया फिरी अकवारि॥ (यशोदा नन्दन)

— —

बदति होत गात विपिन समाज देखि,
हरी हरी भूमि हरि हिया तरजतु है।
एते पै करत धुनि नदनि मयूरन की
चातक पुकारि तेह ताप सरजतु है॥
निपट चवाई भाई बधु जे बसत गाव,
दांव पर जानि कै न काऊ बरजतु है।
अरज्यो न मानी तू न गरज्यो चलत बार
एरे घन बैरी अब काहे गरजतु है। (करन कवि)

— — —

मुखससी ससि दून कला धरे। कि मुक्तागन जावक में भरे॥
ललित कुन्दकली अनुहारि के। दसन हैं वृषभानु कुमारि के॥
सुरंग जब कि भाग सुहाग के। ललित मंत्र कियौ अनुराग के॥
भ्रुकुटि या वृषभानु सुता लसे। जनु अनंग सरासन को हँसे॥
मुकुर तौ पर दम्पति को घना। ससि कलंकित राहु बिथा घना॥
अपर ना उपमा जग में रहे। तब प्रिया मुख के सम को कहे?

(गुरदीन पाण्डे)

महत्व—

इस प्रकार से हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीति युग के अन्तर्गत शृंगार काव्य की नई पुष्ट परम्परा का विकास हुआ। जैसा कि उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है अनेक उत्कृष्ट कवियों और काव्य शास्त्रियों ने इस प्रवृत्ति के विकास में योग दिया। इन्होंने जहाँ एक ओर संस्कृत के काव्य शास्त्रीय सिद्धान्तों के अनुकरण पर लक्षण ग्रन्थों की रचना की वहाँ दूसरी ओर रचनात्मक क्षेत्र में मौलिकता का भी परिचय दिया। इस युग के राज्याश्रित कवियों ने अपने आश्रयदाताओं से मान सम्मान पाकर उनको प्रसन्न करते हुए जो काव्य लिखा वह मात्र चारण साहित्य नहीं है। संस्कृत-साहित्य में प्रचलित रस-सम्प्रदाय अलंकार-सम्प्रदाय ध्वनि-सम्प्रदाय रीति-सम्प्रदाय तथा वक्रोक्ति-सम्प्रदाय को आधार बनाकर हिन्दी रीति शास्त्र का निर्माण हुआ। संस्कृत के कुछ साम्प्रदायिक सिद्धान्तों को तो हिन्दी के रीतियुगीन आचार्यों ने विस्तार से अपने साहित्य में विवेचित किया और कुछ को छोड़ दिया। अलंकार रस और ध्वनि सम्प्रदाय के सिद्धान्त इनके काव्य में विभिन्न विवेचना सहित उपलब्ध होते हैं यद्यपि

रीति और वक्रोक्ति सिद्धान्तों से सम्बन्धित तत्व निरूपण इस काल में नहीं मिलता। अलंकार सम्प्रदाय के अन्तर्गत जसवंत सिंह, भूषण, रसिक सुमति, गोविन्द, बैरीसाल, गोकुलनाथ, पद्माकर, लछिराम, कविराज मुरारिदास आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। रस सम्प्रदाय को प्रश्रय देकर शास्त्रीय ग्रंथ रचना करने वालों में मुख्य चिन्तामणि, तोष, मतिराम, कुमार मणिभट्ट, रसिक रसाल, रसलीन, रूपसाहि, सोमनाथ, उजियारे, रामसिंह, रसिक गोविन्द, ग्वाल आदि मुख्य हैं। ध्वनि सम्प्रदायविषयक तत्वों का विवेचन करने वालों में कुलपति, देव, सुरति मिश्र, कुमार मणिभट्ट, श्रीपति, सोमनाथ, भिखारीदास, प्रताप सिंह आदि हैं। इन कवियों ने शास्त्र निरूपण करने के साथ साथ अपनी मौलिक काव्य प्रतिभा का भी परिचय दिया है जिससे इस काव्य प्रवृत्ति को समृद्धि मिली।

—)०(—

अध्याय : १०

रीति युगीन वीर-काव्य की प्रवृत्ति

हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीति युग के अन्तर्गत सामान्यतः शृंगारिक कविता की प्रवृत्तियाँ ही विकसित हुई समझी जाती हैं। परन्तु यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि रीतिकाल में वीर रस की काव्य-धारा भी विशेष रूप से विकासमान रही। इस युग की काव्यात्मक उपलब्धियों तथा प्रभावोत्पादकता आदि की दृष्टि से भी रीति युग का वीर काव्य अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। मूलभूत रूप में वीर काव्य की प्रवृत्ति आदि युग से आरम्भ हुई परन्तु भक्ति तथा रीति युगों में भी यह अजस्र रूप से विकसित होती रही। मौलिकता तथा उत्कर्ष की दृष्टि से रीतिकालीन वीर काव्य यद्यपि इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है तथापि तत्युगीन काव्य प्रवृत्तियों के सन्दर्भ में इसका विशिष्ट स्थान है। रीतिकाल में प्रधान काव्य प्रवृत्ति शृंगारिक होने के कारण अन्य प्रवृत्तियों को बहुत कम कवियों ने प्रश्रय दिया। फिर भी शृंगार के बाद दूसरा स्थान वीर रस का ही रहा। इस युग के जिन कवियों ने वीर रस का वर्णन किया है उनमें से अधिकांश ने अपने आश्रयदाताओं की स्तुति में उनकी दानशीलता वीरता तथा पराक्रम आदि का वर्णन किया है। यथार्थतः इस काव्य में औपचारिकता और कृत्रिमता अधिक होने के कारण इसका महत्त्व कम हो जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि कुछ अंशों में यह कविता युद्ध तथा मात्र प्रशस्तिपरक के रूप में होने के कारण भी जनता में अधिक आदर न पा सकी। इसके विपरीत भारतीय जनता ने उस काव्य का स्वागत किया जिसमें वर्णित प्रतिष्ठित जन उन भावनाओं के प्रति भी जो पहले से ही उनके आदर के पात्र थे। इस दृष्टि से शिवाजी, छत्रसाल तथा हम्मीर आदि वर्णित काव्य मानक बने हैं जिनकी पूर्ण गाथा का वर्णन करने वाले वीर काव्य जन काव्य के रूप में लोकप्रियता प्राप्त कर सके हैं। नीचे रीति काल के प्रमुख वीर-कवियों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण उपस्थित किया जा रहा है।

भूषण—

भूषण के जीवन-परिचय के सम्बन्ध में उनके ग्रन्थों में बहुत कम सामग्री

मिलती है। उनके जन्म काल के विषय में भी विद्वानों में मतभेद है। उनका जन्मकाल
संवत् १६७० और १७०० के बीच में अनुमानित किया जाता है। ये कानपुर जिले
के तिकुवापुर गाँव के रहने वाले थे। उनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था।
उनके तीन अन्य भाई चिन्तामणि, मतिराम तथा नीलकण्ठ थे। भूषण के वास्तविक
नाम के विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती है। कहा जाता है कि चित्रकूट के राजा
हृदयराम सोलंकी ने उनकी कविता से प्रसन्न होकर उन्हें भूषण की उपाधि प्रदान की
थी। चित्रकूट के अतिरिक्त भूषण अन्य अनेक राज्याश्रयों में भी रहे थे। कुछ समय तक
वह औरंगजेब के दरबार में भी रहे थे। शिवाजी के आश्रय में रहते हुए उन्होंने शिव
राजभूषण की रचना की थी। महाराज छत्रसाल के आश्रय में भी कुछ समय तक
रहकर भूषण ने सम्मान प्राप्त किया था। कुमायूँ, पन्ना तथा बूँदी के दरबारों में भी
वह गये थे। इनके अतिरिक्त शिवाजी के पौत्र साहू जी, रीवाँ के महाराज अवधूत सिंह,
जयपुर के नरेश जयसिंह के पुत्र राम सिंह के विषय में भी भूषण ने कुछ स्फुट पद
लिखे हैं। भूषण के लिखे हुए ग्रन्थों में शिवराजभूषण, शिवाबावनी तथा छत्रसाल
दशक आदि हैं।

भूषण ने अपने आश्रयदाताओं विशेष रूप से शिवाजी और छत्रसाल आदि की
वीरता का जो वर्णन किया है वह आश्रयदाताओं के गुण-गान की प्रथा का अनुसरण
मात्र नहीं है। जिस उत्साह के साथ जनता इन दोनों वीरों का स्मरण करती थी उसी
की अभिव्यंजना भूषण ने की है। आज भी इन चरित्र नायकों का जनता में सम्मान
है और उनके साहसिक कार्यों तथा महत्वपूर्ण विजयों की कथाएँ प्रसिद्ध हैं। इनके
कीर्तियुक्त चरित्र का वर्णन करने में भूषण को कृत्रिमता तथा कल्पना की सहायता
अधिक नहीं लेनी पड़ी है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ वीर रस से परिपूर्ण और
ओजस्विनी हैं। अत्याचार और अन्याय के विरोध में हिन्दू जनता में अपने अधिकारों
की प्राप्ति के लिए एक प्रकार की राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने का प्रयत्न भूषण ने
किया। भूषण के युग में मुगल साम्राज्य की विरोधी शक्तियों का उदय हो रहा था।
जनता अत्याचारों का विरोध करने के लिए तैयार हो चुकी थी। इसी काल में दक्षिण
में मराठों की शक्ति भी प्रबल हो रही थी। यह औरंगजेब के शासन का युग था।
औरंगजेब मुगल साम्राज्य की पूर्वनीति को त्याग चुका था। उसकी कट्टर धार्मिक
नीति ने साम्राज्य विरोधी इस अग्नि को और तीव्र किया। मराठापति शिवाजी
उसके विरोध में दृढ़तापूर्वक खड़े हुए। भूषण ने उन्हीं को अपनी कविता का प्रधान
नायक चुना। शिवाजी का यह विद्रोह किसी साम्प्रदायिक भावना पर आधारित नहीं
था। वह मुसलमानों तथा उनके धर्म का आदर करते थे। भूषण हिन्दू जाति के प्रति
निधि कवि थे। उन्होंने वीर काव्य की परम्परा को रीति युग में विशेष रूप से प्रश्रय
दिया। उनका वीर काव्य इतना रसमय है कि उसको पढ़कर एक बार कायर का हृदय
भी वीरोत्साह से भर जाता है। भूषण ने सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक मत

ने अपनी प्रभावशाली कविता के माध्यम से एक क्रान्ति उत्पन्न की। भूषण ने अपने चरित नायक शिवाजी का एक आदर्श वीर के रूप में चित्रित करते हुए उनमें धनवीर युद्धवीर धर्मवीर तथा दयावीर आदि गुणों का समावेश किया है।

एक अलंकार प्रिय कवि होने के कारण भूषण ने अपने काव्य में अलंकारों को विशेष रूप से स्थान दिया है। भूषण पर प्राय यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने अलंकारों के अशुद्ध लक्षण लिखे हैं तथा अनुपयुक्त उदाहरण दिये हैं। किन्तु वस्तुत भूषण के काव्य में अलंकार योजना चमत्कार सृष्टि के साथ-साथ भावों के उत्कर्ष के लिए भी हुई है। अपने शिवराज भूषण नामक ग्रन्थ में भूषण ने १०५ अलंकारों का वर्णन किया है जिनमें ५ शब्दालंकार हैं तथा १०० अर्थालंकार हैं। ये अलंकार भूषण ने पूरे नहीं लिये। कहीं कहीं अलंकारों के भेद भी कम दिये हैं। भूषण की भाषा मिश्रित भाषा थी जिसमें ब्रज, बुन्देलखण्डी अरबी फारसी तथा अवधी आदि की शब्दावली मिलती है।

महाकवि भूषण ने अपने चरित नायक का गुणगान करते हुए लिखा है कि शिवाजी अपने शत्रुओं के लिए अग्नि के तथा मित्रों के लिए अमृत के घर अर्थात चन्द्रमा के समान इस प्रकार सुखदायक हुए जिस प्रकार लहर समुद्र के लिए कुमुदावली तथा तारों के लिए चन्द्रमा होता है। भूषण कहते हैं पृथ्वी पर बली शिवाजी निष्कण्टक के शत्रु हो गये। पृथ्वी रूपी वधू के लिए उनका तेज सिन्दूर समान तथा शृंगार की वस्तुएँ चन्दन के समान हो गया

पावक तुल्य अमितन को भयो
मित्रन को भयो धाम सुधा को।
आनन्द भी गहरो पहिले कुमुदावलि
चकरनि को अमुधा को।
लग्यो त्यों बली शिवराज भी
भूषण भाषत शत्रु सुधा को।
बन्दन तेज और चन्दन कीरति,
साज सिंगार वधू बसुधा को॥

हिन्दूपति के अद्भुत पराक्रम का चित्रण करते हुए भूषण कहते हैं कि यथा शत्रु का गर्व भंग करने में वीर शिवाजी जब युद्ध में हुंकार उठते थे तब ही मराठों के पराक्रम से हजारों म्लेच्छ मर गये। भूषण कहते हैं पठानों के रक्त की धमक से फिर भी भूमि हिल उठी। तलवारों के साथ मिलकर विजय के परचम में उमरावों के होश उड़ गये

पावस को इक वारि में वारि
महाव।। सिंध सदा नमक ते।

मारि हजारन की मारि
दस ही मरहट्टन के जमके ।।
भूधर हालि उठी गड़ भूमि
पठान समथन के धमके ।
मीरन के अवसान गए मिटि
धापनि सों चपला चमके ।।

छत्रपति का ओज वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं कि अहमदनगर के स्थान पर तलवार लेकर मोनारी खां से शिवाजी टक्कर कर भिड़ गए। इस संग्राम में कवचधारियों से कवचधारी और सवारों से सवार युद्ध में भिड़ गए। भूषण कहते हैं ऐसा घमासान युद्ध हुआ कि कहीं नहीं मालूम पड़ता था कि कौन योद्धा किस सेना से आया है। सबका वेश समान था। शिवाजी के बांके वीर हजारों मारे गए और मीर लोग आहत हुए हो पहचान जाने थे

अहमदनगर के थान किरवान लैकै
नवसेरी खान सों खुमान भिरयो बल तें।
प्यादन सों प्यादे पखरैतन पखरैत जुरे
बकतर वारे बखतर वारे हल तें।
भूषन भनत एते मान घमासान भयो
जान्यो न परत कौन आयो कौन दल तें।
सम वेष ताके तहां सरजा सिवा के बांके
वीर जाने हांके देत मीर जाने चलते ।।

भूषण ने अपने काव्य में कुछ स्थलों पर युद्ध भूमि के विस्तृत और रोमांचपूर्ण विवरण उपस्थित किये हैं। एक स्थल पर वह मरहठा पति शिवाजी द्वारा लड़े गये युद्ध का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि कहीं मुंड कटते हैं कहीं रुंड नाचते हैं और कहीं हाथियों की कटी हुई सूंड पक्षी खा जाते हैं। कहीं गिद्ध लड़ते हैं तो कहीं सिद्ध मन में आनन्द की वृद्धि से हसते हैं। कहीं भूत घूमते हुए परस्पर भिड़ते हैं तो कहीं ज्यदूत इकट्ठे होते हैं। कहीं काली नाचती है तो कहीं भूत प्रेतों की मंडली जमा होकर शोर करती है। भूषण कहते हैं शाहजी के पुत्र शिवाजी ने घमासान युद्ध करके अपना तेज प्रकट किया और तलवार के बल से बहलोल खां की अचल सेना को नष्ट किया

मुंड कटत कहुं रुंड नटत कहुं सुंड पटत घन।
गिद्ध लसत कहुं सिद्ध हसत सुख वृद्धि रसत मन।
भूत फिरत करि बूत भिरत सुरदूत घिरत तहं।
चंडि नचत गन मंडि रचत धुनि डंडि मचत जहं।

इमि ठानि घोर घमासान अति भूषन तेज कियो अटल ।
सिवराज साहिसुव खग्ग बल दलि अडोल बहलोल दल ।

शाहजी के पुत्र वीर शिवाजी के सैनिक एक सूत्र होकर जब युद्ध में प्रवृत्त होते थे तब [illegible] आरम्भ कर देते थे। उनके शौर्य का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं कि क्रुद्ध होकर सैनिक फिरते हैं, रण में भिड़ते हैं और पीछे नहीं हटते। तलवार बजते ही शत्रु-सेना के लोगों के पगड़ी से सज्जित सिर फट जाते हैं। मदमस्त हाथी भिड़ते और चोट मार कर पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। महादेव जी के गण चतुरंगिणी सेना का रक्त छक कर पीते हैं, थकते नहीं हैं। भूषण कहते हैं, शाहजी के पुत्र ने भयंकर युद्ध करके अपना सुयश अटल कर लिया और तलवार के बल से बहलोल खाँ की अचल सेना को नष्ट कर दिया

क्रुद्ध फिरत अति जुद्ध जुरत
नहिं रुद्ध मुरत भट ।
खग्ग बजत अरि बग्ग तजत,
सिर पग्ग सजत चट ।
चक्कि चलत मद मुक्कि गिरत
झुकि झुक्कि गिरत गनि ।
रत्त छकत हर गन छकत
चतुरंग थकत नहि ।
इमि ठानि घोर घमासान अति,
भूषन तेज कियो अटल ।
सिवराज साहिसुव खग्ग बल
दलि अडोल बहलोल दल ।

महाराज शिवाजी की सेनाओं के सामने कोई भी शत्रु-सेना कभी नहीं टिक सकी। उनकी शूरवीरता अद्वितीय थी। भूषण लिखते हैं कि [illegible] युद्ध में सामना करता है। जो सामने आता उसे घोर युद्ध में टुकड़े टुकड़े कर डालता। [illegible] बढ़ते हैं कि उनसे कई बार महानद का प्रवाह भर गया। भूषण कहते हैं कि हे विशालबाहु भोंसला राजा तुम्हारी तेग तलवार में सूर्य के समान तेज है। [illegible] शिवाजी तुम्हारी [illegible] के समान उजाला दे रहा है।

अरिन के दल [illegible] धार में समुहान
टूक टूक सकल के डारे घमासान मैं ।
कई बार भयो महानद परवाह पूरो,
[illegible] हाथिन के मद [illegible] मैं ।
भूषन भनत महाबाहु भौंसिला भुआल
सूर रवि सम तेज तेग [illegible] मैं ।

भार मरद्द" तुरन्त द्द र्याधि तरा
सरजा सिवाजी जस जगत बहार मैं।

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि भूषण ने हिन्दी में वीर गाथा काव्य की परम्परा को रीतिकाल में भी अक्षुण्ण रखा। उनकी वीर रस वर्णन से युक्त कविता इतनी ओजस्विनी है कि उसे पढ़कर एक बार कायर और भीरु व्यक्ति का हृदय भी उत्साह से भर जाता है। भूषण ने अपनी इसी कविता के माध्यम से सामाजिक धार्मिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में एक महान् क्रान्ति उपस्थित की थी। उनकी कविता वास्तव में बहुत प्रभावशालिनी है। इसीलिए भूषण को रीतिकाल के वीर कवियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। उनकी तुलना शृंगारी कवियों से नहीं की जा सकती। रीति युगीन तथा हिन्दी के अन्य वीर कवियों से यदि भूषण की तुलना की जाय तो उनका स्थान बहुत ऊंचा ठहरेगा।

कालिदास त्रिवेदी—

कविवर कालिदास त्रिवेदी के जीवन के विषय में प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है। यह कवि उदयनाथ कवीन्द्र के पिता तथा कवि दूलह के पितामह थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में राधामाधव मिलन बुद्ध विनोद अथवा वधु विनोद जंजीराबंध तथा कालिदासहजारा नामक ग्रन्थों का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। वधु विनोद नामक ग्रन्थ इन्होंने जम्बूनगर के नरेश जोगिजीत के लिए लिखा था। इस ग्रन्थ का विषय नायिका भेद है। यह ग्रन्थ बारवधुविनोद तथा बार वधु विनोद नाम से भी उल्लिखित किया जाता है। जंजीराबंध नामक ग्रन्थ ३२ कवित्तों का एक संग्रह है। कालिदासहजारा एक संग्रह ग्रन्थ है जिसमें २१२ कवियों के एक हजार कवित्त संकलित है। कालिदास त्रिवेदी की मुख्य रचना वधु विनोद है जिसमें ३४ छन्द मिलते है। इस ग्रन्थ में कवि ने राधा उनकी सखी वनिता के द्वारा विविध नायिकाओं का परिचय दिया है। कालिदास त्रिवेदी की काव्य रचना के दो उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

सावन की रैन मन भावन गोविन्द बिन
दैत दुख भारन मे सिल्लिन के सोर है।
कालिदास प्यारी अंधियारी मे चकित होत
उमडि उमडि घन घहरत घोर है।
सून कुंज मंदिर मे दुसरी बिसूर बैठि,
दादुर ये दहकि सी नंत चहु ओर है।
हिए मे बियोगिनी के बिरह की हूक उठी,
कूक उठी कोयल कुहुक उठे मोर है॥

— —

हिलि मिलि जोबनि मैं थाकत सरोजनि मैं,
    हियरा मैं हिलकी, दगन अँसुवार मैं।
कालिदास कहै आप कामिनी कुरंग नैनी
    दामिनी ज्यों देखी जात दमक दुआर मैं॥
आह मैं दहैगी दुख ऐसे क्यों सहैगी
    जस सीता पार सागर के रघुवर वार मैं।
नंद के कुँवर काहे बसे कहाँ पै हो जान
    छाडि वृषभानु जू की कुँवरि कुँवार मैं॥

श्रीधर ओझा—

कविवर श्रीधर ओझा का जन्म सन् १६८० में हुआ था। यह मुरलीधर के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। यह प्रयाग के निवासी और जाति के ब्राह्मण थे। इन्होंने जंगनामा, नायिका भेद, चित्र काव्य तथा भाषा भूषण नामक ग्रन्थों की रचना की थी। इनमें से जंगनामा नामक ग्रंथ में कवि ने फर्रुखसियर तथा जहांदरशाह के युद्ध का वर्णन किया है। इस ग्रंथ में वीर रस की प्रभावशाली अभिव्यंजना मिलती है। भाषा भूषण नामक ग्रंथ की रचना कवि ने मुहम्मदशाह के आश्रय में रहकर की थी। इसमें कवि ने अलंकारों के लक्षण और उदाहरण १५० दोहों में प्रस्तुत किये हैं। नायिका भेद तथा रस विवेचन भी कवि ने किया है।

रघुनाथ—

हिंदी-साहित्य के इतिहास में रघुनाथ नाम के कई कवियों का उल्लेख मिलता है। इनमें से पहले रघुनाथ का जन्म सन् १८५३ में हुआ था जो गंग कवि के शिष्य थे। इन्होंने संस्कृत ग्रंथ रसमंजरी का अनुवाद 'रघुनाथ विलास दीपक' से किया था। दूसरे रघुनाथ का वास्तविक नाम निवाजन था। इनका रचना काल सन् १८७३ के लगभग अनुमानित किया जाता है। इनकी एक रचना 'भाषामहिम्न स्तोत्र' उल्लिखित की जाती है। तीसरे रघुनाथ का रचना-काल सन् १८२७ के लगभग अनुमानित किया जाता है। इनकी एक रचना कृष्णख्यातिनी का हस्तलेख नागरी प्र० सभा में उपलब्ध है।

रीति युगीन वीर-काव्य की परम्परा के अन्तर्गत जो कवि रघुनाथ उल्लेखनीय हैं वह रघुनाथ बन्दीजन हैं। यह काशी के निवासी थे और काशी के राजा बरिबंडसिंह के आश्रय में रहते थे। उन्होंने ही इन्हें चौरा नामक एक गांव दिया था। इसी गांव में यह निवास करते थे। इनके पुत्र गोकुलनाथ और पौत्र गोपीनाथ भी कवि हुए हैं। इनकी रचनाओं में रसिकमोहन, काव्य कलाधर, जगतमोहन, इश्क महोत्सव तथा बिहारी सतसई की टीका आदि बताया जाती है। रसिकमोहन नामक ग्रंथ में कवि ने ३२१ छन्दों में अलंकार विवेचन प्रस्तुत किया है। काव्य कलाधर नामक ग्रंथ में कवि ने भाव भेद, रस भेद, नायिका भेद तथा नायक भेद प्रस्तुत किया है। जगतमोहन में

श्रीकृष्ण की दिनचर्या का वर्णन है। ... पर शृंगारिक रचना है। ... आलंकारिक ग्रंथ रसिकमोहन की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें कवि ने जो उदाहरण प्रस्तुत किये हैं वे शृंगार रस के न होकर वीर आदि अन्य रसों के अधिक हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है:—

गुधर सिपाह राग बाबू जग गाढ राग
रगन की राह राग गाय रहे ... ।
धार को समान राग बजा जो नजर राग
उबरि ... बाज ... दूर मन को ॥
आगम अगम्या राग ... राग
कहै रघुनाथ जो विचार वीर मन को ।
बाजी हार कबहू न औसर ... पर जोर
ताजा राग प्रजन का राजी गुमान को ॥

भान कवि—

भान कवि का वास्तविक नाम ज्ञात नहीं है। इनका विषय में जो विवरण ज्ञात होता है उससे यह अनुमान लगाया जाता है कि भान कवि राजा जोरावर सिंह के पुत्र थे। यह राजा रनजोर सिंह बुन्देला के आश्रय में रहते थे। इनकी एक रचना नरेन्द्र भूषण शीर्षक से उपलब्ध होती है। इनका रचना काल सं० १७८८ है। इस ग्रंथ में कवि ने अलंकार विवेचन प्रस्तुत किया है। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि कवि ने अलंकारों के उदाहरण शृंगार रस के तो प्रस्तुत किये ही हैं साथ ही वीर भयानक तथा अद्भुत आदि रसों के भी उदाहरण बहुलता से प्रस्तुत किये हैं। वीर रस के जो उदाहरण इन्होंने प्रस्तुत किये हैं वे ओजपूर्ण हैं। इसीलिए इस काव्य परम्परा के अन्तर्गत इनका नाम उल्लेखनीय है। भान कवि के काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है:—

रन मतवार ये जोरावर दुलारे तव
बाजत नगारे भए गालिब दिलीस पर।
दल के चलत भर भर होत चारों ओर
चालति धरनि भारी भार सेसफनीस पर।
देखि के समर सनमुख भयो ताहि समै
बरनत भान पैज कै कै बिसे बीस पर।
तेरी समसेर की सिफत सिंह रनजोर
लखी एक साथ हाथ अरिन के सीस पर॥

बनवारी—

बनवारी कवि के जीवन के सम्बन्ध में कोई विशेष विवरण उपलब्ध नहीं होता। अनुमान लगाया जाता है कि इनका रचना काल संवत १६८० के लगभग था। ये भी रीति युग के वीर कवियों में उल्लेखनीय हैं। महाराज जसवंत सिंह के बड़े भाई अमर

सिंह के यह बड़े प्रशंसक थे। उनके शौर्य का वर्णन करते हुए इन्होंने वीर भावमयी कविता लिखी है। इतिहास में इस बात का उल्लेख मिलता है कि एक बार बादशाह शाहजहाँ के दरबार में सलावतखाँ नामक सरदार ने इनके आश्रयदाता अमरसिंह को गँवार कह दिया था। इस पर इन्होंने वहीं पर सबके सामने सलावत खाँ का वध कर दिया। इनके काव्य का एक उदाहरण मात्र प्रस्तुत किया जा रहा है

आनि के सलावत खाँ जोर कै जनाई बात
तोरि धर पंजर करेजे जाय करकी।
दिल्लीपति साहि को चलन चलिबे को भयो
गाज्यो गजसिंह को सुनी जो बात बर की॥
कहैं बनवारी बादसाही के तखत पास
फरकि फरकि लोथ लोथिन सों अरकी।
कर की बड़ाई कै बड़ाई बहिबे की करौं,
बाढ़ की बड़ाई कै बड़ाई जमधर की॥

गोकुलनाथ—

रीतियुगीन वीर काव्य की परम्परा में कविवर गोकुलनाथ का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका जन्म संवत् १८२० के लगभग अनुमानित किया जाता है। यह काशी के निवासी थे। इनके पिता कविवर रघुनाथ बन्दीजन थे। गोकुलनाथ ने काशी नरेश उदितनारायण सिंह के आदेश से महाभारत और हरिवंशपुराण का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया था। इस कार्य में उन्होंने गोपीनाथ और मणिदेव कवियों का सहयोग भी लिया था। गोकुलनाथ की रचनाओं में चेत चन्द्रिका, गोविन्द सुखद विहार, राधा नखशिख, नामरत्नमाला भाषा, सीतारामगुणार्णव, राधाकृष्ण विलास, अमरकोश भाषा, कविमुखमण्डन आदि हैं। इन ग्रंथों में कवि ने रस, अलंकार आदि का विवेचन भी प्रस्तुत किया है। वीर रस के इनके काव्यांश आकर्षक हैं। इन दोनों कवियों की रचनाओं का एक एक उदाहरण मात्र प्रस्तुत किया जा रहा है

दुग अरि हा महल रहिन [illegible] न सा नर आर।
ताहि परयो गान्ध भूपति गन [illegible] आर॥
एक मानुस निरखि [illegible] न गह।
परो गना गान्ध नप का अग उठ [illegible]॥ (गोकुलनाथ)

— — —

सर सिखि के रिपन आनम जा सुन्दर नन मान।
तब सब काउ तहाँ सूर अरान [illegible]॥
सो धर सब रविन [illegible] समर नर सब आर।
[illegible] भागम [illegible] सन जरा [illegible] तह आर॥ (गोपीनाथ)

— —

बपत यह मुदि कहा भी पर्गाग हम उदार।
उदोग मम सग विमि सुम कट्टु मा उपाय॥
घाय जूरो पुष्प मवि नाम गुदि र जा।
कह्यो जानत उदार जी मत रीति हम बन तन॥ (मणिदेव)

जोधराज—

कविवर जोधराज के पिता का नाम बालकृष्ण था। यह जाति के ब्राह्मण थे और अलवर के निवासी थे। इनके आश्रयदाता नीबगढ़ के राजा चन्द्रभान चौहान थे। उन्ही की इच्छानुसार इन्होने हम्मीररासो नामक प्रमुख ग्रन्थ की रचना सवत् १८७५ में की थी। इस ग्रन्थ में ९६८ छन्दों में कवि ने गणेश और सरस्वती वन्दना आश्रयदाता का परिचय कवि परिचय सृष्टि रचना वश तथा मूल गोत्र आदि अग्निकुल जन्म का वर्णन करने के पश्चात रणथम्भोर के राव हम्मीर और अलाउद्दीन के युद्ध का प्रभावशाली वर्णन प्रस्तुत किया है। इसमें कवि ने वीर रस के साथ साथ शृगार रौद्र तथा वीभत्स आदि रसो का भी निर्वाह किया है। दोहरा मालीराम नाराच्य कवित्त तथा छप्पय आदि छन्दों का प्रयोग इस ग्रन्थ में मिलता है। ब्रज भाषा के साथ साथ फारसी अरबी आदि भाषाओं के कुछ शब्द भी इसमें प्रयुक्त हुए हैं। हम्मीररासो की कथा का मुख्य अश इतिहास सिद्ध है। परन्तु कही कही लेखक ने चामत्कारिक कल्पनाए भी प्रस्तुत की हैं। जोधराज के काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

कह पवार जगदेव सीस आपन कर कटट्यो।
कहा भोज विक्रम सुराव जिन पर दुख मिटट्यो॥
सवा भार नित करन कनक विप्रन को दीनो।
रह्यो न रहिए कोय देव नर नाग सुचीनो॥
यह बात राव हम्मीर सू रानी इमि आसा कही।
जो मई चक्कव मडनी सुनो राव दीय नही॥

सबलसिंह चौहान—

सबलसिह चौहान का नाम भी रीतियुगीन वीर काव्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत उल्लिखित किया जा सकता है। इनके जीवन के सम्बन्ध में कोई विवरण उपलब्ध नही होता। विद्वानो का अनुमान है कि यह चन्दागढ अथवा सबलगढ के राजा थे। कुछ लोग इन्हे इटावा जिले के अन्तर्गत किसी गाव का जमीदार भी अनुमानित करते हैं। औरगजेब के दरबारी राजा मित्रसेन से इनका कुछ सम्बन्ध था। इन्होने सवत १७८१ में अपने महाभारत नामक ग्रन्थ को पूरा किया जिसमें महाभारत की कथाए है। ऋतुसहार तथा रूप विलास आदि इनकी अन्य कृतियाँ भी बतायी जाती है। महाभारत में इन्होने जो कथाए अनूदित की है उनमें वीर रस का सुन्दर परिपाक मिलता

है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

अभिमनु धाइ खड्ग परहारे। सनमुख जहि पाया तहि मारे॥
भूरिश्रवा बान दस छांटे। कुवर हाथ ते खण्डहि काटे॥
तीनि बान सारथि उर मारे। आठ बान तें अश्व महारे॥
सारथि जूझि गिरे मैदाना। अभिमनु बीर चित्त अनुमाना॥
यहि अन्तर उत्ता सब धाई। मारु मारु के मारन आई॥
रथ तो खचि कुवर कर लीन्हे। तातें मार भयानक कीन्हे॥
*अभिमनु कोपि खग्ग परहारे। इक एक घाव बीर सब मारे॥
अर्जुनसुत इमि मार किय महाबीर परचण्ड।
रूप भयानक देखियत जिमि जम लीन्हे दण्ड॥

छत्रसिंह कायस्थ—

कविवर छत्रसिंह कायस्थ बटेश्वर के अटेर नामक गाँव के निवासी थे। यह अमरावती के राजा कल्याणसिंह के आश्रय में रहते थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ विजय मुक्तावली शीर्षक से उपलब्ध होता है। इस ग्रंथ का रचना काल संवत १७५७ है। इसमें इन्होंने महाभारत की कथा प्रस्तुत की है। वीर रस के भावपूर्ण उदाहरण इस ग्रंथ में उपलब्ध होते है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

निरखत ही अभिमन्यु को बिदुर बुलाये आइ।
रच्छा बालक की करो हेत कृपाल जगाइ॥
आपुन काली युद्ध नहि धनुष लियो भय डारि।
पापी पठै यह यत पाण्डुपुत्र तुम चारि॥
पौरुष तजि लज्जा तजी तजी सकल कुलकानि।
बालक रूंधहि पठाय कै आपु रहे सुख मानि॥

लाल कवि—

लाल कवि [redacted] वास्तविक नाम गोरेलाल पुरोहित था। यह बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत मऊ नगर के निवासी थे। यह महाराज छत्रसाल के आश्रय में रहते थे और इन्होंने छत्र प्रकाश नामक ग्रंथ में अपने आश्रयदाता के जीवन चरित्र का वर्णन प्रस्तुत किया है। यह ग्रंथ ऐतिहासिक तथ्यों और प्रामाणिकता से युक्त है। लेखक ने अनावश्यक रूप से कल्पना-लालसा का समावेश नहीं किया है। वीर रस के अनेक प्रसंग इस ग्रंथ में समाविष्ट हुए हैं। इसके अतिरिक्त लाल कवि ने विष्णु विलास नामक एक अन्य ग्रंथ भी लिखा जिसका विषय नायिका भेद है। लाल कवि लिखित छत्र प्रकाश से उनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

धर आइ सो सूबनि परो। जिमि अनायक सो दरो॥
परत गहर आहि के बोके। सुधबुध न दिखाइ डारे॥

रवहू प्रगटि युद्ध म हारै । मुगलनि मारि न,मि ना डारै ॥
बानन बरगि मयगनि फारै । तुरकनि तमक ान तग नारै ॥
रवहू उमडि अगारन आर । पत गम पमनि ोह बग्गारै ॥
मवहू हाथि हरौरन तूटै । रवहू चापि म नहि मू ॥
रवहू रस गौरि न नारै । रणद मद् रा तहा न पारै ॥

सूदन—

सूदन मथरा निवासी माथुर चौब थ । मू न फ पिता रा नाम बसन था । भरत पुर क राजा बदनसिंह क पुत्र महाराज सुजान सिंह अथवा सूरजमल क आश्रय म म रहते थे । अपने आश्रयदाता की प्रशसा म इन्होंने सुजान चरित नामक ग्रन्थ की रचना की थी । इसम कवि न आश्रयदाता क जावन की सन् १७४५ स लकर १७५३ तक की घटनाओं का वणन किया है । सुजान चरित क आरम्भ म सूदन न १७५ कवियो क नाम उल्लिखित किय हैं । इस प्रकार स आश्रयदाता का जन वणन तथा उनक द्वारा लड गय सात प्रमुख युद्धो का वणन प्रस्तुत किया है । यह ग्रन्थ मुख्यत वीर रस का है । परन्तु इसक साथ साथ शृगार तथा वीभत्स आदि रसो की भी अभिव्यजना इसम हुई है । सूदन क इस काव्य म अनक प्रकार क छन्द मिलत हैं जिनकी सख्या १०३ बतायी जाती है । सूदन की भाषा मुख्यत ब्रज है जिसम पजाबी मारवाडी खडीबोली पूर्वी तथा फारसी क शब्द बहुलता स उपलब्ध होत है । सूदन क काव्य क कुछ उदाहरण नीच प्रस्तुत किय जा रह है

बखत बिलन्द तेरी दुदुभी धुकारन सौ
दद दबि जात दस दस मुख जाही क ।
दिन दिन दूना महिमडल प्रताप होत
सूदन दुनी म ऐस बखत न काही क ।
उद्धत सुजान सुत बुद्धि बलवान सुनि
दिल्ली क दरनि बाज आवन उछाही कै ।
जाही ज भराम अब तखत उमाही कर
पाहो स घरे है जो सिपाही पातसाही क ॥

— —

दुहू ओर बदूक जह चलत बचूक
रव होत धुक धूक किलकार कहु कूक ।
कहु धनुष टकार जिहि बान चकार
भट दत हुकार सकार मह सूक ॥
कहु दखि दपटत गज बाजि झपटत
अरि यूह लपटत रपटत कह चूक ।

समसर सटकत, सर सर फटकत,
बहु भाँति हटकत अटकत नहिं चूक ॥

खुमान—

खुमान बंदीजन बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत चरखारी के राजा विक्रमसाहि के आश्रय में रहते थे। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर इनका रचना-काल संवत १८४० से लेकर संवत १८८० तक अनुमानित किया जाता है। इनके लिखे हुए ग्रंथों में अमर प्रकाश, अष्टयाम, लक्ष्मणशतक, हनुमान नखशिख, हनुमानपंचक, हनुमान पचीसी, नीतिविधान, समरसार, नृसिंहचरित्र तथा नृसिंहपचीसी के नाम उल्लिखित किये जाते हैं। इन ग्रंथों में वीर रस का ग्रंथ लक्ष्मणशतक विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जिसमें कवि ने लक्ष्मण और मेघनाद का युद्ध बड़े कलात्मक रूप में वर्णित किया है। खुमान के काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

आयो इन्द्रजीत दसकंध को निबंध
बोल्यो रामबंधु सों प्रबंध किरवान को।
को है अनुमान को है कौन बिकरान
मेरे सामुहें भए न रहे मान महाबान को।
तू तो सुकुमार यार लखन कुमार मेरो
मार अनुमार को छहैया घमासान को।
वीर तो बिलैया रनमंडल दिलैया काल
कहर बिलैया हौं जितैया मघवान को॥

चन्द्रशेखर वाजपेयी—

कवि चन्द्रशेखर वाजपेयी का जन्म संवत १८५५ में हुआ था। यह जिला फतहपुर के अन्तर्गत मुअज्जमाबाद नामक स्थान के निवासी थे। इनके पिता का नाम मनिराम था और वह स्वयं भी कविता करते थे। कुछ समय तक दरभंगा में रहने के पश्चात् यह जोधपुर के महाराज मानसिंह तथा पटियाला के महाराज कर्मसिंह के आश्रय में रहे थे। महाराज नरेन्द्रसिंह की आज्ञानुसार इन्होंने अपने प्रसिद्ध वीर काव्य हम्मीर हठ की रचना की थी। हम्मीर हठ के अतिरिक्त इनके ग्रंथों में विवेकविलास, रसिकविनोद, हरिभक्तिविलास, नखशिख, वृन्दावनशतक, गुरुपंचाशिका, ज्योतिष का ताजक तथा माधवीवसन्त के नाम भी उल्लेखनीय हैं। वीर रस के अतिरिक्त इनके काव्य में शृंगार रस की अभिव्यंजना भी मिलती है। हम्मीरहठ नामक काव्य में इन्होंने ऐतिहासिक कथा के आधार पर क्षात्रिक वीरता का मनोरम चित्रण किया है। हम्मीरहठ नामक ग्रंथ का स्थान वीर काव्य की परम्परा में बहुत महत्वपूर्ण है। इनके काव्य के एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

आलम नवाब सिरताज पातसाहन के
गाज ते दराज कोट नजर गिराये हैं।

जाके डर डिगत अडग गढ़धारी डग
मगत पहार और डगति महि सारी है।
रव जसो रहत ससंकित सुरेस भयो
गिरे दमंकिन में अगिन अति भारी है।
भारी गढ़धारी, सदा जंग की तैयारी
धाक मानै ना तिहारी या हमीर हठधारी है॥

— —

भाग मीरजादे पीरजादे औ अमीरजादे
भागे खानजादे प्रान मरत बचाय कै।
भाग गज बाजि रथ पथ न सभाई पर
गोलन प गोल, सूर सहमि सकाय कै।
भाग्यो सुलतान जान बचत न जानि बेगि
बलित बितुंड प विराजि बिलखाय कै।
जैसे लगे जगल मे ग्रीषम की आगि
चल भागि मृग महिष बराह बिललाय कै॥

शम्भुनाथ मिश्र—

शम्भुनाथ मिश्र के जीवन के सम्बन्ध में जो विवरण उपलब्ध होता है उसके आधार पर इनका समय सन् १७४६ के लगभग अनुमानित किया जाता है। यह फतेहपुर के अन्तर्गत असोथर के राजा भगवतराय खीची के आश्रय में रहते थे। इनके ग्रन्थों में 'रसतरंगिणी', 'रस कल्लोल' तथा 'अलंकार दीपक' हैं। इनके काव्य गुरु सुप्रसिद्ध कवि अथवा सुखदेव मिश्र थे। इनके शिष्यों में शिव कवि का नाम मिलता है। 'रसतरंगिणी' तथा 'रस कल्लोल' में कवि ने रस विवेचन तथा 'अलंकार दीपक' में अलंकार विवेचन प्रस्तुत किया है। दोहा, कवित्त तथा सवैया छन्दों का प्रयोग कवि ने अधिक किया है। शृंगार रस के उदाहरणों के साथ साथ कवि ने अपने आश्रयदाता के शौर्य का जो वर्णन किया है उसमें वीर रस की अभिव्यंजना मिलती है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

आज चतुरंग महाराज सेन साजत ही
धौंसा की धुकार धूरि परी मुँह माही के।
भय के अजीरन ते जीरन उजीर भये
सूल उठी उर में अमीर जाही ताही के।
बीर खेत बीच बरछी लै बिरझानो इतै
धीरज न रह्यो सभू कौन हू सिपाही के।
भूप भगवंत बीर ग्वाही कै खलक सब,
स्याही लाई बदन तमाम पातसाही के॥

पद्माकर भट्ट—

कविवर पद्माकर भट्ट का नाम रीति युग की शृंगार-परम्परा के साथ साथ वीर काव्य प्रवृत्ति के अन्तर्गत भी उल्लिखित किया जा सकता है। यह अनेक राजाओं के आश्रय में रहे थे। शृंगारिक तथा आलंकारिक काव्य रचना के अतिरिक्त इन्होंने हिम्मतबहादुर विरुदावली शीर्षक ग्रन्थ अपने एक आश्रयदाता की प्रशंसा में लिखा था। इसी ग्रन्थ से इनके वीर काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

तोप तवज्जाही औ सिपाही चढ़े पाइन पै,
स्याही चढ़ी अमित अरिंदन की ऐन पै।
कहै पदमाकर निसान चढ़े हाथिन पै
धूरि धार चढ़ी पाकसासन के नैन पै।
साजि चतुरंग चमू जंग जीतिबे के हेतु
हिम्मत बहादुर चढ़त फर फैल पै।
लाली चढ़ै मुख पै बहाली चढ़ै बाहन पै
काली चढ़ै सिंह पै कपाली चढ़ै बैल पै।

भगवन्तराय खीची—

राजा भगवन्तराय खीची फतेहपुर के अन्तर्गत असोथर नामक गाँव के निवासी थे। यह भगवन्त सिंह नाम से भी जाने जाते हैं। यह स्वयं काव्य प्रेमी और कवियों के आश्रयदाता थे। सन् १७३६ में अवध के सूबेदार नवाब वजीर सआदतखाँ पठान उन मुहर से हुए युद्ध में इन्होंने वीर-गति प्राप्त की थी। इनके लिखे हुए कुछ ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं जिनके नाम रामायण तथा हनुमन्त पचीसी हैं। इनका एक ग्रन्थ हनुमतपचीसी शीर्षक से भी उल्लिखित किया जाता है। इनकी कविता में वीर रस और शृंगार रस की विशद रूप से अभिव्यंजना मिलती है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

विदित विसाल ढाल भालु कपि जाल की है
ओट सुरपाल की है तेज के तुमार की।
जाही सों चपेटि कै गिराए गिरि गढ़ जासों
कठिन कपाट तोरे लंकिनी सों मार की।
भनै भगवन्त जासों लागि भेंटे प्रभु
जाके त्रास लखन को छुभिता उभार की।
ओढ़ी ब्रह्म अस्त्र की अवाती महाताती वंदौं
युद्ध मदमाती छाती पवन कुमार की॥

लाला ठाकुरदास—

लाला ठाकुरदास हिन्दी साहित्य के इतिहास में ठाकुर बुन्देलखंडी के नाम प्रसिद्ध हैं। इनके पितामह खगराय तथा पिता गुलाबराय थे। इनका जन्म संवत्

जाके डर डिगत अडग गढ़धारी डग
मगत पहार और डरति महि सारी है।
रव जसो रहत सगवित सुरेश भया
न दमर्पा म आर अति भारी है।
भारी गढ़धारी, सदा जग की पियारी
धाक मान त निहारी या हमीर हत्यारी है॥

—   —

भाग मीरजादे पीरजादे औ अमीरजादे
भाग खानजादे प्रान मरत बचाय कै।
भाग गज बाजि रथ पथ न सभाई पर
गोलन प गार भूर सहमि सराय कै।
भाग्यो सुलतान जान बचत न जानि बगि
बलित बितड प विराजि बिजयाय कै।
जस लगे जगत म ग्रीषम की आगि
चल भागि मृग महिष बराह बिललाय कै॥

शम्भुनाथ मिश्र—

शम्भुनाथ मिश्र के जीवन के सम्बन्ध म जो विवरण उपलब्ध होता है उसके आधार पर इनका समय सन १७८५ के लगभग अनुमानित किया जाता है। यह फतहपुर के अन्तर्गत असोथर के राजा भगवतराय खीची के आश्रय म रहते थे। इनके ग्रन्थो म रसतरंगिणी रस कल्लोल तथा अलंकार दीपक है। इनके काव्य गुरु सुखदेव कवि अथवा सुखदेव मिश्र थे। इनके शिष्यो म शिव कवि का नाम मिलता है। रसतरंगिणी तथा रस कल्लोल म कवि ने रस विवेचन तथा अलंकार दीपक म अलंकार विवेचन प्रस्तुत किया है। दोहा कवित्त तथा सवैया छन्द का प्रयोग कवि ने अधिक किया है। शृंगार रस के उदाहरणो के साथ साथ कवि ने अपने आश्रयदाता के शौर्य का जो वर्णन किया है उसम वीर रस की अभिव्यंजना मिलती है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

आज चतुरग महाराज सेन साजत ही
धौसा की धुकार धूरि परी मह माही के।
भय के अजीरन ते जीरन उजीर भये
सूल उठी उर म अमीर जाही ताही के।
बार खत बाज बरछी के बिरुझानो इत
धीरज न रह्यो सभू कौन हू सिपाही के।
भूप भगवंत बीर ग्वाही क खाक सब
स्याही लाई बदन तमाम पातसाही के॥

पद्माकर भट्ट—

कविवर पद्माकर भट्ट का नाम रीति युग की शृंगार परम्परा के साथ साथ वीर काव्य प्रवृत्ति के अन्तगत भी उल्लिखित किया जा सकता है। यह अनेक राजाओं के आश्रय में रहे थे। शृंगारिक तथा आलंकारिक काव्यरचना के अतिरिक्त इन्होंने हिम्मतबहादुर विरुदावली शीर्षक ग्रंथ अपने एक आश्रयदाता की प्रशंसा में लिखा था। इसी ग्रंथ से इनके वीर काव्य का एक उदाहरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है

तीखे तगवाही जे सिलाही चढ़े घोड़न पै
  स्याही चढ़े अमित अरिदन की एन पै।
कहै पद्माकर निसान चढ़े हाथिन पै,
  धूरि धार चढ़े पाक सासन के सैल पै।
साजि चतुरंग चमू जंग जीतिबे के हेतु
  हिम्मत बहादुर चढ़त कर फैल पै।
लाली चढ़े मुख पै बहाली चढ़े बाहन पै
  काली चढ़े सिंह पै कपाली चढ़े बैल पै।

भगवंतराय खीची—

राजा भगवंतराय खीची फतेहपुर के अन्तर्गत असोथर नामक गांव के निवासी थे। यह भगवन्त सिंह नाम से भी जाने जाते हैं। यह बहुत काव्य प्रेमी और कवियों के आश्रयदाता थे। सन् १७३६ में अवध के पहले नवाब वजीर सआदतखां बुर्हान उल मुल्क से हुए युद्ध में इन्होंने वीरगति प्राप्त की थी। इनके लिखे हुए कुल दो ग्रंथ उपलब्ध होते हैं जिनके नाम रामायण' तथा हनुमन्त पचीसी' हैं। इनका एक ग्रंथ हनुमन्तपचासा शीर्षक से भी उल्लिखित किया जाता है। इनकी कविता में वीर रस और शृंगार रस की विशेष रूप से अभिव्यंजना मिलती है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

बिदित बिसाल ढाल भानु कंपि जाल की है,
  ओट सुरपाल की है तेज के तुमार की।
जाही सों चपेटि के गिराए गिरि गढ़ जासों
  कठिन कपाट तोरे लंकिनी सो मार की।
भने भगवंत जासों लागि भेंटे प्रभु
  जाके त्रास लखन को छुभिता खुमार की।
ओढ़े ब्रह्म अस्त्र की अवाती महाताती बन्दों
  युद्ध मदमाती छाती पवन कुमार की।।

लाला ठाकुरदास—

लाला ठाकुरदास हिन्दी साहित्य के इतिहास में तीसरे ठाकुर बुन्देलखण्डी के नाम प्रसिद्ध हैं। इनके पितामह खगराय तथा पिता गुलाबराय थे। इनका जन्म सवत

अध्याय . ११

रीति युगीन भक्ति तथा नीति-काव्य की प्रवृत्तियाँ

हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीति युग के अन्तर्गत शृंगारिक तथा वीर काव्य की प्रवृत्तियों के अतिरिक्त भक्ति काव्य की प्रवृत्ति भी विकासमान मिलती है। इस युग में होने वाले भक्त कवियों की भी संख्या बहुत बड़ी है। इन भक्त कवियों ने भक्ति भावना के साथ साथ शृंगारिक आध्यात्मिक विषयों पर भी काव्य रचना की। कुछ कवियों ने नीतिपरक काव्य भी रचा। रीति युग का यह भक्ति काव्य अनेक रूपों में उपलब्ध होता है। कुछ कवियों ने नीति अथवा भक्ति सम्बन्धी स्फुट पदों की रचना की है तथा कुछ ने प्रबन्धात्मक रूप में भक्ति काव्य प्रस्तुत किया है। राम और कृष्ण के चरित्र और लीलाओं से सम्बन्धित अनेक प्रसंग इस भक्ति-काव्य के अन्तर्गत उपलब्ध होते हैं। निर्गुण भक्ति के अन्तर्गत अध्यात्म तथा वैराग्य विषयक सिद्धान्त कुछ कवियों ने विवेचित किये। विनय सम्बन्धी पद भी इस युग के कुछ कवियों ने लिखे हैं। यहाँ पर रीति युग के प्रमुख भक्त कवियों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

वृन्द कवि—

वृन्द कवि का जन्म सन १६४३ में हुआ था। इनका वास्तविक नाम वृन्दावनदास था। यह वैद जाति के सेवक थे। इनके पूर्वज बीकानेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम रूपजी था जो जोधपुर में रहते थे। इनकी माता कौशल्या और पत्नी नवरंगदे थी। बाल्यावस्था में वृन्द ने काशी में ताराजी नामक पंडित से विद्या प्राप्त की थी। विद्वान होकर लौटने पर जसवंत सिंह द्वारा सम्मानित किये गये थे। उन्हीं के प्रयत्नों के फलस्वरूप नवाब मुहम्मद खाँ की सहायता से यह औरंगजेब के दरबार में प्रविष्ट हुए। औरंगजेब ने इनसे प्रसन्न होकर इन्हें अपने पौत्र अजीमुश्शान का अध्यापक नियुक्त कर दिया था। आगे चलकर अजीमुश्शान के बंगाल का शासक नियुक्त होने पर यह उसी के साथ चले गये थे। बाद में सन १७०७ में यह किशनगढ़ के राजा राजसिंह के अनुरोध पर वहीं आ गये। इनकी रचनाओं में समेत शिखरछंद, भावपंचाशिका, शृंगार शिक्षा, पवनपचीसी, हितोपदेश संधि, वृन्दसतसई, वचनिका, सत्य

स्वरूप, यमक सतमइ, हितोपदेशाष्टक भारतकथा तथा प्रतापविलास आदि है। इनमें से समतशिखरछद में व द ने जन सम्प्रदाय के प्रसिद्ध तीर्थ का माहात्म्य वर्णित किया है। 'भावपचाशिका' श्रृंगार विषयक काव्य है। श्रृंगार शिक्षा में पातिव्रत धर्म का वर्णन है जिसकी रचना कवि ने औरंगजेब के वजीर नवाब मुहम्मदखा के पुत्र मिर्जा कादिरी की पुत्री को शिक्षा देने के लिए की थी। इसमें कवि ने नायिका भेद भी प्रस्तुत किया है। पवनपचासा श्रृंगार प्रधान ग्रंथ है। हितोपदेश सधि में हितोपदेश की चौथी कथा का पद्यानुवाद किया गया है। व द सतसइ नीति साहित्य विषयक एक महत्वपूर्ण रचना है। वचनिका किशनगढ़ के राजा रूपसिंह के युद्ध वर्णन को प्रस्तुत करती है। सत्यस्वरूप में औरंगजेब के दारा आदि पुत्रों के सत्ता के लिए किये गये युद्ध वर्णित है। यमक सतसई में श्रृंगार विषयक दोहे हैं। हितोपदेशाष्टक शात रस प्रधान काव्य है। भारतकथा महाभारत पर आधारित एक प्रसग है। प्रतापविलास को कुछ विद्वान प्रामाणिक नहीं मानते हैं। इस प्रकार से व द के साहित्य में रीतियुगीन काव्य की तीनों प्रमुख प्रवृत्तियाँ श्रृंगार वीर तथा भक्ति रस प्रधानत उपलब्ध होती है। इस दृष्टिकोण से यह अपने युग के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते है। विशेष रूप से इनका नीति काव्य महत्वपूर्ण है। व द के दो दोहे उदाहरण के लिए नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है

भले बुरे सब एक सम जौ लौ बोलत नाहिं।
जानि परत हैं काग पिक ऋतु बसत के माहिं॥

हित हू को कहिए न तहि जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी होत दिखाए क्रोध॥

बेताल कवि—

बेताल कवि जाति के बन्दीजन थे। इनके जीवन वृत्त के विषय में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है। इनका जन्म सन १६७३ में अनुमानित किया जाता है। कुछ विद्वानों का विचार है कि यह राजा विक्रम के दरबार में रहते थे। इनके काव्य में मुख्यत नीति विषयक पद मिलते हैं। इन्होंने छप्पय तथा दोहा छदों में व्यवहार-नीति के विविध पक्षों का विवेचन किया है। इनका कोई पृथक ग्रंथ नहीं मिलता। केवल तीस के लगभग स्फुट पद उपलब्ध होते हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

मरै बैल गरियार मरै वह अडियल टट्टू।
मरै करकसा नारि मरै वह खसम निखट्टू॥
बाम्हन सो मरि जाय हाथ ले मदिरा प्यावै।
पूत वही मरि जाय जो कुल में दाग लगावै॥
अरु बनिया राजा मरै तब नींद भर सोइए।
बेताल कहै विक्रम सुनो एते मरे न रोइए॥

आलम—

रीति युगीन कवि आलम जाति के ब्राह्मण थे। कहा जाता है कि शेख नाम की किसी रंगरेजिन पर आसक्त होकर इन्होंने उससे विवाह कर लिया और मुसलमान हो गये। इनके पुत्र का नाम जहान था। यह औरंगजेब के पुत्र मुअज्जम के आश्रय में रहते थे जो बाद में बहादुरशाह के नाम से बादशाह हुआ था। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर उनका रचना-काल संवत १७४० से १७७० तक अनुमानित किया जाता है। इन्होंने मुख्यतः प्रेम भावना को आधार बनाकर रचनायें की हैं। इनकी कविताएँ आलमकेलि नामक संग्रह में संग्रहीत हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

जा थल कीन्हे विहार अनेकन ता थल काँकरी बैठि चुन्यो करैं।
जा रसना सों करी बहु बातन ता रसना सों चरित्र गुन्यो करैं॥
आलम जौन से कुंजन में करी केलि तहाँ अब सीस धुन्यो करैं।
नैनन में जो सदा रहते तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करैं॥

गुरु गोविन्दसिंह—

गुरु गोविन्दसिंह सिक्खों के दसवें और अन्तिम गुरु माने जाते हैं। उनका जन्म संवत १७२३ में हुआ था। उनके पिता का नाम गुरु तेगबहादुर तथा माता का नाम गूजरी था। आरम्भ में उनका नाम गोविन्दराय था। बाल्यावस्था में ही उन्हें युद्ध में विशेष रुचि हो गयी थी। अस्त्र शस्त्रों की अच्छी शिक्षा उन्होंने प्राप्त की थी। गुरु गोविन्दसिंह ने खालसा पंथ का निर्माण किया था। उन्होंने दयाराम, धर्मदास, मोहकमचन्द, साहिबचन्द तथा हिम्मत नामक पाँच शिष्यों को मृत्यु पर विजयी बना कर सिंह बनाया था। इन्होंने अपने जीवन में अनेक महत्वपूर्ण लड़ाइयाँ लड़ीं। अपने चारों पुत्रों अजीतसिंह, जोरावरसिंह, जुझारसिंह और फतेहसिंह को उन्होंने स्वदेश के लिए बलिदान कर दिया। धर्म सुधारकों में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त करने के साथ साथ उन्होंने राष्ट्र उन्नायकों में भी उच्च स्थान प्राप्त किया। गुरु गोविन्दसिंह के ग्रन्थों में मुख्य रूप से सुनीतिप्रकाश, सर्वलोहप्रकाश, प्रेमसुमार्ग, बुद्धिसागर और चण्डीचरित्र के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

निर्जन निरूप हो कि सुन्दर स्वरूप हो
कि भूपन के भूप हो कि दानी महादान हो?
प्रान के बचैया दूध पूत के दिवैया
रोग सोग के मिटैया किधौं मानी महामान हो?
विद्या के बिचार हो कि अद्वैत अवतार हो
कि सुद्धता की मूर्ति हो कि सिद्धता की सान हो?
जोबन के जाल हो कि कालहू के काल हो
कि सत्रुन के सूल हो कि मित्रन के प्रान हो?

घनानन्द—

घनानन्द का स्थान रीति युग के कवियों में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इनके जीवन चरित्र के विषय में सुव्यवस्थित विवरण उपलब्ध नहीं होता। इनके सम्बन्ध में जो जानकारी मिलती है उसके अनुसार यह जाति के कायस्थ और बहादुरशाह के मीर मुंशी थे। कहा जाता है कि जीवन से विरक्त होकर जब यह मथुरा गये तब नादिरशाह के सिपाहियों ने इनकी हत्या कर दी थी। इनके जीवन के सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि सुजान नाम की किसी वेश्या से इनका प्रेम सम्बन्ध था और उसी के नाम को श्रीकृष्ण के नाम पर आरोपित कर इन्होंने काव्य रचना की थी। घनानन्द नाम के साथ साथ हिन्दी साहित्य में आनन्दघन, अनन्दघन, आनदमान, आनद निधान, आनद, आनदमघ, आनन्दमहु तथा घनआनन्द आदि नाम से जो रचनाएँ मिलती हैं उन्हें कुछ विद्वान एक ही कवि की और कुछ एक से अधिक कवियों की कृतियाँ मानते हैं। घनानद की स्फुट रचनाएँ 'सुन्दरी तिलक', 'सुजान शतक', 'सुजान-सागर', 'वियोग बेलि', 'विरह लीला', 'इश्कलता', 'यमुनायश', 'प्रीतिपावस', 'प्रेम पत्रिका', 'घनानन्द ग्रन्थावली', 'कवित्त सवैया का संग्रह', 'पदावली', 'कृपानंद', 'अनुभवचन्द्रिका', 'रसबधाई', 'प्रेम पद्धति', 'वृषभानपुर-सुषमा वर्णन', 'गोकुल गीत', 'नाम माधुरी', 'गिरिपूजन', 'विचारसार', 'दान घटा', 'भावनाप्रकाश', 'व्रजस्वरूप', 'प्रेम पहेली', 'रसायनयश', 'गोकुलविनोद', 'कृष्णकौमुदी', 'धामचमत्कार', 'प्रियाप्रसाद', 'वृन्दावनमुद्रा', 'व्रजप्रसाद', 'गोकुलचरित्र', 'मुरलिकामोद', 'मनोरथ मंजरी', 'गिरि गाथा', 'व्रजव्यवहार', 'छन्दाष्टक', 'त्रिभंगी', 'परमहंसावली' तथा 'कर्तृत्व तथा दीपक परीक्षा' आदि ग्रन्थों में संग्रहीत हैं। इनके काव्य में प्रेम और भक्ति का प्रभावपूर्ण अभिव्यंजना मिलती है। घनानन्द के काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

हीन भए जल मीन अधीन
कहा कछु मो अकुलानि समान।
नीर सनेही को लाय कलंक
निरास ह्वै कायर त्यागत प्रान।
प्रीति की रीति सु क्यों समुझे जड़
मीत के पानि परे को प्रमान।
या मन की जु दसा घनआनन्द
जीव की जीवनि जान ही जान॥

— —

रससागर नागर स्याम लखै
अभिलाषनि धार मझार बहौं।
गुन गूंथत धीर को तीर कहूँ,
पचि हारि के लाज सिवार गहौं।

पाआनद पर आभा बहो गुर
हाय हू दृष्टि नाखो क्ह्रो।
उर आवत या छवि छाह या हो
व्रज छैल की गा मनाई रहो॥

— —

रावरे रूप की रीति अनूप
नया नया लागत या या निहारिये।
त्या इन आखिन बानि अनोखी,
अघाति कहू नहि आन तिहारिये।
एक ही जीव हुतो सु तो वारयो
सुजान सकाच औ सार सहारिये।
राखि रहै न दहै घनआनन्द
बावरी रीझ क हार्थान हारिये॥

— —

अति सूधो सनेह को मारग है
जहा नेकु सयानप बाक नहो।
तहा साच चल तजि आपुनपो
झझक कपटा ज निसाक नहा।
घनआनद प्यारे सुजान सुनो
यहा एक त दूसरो आक नहो।
तुम कौन धो पाटी पढ़ हो कहो
मन लहु प देह छटाक नहो॥

रसनिधि—

कविवर रसनिधि का वास्तविक नाम पृथ्वीसिंह था। इनका रचना काल सन १६०३ स १६४० तक अनुमानित किया जाता है। यह दतिया रा य के एक जमादार बताये जात है। कतिपय फटकर दोहा के अतिरिक्त इनका लिखा हुआ एक ग्र थ रतन हजारा शीर्षक से प्रसिद्ध है। यह ग्र थ भी दोहा म ही लिखा गया है। इनके का य पर बिहारी सतसई का विशेष प्रभाव मिलता है जिसके अनुकरण पर इस ग्र थ की रचना हुई है। इस रचना के अतिरिक्त रसनिधि क लिख हुए अ य ग्र था म विष्ण पद कीतन कवित्त बारहमासी रसनिधि सागर गीति सग्रह तथा अरिल्लाहिडोला आदि के नाम भी उल्लिखित किये जाते है। इनके लिख कुछ दो दोह नीचे प्रस्तुत किय जा रह है

अदभत गति यहि प्रम की बनन कहो न जाय।
दरस भूख लाग दुगन भूखहि देत भगाय।

नहु न मजनू गौर ग्गि काऊ लला नाम।
दरसन वा नकु तो तन ग्हु विसराम॥

गिरिधर—

गिरिधर कविराय के जीवन के सम्बन्ध में विस्तृत प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता। इनके नाम के साथ कविराय अथवा कविराज लगा रहने के कारण इन्हें भाट जाति का अनुमानित किया जाता है। इनका जन्म सन १७१३ में अनुमानित किया जाता है। इनके जीवन के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। इनकी लिखी हुई कुण्डलियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं जिनमें 'साईं' शब्द की छाप है। यह कुण्डलियाँ उनकी पत्नी द्वारा अपने पति—अर्थात स्वामी या साईं—को सम्बोधित करके लिखी गयी हैं। इन कुण्डलियों के अनेक संस्करण उपलब्ध होते हैं। इनमें सन १८३३ में प्रकाशित कुण्डलियाँ, १८७४ में प्रकाशित कुण्डलियाँ, १८८६ में प्रकाशित 'गिरिधर कविराय' शीर्षक ग्रन्थ में संग्रहीत कुण्डलियाँ तथा १८ ४ में प्रकाशित कुण्डलियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सन १८५३ में गिरिधर कविराय की कुण्डलियों का सबसे बड़ा संग्रह 'कविराय गिरिधरराय कृत कुण्डलियाँ' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था जिसमें इनकी लिखी हुई ४६७ कुण्डलियाँ संग्रहीत हैं। गिरिधर कवि ने कुण्डलियों के अतिरिक्त दोहे, सोरठे और छप्पय भी लिखे हैं। गिरिधर के काव्य के मुख्य विषय भक्ति, ज्ञान, नीति, वैराग्य तथा व्यवहार शास्त्र आदि हैं। इनके काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

दौलत पाय न कीजिए सपने हू अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को ठाउँ न रहत निदान॥
ठाउँ न रहत निदान जियत जग में यश लीजै।
मीठे वचन सुनाय विनय सब ही की कीजै॥
कह गिरिधर कविराय अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निसिदिन चारि रहत सब ही के दौलत॥

— —

साईं ये न विरोधिए छोट बड़े सब भाय।
ऐसे भारी वृक्ष को कुल्हरी देत गिराय॥
कुल्हरी देत गिराय मारि के जमीं गिराई।
टूक टूक कै काटि समुद में देत बहाई॥
कह गिरिधर कविराय, फूट जेहि के घर जाई।
हिरनाकुस अरु कंस गए बलि, रावण साईं॥

— —

गुन के गाहक सहस नर बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय॥

शब्द सुनै सब कोय कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इक रंग काग सब भये अपावन॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुन के॥

— —

साईं सब संसार में मतलब को व्यवहार।
जब लग पैसा गाँठ में तब लग ताको यार॥
तब लग ताको यार यार सँग ही सँग डोलै।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहिं बोलै॥
कह गिरिधर कविराय जगत यहि लेखा भाई।
करत बेगरजी प्रीति यार बिरला कोइ साईं॥

गुमान मिश्र—

कविवर गुमान मिश्र साँडी के निवासी थे। इनके पिता का नाम गोपालमणि था। इनके तीन अन्य भाई दीपसाहि, खुमान और अमान थे। इनके गुरु का नाम सुखमुख मिश्र था। यह युगलकिशोर भट्ट के आश्रय में कुछ समय तक रहने के बाद अकबर अली खाँ के पास पिहानी चले गये थे। वहीं इन्होंने हर्ष लिखित नैषध का अनुवाद हिन्दी में काव्यकला निधि के नाम से प्रस्तुत किया था। अलंकार दर्पण तथा गुमान चन्द्रोदय शीर्षक से इनके अन्य दो ग्रन्थ मिलते हैं। इनकी लिखी हुई कृष्णचन्द्रिका और छन्दाटवी अथवा पिंगल नामक कृतियाँ भी बतायी जाती हैं। इनके काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

दिग्गज दबत दबकत दिगपाल भूरि
धूरि की धुँधरी सों अँधरी आभा भानु की।
धाम औ धरा को माल बाल अबला को अरि
तजत परान राह चाहत परान की।
सैयद समर्थ भूप अली अकबर दल
चलत बजाय मारू दुंदुभी धुकान की।
फिरि फिरि फननि फनीस उलटतु ऐसे,
चोली खोलि ढोली ज्यों तमोली पाके पान की॥

— —

हाटक हंस चल्यो उड़ि कै नभ में दुगनी तन ज्योति भई।
नीक सी खचि गयौ घन में छहराय रही छबि सोनमई॥
नैनन सो निरख्यो न बनाय कै उपमा मन माँहि लई।
स्यामल चीर मनो पसर्यो तेहि पै कल कंचन बेलि नई।

सरजूराम—

कविवर सरजूराम पण्डित अवध के निवासी और जाति के ब्राह्मण थे। इनके

जीवन के विषय में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता। इनका लिखा हुआ एक ग्रन्थ जमिनीपुराण भाषा अथवा 'जयमुनि पुरान' है। यह ग्रन्थ जमिनी के लिखे हुए महाभारत के एक पर्व पर आधारित है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

गुरुपद पंकज पावन रेनू। कहा कल्पतरु का सुरधनू॥
गुरुपद रज अज हरिहर धामा। त्रिभुवन विभव विस्व विश्रामा॥
तब लगि जग जड़ जीव भुलाना। परम तत्व गुरु जिय नहिं जाना॥
श्रीगुरु पकज पाव पखाऊ। सवत सुधामय तीरथ राऊ॥
सुमिरत होत हृदय अमनाना। मिटत मातृमय मन मल नाना॥

हरनारायण—

कविवर हरनारायण के जीवन विवरण से सम्बन्धित कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता। इनकी लिखी हुई दो कृतियां माधवानल कामकन्दला तथा बैताल पचीसी शीर्षक से उपलब्ध होती हैं। इनमें से प्रथम की रचना काल संवत १८१२ है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सोहे मुंड चंद सो त्रिपुंड सो विराजे भाल
तुंड राजे रत्न उन्ड के मिलन ते।
पाद रूप पाणिन विघन जल जीवन के
षंड सोखि सुजन बचाव अखिलन ते॥
एम गिरिनन्दिनी के नंदन को ध्यान ही में
कीवे छाडि सकल अपानहि मिलन ते।
भगति मुकुति ताके तुंड तें निकसि ताप
कंड बांधि कढ़ती भुसंड के बिलन तें।

ब्रजवासी दास—

कविवर ब्रजवासीदास वृन्दावन के निवासी थे। इन्होंने 'ब्रजविलास' शीर्षक एक प्रबन्ध काव्य की रचना की थी। यह ग्रन्थ संवत १८२७ में तुलसीदास लिखित 'रामचरितमानस' के अनुकरण पर रचा गया था। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त इनका लिखा हुआ प्रबोधचन्द्रोदय शीर्षक अनूदित नाटक भी बताया जाता है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

जसुमति कहति कहा धौं कीजै। मागत चन्द कहां तें दीजै॥
तब जसुमति इक जल पुट लीना। कर में लै तेहि ऊंचा कीना॥
ऐसे कहि स्याम बहरावै। आव चन्द तोहि लाल बुलावै॥
हाथ लिए तेहि खेलत रहिए। नैकु नहीं धरनी पै धरिए॥

बोधा—

कविवर बोधा बांदा जिले के अन्तर्गत राजापुर नामक स्थान के निवासी थे। जाति से यह सरयूपारी ब्राह्मण थे। इनका वास्तविक नाम बुद्धिसेन था। परन्तु पन्ना

के दरबार में यह बोधा नाम से ही प्रसिद्ध हुए। इनका रचनाकाल संवत् १८३० से १८६० तक अनुमानित किया जाता है। [illegible] रचित ग्रन्थ के सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं। इनके लिखे हुए ग्रन्थ 'विरह वारीश' तथा 'इश्कनामा' हैं। इनके काव्य से कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

अति छीन मृनाल के तारहु तें तिहि ऊपर पाँव दै आवनो है।
सुई बेह के द्वार सकै न तहाँ परतीति को टाँडो लदावनो है।
कवि बोधा अनी घनी नेजहु तें चढ़ि तापै न चित्त डरावनो है।
यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है।

— — —

हिलि मिलि जानै तासों मिलि कै जनावै हेत
हित को न जानै ताको हितू न बिसाहिए।
होय मगरूर तापै दूनी मगरूरी कीजै
लघु ह्वै चलै जो तासों लघुता निबाहिए॥
बोधा कवि नीति को निबेरो यही भाँति अहै
आपको सराहै ताहि आपहू सराहिए।
दाता कहा सूर कहा सुन्दर सुजान कहा
आपको न चाहै ताके बाप को न चाहिए॥

रामचन्द्र—

कविवर रामचन्द्र के विषय में विवरण उपलब्ध नहीं होता। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर इनका समय संवत् १८४० के लगभग अनुमानित किया जाता है। इनकी लिखी हुई एकमात्र पुस्तक 'चरणचन्द्रिका' शीर्षक से उपलब्ध होती है। इस कृति में ६२ कवित्तों में पार्वतीजी के चरणों की महिमा वर्णित है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

मानिए करीन्द्र जो हरीन्द्र को सरोष हरै
मानिए तिमिर घेरै भानु किरनन को।
मानिए चटक बाज जुर्रा को पटकि मारै
मानिए भटकि डारै भेक भुजगन को।
मानिए कहै जो बारिधार पै दवारि औ
अगार बरसाइबो बतावै बारिदन को।
मानिए अनेक विपरीत की प्रतीत पै न
भीति आई मानिए भवानी सेवकन को॥

मंचित—

कविवर मंचित का समय सन् १७७६ के लगभग अनुमानित किया जाता है। यह बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत मऊ नामक स्थान के निवासी थे। इनके जीवन के सम्बन्ध में

विशेष प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है। उनकी लिखी हुई दो रचनाओं का उल्लेख मिलता है जिनके नाम मुरली-ध्यान लीला तथा कृष्णायन हैं। इनमें से प्रथम ग्रंथ में लेखक ने कृष्ण की लीलाओं का गान किया है। द्वितीय ग्रंथ प्रबंध शैली में लिखा गया काव्य है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

कुंडल लोल अमोल कान के छुवत कपोलन आय।
डुलत आप में खुलत जोर छवि बरबस मनहिं चुराय॥
घोर बिसाल भाल पर सोभित केसर की चित भाव।
तामें बीच बिंदु रोरी को लसत बड़ बनाव॥
भृकुटी बंक नैन खंजन से कंजन गंजन वार।
मद भंजन खग मीन सगा जे मन रंजन अनियारे॥

मधुसूदन दास—

कविवर मधुसूदन दास इटावा के निवासी थे। जाति के यह माथुर चौबे थे। इनकी एक रचना रामाश्वमेध शीर्षक से उपलब्ध होती है। इनका रचना-काल सन् १७८२ बताया जाता है। इनकी रचना हेतु प्रेरणा कवि को गोविंद दास नामक व्यक्ति से मिली थी। इस ग्रंथ में कवि ने लंका विजय के पश्चात् भगवान राम के चरित्र की महत्वपूर्ण घटनाएं रामचरितमानस की शैली पर वर्णित की हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सिय रघुपति पदकंज पुनीता। प्रथमहिं बंदन करौं सप्रीता॥
मृदु मंजुल सुन्दर सब भाँती। ससि कर सरिस सुभग नख पाँती॥
प्रणत कल्पतरु तर सब ओरा। दहन अज्ञ तम जन चित चोरा॥
त्रिविध कलुष कुंजर घनघोरा। जगप्रसिद्ध केहरि बरजोरा॥
चिंतामणि पारस सुरधेनू। अधिक कोटि गुन अभिमत देनू॥
जन मन मानस रसिक मराला। सुमिरत भंजन विपति बिसाला॥

दीनदयाल गिरि—

रीति युगीन काव्य के अंतर्गत नीति प्रधान रचना करने वालों में दीनदयाल गिरि का नाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इनका जन्म सन् १८०२ में हुआ था। यह काशी के निवासी थे। इनके गुरु का नाम कुशागिरि था। इनके दो गुरु भाइयों—स्वयंवरगिरि तथा रामदयालगिरि—का उल्लेख भी मिलता है। इनके लिखे हुए ग्रंथों में अनुरागबाग, दृष्टांत तरंगिणी, अन्योक्ति माला, वैराग्य दिनेश तथा अन्योक्ति कल्पद्रुम हैं जो दीनदयाल गिरि ग्रंथावली शीर्षक से प्रकाशित किए जा चुके हैं। इनकी एक अन्य रचना का भी उल्लेख मिलता है जिसका शीर्षक बाग बहार है। यह पुस्तक अनुपलब्ध है। कृष्ण-लीला का गान करने के साथ साथ दीनदयाल गिरि ने अपने ग्रंथों में जाति, राज्य आदि विषयों पर भी सुन्दर कुंडलियां दोहे कवित्त और छप्पय लिखे हैं। इनके काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं

तो नाम कहा करो करो सुधा का पान।
नहीं धम्मणि जो न है यह ाँिया नान॥
यह तनिया पधार बड़ो कठिनाई जात।
टटो याद गीत बीत बहु बात टात॥
बरन दीनदयाल पद तुमही िर ाो।
कर त नामन ह्वाहि करा जो तोन नो॥

— —

मन नरई तहि सर बि र जहँ नहि रैन बिछाह।
रहत एकरस दिवस ही सुन्द हस मा ।॥
सुन्द हस सन्तोह बाह अह नाह न जात।
भागत सुख अवाह माह दुख हाय न तात॥
बरन दीनदयाल माम बिन जाय न मरई।
पिय मिलाप नित रहे ताहि सर पर नु चरई॥

— —

कोमल मनोहर मधुर मुरतान सने
नपुर निनादनि सो कौन दिन बानिहैं।
नीके मन ट्री न जुद वृंदन सुमातिन को
गहि क कृपा की जब चाखन सो तोनिहै।
नम धरि श्रम सो प्रभुन हाय दीनपान
प्रेम कोकनद बीच कब धौ बसानिहै।
चरन तिहारे जदुवंस राजहंस कब
मेरे मन मानस म मंद मंद डोलिहै?

— —

पराधीनता दुख महा सुखी जगत स्वाधीन।
सुखी रमत सुक बन बिष कनक पीजरे दीन॥

मनियारसिंह—

कविवर मनियार सिंह का जन्म सन १७५ के लगभग अनुमानित किया जाता है। यह काशी के निवासी थे। इनके पिता का नाम श्याम सिंह था। इनके काव्य गुरु कृष्णलाल कवि थे। विशेष रूप से यह रामचन्द्र पण्डित के आश्रय में रहे थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में सौन्दर्य लहरी महिमा भाषा अथवा भावार्थ चन्द्रिका हनुमत पचीसी तथा सुन्दरकाण्ड रामायण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महिमा भाषा नामक ग्रन्थ महिम्नस्तोत्र नामक कृति का भाषानुवाद है। अन्य कृतियों में कवि ने शिव पार्वती राम तथा हनुमान का भक्ति विषयक काव्य प्रस्तुत किया है। कवि ने

मुक्तक ब्रज भाषा का प्रयोग किया है जिसमें संस्कृत शब्दों की बहुलता है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तेरे पद पंकज पराग राज राजेश्वरी
वेद बंदनीय विरुदावली बनी रहै।
जाकी किनुकाई पायधाता न धरित्री रची
आप लोक लोकन की रचना घनी रहै।
मनियार जाहि विष्णु सर्वे भव पावन मे
सम्भू हू के सम्पदा सीस सहस मनी रहै।
सोई सुरासुर के सिरोमनि सदाशिव के
भसम के रूप हव सरीर पे घनी रहै॥

कृष्णदास—

कविवर कृष्णदास मिर्जापुर के निवासी थे। इनके लिखे ग्रन्थों में माधुर्य लहरी शीर्षक एक वृहत् काव्य का उल्लेख किया जाता है। इसमें कवि ने राधा कृष्ण के विहार प्रसंगों का वर्णन विस्तार से प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ की रचना काल सन् १७८८ ई० है। इनकी भाषा पर भी संस्कृत का विशेष रूप से प्रभाव मिलता है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

कौन काज लाज ऐसी करे जो अकाज अहो
बार बार कहो नरदेह कहाँ पाइए।
दुलभ समाज मिल्यो सबन सिद्धांत जानि
नाना गुन नाम धाम रूप सेवा गाइए।
बानी को सयानी सब पानी में बहाय लाज
जानी सो न रीति जासों दंपति रिझाइए।
जसी जसो गहो जिन जहाँ तहाँ तैसन हू
धन्य धन्य राधा कृष्ण नित्त ही मनाइए॥

गणेश कवि—

गणेश कवि के पिता का नाम गुलाब कवि और पितामह का नाम नाथ कवि था। इनका समय सन् १८४० से लेकर १८७० तक अनुमानित किया जाता है। यह काशी के महाराजा उदितनारायण सिंह के आश्रय में रहते थे। यह महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह के भी समकालीन थे। इनके लिखे हुए तीन ग्रंथों का उल्लेख मिलता है जिनके शीर्षक वाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश', प्रद्युम्न विजय तथा हनुमत पचीसी हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

बाल हरि इन्द्र सौं बिन के कर जोरि गाऊ
आजु दिग्विजय हमारे हाथ आयो है।

मेरे गुर साम सब नाहिं भग है आनु
    पूरो तप ना। भाग्र मान। महायो है।
पारज ममग मर मन्दि म आग आग
    दवा न दत माहि जम ठहरायो है।
सो गुनि पुरन्दर उत न महि आन्द गो
    या न गुगो य गु गाओर गम गाया है ॥

सम्मन कवि—

सम्मन कवि जाति न ब्राह्मण थ। यह न्मा द न निवासी थ। ग्राहा न म सन् १७७७ म हुआ था। इनक जीवन क विषय म जिनम प्रामाणिक विवरण उपर ब्ध नहा है। इनक निम्न ग्रन्थ उल्लिखित किय जात है जिनम एक विगन सा य भूषण तथा दूसरा सम्मान न दा हू। इनम स प्रथम म कवि न अलकार विरा किया है तथा दूसर म नीति प्रधान भाव लिय है। इनक लिख भाव उदाहरण न लिए नीच प्रस्तुत किय जा रह हैं

निकट रह आदर घट दूरि रह दुख होय।
सम्मन या ससार म प्रीति करो जनि कोय ॥

— —

सम्मन चहो सुख देह को तो छोडो य चारि।
चोरी चगुली जामिनी और पराई नारि ॥

जनकदास—

कविवर जनकदास लखनऊ क निवासी थ। य रामान सम्प्रदाय क म न थ। इनक लिख हुए दो ग्रन्थ का उल्लख मिलता है जिनम एक म बारहखडी है तथा दूसरा भाषा वाल्मीकि। य क्रमश सन १७६८ तथा १७ ३ म लिख गय थ। यही इनका रचना काल माना जाता है। इन्होंने अपने इन दोनों ग्रन्थों म रामलीला का वर्णन किया है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

धरि इक अक राम को माता। लहयो भाव तजि सुख मदु माता ॥
दत दम मुकुता सम सोहै। बधुजीव सम नीम विमोहै ॥
विमलत अधर अधर छवि छाजे। कुन्दीत सम गड विराजे ॥
सुन्दर चिबुक नासिका सोहै। कुसुम तिलक चितक मन मोहै ॥
कामचाप सम भ्रकुटि विराजे। अलक कलित सुख अति छवि छाजे ॥
यहि विधि सकल राम क अगा। लखि चूमति जननी सुख सगा ॥

नवलसिंह कायस्थ—

कविवर नवलसिंह कायस्थ पासो क निवासी थ। यह रामानुज सम्प्रदाय के अनुयायी थ। इनका साम्प्रदायिक नाम रामानुजदास शरण बताया जाता है। यह टीकमगढ दतिया तथा समथर क आश्रय म रहे थ। इनके आश्रयदाताओं म प्रधान

महाराज हिंदूपति थे। इनके लिखे हुए अनेक ग्रंथ मिलते हैं जिनमें सनेहसागर, जौहरित तरंग, रसिक रजनी, विज्ञान भास्कर, ब्रजराजदीपिका, सुकरम्भा संवाद, कविप्रिया, भाषा सप्तशती, कवि जीवन, आल्हा रामायण, रुक्मिणी मंगल, मूल ढोला, रहस्य बावनी, अध्यात्म रामायण, रूपक रामायण, नारीप्रकरण, सीता स्वयंवर, रामचंद्र विलास, भारत वार्तिक, रामायण सुमिरनी, दानलीला संवाद, नाम रामायण, रामायण काव्य तथा आल्हा भारत आदि मुख्य हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सगुन सरूप सदा सुषमा निधान मंजु
बुद्धि गुन गुनन अगाध बनपति से।
नेन नवलेस कल्याण विसद महा मे या
बरनि न पावे पार पार फनपति से।
जक्त निज भक्तन के कलुष प्रभंज रंज
सुमति बनावे धन धान धनपति से।
अवर न दूजो देव सहज प्रसिद्ध यह,
सिद्धि बरदान सिद्ध इस गनपति के हैं॥

रामसहाय दास—

कविवर रामसहाय दास काशी के निवासी थे। जाति के यह अस्थाना कायस्थ थे। इनके पिता का नाम भवानीदास था। इनके गुरु चिंतामणि थे। यह काशी नरेश उदितनारायण सिंह के आश्रय में रहते थे। इन्होंने भगत छाप से काव्य रचना की है। इनके लिखे हुए ग्रंथों में वृत्ततरंगिणी सतसई, राम सतसई, शृंगार सतसई, वृत्त तरंगिणी, ककहरा, रामसप्त शतिका, वाणी भूषण आदि का उल्लेख मिलता है। इन्होंने अलंकार विवेचन के साथ-साथ धर्म और नीति विषयक काव्य रचनाओं का भी प्रणयन किया है। इनके दोहे उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

नाग नना नन में कियो कहा धों मन।
नहिं नाग नना रहे लाग नना नन॥

— —

या विभाति दसनावली ललना वदन मझार।
पति को नातो मानि के मनु आई उडुमार॥

पजनेस—

कविवर पजनेस के जीवन के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता। ये पन्ना के निवासी बताये जाते हैं। इनके लिखे हुए दो ग्रंथ मधुप्रिया तथा नखशिख का उल्लेख मिलता है। पजनेस पचासा तथा पजनेस प्रकाश नामक दो संग्रहों में इनके कवित्त और सवैये संग्रहीत मिलते हैं। अरबी और फारसी के शब्दों का इनके काव्य में बाहुल्य है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

पजनेस तसद्दुक ता बिसमिल ज फ परस्ता न कबूल वम ।
महबूब चला व मसत मगम अजगरा अताब । जहर बग ॥
मजमूर्त न बाफ निगार रुए मम नगामत च म म म बरन ।
मिजगां गुरमा तहरीर गुा नुक्त बिा व बि त बिनग ॥

द्विजदेव—

द्विजदेव का वास्तविक नाम राजा मानसिंह था। इनका जन्म सन् १८१० म हुआ था। यह अयोध्या क राजा थ। जाति क यह ब्राह्मण थ। इनक पिता का नाम दर्शनसिंह था। इनक आश्रय म नछिराम प० प्रवीन, बनि व तथा जगन्नाथ अवस्थी जस कवि रहत थ। जीवन क अंतिम काल म यह विरक्त होकर वृन्दावन म जाकर बस गय थे। इनक ग्रंथा म शृंगार लतिका शृंगार बत्तीसी तथा शृंगार चालीसी का उल्लख मिलता है। इनम स शृंगार लतिका की सौरभ नामक टीका महाराज प्रतापनारायण सिंह न लिखी थी। द्विजदेव क काव्य का एक उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

सुर ही क भार सूध सबद सुकीरन क
    मंदिरन त्यागि बर अतन बहू न गौन।
द्विजदव त्योंही मधु भारत अपारन सा
    नकु झुकि झूमि रहे मोगरे मरुअ दौन।
खोलि इन ननन निहारी तो निहारो कहा ?,
    सुषमा अभूत छाय रही प्रति भौन भौन।
चादनी क भारत दिखात उनयो सो चद
    गंध ही क भारत बहत मद मद पौन॥

महत्व—

इस प्रकार स रीति युग क अ तगत भक्ति तथा नीति काव्य की प्रवत्तिया भी स्वतन्त्र रूप स विकासशील रही मिलती है। इस प्रवत्ति के अन्तगत ऊपर बहुत स ऐस कवियो का उल्लख भी किया गया है जो विशुद्ध भक्ति प्रधान अथवा नीति प्रधान कवि ही थ। इनक साथ ही साथ एस भी अनक कविया का सक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है जि होन भक्ति तथा नीति क अतिरिक्त शृंगार अथवा वीर काव्य की ही रचना की थी। पर तु औचित्य क विचार स उनका उल्लख शृंगारिक तथा वीर का यात्मक प्रवत्तिया क अ तगत न किया जाकर भक्ति और नीति काव्य विषयक प्रवत्ति के अ तगत किया गया है। भक्ति और नीति का य की यह प्रवत्ति स्पष्टत यह सकत प्रस्तुत करती है कि रीति युग म शृंगारिक काव्य रचना करने वाल कवियो की प्रधानता रही अवश्य परन्तु फिर भी वीर तथा भक्ति आदि रसा का भी प्रश्रय मिला। यही नहीं नीति काव्य की परम्परा का प्रसार भी इस युग म विशष रूप स हुआ जिसका पूव स्वरूप भक्ति युग म मिलता था और परवर्ती हिन्दी

काव्य पर भी जिसका प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित किया जा सकता है। इस युग में गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि तथा वृन्द आदि अनेक ऐसे कवि हुए जिन्होंने विशुद्ध नीति-काव्य की रचना की।

समग्र में रीति युग में जो काव्य प्रवृत्तियाँ विकसित हुई वह किसी न किसी रूप में अपने पूर्ववर्ती तथा परवर्ती परम्पराओं से सम्बद्ध हैं। शृंगार तथा वीर रस के साथ-साथ इस युग के अनेक कवियों का भक्ति तथा नीति आदि विषयों से सम्बन्धित काव्य रचना करना तत्युगीन काव्य प्रवृत्तियों के सर्वगत विस्तार और विषय वैविध्य का सूचक है।

—)०(—

अध्याय . १२

भारतेन्दु युगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियां

आधुनिक काल म हि ी कविता की विभिन्न प्रवत्तिया का आरम्भ भारत दु क समय म ही हुआ। साहित्यिक नवजागरण की दृष्टि स इस युग का आधुनिक हि दी साहित्य के इतिहास म अ यतम महत्व है। हिन्दी पद्य क इतिहास क प्रमुख विकास युगा म जो प्रवत्तियाँ उपलब्ध होती हैं उनकी पृष्ठभूमि म भारतेन्दु युग म विभिन्न काव्य धाराओ का आविर्भाव हुआ। ब्रजभाषा अवधी तथा खड़ी बोली म इस युग क अधिकाश कवियो ने काव्य रचना की। गद्य के क्षत्र म खड़ी बोली का प्रचार प्रसार बढ़न क साथ साथ पद्य क क्षत्र म भी उसका उपयोग बहुलतापूवक किया जान लगा। खड़ी बोली के प्रचार एव परिष्कार के लिए अनेक आन्दोलन किय गय। इसका परिणाम यह हुआ कि खडी बोली म स्फुट काव्य रचना क साथ महाकाव्यो की रचना भी आरम्भ हो गयी। जो कविगण अपक्षाकृत अधिक परम्परावादी थे व पूव काल की हि दी काव्य धारा से अधिक प्रभावित रह। फलत उन्होन ब्रजभाषा अथवा अवधी म ही काव्य रचना की। विषयवस्तु की दृष्टि स ब्रज अवधी तथा खडी बोली तीनो म लिखी जान वाली कविता समान प्रवत्तियो से युक्त रही। रीति कालीन विषयो क साथ साथ आधुनिक विषयो का भी समावेश इस युग की हि दी कविता म मिलता है। जो कविगण रीति काल क विरुद्ध एक प्रकार की प्रतिक्रिया की भावना रखते थ उन्होन अवश्य नवीन चतना क निरूपक विषयो को ही स्वीकारा। राष्ट्रीयता की भावना के जाग्रत होन क साथ साहित्यिक विषयवस्तु का भी विस्तार हुआ। दीघकालीन विदेशी दासता स मुक्ति पान के लिए जन स्तर पर आन्दोलन आयोजित हुए। समाज म इसके फलस्वरूप सवक्षत्रीय परिवतन लक्षित हुए। विदेशी सभ्यता सस्कृति औ साहित्य क प्रभाव क फलस्वरूप य परिवतन स्पष्टतर रूप म सामन आये। राष्ट्रीय एकता की भावना क प्रसार के लिए ईश्वरचन्द्र विद्यासागर स्वामी रामकृष्ण परमहस स्वामी विवेकान द जस मनीषियो ने धार्मिक पुनरुत्थान पर बल दिया। सन १८८५ म थी ह्यूम के प्रयत्न स बम्बई म इण्डियन नेशनल काग्रस की नीव पडी। इस सस्था न देश के राजनीतिक जागरण म एक महत्वपूण भूमिका अदा की। बालगगाधर तिलक लाला लाजपत

राय, विपिनचद पाल अरविद घोष दादाभाई नौरोजी सर फीरोज शाह महता गोपाल कृष्ण गोखल मदनमोहन मालवीय सुभाषचद्र बोस महात्मा गाधी आदि नेताओ ने राजनीति क क्षत्र म देश का नेतत्व किया। इस प्रकार स चतुमखी जागति न साहित्य क क्षत्र को भी प्रभावित किया। खडी बोली को जन भाषा बनाने के लिए भी अनेक आन्दोलन हुए। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्याथ प्रकाश का हिन्दी म अनुवाद किया। सन १८८४ म प्रयोग म हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि मध्य सभा की स्थापना हुई। इसक पूव अलीगढ म बाबू तोताराम भाषा सवद्धिनी सभा की स्थापना कर चुके थ। सन् १८९३ म बाबू श्यामसुन्दर दास प० रामनारायण मिश्र तथा ठाकुर शिवकुमार सिह द्वारा काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। पडित गौरीदत्त जसे भाषा प्रचारको ने नागरी प्रचार क लिए अपना सवस्व दान कर दिया। सन १८९८ म महाराज प्रतापनारायण सिह राजा रामप्रसाद सिह राजा बलवत सिह डा० सुदर लाल तथा पडित मदनमोहन मालवीय एक शिष्टमडल लकर लाट साहब स मिल। फलत सन १९०० स कचहरियो म नागरी प्रवेश की घोषणा हुई। राजनीतिक धार्मिक, साहित्यिक तथा सामाजिक क्षत्रो म इस प्रकार के नवजागरण क युग म भारतेन्दु युगीन कविता की जो प्रवत्तिया विकसित हुइ उनका सक्षिप्त परिचयात्मक विवरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म सन १८५० म तथा मत्यु सन १८८५ म हुई। भारतेन्दु ने हिन्दी गद्य के साथ ही कविता क क्षत्र म भी अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देते हुए विभिन्न कृतियो की रचना की। उन्होने रीति युगीन परम्परा का अनुगमन करत हुए व्रजभाषा म भी काव्य रचना की तथा इसक साथ ही खडी बोली म काव्य लिखकर उसकी परम्परा का भी प्रवतन किया। अपने पूववर्ती भक्त तथा शृगारिक कवियो स प्रभाव ग्रहण करके उन्होने विविध विषयक काव्य रचना की। समकालीन परिस्थितियो और जन भावनाओ का चित्रण भी उनकी अनक रचनाओ म मिलता है। भारतेन्दु की काव्य कृतियो म भक्ति सवस्व कार्तिक स्नान वशाख माहात्म्य देवी छद्मलीला प्रबोधिनी स्वरूप चितन श्री पचमी प्रात स्मरण मगलपाठ तन्मय लीला दान लीला, रानी छद्मलीला जनाथ स्तुति अपवगदाष्टक अपवग पचक प्रात स्मरण स्तोत्र वरणव सवस्व वल्लभीय सवस्व तदीय सवस्व भक्ति सूत्र वजयन्ती प्रेम मालिका प्रेम सरोवर प्रेमाश्रु वषण प्रेम माधुरी प्रेम तरग प्रेम प्रलाप होली मधु मुकुल वर्षा विनोद विनय प्रेम पचासा फूलो का गुच्छा प्रेम फुलवारी कृष्ण चरित्र जन कुसुम उत्तराद्ध भक्तमाल गीत गोविन्दानन्द सतसई शृगार स्वगवासी श्री अलवरत वणन अतर्लापिका श्री राजकुमार सुस्वागत पत्र सुमनाजलि श्रीमान प्रिंस आफ वल्स क पीडित होन पर कविता मुह दिखावनी, श्री राजकुमार शुभागमन वणन

भारत भिक्षा, मातसापा । मनाभुत भाता भारत बीरत [illegible] ,
विजयिनी विजयपताका या जय गी आवाय मणीत [illegible] बग दाबी
प्रात समीरन तुरग तथा धूत प्रगा आदि [illegible] है।
भारत दुख विविध विगरत साम्य [illegible] उद्दरण [illegible] रहे है

पटी गुलाब फूल चमन खिला
बाढ़ी मुख [illegible] हिला ।
गावत प्रभाती बाल मन्द मन्द डोल
बहु बहु जय द्विज गन जय बोल ।
उड़त कपोत बहु बाग डर डार
बहु बहु निरखत मीठी [illegible] ।
बान तम चार बहु उड़ा करि साथ
अल्ला अकबर कर मुल्ला साथ साथ ।
बुधी सान्टन लिए करि रहे माथ
पहरू नटकि रहे सम्यो लिए हाथ ।
स्वान सोय जहां तहां छिपि रहे चोर
गऊ पास बच्छन अहीर देत छोर ।
दही पत्र फूल लिए ऊज बोन बान
आवत ग्रामीन जन चल डाल डोल ।
बाज यत्र नोग धाए बछन हिलाय
बस कटि चस्त बन पगड़ा हिलाय ।
अरुन किरन छाई दिसा भई लाल
घाट नीर चमकन लाग तीन बार ।

— —

आज उठि भोर वृषभानु की नन्दिनी
फूल के महल ते निकसि ठाढ़ी भई ।
खसित सुभ सीस ते ललित कुसुमावली
मधुप की मंडली मत्त रस ह्वै गई ।
कछुक अरसात सरसात सकुचात अति
फूल की बास चहु ओर मोदित छई ।
दास हरिचन्द छबि देखि गिरिधर लाल
पीत पट मुकुट सुधि भूलि आनंदमई ।

— —

आजु तन आनद सरिता बाढ़ी ।
निरखत मुख प्रीतम प्यार को प्रीति तरंगिनि बाढ़ी ।

लोन वद दोउ कून तरावर गिरे न रहे सम्हारे।
हाव भाव क भरे सरावर वहै हाइ क यारे।
बुध दवानल परम विरह क प्रम परव भा भारी।
मीन बान क जा प्रमीजन जल लहि भए मुखारी।

— — —

सोई पिया अरसाय क सज प सा छबि नाल विचारत ही रहै।
पोछि रूमालन सों श्रम सीकर भौंरन का निरुवारत ही रहै।
त्या छबि दखिव कों मुख तें अनकें हरिचन्द जू टारत ही रहै।
इक घरी लो जके से खरे वपभानु कुमारि निहारत ही रहै।

— — —

पढ़ फारसी बहुत विधि तोहू भये खराव।
पानी खटिया तर रही पूत मरे बकि आब।

— —

नारि पुत्र नहिं समयही कछु इन भाषन माहिं।
तासों इन भाखान सो कामचलत कछ नाहिं।

— —

रल चलत कहि भाति सों, कल है वाको नाव।
तोप चलावत बिमि सब जारि सकत जो गाव।

जगमोहन सिंह—

ठाकुर जगमोहन सिंह का जम सन १८५७ म तथा मत्यु सन १८६८ म हुई थी। इनकी शिक्षा-दीक्षा काशी म हुई थी। गद्य पद्य दोदा ही विधाओं क क्षत्र म इहोन अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। इनकी काव्य रचनाओं क तीन सग्रह प्रम सपत्ति नता, श्यामा लता तथा श्यामा सराजिनी शीषक स उपलब्ध होत हैं। इनकी अय काव्य रचनाएँ दोहावली प्रम रत्नाकर प्रमिताक्षर दीपिका ऋतु सहार प्रमहजारा कुमारसभव पवनदूत चित्रकूट वणन इपाव विरहाष्टक मेघदूत तथा सज्जाष्टक आदि हैं जो विविध विषयक हैं। इनक काव्य का एक उदाहरण यहा प्रस्तुत किया जा रहा है

यह भाग की मरी सग गति री अति रोवति प्यासी रहैं अखियां।
इनको न मिल्यो मुपन सुख हाय, ए पात की चातकी सी दुखिया।
लगती नहिं बर इहे जगत जधन जगमोहन की सखिया।
मुध राम रच्यो न इहै कबहू ममुझावत नाऊ नहा सखिया।

प्रतापनारायण मिश्र—

प्रतापनारायण मिश्र का जम उन १८५६ म तथा मत्यु सन् १८९५ म हुई थी। इहोने गद्य तथा पद्य दोना ही क्षत्र म अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है।

इनकी काव्य कृतियाँ म अमपुष्पावली मनोमुकुर नाटक माधुरी नार पद्य नाम बारहमासा रागिनी रसभरी श्रृगार रिसाल मानस विलास प्रमुख संग्रह तथा रचनाएँ आदि ग्रंथ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्होंने विविध विषयक काव्य की रचना की है। इनके काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

> सुन्यो गम गाजीपुर की महिमा तब न जनो मुग्हार।
> जग हुव महामहा वशिष्ठ का दूसरी अब्बा का ओतार।
> मर्यादा पुरुषोत्तम कहिए राजा राम धरम अवतार।
> जिनका नाम रत मनई सिगरे पाप होय जर छार।
> उनके भया बार लछमन आनें चार बन का बार।
> रावत छाडि गए सीता को बन मां भूमि जनम का नार।
> छीना छाडी तब न अमन यह सब घटना का परमार।
> तालाबम्मा गाजीपुर की है यह अनाजुत ते नारन।

राधाचरण गोस्वामी—

भारतेन्दु युगीन कवियों म राधाचरण गोस्वामी का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। उनका जन्म २८ फरवरी सन १८५८ को तथा मृत्यु सन १८२८ म हुई थी। साहित्यिक भाषा के विषय म यह ब्रजभाषा के कट्टर समर्थक तथा खड़ी बोली के विरोधी थे। इन्होंने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय विभिन्न साहित्यिक माध्यमों के क्षेत्र म दिया है। इनकी काव्य रचनाओं म नवभक्तमाल दामिनी दूतिका शिशिर सुषमा इश्क चमन भ्रमरगीत निमूक नाटक बारहमासी प्रेम बतीसी भारत संगीत विधवा विलाप भू भार हरणार्थ प्रार्थना गोपिका गीत नामिन स्तोत्र रत्न स्तोत्र तथा यमलोक यात्रा आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

> म हाय हाय दे धाय पुकारा काई।
> भारत की डूबी नाव उबारो काई।
> उड गए वेद के बादबान अति भारे।
> ऋषिजन रस्सा नहिं रहे बचने हारे।
> याम चिंतामणि सदृश रत्न को डरो।
> याम अमृत सम औषधीन को फरो।
> बन चली सकल यूरोप हाय मति साई।
> भारत की डूबी नाव उबारो कोई।

रामकृष्ण वर्मा—

रामकृष्ण वर्मा का जन्म सन १८८६ म तथा मृत्यु सन १९ ६ म हुई थी। इन्होंने गद्य तथा पद्य के क्षेत्र म मौलिक तथा अनूदित रचनाएँ प्रस्तुत की। ब्रजभाषा म यह

बनवार' अथवा 'वीर कवि' उपनाम से काव्य रचना करते थे। समस्यापूर्ति प्रकाश में इनकी स्फुट रचनाएं संग्रहीत हैं। इनकी एक काव्य कृति बनवीर पचासा नामक से भी उल्लिखित की जाती है। लोक तत्व का समावेश इनके काव्य की प्रमुख विशेषता है। यहां पर इनके काव्य का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है

रुपवा के भरवा तू गोरी मत पयरवार।
सोयवा धरत न जाय।
नचि लचि आतो दवा गोरी की कमरिया
जोवनवा के बोझवा न्हाय।

राधाकृष्ण दास—

भारतेन्दु युगीन कवियों में राधाकृष्ण दास का नाम भी उल्लेखनीय है। इनका जन्म सन १८६५ में तथा मृत्यु सन १९०७ में हुई थी। इनकी काव्य रचनाएं 'राधाकृष्ण ग्रन्थावली' के प्रथम भाग में संग्रहीत हैं। काव्य के क्षेत्र में इन्होंने प्राय ब्रजभाषा का ही प्रयोग किया है। भक्तानन्द पुष्पांजलि, विजयिनी, पृथ्वीराज प्रयाण, भारत बारहमासा, जुबली, ..., छप्पन का दिग्गज, रामजानकी, प्रताप विसर्जन, रहिमन विलास आदि इनकी प्रमुख काव्य रचनाएं हैं। इनका काव्य विविध विषयक है। यहां पर इनके काव्य का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है

हौं बलि जाउं मानिनी छवि पर।
यही भौंह चढ़ाय रिस भरी गात कपोलनि कर धर।
नैन बंक अलकावलि छूटी अधर ... ललसत सर।
लाल मनावति मानहि रहि गये धरि न प्यारी कपोल पकर।

बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन —

भारतेन्दु युगीन साहित्य के विकास में योग देने वाले साहित्यकारों में बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका जन्म सन १८५५ में तथा मृत्यु सन १९२२ में हुई थी। साहित्य रचना के क्षेत्र में इन्होंने सर्वप्रथम अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया था। इन्होंने मुख्यतः ब्रजभाषा में शृंगारपरक काव्य ही लिखा है। इनकी लोक काव्यात्मक रचनाएं कजली कादम्बिनी में संग्रहीत हैं। जीर्ण जनपद इनकी एक प्रबन्ध रचना है। खड़ी बोली में लिखित काव्य रचनाओं में आनन्द अरुणोदय तथा मयंक महिमा आदि हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

गगन में जब भरयो नभ्य उठि ऊपर लहरत।
चारहु ओरन हरियारी ही की छवि छहरत।
भारी भारी ग्राम बधू दल गन मिलि गावत।
दल जुरे में रस भरी गाउ मनसार मचावति।
कहुं नारी नवना ... ताउ सुर पाव।

रगभूमि मा नारम मा रस मब बरमा।
क्तिो युवति तिाम अ रूप म ा पाग।
रि क उजनत न सीम मि दूर गुहाग।
धान धत म बठो र पसि मावति।
वन म भटरी रि मृगी गी छवि रमावति।

बाबा सुमेर सिह—

भारत दु युगीन काव्य क अ तगत बाबा सुमरसिह क कृतित्व का भी उल्लख किया जा सकता है। यह निजामाबा क निवासी थ। यहा पर यह सिख सम्प्रदाय क महत थ। गद्य साहित्य म रचन क साथ ही न्हान पद्य म भी कुछ कविता की रचना की थी। य कवित्त सु रोनिकर म सगृहीत हैं। न्हा अनक साहित्यिका का आवा जन करा अपन समकालीन कविया रा काव्य रचना की प्ररणा और प्रोत्साहन त थ। इनके काय का एक उदाहरण इस प्रकार है

गुह नाग करग पवाय घनो तिनको गुनिर नहिं भाखिहो म।
करिहै जुय न्ड प्रचड तु प सुमरम हरी नहिं भाखि्हो मैं।
क नाम जा नाव कर सिगरो तऊ रूप सुधा रस चाखिहो मैं।
ब्रजराज जो आज मिल सजनी इहि लाज सो लाज न राखिहो मैं।

राव कृष्णादेव शरणसिंह गोप'—

भारत दु हरिश्चद्र क साहित्यिक यक्तित्व स प्ररणा लकर काव्य रचना करन वाल आलो य युगीन कविया म राव कृष्णा व शरणसिह गोप का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। नक का य का मुख्य विषय ृ गारिकता ही है। इनकी कृतिया म प्रम सदसा मान चरित्र तथा दाहावली आदि है। नक काव्य का एक उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

मोहन कया अनीति मन भाइ।
सबसा तारि नह चरनन म जोरि महे मनि आई।
ताहू प परतीति न मानी जग उपहास कराई।
यद्यपि हती अधम अति निदित अति प निज आर लगाई।

महेश नारायण—

भारत दु युगीन कविया म महश नारायण का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता ह। छद याजना की दृष्टि स नकी कुछ रचनाए महत्व की ह। इ होने उर्दू हि ी की का य शलिया का मिलाकर एक नवीन रूप दिया था। प्रकृति चित्रण सम्बधी कुछ रचनाए इनकी इस दष्टि म विशष रूप स द्रष्ट य है। नक काव्य का एक उदाहरण यहा प्रस्तुत किया जा रहा है

स जो का बना था शामियाना।
और स ज ही मखमली बिछौना।

फूलों से बना हुआ था वह कंज।
था प्रीत मिलन के योग्य वह कंज।
एक कंज
बहुत पुंज
पेड़ों से घिरा था
सरसों के बगल में
बिजली की चमक भी न पड़ सकती थी जहां तक
ऐसा वह घिरा था
जैसे दीप हो जल में
पानी की टपक राह भरा पात्र कहां तक।

मन्नालाल द्विज—

भारतेन्दु युगीन कवियों में मन्नालाल द्विज का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। इन्होंने मुख्यतः ब्रज भाषा में ही स्फुट काव्य रचना की थी। इनके काव्य व्यक्तित्व पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का पर्याप्त प्रभाव है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

मन्माती रसाल की डारन पै चढ़ी आनन्द सों यं विराजती है।
कुल आनि की कान करें न कछू मन हाय पगापहि पारती है।
कोई कैसी करें द्विज तू ही कहै नहिं नैकों दया उर धारती है।
अरी कवलिया कूकि करेजिन की किरचें किरचें किए डारती है।

लक्ष्मी प्रसाद—

आचार्य युगीन हिन्दी कविता के विकास में योग देने वाले कवियों में लक्ष्मी प्रसाद का नाम भी उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने समकालीन कवियों की भांति शृंगारिक विषयों पर काव्य रचना के साथ समसामयिक परिस्थितियों का चित्रण करने वाली कविताएं लिखी हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है

दुःखी होते हैं जब ध्यान में आती एक बार।
आंसू आंखों में उमड़ आता है बंध जाता है तार।
सोच या व्यग्र है करता कि न रहता है विचार।
सबका जी से बिसर जाता है जगत का व्यवहार।
सोना स्वप्न होता है अच्छा नहीं अन भाता है।
शोक की आग में भस्म होने बदन लगता है।

अन्य कवि—

भारतेन्दु युगीन काव्य के विकास में ऊपर उल्लिखित किये गये नामों के अलावा अन्य भी अनेक साहित्यकारों का योगदान है। प्रताप मिश्र के अलावा हरिकृष्ण जिरगौनावाल तथा नवाराम प्रवीन मन नैया के अलावा लाला गोविन्द राम लगाते पूरनमल तथा

गतिप्रगान ग्रिगिवामर सिय हैहा।
हा हत ! दुखमय जीवन या बि,।।
गइ ! तुही अवगि मत्युग तीन गाई।
त्य मारु नाः ! जब तजिहु या रिगाई।

—　　　　—

हात बनिअई आई हमर वा अब तुमग पूर ग्राम।
हम हू पिउ बरमन याता है छागी वहा उजारत आप।
हिया मी बान हिय रहि गन अब आग रा सुनो हमार।
गाउ छाडि हम गहर सिधायत गानन निय नम्बुना प्यार।

—　　　　—　　　　—

यह जो भारत भूमि हमारी।
ज म भूमि हम सबकी प्यारी।
एक गह सम विस्तत सारी।
प्रजा कुटम्ब तु य है सारी।
जन्मभूमि को बलिहारी है।
यह सुरपुर स भी यारी है।

श्रीधर पाठक—

श्रीधर पाठक का ज म सन १८५८ म तथा मृ यु सन १८२८ म हई थी। इ होने मौलिक तथा अनूदित का य रचनाएँ प्रस्तुत की है। मौलिक कृतियां म जगत सचाई सार कश्मीर सुषमा भारत गीत मनोविनोद (तीन भाग) धन विजय गुनवन्त हेम त वनाष्टक देहरादून गोपन गुणाष्टक गोखन प्रशस्ति गोपिकागीत स्वर्गीय वीणा तथा तिलस्माती मु न्दरी क नाम विशष रूप स उल्लखनीय हैं। अनूदित कृतियों म गोल्डस्मिथ के हरमिट ट्रवलर तथा डिजरटड विलज के अनुवाद क्रमश एकातवासी योगी श्रान्त पथिक तथा ऊजड ग्राम शीषकों स है। पाठक जी क का य के मुख्य विषय प्रकृति सुषमा राष्ट्र प्रम तथा समाज सुधार आदि है। ब्रज भाषा और खडी बोली दोनो ही भाषाओं म इ होने का य रचना की है। पाठक जी क का य क कुछ उदाहरण इस प्रकार है

दो घण्टे तक मुझ नित्य वह प्रम स आप पढाता था।
विद्या विषयक विविध चातुरी नित्य नई सिखलाता था।
मैं ही एक बालिका उसक सत्कुल म जीवित थी शष।
इसमे स्वत्व बाप क धन का प्राप्य मुझी को था निश्शष।
साधारण अति रहन सहन मृदु बोल हृदय हरने वाला।
मधुर मधुर मु स्यान मनोहर मनुजवंश का उजियाला।

सभ्य सुजन सत्कर्म परायण सौम्य सुशील सुजान।
शुद्ध चरित्र उदार प्रकृति शुभ विद्या बुद्धि निधान।

— — —

प्रकृति यहाँ एकांत बैठि निज रूप सँवारति।
पल पल पलटति भेस छनिक छबि छिन छिन धारति।
विमल अम्बु सर मुकुरन महँ मुख बिम्ब निहारति।
अपनी छबि पै मोहि आप ही तन मन वारति।

— — —

सुरपुर अरु कश्मीर इन्हन में को है सुन्दर?
का शोभा को भौन रूप को कौन समुन्दर?
काकों उपमा उचित इन्न दोउन में काकी?
वाकों सुरपुर की अथवा सुरपुर को याकी?
याकों उपमा याही की माँहि इन्न सुहावै।
या सम दूजो ठौर सृष्टि में दृष्टि न आवै।
यही स्वर्ग सुरलोक यही सुरकानन सुन्दर।
यहि अमरन को ओक यहीं कहुँ बसत पुरन्दर।
ताहि रसिक वर सुजन अवसि अवलोकन काज।
मम समान मन मुग्ध करहिं पावन फल आज।

नाथूराम शर्मा शंकर —

नाथूराम शर्मा शंकर का जन्म सन १८५८ में तथा मृत्यु सन १९३२ में हुई। इनके प्रमुख काव्य-ग्रन्थों में अनुराग रत्न, शंकर सरोज, गर्भरण्डा रहस्य, गीतावली, कविता कुंज, शंकर सर्वस्व, कलित कलेवर तथा शंकर सतसई आदि हैं। इनके काव्य में भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग की प्रवृत्तियाँ समान रूप से मिलती हैं। काव्य की भाषा, विषयवस्तु तथा छन्द विधान की दृष्टि से इनके काव्य में पर्याप्त नवीनता मिलती है। इनके काव्य में तीव्र व्यंग्यात्मकता का भी समावेश है। उपदेशात्मकता तथा समाज सुधार की भावना भी इनकी कविता में उपलब्ध होती है। कहीं-कहीं प्रकृति चित्रण के प्रभावशाली रूप मिलते हैं। वात्सल्य की आकर्षक भाव धारा भी उसमें प्रवाहित हुई है। इनके काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

उन्नत उरोज वरि चुगर उभरे हैं तो
काम ने भी त्यौरी की कमानें ताक तानी हैं।
शंकर की भारती के भावन भवन पर
मोह महाराज की पताका फहराती है।
हिया लट नागिनी की शावका सपरिना ने
आय विधु बिम्ब पै विलास विधि ठानी है।

काटती है कामिया का काटती रम्भा म ।,
भनुगी त रिया ता नमा रडा था।। है।

— — —

फन अम्बर f । राग का बगार ग रहा।
रूप मागर f गजीन मीप है या भी रहा।
गात गुन्हार रगाना ता मडी उपमा त दी।
पुष्प पाटन स ममन मो न्य मुषमा चूम ली।

— —

अब भिजान्या दयनीय न्यारा बड़ी है।
पकड़ तब का एक बना बाढ़ न जड़ती है।
आराहण इस भाति कर्म न्य ता जब गीया।
तब तो चढ़ना अश्व आि पर हमन मीया।

बालमुकुन्द गुप्त—

बालमुकुन्द गुप्त का ज म सन १८ ८ म तथा मृत्यु मन १८ ० म हुई थी। इनकी मुक्त न्त गद्य मा ह र त ात्र म है। इनकी रविताओ का एक सग्रह सन् १८०८ म स्फट कविता शायक म प्रकाशित हुआ था। इनर का य का प्रमुख गुण उसम समाविष्ट मार्मिकता है। बालमुकुन्द ग्र थावला म इनर काव्य का एक उदा हरण प्रस्तुत किया जा रहा है

अपन बन हम नाथ की रागा सात न राय।
नाद बन्दि कस भर भिख्या बन करि साय।
कहा राज रह पा प्रम कहा मान सम्मान।
पट हत पावन भरत हारे तुम्हरी सन्तान।
जिनर कर सो मरत नो घटया न कठिन कृपान।
तिनक सुत प्रभ पद हित, भय दास दरबान।

अयोध्यासिह उपाध्याय हरिऔध—

अयाध्यासिह उपाध्याय हरिऔध द्विवदी युग के महत्वपूण कवियो म है। खडी बोली का का य की भाषा क रूप म स्थान दिलान वालो म इनका नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इनका ज म सन १८६८ म तथा मत्यु सन १८४१ म हुई थी। गद्य तथा पद्य दोनो ही क्षत्र म इन्होने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। इनक प्रमुख काय ग्र था म रसिक रहस्य प्रमाम्बुवारिधि प्रम प्रपच प्रमाम्बु प्रस्रवण प्रमाम्बु प्रवाह प्रम पुष्पहार उद्बोधन काव्योपवन प्रियप्रवास कमवीर ऋतुमुकुर पद्य प्रसून पद्य प्रमोद, चोखे चौपदे चुभते चौपदे तथा रसकलश आदि है। प्रियप्रवास इनका सवप्रमुख प्रब ध काव्य है जो शृगार तथा प्रमपरक रचना है। इस खडी बोली का सवप्रथम महाकाव्य माना

जाता है। वदेही वनवास भी प्रबन्धात्मक कृति की रचना है। चोखे चौपदे तथा 'चुभते चौपदे' में हरिऔध जी ने लोक भाषा का प्रयोग किया है। रस कलश में इन्होंने ब्रज भाषा का भी प्रयोग किया था। छन्द विधान के क्षेत्र में भी इन्होंने अपनी काव्य शक्ति की मौलिकता का परिचय दिया है। छन्द की योजना के प्रति सजग रहने के कारण भाषा में भी वशिष्ट्य आ गया है। इनके विविध विषयक काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

राधा जाती प्रति दिवस थी पास नन्दांगना के।
नाना बातें कथन करके थी उन्हें बोध देती।
जो वे होती परम व्यथिता मूर्छिता या विपन्ना।
तो वे आठों पहर उनकी सेवना में बिताती।
घंटों तक हरि जननि को गोद में बैठती थी।
वे भी नाना जतन करती पा उन्हें शान्ति मग्ना।
धीरे धीरे चरण सहला और मिटा चित्त पीड़ा।
हाथों से थी युगल दृग के वारि को पोछ देती।

— —

जय-जय जयति लाल ललाम।
नवल नीरद श्याम।
शशि में शिरमणि मुकुट के मुक्ति सम नव नीति।
गुंजन करती है मनोरम ज्योति मुक्ता दाम।
दमक कर अति दिव्य द्युति में दिवस नाथ समान।
है भुवन तम कान्त उन्नत भाल ज्योति अभिराम।

— —

मञ्जु सुर सरि सुर करति असुर हू को
वासी वेद बनति मुक्ति मानिनी मनोहरा।
अरविन्द दारु चारु चन्दन बनत वेस,
काच महि वस होति कंचन कलेवरा।
हरिऔध कम मन्द रहत सती सी सुता
सिया बया सुनाती हू सुधार सहोदरा।
कस बसुधा का वसुधापन विदित होत
जो न होति सिद्ध भूमि भारत वसुंधरा।

राय देवीप्रसाद 'पूर्ण'—

राय देवीप्रसाद पूर्ण का जन्म सन् १८६८ में तथा मृत्यु सन् १९१५ में हुई थी। इन्होंने मौलिक तथा अनूदित साहित्य के क्षेत्र में अनेक कृतियाँ प्रस्तुत की थी। इनकी प्रमुख अनूदित रचनाओं में मेघदूत का अनुवाद 'धाराधर धावन' रमा युक

सवाद तत्व तरंगिणी तथा मौलिक रचनाओं में मुरलमय प्रवर्गनी स्यागा रामरावण विरोध स्वदेशी कुडल तथा वंग विभाग आदि हैं। इनके अतिरिक्त इन्होंने चन्द्रकला भानुकुमार नाटक शीर्षक एक नाटक कृति भी प्रस्तुत की थी। इनकी काव्य भाषा मुख्यत ब्रज है यद्यपि खडी बोली का प्रयोग भी इन्होंने अपनी कुछ रचनाओं में किया है। धार्मिक सामाजिक राष्ट्रीय तथा प्रकृति सम्बन्धी विषयों पर इन्होंने काव्य रचना की है। इनकी कविता का एक उदाहरण इस प्रकार है

मारा है दारिद्र्य का भारत गड अधीर।
कारीगर बिन जीविका है दुखित अति दीन।
है दुखित अति दीन बरन न चुना बार।
धीर धीरे इनर समय के हुआ हवाल।
अरे देश में हाय निरम्मा कपडा मारा।
तुमने ही कारिया जुलाहा का बस मारा।

रामचरित उपाध्याय—

रामचरित उपाध्याय का जन्म सन १८७२ में तथा मृत्यु सन् १९३८ में हुई थी। यह गाजीपुर के निवासी थे। इन्होंने संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की थी। इनका काव्य मुख्यत खडी बोली में लिखा गया है यद्यपि ब्रज भाषा पर भी इनका अच्छा अधिकार था। महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने पर इन्हें पर्याप्त प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला। अनेक स्फुट रचनाओं के साथ इन्होंने रामचरित चिन्तामणि शीर्षक एक प्रबन्ध-काव्य की भी रचना की थी। इनका नीतिपरक काव्य रचनाएं सूक्ति मुक्तावली में संगृहीत है। देवी द्रौपदी शीर्षक एक उपन्यास की रचना भी इन्होंने की थी। इनकी ख्याति का मुख्य आधार इनकी रामचरित चिंतामणि शीर्षक कृति ही है। यह ग्रन्थ पच्चीस सर्गों में लिखा गया है। इसमें मूलत वाल्मीकि तथा तुलसी की प्रेरणा और प्रभाव है। राम जन्म से लेकर लव कुश प्रसंग तक की घटनाएं इसमें वर्णित है। इसके कुछ काव्यांश यहां उदाहरणार्थ प्रस्तुत है

उठ नहीं राम कभी प्रभात में
उठ रहे बन्धु सभी प्रभात में।
स्वयं जगाने जननी उन्हें गया
खिली मना चम्पक की कली नयी।

— —

इसपर कहा मुनिनाथ ने रघुनाथ मत घबडाइए
मेरे कहे स मार्ग पर निशंक चलते जाइए।
चलिए चले शाला लख राजा जनकपुर की अभी
हैं असुर अगणित देश में फिर मारना उनको कभी।

— —

फिर शास्त्र रीति से जानकी रघनाथ से ब्याही गयी।
सुर राजपुरी सी हो गयी जनकपुरी मगलमयी।

गिरिधर शर्मा नवरत्न —

गिरिधर शर्मा नवरत्न का जन्म सन १८८१ में तथा मृत्यु सन १८६१ में हुई थी। इन्हे महामहोपाध्याय की उपाधि प्रदान की गयी थी। इनकी मौलिक तथा अनूदित कृतियों में मातृ वन्दना, न्यायशास्त्र, व्यापार शिक्षा, नुसूफा, कठिनाई में विद्याभ्यास, आराध्य त्रिस्मरण, जया जयंत, राई का पर्वत, सरस्वती यन्त्र, मुक्तायां, सावित्री, ऋतु विनोद, पुद्गल सिद्धान्त रहस्य, चित्राङ्गदा, भीष्म प्रतिज्ञा, कविता कुसुम, कल्याण मन्दिर, वीर भावना, रत्न करण्ड, निशापहार आदि हैं। विद्याभास्कर नामक पत्र का सपादन भी इन्होने किया था।

रूपनारायण पाडेय—

रूपनारायण पाडेय का जन्म सन १८८४ में तथा मृत्यु सन १८५८ में हुई थी। पाडेय जी ने निगमागम चन्द्रिका, नागरी प्रचारक, इन्दु तथा 'माधुरी आदि पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन करने के अतिरिक्त अनेक मौलिक तथा अनूदित कृतियों की भी रचना की थी। इनकी कृतियों में पराग, वन वैभव, वन विहंगम, आश्वासन तथा दलित कुसुम आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण यहा प्रस्तुत किया जा रहा है

बन बीच बसे थे फसे थे ममत्व में एक कपोत-कपोती कहीं।
दिन रात न छोड़ता एक को दूसरा ऐसे हिले मिले दोनों वहीं।
बढ़ने लगा नित्य नया नया नेह नई नई कामना होती रहीं।
कहने का प्रयोजन है इतना उनके सुख की रही सीमा नहीं।

रामनरेश त्रिपाठी—

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन १८८८ में तथा मृत्यु सन १८६२ में हुई। त्रिपाठी जी जौनपुर के रहने वाले थे। वहीं पर इनकी शिक्षा दीक्षा हुई थी। पूर्व छायावाद युग के स्वच्छन्दतावादी कवियों में इनका नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय भावना का समावेश भी इनकी काव्य कृतियों में मिलता है। इनके प्रमुख काव्य ग्रन्थों में सन १८१७ में प्रकाशित मिलन, सन १८२० में प्रकाशित पथिक, सन १८२७ में प्रकाशित मानसी तथा सन १८२८ में प्रकाशित स्वप्न के नाम उल्लिखित किये जा सकते हैं। इनमें से प्रथम स्फुट कविताओं का सग्रह तथा शेष खड काव्य हैं। प्रकृति चित्रण तथा प्रेम भावना इनके काव्य में मुख्यतः अभिव्यक्त मिलता है। इनकी कान्यतर कृतियों में वारागना, वानर वाला तथा पद्मा नामक उपन्यास, सुभद्रा, जयंत तथा 'प्रेमलोक' नामक नाटक एवं तुलसीदास और उनकी कविता तथा हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास शीर्षक आलोचना ग्रंथ आदि हैं। वानर नामक पत्र का प्रकाशन

ाय भी द हा? किया था। त्रिपाठीजी के काव्य ? कुछ उ ाहरण यहां प्रस्तुत कि
ा रहे हैं

एक समय स्वाधीन ेश था
समस्त भल भय रहित सुरक्षित
भोग स्वग सुख भाग र० थ
शाति सहित निविघ्न अनादि ।
सुधा मधुर रसमय काव्यों का
पठ-सुन समझ और अनुभव कर
अभिनय कर विनाद विनिमय कर
आनदित थ सब नारी नर ।

— —

पारस्परिक सहानुभतिमय
सकल मनुज जीवन निरन्व ।
हाट बाट घर घर म प्रतिदिन
करते थ सगीत महोत्सव ।
युवक युवतिया क कनाल स
गूजा रहता था घर उपवन
नित्य नवन कामना निरत थ
विविध विनोद युक्त उनक मन ।

— —

शक्ति नही जो नाथ तुम्हारा सुन भी सकू प्रयाण ।
रहते प्राण न जाने दूगी मेरे जीवन प्राण ।
सुन प्रणयी के इन्दु वदन म मदुल कौमुदी हास ।
विकसित हुआ झकाया उसने शशि का शशि क पास ।

— —

प्रतिक्षण नतन वश बनाकर रग बिरग निराला ।
रवि के सम्मुख थिरक रही है नभ म वारिद माला ।
नीचे नील समुद मनोहर ऊपर नील गगन है ।
घन पर बठ बीच म विचरू यही चाहता मन है ।

दुलारेलाल भार्गव—

दुलारेलाल भार्गव का ज म सन १९८६ म हआ था। आपने माधुरी तथा सुधा का सपादन भी किया था। हिन्दी के काव्य गौरव आलोचनात्मक कृति प्रस्तुत करने के साथ आपने दुलारे दोहावली शीर्षक काव्य रचना भी प्रस्तुत की है। यह रचना सतसई काव्य परम्परा की एक महत्वपूर्ण कडी के रूप म मान्य की जाती

है। विषय तथा भाव-साम्य की दृष्टि से यह रचना रीतिकालीन कवियों के अपेक्षाकृत अधिक निकट है। इनके काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है :

कवि कोविद पालन हेत जे नरपाल सुजान।
पालत आज खुशामदी, मालिक गनिका स्वान।

मैथिलीशरण गुप्त—

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् १८८६ में हुआ था। आधुनिक कवियों में लोकप्रियता की दृष्टि से इन्हें सर्वप्रमुख कहा जा सकता है। अपने सुदीर्घ जीवन-काल में इन्होंने अनेक मौलिक तथा अनूदित कृतियाँ प्रस्तुत की थीं। इनकी प्रमुख रचनाओं में अंजलि और अर्घ्य, अजित, अनघ, अर्जन और विसर्जन, उच्छ्वास, काबा और कर्बला, किसान, स्वप्नवासवदत्ता, राजा प्रजा, गीता, वक संहार, वन वैभव, वक संहार, वीरांगना, साकेत, विरहिणी व्रजांगना, रुबाइयात उमर खय्याम, मेघनाद वध, पलासी का युद्ध, विकट भट, विश्व वेदना, विष्णुप्रिया, वैतालिक, शकुन्तला, शक्ति, सिद्धराज, सैरन्ध्री, हिन्दू, हिडिम्बा, रत्नावली, रंग में भंग, युद्ध, यशोधरा, भूमि भाग, भारत भारती, 'कुणाल गीत', 'गुरुकुल', गुरु तेगबहादुर, चन्द्रहास, जयद्रथ-वध, जय भारत, झंकार, तिलोत्तमा, त्रिपथगा, द्वापर, नहुष, पंचवटी, नकावली, पृथ्वीपुत्र तथा प्रदक्षिणा आदि हैं। उपर्युक्त ग्रन्थों में से 'साकेत' खड़ी बोली में विरचित आधुनिक युग का सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है। इसे रामभक्ति काव्य परम्परा की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में मान्य किया जा सकता है। इसमें लेखक ने राम का चरित गान किया है। इसमें कवि ने अतीत युगीन भारतीय संस्कृति के सत्य और आदर्श भी प्रस्तुत किये हैं। रामकथा से सम्बन्धित जो मुख्य पात्र तथा पात्रियाँ हैं, उनमें से उपेक्षित चरित्रों का अंकन गुप्त जी ने अपेक्षाकृत विस्तार से किया है। वाल्मीकि तथा तुलसीदास से गुप्तजी ने इसकी कथा के सूत्र ग्रहण किये हैं। बारह सर्गों में विरचित इस महाकाव्य में कवि ने राम जन्म से लेकर भरत मिलाप तथा लक्ष्मण उर्मिला मिलन तक की कथा वर्णित की है। इसकी प्रधान पात्री के रूप में उर्मिला चित्रित हुई है जिसका दर्शन सारे महाकाव्य में व्याप्त है। इसमें मुख्यतः करुण और शृंगार तथा शान्त रसों का चित्रण हुआ है। गुप्तजी के काव्य के कुछ उदाहरण उनकी विभिन्न कृतियों से यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं :

स्वर्ग की तुलना उचित ही है यहाँ
किन्तु सुर सरिता कहाँ सरयू कहाँ ?
दीखते उनमें विचित्र तरंग हैं
कोटि शक्रशरासन होते भंग हैं।
द्वार पर हैं स्वर्ण मन्दिर सोहते
भावकों के भाव मन को मोहते।

साहित्य की अनेक विधाओं के क्षेत्र में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। आपकी प्रमुख रचनाओं में नगर सुधार कुसुम कुंज नखी ... बाँसी नूरजहाँ विक्रमादित्य प्रेम पाश रश्मियाँ ... प्रमद ... तथा आम कथा आदि है। नूरजहाँ एक ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य है। इसमें ... ऐतिहासिक तथ्यों को ... प्रेम कथा की सृष्टि की है। इस काव्य का एक उद्धरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

मलयानिल ! संदेश प्रेम का मेरा उन तक पहुँचाना।
उनके अति कठोर मानस का रंग ... कर लिखना दो।
अगर उसे सोते पाना तो हटकर नहीं जगाना।
जाकर पहुँच छिप उपवन में कलियों को विकसाना।
फिर भँवरों को भेज कमलमुख पर गुंजार कराना।
जितनी ... पड़ा में पड़ता ... किरण न छाटें।
पवन को समझाते रहना कि ताने मन चीरें।

हरदयालु सिंह—

हरदयालु सिंह का जन्म सन १८८३ में हुआ था। साहित्य के क्षेत्र में आपने अनेक टीका ग्रन्थ सम्पादित एवं आलोचनात्मक कृतियाँ पद्यानुवाद निबन्ध संग्रह अलंकार ग्रन्थ तथा दैत्यवंश एवं रावण नामक महाकाव्य प्रस्तुत किये। ये दोनों महाकाव्य ब्रज भाषा में निबद्ध हैं। इनकी रचना महाकाव्य के शास्त्रीय नियमों के आधार पर ही हुई है। माइकेल मधुसूदन दत्त लिखित मेघनाद वध से इनके दोनों महाकाव्य प्रभावित रह जाते हैं।

वियोगी हरि—

वियोगी हरि का पूरा नाम हरिप्रसाद द्विवेदी है। इनका जन्म सन १८९६ में हुआ था। आपने विविध विषयक अनेक कृतियों की रचना की है। इनकी लिखी हुई विभिन्न कृतियों में 'साहित्य विहार छद्मयोगिनी नाटिका ब्रजमाधुरी सार कवि कीर्तन अन्तर्नाद भावना प्रार्थना वीर सतसई विश्व धर्म मन्दिर प्रवेश अनुराग वाटिका प्रेम शतक प्रेम पथिक प्रेमांजलि प्रेम परिचय वीर वाणी संत वाणी बुद्ध वाणी श्रद्धाकण तथा तरंगिनी आदि प्रमुख है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

भीख सरिस स्वाधीनता कब कब जाँचत साधि।
अरे भमर की पायरिन पाटयो कौन पयाधि।

बलदेव प्रसाद मिश्र 'राजहंस—

डा० बलदेव प्रसाद मिश्र राजहंस का जन्म सन १८९८ में हुआ था। आप मध्य प्रदेश के राजनांद गाँव नामक स्थान के निवासी है। आपको तुलसी दर्शन' शीर्षक शोध ग्रन्थ पर डी० लिट० की उपाधि प्रदान की गयी थी। आपकी प्रमुख कृतियाँ में

एक दिग्विजय' 'जीव विज्ञान' 'समाजसेवक' 'कौशल किशोर' 'जीवन गीत', 'उमर खैयाम की रुबाइयाँ' 'भारत गीत' 'हृदय-बोध' 'भारतीय संस्कृति', 'मानस में रामकथा' 'जन स्मृति' 'छत्तीसगढ़ परिचय', 'भारतीय संस्कृति की गौरवगाथा' 'गोस्वामी जी का योगदान' 'मानस माधुरी' 'नीति शतक' 'रामराज्य' 'व्यंग्य विनोद' 'शृंगार शतक' 'वैराग्य शतक' 'असत्य-संकल्प' 'वासना-वैभव' 'साहित्य-लहरी' 'गीता-सार' 'मानक प्यासी' 'मृणालिनी-परिणय', 'मानस-मंथन' आदि हैं। 'भारत गीत' आधुनिक महाकाव्यों की परम्परा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसमें महाकवि ने भारत को नायक के रूप में चित्रित करते हुए एक महाकाव्य की रचना की है। कथा-वस्तु में मौलिकता तथा कलात्मक भावाभिव्यंजना से इस कृति में गरिमा आयी है। इसके कुछ काव्यांश उदाहरण के लिए यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं

मेरे कारण ही अवध राम ने छोड़ा
मेरे कारण तनु वृद्ध पिता ने तोड़ा।
मेरे कारण यह दशा तुम्हारी माता।
दानव हूँ दानव, विपुल व्यथा का दाता।

— —

वृथा वैर तथा दान न देव।
छला न छिपा कहीं क्या तक।

गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'—

गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' का जन्म सन् १८९८ में हुआ था। आपने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय काव्य, आलोचना एवं कथा साहित्य के क्षेत्र में दिया था। काव्य-साहित्य के क्षेत्र में आपने स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त 'तारकवध' नामक महाकाव्य भी प्रस्तुत किया। सुमित्रानन्दन पन्त ने इसके प्राक्कथन में लिखा है—'तारकवध का कथानक केवल नाम मात्र का प्राचीन परिचित पौराणिक कथानक है। कवि ने उसे अपनी कल्पना का सञ्जीवन पिलाकर वर्तमान युग की जीवन समस्याओं का व्यापक रंगमंच बनाने के अभिप्राय से उसका आमूल कायाकल्प कर दिया है। कथा के जीर्ण-शीर्ण पंजर नवीन प्राणों का शक्तिशाली स्पर्श पाकर मूर्तिमान होकर जाग उठे हैं। वास्तव में पात्रों के प्राचीन नामों को छोड़कर समग्र कथा-वस्तु प्रतीकात्मक परिधान धारण कर जैसे किसी जादू के बल से, मानव सभ्यता तथा संस्कृति की आधुनिकतम समस्याओं का निरूपण करते हुए मानव के सम्मुख उनका समाधान प्रस्तुत करने में सफल हो सका है।' यह रचना कुमारसम्भव से प्रेरित और प्रभावित कही जाती है।

मोहनलाल महतो 'वियोगी'—

मोहनलाल महतो 'वियोगी' का जन्म सन् १८८८ में हुआ था। इनकी प्रमुख काव्य कृतियों में 'अर्ध्य' 'निर्माल्य' 'एकतारा' 'सपन चित्र' तथा 'कल्पना' आदि

ने भी अनेक अनुवाद करके जनता में गुरु ... का भाव ... किया। अनेक महाकाव्य भी पौराणिक, ऐतिहासिक तथा राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों ... को आधार बनाकर लिखे गये। इन सब प्रयत्नों का परिणाम यह हुआ कि ... युग में ब्रज भाषा जो काव्य भाषा के रूप में जीवित ही रही खड़ी बोली भी एक काव्य भाषा के रूप में पूर्णतः प्रतिष्ठित हो गयी।

—)•(—

अध्याय : १४

आधुनिक युगीन राष्ट्रीय-काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक युग में हिन्दी काव्य के क्षेत्र में जो प्रवृत्तियाँ विकासशील रही हैं उनमें राष्ट्रीयता की प्रवृत्ति भी एक है। अनेक शताब्दियों तक भारतवर्ष को विभिन्न विदेशी जातियों की पराधीनता स्वीकार करनी पड़ी। इसीलिए समय-समय पर राष्ट्रीयता की भावना देशवासियों में जाग्रत और विकसित होती रही। जब इसका अतिरेक हो गया तब अनेक राष्ट्रीय आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ। ये आन्दोलन कभी तो अहिंसात्मक रहे और कभी इन्होंने हिंसात्मक रूप भी धारण कर लिया। राष्ट्रीयता के मूलभूत तत्वों के रूप में भौगोलिक एकता, जातीय एकता, सांस्कृतिक एकता, भाषागत एकता, धर्म क्षेत्रीय एकता तथा राजनैतिक एकता आदि को मान्य किया जाता है। भारतीय संस्कृति आरम्भ से ही राष्ट्रीय चेतना के जागरण का आवाहन करती रही है। सहस्रों वर्षों में राष्ट्र की जो धारणा हमारे देश में विकसित हुई है उसकी चरम परिणति विश्व एकता अथवा विश्व-बंधुत्व की भावना में है जो भारतीय संस्कृति की ही विशेषता है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चतुर्थांश में भारत में हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में नवीन युग का प्रवर्तन हुआ। इस समय तक सन १८५७ का भारतीय स्वतंत्रता के लिए किया गया पहला संग्राम समाप्त हो चुका था और उसकी प्रतिक्रियाएँ और परिणाम सामने आ चुके थे। शताब्दियों से हिन्दू राष्ट्रीय संस्कृति का जो रूप दमित था वह अब उभर कर सामने आ चुका था। वीरगाथा काल, भक्ति काल तथा रीति काल के प्रमुख कवियों का राष्ट्रीय स्वर भारतेन्दु युगीन कवियों के लिए एक सशक्त प्रेरणा थी। सन १८५७ की क्रांति के अनेक पात्र अब तक विख्यात होकर जनता के सामने आ चुके थे। राष्ट्र प्रेम की भावना से अभिभूत होकर जिन देशवासियों ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया उनकी गाथाएँ लोगों का स्मरण थीं। यद्यपि अनेक पाश्चात्य इतिहासकारों ने इस तथ्य की उपेक्षा करने की चेष्टा की कि यह एक सैनिक विद्रोह मात्र था परन्तु देशवासियों ने इसे एक महान क्रान्ति का पर्व माना। इसके अतिरिक्त एक और महत्वपूर्ण तथ्य इस क्रान्ति के फलस्वरूप स्पष्ट हुआ और वह यह कि जनता को यह आभास हुआ कि पहली बार किसी एक लक्ष्य से प्रेरित होकर सम्पूर्ण राष्ट्र में एक

[illegible] किया गया। इस [illegible] अंग्रेजी शिक्षा [illegible] देशवासियों की गुप्त राष्ट्रीय भावना जाग्रत हुई। [illegible] पाश्चात्य शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव भारतीय [illegible] पर पड़ता जा रहा था उसके प्रति [illegible] प्रतिक्रिया हुई। [illegible] राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना करके सामाजिक [illegible] का सूत्रपात किया। महादेव गोविन्द रानाडे ने प्रार्थना समाज की स्थापना करके [illegible] सिद्ध किया। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके सांस्कृतिक चेतना और जातीय गौरव की आवाज उठायी। स्वामी रामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानन्द ने भी देश की सुप्त राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने का प्रयत्न किया। [illegible] नेताओं ने अपने अपने क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के आन्दोलन करके [illegible] चेतना को जाग्रत किया। इस महान् कार्य में साहित्यकार भी पीछे न रहे। भारतेन्दु युग के पूर्व से ही स्पष्ट रूप में राष्ट्रीय भावना प्रधान कविता की प्रवृत्ति का आरम्भ हो गया था। इसकी सुस्पष्ट परम्परा भारतेन्दु युग में प्रवर्तित और विकसित हुई। साहित्य के क्षेत्र में भी अनेक पत्र पत्रिकाओं और संस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी जिन्होंने साहित्यिक गतिविधि और क्रियाशीलता का परिचय दिया था।

भारतेन्दु युग में राष्ट्रीय भावना प्रधान काव्य रचना करने वालों में बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', राधाकृष्ण गोस्वामी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाकृष्ण दास, बालमुकुन्द गुप्त तथा प्रतापनारायण मिश्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों ने देश की भौगोलिक एकता, प्राकृतिक सौन्दर्य, सांस्कृतिक गौरव, धार्मिक उच्चता, गौरवपूर्ण अतीत आदि का गान करते हुए राष्ट्रीय भावना जाग्रत की। इस युग के प्रमुख राष्ट्रीय कवियों के काव्य का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

हमारो उत्तम भारत देस।
जाके तीन ओर सागर है उत हिमगिरी अतिवेष॥
श्री गंगा यमुनादि नदी है विंध्यादिक परवेश।
रवि राकेश॥ (राधाचरण गोस्वामी)

—

[illegible] वह भोज
[illegible] वह ओज।

—

समृद्धि वह शोभा।
न है सब छोभा॥ (राधाकृष्ण दास)

—

इन दुखियान अखियान मह बन आर को राज ॥
जहँ मोरा को ?र नहीं अज्ञान का लाभ ।
जहाँ घर सुख सम्पदा बारह मास निवास ॥
जहाँ प्रबल को बल नहीं अरु निबलन की हाय ।
एक बार सो ?श्र पुन आखिन देहु दिखाय ॥ (बालमुकुन्द गुप्त)

— —

लसन इनकम चन्दा चन्दा पुलिस अदालत बरसा थाम ।
सबके हाथ असन बसन जीवन संशय मय रहत मुदाम ॥
जो इनहू ते प्रान बचे तो गाली बोलति हाय धड़ाम ।
मृत्यु देवता नमस्कार तुम सब प्रकार बस तप्यन्नाम ॥ (प्रतापनारायण मिश्र)

— —

चलहु वीर उठि तुरत सबै जय ध्वजहि उड़ाओ ।
लेहु म्यान सों खड्ग खींचि रन रंग जमाओ ॥
परिकर कसि कटि उठो धनुष पै धरि सर साधो ।
केसरिया बाना सजि सजि रन कंकन बाँधो ॥
जो आरजगन एक होइ निज रूप सम्हारै ।
तजि गृह कलहहि अपनी कुल मरजाद विचारै ॥
तौ यह कितने नाच कहाँ इनको बल भारी ।
सिंह जगे कहुँ स्वान ठहरिहैं समर मझारी ॥ (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)

— —

हुआ प्रबुद्ध वृद्ध भारत निज आरत दशा निशा का ।
समझ अन्त अतिशय प्रमुदित हो तनिक तब उसने ताका ॥
अरुणोदय एकता दिवाकर प्राची दिशा दिखाती ।
देखा नव उत्साह परक पावन प्रकाश फैलाता ॥
देशी वस्तुओं का अनुराग पराग उड़ाता ।
शुभ आशा सुगन्ध फैलाता मन मधुकर ललचाता ॥
उन्नति पथ अति स्वच्छ दूर तक पड़ने लगा दिखाई ।
खग वन्देमातरम मधुर ध्वनि पड़ने लगी सुनाई ॥ (प्रेमघन)

भारतेन्दु युग के पश्चात् द्विवेदी युग में भी राष्ट्रीय कविता की यह प्रवृत्ति विकासमान रही है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में राजनीतिक पार्टियों द्वारा किये गये स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से आन्दोलन और भी अधिक तीव्र हो गये। अनेक समाज-सुधारक नेता तथा संस्थाएँ भी जन समाज में न्यूनाधिक जागरण करने में सफल हुईं। स्वदेशी आन्दोलन आदि के फलस्वरूप भी जनता में क्रियाशीलता आयी। बीसवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश में प्रथम विश्वयुद्ध ने भी मानवजाति ?

—

विचारकों को गम्भीर चिन्तन के लिए बाध्य किया। आरम्भ में इस युद्ध का कोई सीधा सम्बन्ध न होते हुए भी योद्धाओं की संख्या में भारतवासियों को इस युद्ध में प्राणाहुति देनी पड़ी तथा असंख्य रुपया व्यय हुआ। इसके विरुद्ध आवाज उठाने वालों को सरकारी दमन चक्र का शिकार बनना पड़ा। महात्मा गांधी के नेतृत्व में अब भारतीय जनता नवीन उत्साह के साथ संगठित हुई और गांधी जी के जेल में भेज दिए जाने पर आन्दोलन में वृद्धि हुई। इस युग में श्रीधर पाठक, नाथूराम शंकर, गोपालशरण सिंह, मैथिलीशरण गुप्त, सत्यनारायण कविरत्न, ठाकुर प्रसाद शर्मा, रामनरेश त्रिपाठी, गया प्रसाद शुक्ल सनेही, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय, राय देवीप्रसाद पूर्ण आदि कवियों ने राष्ट्रीय भावना प्रधान काव्य की रचना की। इन कवियों ने देश की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दुरवस्था तथा उसके कारणों की ओर संकेत करते हुए राष्ट्रीय चेतना के जागरण का आह्वान किया। नीचे द्विवेदी युग के प्रमुख राष्ट्रीय कवियों के काव्य के प्रतिनिधि उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं

जय भव वंदित भारत भूतल।
सिर पर शोभित कलित किरीट सम विलसित अचल हिमाचल ॥
कण्ठ लग्न मुक्ता माला इव मंजुल सुरसरि धारा।
होता है विधौत पग पावन पूत पयोनिधि द्वारा ॥
मणि गण मण्डित कानन कलेवर तरु कोमल दल श्यामल।
सुधा भरित नाना फल संकुल सफली इस वसुधा तल ॥ (हरिऔध)

— — —

हैं यहाँ प्रसिद्ध रण वीर वरवीर भीष्म
उर में हमारे अब भी है मान जिनका।
शूरों में शिरोमणि कहाँ है धनुधारी पार्थ
करते सभी हैं दिव्य गुण गान जिनका।
मुनि देव! हैं यहाँ हमारे शिवराज आज
हमको सदैव रहता है ध्यान जिनका।
विश्व शुभ लोक में प्रताप है प्रतापवान
हम को सदा है बना अभिमान जिनका ॥ (गोपाल शरण सिंह)

— — —

पूर्वज वीर क्षत्रियों का है यह अभेद्य गढ़ बना हुआ
है सर्वत्र प्रबल सिंहों के उष्ण रक्त से सना हुआ।
शुचि सबला रमणीगण ने निज जौहर यहीं दिखाया था
निज शरीर भस्मावशेष से पावन इसे बनाया था।
हे दृढ़ साहस युक्त वीरगण! तुम्हें कोटिशः बार प्रणाम
कब फिर भारत में होंगे नर तुम से नीति निपुण गुण धाम।

हम से कुटिल नीच पुरुषों को है शतकोटि बार धिक्कार।
रक्षा होगी तभी हमारी जब तुम फिर लोगे अवतार॥
(ठाकुर प्रसाद शर्मा)

— — —

जो थे प्रणम्य पहले तुम कीर्तिमान
विज्ञान और बल विक्रम के निधान।
सम्पत्ति, शक्ति निज खोकर आज सारी
हा हा! हुए तुम वही सहसा भिखारी॥
दिव्यातिदिव्य तव रत्न, अहो, कहां हैं?
शोभा समूह पट पुंज कहां कहां हैं?
खोया सभी कुछ न हाय तुम्हें दया है।
हे देश! शेष तुम में रह क्या गया है? (महावीर प्रसाद द्विवेदी)

— — —

सब मिलि पूजिय भारत भाई।
भुवि विश्रुत सब वीर प्रसूता सरन हृदय सुखदाई॥
क्यों न जगत अब बार केसरी बठ अस अनसाई।
एकय मलनि सी द्रोह गयन्दहिं मन विदारि रिसियाई॥
प्रिय स्वच्छ सापार अघजल सिंचन करहु बनाई।
जपहु मुक्ति मन सत्य मन्त्र व देमातरम सुहाई॥ (सत्यनारायण कविरत्न)

— — —

पानी पीना देश का खाना दश का अन्न।
निमग्न देश रुधिर से नस-नस हो सम्पन्न॥
नस-नस हो सम्पन्न तुम्हारे उसी रुधिर से।
हृदय यहीं संयोग नहीं तक नक्र निर से॥
यदि न देश हित किया कहेंगे सब अभिमानी।
मुद नहीं तब रत्न नहीं तुम में कुछ पानी॥ (रामदेवी प्रसाद पूर्ण)

— — —

अस्थिर किया टोप वालों का गाया टोपी वालों ने।
शस्त्र बिना संग्राम किया है इन माई के लालों ने।
अपने निश्चय पर यह दृढ़ हैं मारो पीटो बन्द करो
अजब बालपन दिखलाया है इनका साथी कालों ने।
यहां जमाई है अपना जड़ पश्चिम के जिन पीओं ने।
असहयोग के पथ उपकार उनका अपनी खालों ने।

क्या यह कहा गया है—
भीमाजन आकि का कोई ११
फिर कुमार भीष्म की पताका ब्रह्मचारी की ।
उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमंडल में
उज्ज्वल अधीर और चिर नवीन ?—
श्रीमुख से कृष्ण के सुना था जहाँ भारत ने
गीता गीत सिंहनाद—
मर्मवाणी जीवन संग्राम की—
सार्थक समन्वय ज्ञान कर्म भक्ति योग का ? (दिनकर)

— — —

हल्दी घाटी मत्त तुम्हारे।
आंगन में भीषण संग्राम
रज में लीन हो गए पल में
अगणित राज मुकुट अभिराम।
युग युग बीत गए तब तुमने
खेला था अद्भुत रण रंग
एक बार फिर भरो हमारे
हृदय में मां वही उमंग। (सोहन लाल द्विवेदी)

— — —

तुम मिली हरियाली डाली
मुझे नसीब कोठरी काली।
तेरा नभ भर में संचार
मेरा दस फुट का संसार।
तेरे गीत कहावें वाह
रोना भी है मुझे गुनाह।
देख विषमता तेरी मेरी
बजा रही तिस पर रणभेरी। (माखनलाल चतुर्वेदी)

— — —

नर जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हों तेरे चरणों पर मां
मेरे श्रम संचित सब फल।
जीवन के रथ पर चढ़ कर
सदा मृत्यु पथ पर बढ़ कर
महाकाल के खरतर शर सह

सकूँ मुझे तू कर सुन्दर
जागे मेरे उर में तेरी
मूर्ति अश्रुजल धौत विमल
दृग जल से पा बल बलि कर दूँ
जननि जन्म श्रम-संचित फल ! (निराला)

— — —

सुन-सुन ये दीवाने जिसके आवाहन का शोर चले।
मचल मचल गलहार पहनकर फिर महफिल की ओर चले॥
चढ़ टिकटी पर चूम रस्सियाँ ये मतवाले उधर चले।
जिधर हमारे लाल नाचते बिहँस बिहँस कर बिखर चले॥
हँसते हँसते आखिर ये भी अपनी आँखें मूँद चले।
माँ की माला भरने को ये बन रुधिरों की बूँद चले॥ (नेपाली)

— — —

हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती—
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती—
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो बढ़े चलो !
असंख्य कीर्ति रश्मियाँ
विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के—
रुको न शूर-साहसी।
अराति सैन्य सिंधु में सुवाडवाग्नि-से जलो
प्रवीर हो जयी बनो बढ़े चलो बढ़े चलो। (प्रसाद)

— — —

युग के चरण में ध्यान मुग्ध
युग युग का विषय जनित विषाद
गुंजित कर दिया गगन जग का
भर तुमने आत्म निनाद।
रो रो खद्दर के सूतों में
नव जीवन आशा स्पृहा हास
मानवी कला के सूत्रधार।
हर दिशा यश चौगुन प्रवाह। (सुमित्रानन्दन पंत)

— — —

हर [illegible] हर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] गया [illegible] भर गया [illegible] हर हर [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] अग्नि की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] गिरा [illegible] गिरा हम [illegible] गिरा [illegible] गिरा।
[illegible] [illegible] उतार गिरा [illegible] [illegible] [illegible] गिरा।

(श्यामनारायण पाण्डेय)

— — —

पुरखों का अभिमान तुम्हारा
और जीवन [illegible]
राम मुहम्मद की सन्ताना
[illegible] न मारा [illegible]
सत्यनाश की [illegible] में
मुख शांति [illegible] आना
मां [illegible] बच्चा [illegible]
छूरा भोंकने वाला
ऐसी बर्बरता का इतिहास में नहीं ठिकाना
मेरा देश जल रहा कोई नहीं बुझाने वाला। (सुमन)

— — —

भारत की आरती
देश देश की स्वतन्त्रता देवी
आज अमित प्रेम से उतारती।
साम्राज्य पूंजी का क्षत होवे
ऊंच नीच का विधान नत होवे
साधिकार जनता उन्नत होवे
जो समाजवाद जय पुकारती
यह किसान कमकर की भूमि है
पावन बलिदानों की भूमि है
भव के अरमानों की भूमि है
मानव इतिहास को संवारती। (शमशेर बहादुर सिंह)

— — —

अब कुछ ऐसी हवा चली है
जिससे सुप्त जगत जागा है।
जिससे कम्पित जीर्ण जगत ने
आज मरण का वर मांगा है।

उनका बढ़ न जल्द दफनाओ
    नवयुग क जन आ आओ।
नवनिर्माण करो तुम जग का
    जीवन का समाज का मन का ॥ (त्रिलोचन)

— — —

विश्व म आनन्द बरस
थी यही शुचि चाह तेरी।
आज दुखिया क हृदय की
वेदना का घन सघन
थी गगन म उठ रही
बन कर गहन घन चाह तेरी
विश्व म आनन्द बरस
थी यही शुचि चाह तेरी। (हरिकृष्ण प्रेमी)

महत्व—

इस प्रकार स राष्ट्रीय कविता की प्रवृत्ति आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य क क्षेत्र म उन्नीसवी शताब्दी क अन्तिम चतुर्थांश म विकसित होकर वर्तमान काल तक प्रवाहशील मिलती है। राष्ट्रीयता की भावना मानवीय चेतना का एक अंग है। राष्ट्र क प्रति तन्मयता क लिए किसी भी व्यक्ति क हृदय म जागरूकता की भावना विद्यमान रहती है। हमार देश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्पराए इस राष्ट्र क भाव स युक्त हैं। समय समय पर इतिहास म एस अवसर आय ह जब राष्ट्रीय भावना क एकीकरण और समग्र रूप स जागरण की आवश्यकताए हुई हैं। जब जब हमार देश पर विदेशी जातियो क आक्रमण हुए ह तब तब राष्ट्रीय चेतना का आह्वान कवियो न किया है। केवल आधुनिक युग म ही नही वरन हिन्दी साहित्य क सभी युगो म राष्ट्रीय भावना प्रधान काव्य की रचना कविगण करत रह ह। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि अन्य प्रवृत्तियो क पोषक कवियो न भी राष्ट्रीय भावना प्रधान काव्य की रचना की है। आधुनिक युग म भारतेन्दु क समकालीन कवियो न सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रो म जागरण क उद्देश्य स राष्ट्रीय काव्य प्रणयन का प्रसार किया। अनक सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनो का आधार पाकर भी यह काव्य धारा विकसित हुई। आधुनिक युग म शिक्षा क प्रसार क साथ-साथ जन समाज म जो सुधार की भावना जाग्रत हुई उसस भी राष्ट्रीय एकता को बल मिला। आधुनिक युग म राष्ट्रीय कविता अनक क्षेत्रीय आन्दोलनो स समर्थित होकर पनपी है। राष्ट्रीय एकता क लिए ही समाज म व्याप्त अनक कुरीतियो क निवारण क लिए भी आन्दोलन किए गए। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन राधाकृष्णदास बालमुकुन्द गुप्त तथा प्रतापनारायण मिश्र आदि कवियो न भारतेन्दु युग म राष्ट्र काव्य प्रणयन क

विकास में योग दिया। द्विवेदी युग में इस क्षेत्र में और भी अधिक विकासोन्मुखता आभासित हुई। महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, अयोध्यासिंह उपाध्याय, श्रीधर पाठक, ठाकुर गोपालशरण सिंह आदि कवियों ने इस क्षेत्र में योगदान दिया। वर्तमान युग में इसका उत्तरोत्तर विकास होता जा रहा है। देश में रुचि के साथ साथ भी कवियों ने राष्ट्रीय रचना का आह्वान किया। जयशंकर प्रसाद, बदरीनाथ भट्ट, बालकृष्ण शर्मा नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, निराला, दिनकर, सियारामशरण सिंह गुप्त आदि अनेक कवियों ने इस काव्य प्रवृत्ति के विकास में योग दिया। इस प्रकार आधुनिक युग के अनेक कवियों ने राष्ट्रीय काव्य की यह प्रवृत्ति हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रवाहशील मिलती है।

—)o(—

अध्याय : १५

आधुनिक युगीन छायावादी काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में छायावादी काव्य प्रवृत्ति का आरम्भ बीसवीं शती के तीसरे दशक में हुआ। अंग्रेजी साहित्य का हिन्दी पर अधिकांश विधाओं के क्षेत्र में बंगला के माध्यम से प्रभाव पड़ा। छायावाद के क्षेत्र में भी यही तथ्य है। यह शब्द भी बंगला से ही आया है यद्यपि उसका प्रभाव बंगला के माध्यम से अंग्रेजी की देन है पर नाम की दृष्टि से भी इस काव्य में यही विशेषता मिलती है। कहा जाता है कि छायावाद का जन्म हिन्दी युग की पौराणिक सभ्यता से प्रभावित निर्मित साहित्य के प्रति विद्रोह अथवा प्रतिक्रिया की भावना के फलस्वरूप हुआ था। कुछ विचारकों ने इसे आधुनिक पौराणिक धार्मिक चेतना के विरुद्ध लौकिक चेतना का विद्रोह तथा कुछ ने उसे स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह भी माना है। अनेक आलोचकों ने छायावाद को रहस्यवाद तथा आध्यात्मिक भी बताया है। वस्तुतः छायावाद सौन्दर्य और प्रेम का काव्य है। इसमें कवि स्वातन्त्र्य के काव्य में जो आध्यात्मिकता अथवा लोकपरक मानववादिता मिलती है उसका समावेश भी इस काव्य में है। जीवन के वैयक्तिक पक्ष इसमें विकसित रूप में चित्रित हुए हैं। विभिन्न विद्वानों ने छायावाद की परिभाषा विविध रूप में की है। पं० रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया है — एक तो रहस्यवाद के सम्बन्ध में जहाँ उसका सम्बन्ध काव्य की वस्तु से होता है और जिसमें कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अभिव्यंजना करता है और दूसरे काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में। इसीलिए शुक्ल जी ने हिन्दी के प्रमुख छायावादी कवियों को दो वर्गों में विभक्त किया है। पहले में वह महादेवी को रखते हैं और दूसरे में पंत, प्रसाद, निराला तथा इन सब कवियों को जो प्रतीक पद्धति या चित्र भाषा शैली की दृष्टि से छायावादी कहलाये। अनेक आलोचकों ने छायावाद को एक वाद कहने से भी इन्कार किया है जिनमें डा० विनयमोहन शर्मा आदि विचारक हैं। इनका अनुमान है कि चूँकि छायावाद की पृष्ठभूमि में किसी प्रकार की दार्शनिकता नहीं है अतः इस काव्य को एक

रवीन्द्र की ही मात्र ही कहा जा सकता है। श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने छायावाद को काव्य की एक रसात्मक और श्रेष्ठ अभिव्यक्ति बताया है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने छायावाद में भावुकता, सात्विकता, रहस्य, सुन्दरता, कामना, वासना, करुणामयी प्रकृति प्रेम, उच्च धारणा आदि तत्वों का समावेश बताया है। डा० नगेन्द्र का विचार है कि छायावाद एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है जिसका आधार है जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है। इसकी प्रवृत्ति अन्तर्मुखी तथा वायवी है और इसमें मुख्यतः प्रकृति के प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्ति हुई है। डा० रामकुमार वर्मा ने छायावाद को रहस्यवाद का भी पर्याय माना है। डा० देवराज ने छायावाद को गीति काव्य, प्रकृति काव्य, प्रेम काव्य तथा रहस्यवादी काव्य कहा है। इनके मत से इसमें ध्वनिकता या अस्पष्टता, बारीकी या गुम्फन की सूक्ष्मता तथा लाक्षणिकता और [illegible] रूप में तीन मुख्य तत्व विद्यमान हैं। श्री विश्वम्भर मानव ने प्रकृति में चेतना के आरोप को छायावाद बताया है। उनके विचार से प्रकृति में मानवीय भावों का आरोप ही छायावाद है। उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त हिन्दी में अन्य भी अनेक आलोचक हुए हैं जिन्होंने छायावाद के विविध पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। इनके अतिरिक्त स्वयं छायावाद के प्रमुख कवियों ने भी व्याख्या और विश्लेषण के प्रयत्न किये हैं। छायावाद के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद ने बताया है कि जब काव्य के क्षेत्र में वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद नाम दिया गया। यह काव्य परम्परानुवादी रीति काव्य से भिन्न था। रीति काव्य में बाह्य वर्णन की प्रधानता थी। छायावाद में भिन्न भावों की नवीन अभिव्यक्ति हुई जो भाव आन्तरिक स्पर्श से पुलकित थे। छायावाद की श्रेष्ठतम कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा ने इसे काव्य प्रवृत्ति की इतिवृत्तात्मकता के विरुद्ध मनुष्य की कोमल और सूक्ष्म भावनाओं के प्रति विद्रोह बताया है। उनके मत से छायावाद प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीत है। इसीलिए छायावादी काव्य की सभी प्रतिनिधि रचनाओं में प्रकृति के सूक्ष्म सौंदर्य में व्यक्त किसी परोक्ष सत्ता का आभास तथा प्रकृति के व्यष्टिगत सौंदर्य पर चेतना का आरोप भी रहता है। उनका अनुमान है कि जहाँ तक छायावाद की प्रेरणा का सम्बन्ध है वह पाश्चात्य साहित्य तथा बंगला साहित्य से प्रभावित होने के साथ साथ हिन्दी रहस्यवादियों की परम्परा से भी प्रभावित है। श्री सुमित्रानन्दन पंत ने छायावाद को एक आधुनिक आन्दोलन बताया। उनका विचार है कि छायावादी सौंदर्य बोध और कल्पना में पाश्चात्य साहित्य का पर्याप्त प्रभाव है। इस प्रकार से छायावाद की प्रेरणा और स्वरूप के विषय में विभिन्न आलोचकों और कवियों के मत परस्पर भिन्नता रखते हैं। छायावाद की उपलब्धियों के विषय में भी विविध विद्वानों के विभिन्न मत हैं। इनमें यह स्पष्ट होता है कि छायावाद का उद्भव प्रतिक्रिया अथवा विद्रोह के रूप में हुआ। अंग्रेजी और बंगला साहित्य की पूर्ववर्ती और समकालीन प्रवृत्तियों ने भी इसे अनुप्रेरित किया। द्विवेदी युग की रीति काव्य से प्रभावित कविता के प्रति भी इसमें

विद्रोह की भावना थी। वस्तुतः प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात जनता की मनोभावनाओं में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ। सामाजिक चेतना सुप्तावस्था से जाग्रतावस्था को प्राप्त हुई। इसलिए छायावाद के प्रवर्तकों और समर्थकों ने अपने कवि हृदय की अभिव्यंजना के लिए आन्तरिक अनुभूति को ही यथार्थ और महत्वपूर्ण बताया है। अहम् भावना वैयक्तिकता तथा स्वातंत्र्य आदि तत्व इसी कारण से इसमें समाविष्ट हुए। प्रकृति में चेतना का जो आरोपण छायावादी कवियों ने किया है वह इसलिए क्योंकि प्रकृति की समग्रता में कवि को एक अज्ञात चेतना के दर्शन मिलते थे। वह प्रकृति के इस चेतन रूप में मनुष्य की भांति ही संवेदनशीलता का आभास पाता था। प्रकृति में मानवीय भावनाओं और चेतना का ही आरोपण हिन्दी काव्य साहित्य में एक सर्वथा नवीन वस्तु थी। छायावादी कविता इन्हीं नवीनताओं और विशेषताओं के कारण लोकप्रिय हुई। नीचे छायावादी कविता के मुख्य तत्वों तथा प्रतिनिधि कवियों के काव्य के आधार पर संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

जयशंकर प्रसाद—

छायावाद के प्रवर्तक कवियों में सर्वप्रथम श्री जयशंकर प्रसाद का नाम उल्लेखनीय है। उनके काव्य में वेदना का चित्रण नवीन शैली में प्रभावशाली रूप में हुआ है। वेदना की अतिशयता छायावादी कविता की एक सामान्य विशेषता है। यह वेदना अनुभूत्यात्मक सत्यता से युक्त है। उसकी पीड़ा अनुभूतिजन्य और मार्मिक है।

इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती॥

— — —

मेरी आहों से जागा, मुस्मित में सोने वाले।
अधरों से हंसते हंसते आंखों से रोने वाले॥

— — —

सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा।
अभी समय भी नहीं, थकी सोयी है मेरी मौन व्यथा॥

आदि पंक्तियां जयशंकर प्रसाद की वेदना भावना की परिचायक हैं। आंसू और लहर की ये पंक्तियां लौकिक स्तर पर प्रेम की भूमि में विरह करती हैं। आध्यात्मिक आधार पर इन्हें सिद्ध कर भी अनेक आलोचकों ने इनके स्वरूप का विवेचन किया है। प्रसाद की वेदना का आधार प्रेम भावना है। असफल प्रेम प्रतिक्रिया के रूप में मन को पीड़ित कर देता है। फिर वह उस प्रेम-जनित वेदना को ही सजाकर विरह की अवस्था में अपना सब कुछ बना कर रख देता है क्योंकि अतीत युगीन प्रेम की स्मृति उसे भविष्य में भी आस्था रखने को बाध्य करती है। निम्नलिखित पंक्तियां ऐसा ही भाव द्योतित करती हैं

पागल रे! वह मिलता है कब!
उसको तो देते ही हैं सब

आंसू के कन कन से गिनकर
यह विश्व लिए है ऋण उधार
तू क्यों फिर उठता है पुकार ?
मुझको न मिला रे कभी प्यार !

— —

इस शिशिर आह में खिलकर तुम आओगे ...।
इस बड़ी व्यथा का मेरी ... ...॥

प्रसाद के काव्य में छायावाद के जो ... मिलते हैं उनके आधार पर ... उस अभिजात वर्गीय मनोवृत्ति से युक्त भी सिद्ध किया है। प्रसाद ... की ... समृद्धि भी इस कथन को परिपुष्ट करती है। प्रसाद ने कामना मधुरिमा ... सोना चांदी हीरा मोती आदि उपमान भी अपने काव्य में विस्तार से प्रयुक्त किए हैं। स्वर्ण सृष्टि स्वर्ण शतदल स्वर्ण हृदय स्वर्ग मदिरा हीरक हार ... भरा मुख मणि दीप मणि मेखला चमक की मधुशाला आदि प्रयोग प्रसाद के काव्य में मिलते हैं। इस अभिजात वर्गीय मनोवृत्ति के साथ साथ नवीन ... का सूचक भी कहा जा सकता है। जहां तक छायावादी काव्य में विचार तत्व का सम्बन्ध है प्रसाद ने उसे कल्पनापरक भावभूमि प्रदान की है। प्रकृति के प्रति अत्यन्त मोह भावना और उसमें चेतना का आरोप अधिकांश छायावादी कवियों ने किया है। नारी विषयक नवीन दृष्टिकोण भी इन कवियों ने प्रस्तुत किया है जो हिन्दी काव्य में विद्यमान परम्परागत दृष्टिकोण से भिन्न है।

नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में॥

नारी का यह स्वरूप देकर प्रसाद ने प्रेम पथ में स्वार्थ और कामना ... करना होगा की भावना का समावेश किया है। सौन्दर्यानुभूति के भी नवीन चित्रण प्रसाद के काव्य में विद्यमान हैं जो परम्परागत काव्य से भिन्न दृष्टिकोण के ही सूचक हैं। उन्होंने कामायनी में लिखा है

वरदान चेतना का उज्ज्वल सौंदर्य जिसे सब कहते हैं
जिसमें अनन्त अभिलाषा के सपने सब जगते रहते हैं।

प्रसाद के काव्य की एक प्रमुख विशेषता प्रकृति में चेतन सत्ता का आरोपण है। जैसा कि ऊपर संकेत किया गया है प्रसाद ने अपने काव्य में प्रकृति में मानवीय चेतना की स्थिति करके उसके रूप को व्यापक पृष्ठभूमि में एक अकृत्रिम सौन्दर्य से युक्त करके प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्रकृति के बाह्य रूप और आकार का चित्रण न करके उसके आभ्यन्तरिक स्वरूप का भी उद्घाटन किया है। प्रसाद की यह धारणा है कि सभी जड़ और चेतन उसी एक अंश महाचेतन सत्ता का अंग हैं। उनके प्रत्येक कण अणु और परमाणु में एक ऐसी चेतना है जो उसी महाअंश से प्रेरित है। प्रस्तुत और अप्रस्तुत

दोनों ही विधाओं के द्वारा प्रसाद ने प्रकृति चित्रण किया है। मानव और प्रकृति के संघर्ष, इसमें मानव की पराजय, प्रकृति का निरीह मानव के प्रति प्रेम और मनुष्य की उस पर विजय आदि प्रकृति के उग्र और सनातन स्वरूप के निदर्शक हैं। निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रसाद के प्रकृति चित्रण के सुन्दर निदर्शन की द्योतक हैं

युगों की चट्टानों पर सृष्टि डाल पद-चिह्न चली गम्भीर।
देव गंधर्व असुर की पंक्ति अनुसरण करती उसे अधीर॥

—

पंचभूत का भैरव मिश्रण शंपाओं के शकल निपात।
उल्का लेकर अमर शक्तियाँ खोज रहीं ज्यों खोया प्रात॥
धँसती धरा धधकती ज्वाला ज्वालामुखियों के निःश्वास।
और संकुचित क्रमशः उसके अवयव का होता था ह्रास॥

—

अहा वह मुख पश्चिम के व्योम बीच जब घिरते हों घनश्याम।
अरुण रवि मंडल उनको भेद दिखाई देता हो छविधाम॥
या कि नव इन्द्रनील लघु शृंग फोड़ कर धधक रही हो कांत।
एक लघु ज्वालामुखी अचेत माधवी रजनी में अश्रांत॥
घिर रहे थे घुंघराले बाल अंस अवलम्बित मुख के पास।
नील घन शावक से सुकुमार सुधा भरने को विधु के पास॥

इस प्रकार के छायावादी कविता के मूल तत्व जयशंकर प्रसाद के काव्य में निहित हैं। रचनात्मक साहित्य के क्षेत्र में प्रसाद जी ने गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में अपनी रचनागत मौलिकता और नवीनता का परिचय दिया है। प्रेम विरह और सौन्दर्य आदि के चित्रण की जो नवीन पद्धति प्रसाद के काव्य में मिलती है वह तो अनूठी है। आँसू में प्रेम व्यापार की सूक्ष्माभिव्यक्ति के साथ-साथ उसकी गम्भीर और व्यापक प्रतिक्रियात्मक सम्भावनाओं का चित्रण किया गया है। प्रसाद की भाव व्यञ्जना अपनी सम्पूर्ण विशदताओं के साथ इसमें अभिव्यक्त हुई है। लहर, आँसू, झरना आदि के साथ साथ कामायनी महाकाव्य में प्रसाद ने जिन आध्यात्मिक, दार्शनिक तथ्यों का निदर्शन किया है वह भी समकालीन काव्य की एक विशिष्ट उपलब्धि के रूप में मान्य किया जा सकता है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला —

छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भों में श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला भी एक हैं। उनके प्रतिनिधि काव्य संग्रह परिमल, अणिमा, गीतिका, तुलसीदास, अनामिका, बेला, नये पत्ते, कुकुरमुत्ता तथा अर्चना हैं। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि छायावाद के प्रवर्तक और पोषक इन चार कवियों में मात्र निराला के काव्य में आधुनिक काव्य

आंसू से भीग पट में लिपटकर
ये विश्व निरखे है अश्रुपूर्ण उद्गार
तू क्यों फिर उठता है पुकार ?
मुझको न मिला रे कभी प्यार !

— —

इस शिथिल आह में खिंचकर तुम आओगे आओगे।
इस बढ़ी व्यथा को मेरी रोओगे अपनाओगे॥

प्रसाद के काव्य में छायावाद के आनन्द मिलते हैं उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि
उस अभिजात वर्गीय मनोवृत्ति ने युग भी सिद्ध किया है। प्रसाद की कविता की सांस्कृतिक
समृद्धि भी इस कथन की परिपुष्टि करती है। प्रसाद ने कामायनी में प्रायः
सोना चांदी हीरा मोती आदि उपमान भी अपने काव्य में विन्यास के रूप में लिए
हैं। स्वर्ण सृष्टि स्वर्ण शालिनी स्वर्ण हृदय स्वर्ण मंदिर आदि शब्दों से
भरा मुख मणि दीप मणि मेखला वैभव की मधुशाला आदि प्रयोग प्रसाद के काव्य
में मिलते हैं। इन्हें अभिजात वर्गीय मनोवृत्ति के साथ साथ नवीन रसिकता का सूचक भी
कहा जा सकता है। जहां तक छायावादी काव्य में विचार तत्व का सम्बन्ध है प्रसाद
ने उस वेदनापरक भावभूमि प्रदान की है। प्रकृति के प्रति अनन्य मोह भावना और
उसमें चेतना का आरोप अधिकांश छायावादी कवियों ने किया है। नारी विषयक
नवीन दृष्टिकोण भी इन कवियों ने प्रस्तुत किया है जो हिन्दी काव्य में विद्यमान
परम्परागत दृष्टिकोण से भिन्न है।

नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में॥

नारी का यह स्वरूप लेकर प्रसाद ने प्रेम मन में स्वार्थ और कामना त्याग करना
होगा की भावना का समावेश किया है। सौन्दर्यानुभूति के भी नवीन चित्रण प्रसाद के
काव्य में विद्यमान हैं जो परम्परागत काव्य से भिन्न दृष्टिकोण के ही सूचक हैं। उन्होंने
कामायनी में लिखा है

वरदान चेतना का उज्ज्वल सौंदर्य जिसे सब कहते हैं
जिसमें अनन्त अभिलाषा के सपने सब जगते रहते हैं।

प्रसाद के काव्य की एक प्रमुख विशेषता प्रकृति में चेतन सत्ता का आरोपण है।
जैसा कि ऊपर संकेत किया गया है प्रसाद ने अपने काव्य में प्रकृति में मानवीय चेतना
की स्थिति करके उसके रूप को व्यापक पृष्ठभूमि में एवं अकृत्रिम सौंदर्य से युक्त करके
प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्रकृति के बाह्य रूप और आकार का चित्रण न करके उसके
आभ्यंतरिक स्वरूप को भी उद्घाटित किया है। प्रसाद की यह धारणा है कि सभी
जड़ और चेतन उसी एक अनन्त महाचेतन सत्ता का अंग हैं। उनके प्रत्येक कण अणु
और परमाणु में एक ऐसी चेतना है जो उसी महाअंश से प्रेरित है। प्रस्तुत और अप्रस्तुत

की अन्य धाराओं विशेषतः प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के भी बीज विद्यमान हैं। [illegible] [illegible] यह कहा जा सकता है कि इन काव्य प्रवृत्तियों का आरम्भ [illegible] निराला इनकी भावी विकास की दिशा का [illegible] [illegible] में उनका प्रभाव ग्रहण किया। आधुनिक हिन्दी काव्य [illegible] निराला का ही भाव [illegible] छन्द अभिव्यक्ति और प्रतीक [illegible] [illegible] प्रयोग [illegible] [illegible] है। कतिपय आलोचकों का यह भी अनुमान है कि मुक्त छन्द [illegible] [illegible] निराला [illegible] नयी पीढ़ी के कवियों का मार्ग प्रशस्त करने की [illegible] रहा है। [illegible] का आधार निराला का स्वयं मुक्त छन्द का [illegible] कवि होना है। उनकी कविताओं में ऐसे अनेक उदाहरण मिल जायेंगे जो इस दृष्टि से विशिष्टता रखते हैं। एक उदाहरण इस प्रकार है

वह आता
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को
भूख मिटाने को
वह फटी पुरानी
झोली को फैलाता
पछताता पथ पर आता।

छायावादी कविता में वेदना का जो चित्रण व्यापक परिमाण में मिलता है वह निराला के काव्य में भी विद्यमान है। 'दुख ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ आज जो नहीं कही' जैसी पंक्तियाँ पीड़ा की तीव्रता का बोध कराती हैं। इसके अतिरिक्त निराला का विद्रोही स्वभाव और क्रांतिकारी वृत्ति छायावाद के अन्य कवियों की तुलना में विशिष्टता रखती है। उनके सर्वप्रथम काव्य संग्रह परिमल में जूही की कली, प्रभाती, यमुना के प्रति, वासन्ती तथा हम जाना है जग के पार आदि रचनाएँ निराला की प्रेम भावना और सौन्दर्याभिव्यक्ति की परिचायक हैं। अनामिका में निराला का दार्शनिक रूप प्रधान हो गया है। तुलसीदास तथा गीतिका आदि की रचनाएँ भी इसी तत्त्व से युक्त हैं। रहस्यवादी कोटि के गीतों में से अधिकांश गीतिका में संग्रहीत हैं।

मेरे प्राणों में आओ
शत शत शिथिल भावनाओं के
उर के तार सजा जाओ
गान दो प्रिय मुझे भूल कर

अपनापन अपार जग सुंदर
खुली वरुण उर की सीपी पर
स्वाती जल नित बरसाओ
मेरे प्राणों में आओ।

निराला का काव्य कल्पनाशीलता की प्रखरता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। तुलसीदास, राम की शक्ति-पूजा तथा यमुना के प्रति आदि कविताओं में उनकी कल्पना का सामर्थ्य अभिव्यंजित हुई है। छायावाद की सामान्य विशेषता प्रकृति में चेतन कार्य व्यापार के संकेतों की निहिति निराला की इन कविताओं में मिलती है। प्रकृति की सामान्य हलचल में कवि को अतीत की गाथाएँ भी स्मरण हो आती हैं

स्वप्नों सी उन किन आँखों की
पल्लव छाया में अम्लान
यौवन की माया सा आया
मोहन का सम्मोहन ध्यान
गंध-लुब्ध किन अलि बालों के
मुग्ध हृदय का मृदु गुंजार
तेरे दृग-कुसुमों की सुषमा
जाँच रहा है बारम्बार।

प्रकृति में मानवता का यह आरोप कहीं-कहीं असाधारण रूप में सुन्दर और मोहक रूप में अभिव्यक्त हुआ है। उदाहरण के लिए संध्या सुन्दरी का निम्नलिखित चित्र प्रस्तुत किया जा सकता है

मेघमय आसमान से उतर रही है,
वह संध्या सुन्दरी परी-सी।
धीरे धीरे धीरे
तिमिरांचल में नहीं कहीं चंचलता का आभास
मधुर मधुर हैं दोनों उसके अधर
किन्तु ज़रा गंभीर नहीं है
उसमें हास विलास
डूबा रवि अस्ताचल
संध्या के दृग छल छल।

प्रतीकों के नवीन प्रयोग की दृष्टि से निराला की लिखी हुई जूही की कली नामक कविता का उल्लेख किया जा सकता है। इसमें कवि ने जूही की कली का चित्रण करते समय न केवल जड़ प्रकृति चेतना की निहिति इंगित की है वरन एक नायिका के रूप में भी उसका चित्रण किया है

विजन वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी स्नेह स्वप्न मग्न

र प्रति रवि न हृदय म एक सहज ममता विद्यमान मिलती है। इस मी रच और श्रम साध्य पर छायावादी कविता की एक मामा य जिज्ञासा की भांति रहस्य भावना का आवरण मिलता है। रवि की प्रकृति की मु र और आकर्षक छवि म भी गुरु गर्भा की वहुलता दिखाई देती है

आज साथ प्रय का अज्ञात
स्वप्न म खोता गयी प्रभात
मूक सरता म हिर पात
यह रह स्पष्ट बात
आज कवि के चिर जाग्रत प्राण
पा गये अपना गान।

भाषा शैली तथा छदा के क्षत्र म पत न कुछ नय प्रयोग किय हैं। उदाहरण के लिए कवि क ग्राम्या नामक सग्रह म जहा तहा मध्यवर्गीय जीवन चित्रण की यथाथ और मार्मिक अनुभूति मिलती है। इसकी श शैली छायावादी होत हुए भी गद्यात्म कता स युक्त है

माली की मडई स उठ
नभ क नीच नभ सी धूमाली
मद पवन म तिरती
नीली रशम की सी हलकी जाली
बत्ती जला दुकानों म
बठ मरय क यापारी
मौन मद आभा म
हिम की ऊष रही नवी अधियारी।

छायावाद के अय कवियों की भाति पत न भी छद रचना क क्षत्र म कुछ नवीन प्रयोग किय। मुक्त छद म भी उ होन कुछ रचनाए प्रस्तुत की जिनम स जीव प्रसू शीषक कविता उदाहरणाथ यहा प्रस्तुत की जा रही है

तक रह हो गगन ?
मत्यु नीलिमा गहन गान ?
अनिमष, अचितवन काल नयन ?
नि स्प द शू य निजन, नि स्वन ?
दख भू का !
जीवन प्रसू का !

जिस पर अकित
सर मुनि वदित

मानव पद तन
देखो भू को !
स्वर्गिक भू को
मानव पुण्य प्रसू को !

अपनी काव्य प्रेरणा के विषय में पंत ने स्वयं लिखा है कि प्रकृति निरीक्षण से उन्होंने काव्य रचना आरम्भ की। प्रकृति के विविध रूप कवि के हृदय में अनात आकर्षण उत्पन्न करते थे।

प्रकृति का अव्यक्त सौन्दर्य कवि की चेतना को तन्मयता की स्थिति में ला देता था। प्रकृति के जो सशक्त चित्र कवि ने अपने काव्य में प्रस्तुत किये हैं उनमें कहीं प्रकृति के कोमल और सुकुमार रूपों की व्यंजना है कहीं उसका शृंगारिक रूप प्रधान हो गया है, कहीं कवि को प्रकृति एक सुन्दरी नारी के रूप में परिलक्षित होती है और कहीं प्रकृति का जननी रूप कवि को आकृष्ट करता है। प्रकृति में चेतना के आरोपण की यह वृत्ति छायावाद की एक सामान्य विशेषता है। नारी चित्रण भी कवि ने रूपात्मक और भावात्मक दोनों रूपों में किया है। कहीं कहीं पर सौन्दर्य चित्रण के भावात्मक रूप पंत ने इन शब्दों में प्रस्तुत किये हैं

नील रेशमी तम का कोमल
खोल लोल कच भार
लार तरंग लहरा लहरा चल
स्वप्न विकच स्तन हार
शशि कर सी लघुपद सरसी में
करती तुम अभिसार
दुग्ध फेन शारद-ज्योत्स्ना में
ज्योत्स्ना सी सुकुमार ।

पंत का काव्य व्यक्तित्व प्रकृति में जैसी तल्लीनता में तादात्मीकरण करता लगता है वैसा अन्य छायावादी कवियों में नहीं देख पड़ता। पंत ने प्रकृति के कार्य-कलाप में अज्ञात आकर्षण पाया वह एक दुरूह बंधन सा लगा। छोड़ द्रुमों की मृदु छाया तोड़ प्रकृति से भी माया बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं लोचन में कवि ने प्रकृति के मोह पाश से छुटकारा न पाने की विवशता का ही चित्रण किया है। आज मुकुलित कुसुमित सब ओर तुम्हारी छवि छाई अपार। फिर रहे उन्मन मधु प्रिय और नभ पलकों से पथ पसार अभी पंक्तियाँ भी प्रकृति में निहित अज्ञात सत्ता का संकेत करती हैं। यह आकर्षण तब और भी स्पष्ट आवाहन बन जाता है जब कवि लिखता है

धुंध जल शिखरों को जब बात
सिंधु में मथ कर फेनाकार

धुनुआ ना व्याकुल नगार
बा बिपरा री अपार।
उठा तब लहरा म तर मो।
न जा मु ननाता मोर ?

पल्लव म सग्रहीत पत की कविताए न ट धारा की तरा नग मु र है। इन कवि की भावात्मकता की प्रधानता मिलती है। छायावा । न जा र गमा त ना ि ग भी प लव का पत र काव्य म विशेष म, र है। इन गद्य का प्रथम कविता कि कवि की कोमल भावा मकता और अनुभ मता का बाध गती है।

न पत्रों का मर्मर संगीत
न पुष्पों का रस राग पराग
एक अस्फुट अस्पष्ट अगीत
सुप्ति की ये स्वप्निल मुस्कान
सरल शिशुओं के शुचि अनुराग
वन्य विहगों के गान!
कल्पना के ये विह्वल बाल!
आँख के अश्रु हृदय के हास,
वेदना के प्रदीप की ज्वाल
प्रणय के ये मधुमास
सुछवि के छाया बन की सांस
भर गई इनमें हाव हुलास!
आज पल्लवित हुई है डाल
झुकेगा कल गुंजित मधुमास
मुग्ध होंगे मधु से मधु बाल
सुरभि से अस्थिर मरुताकाश!

पंत के काव्य में छायावादी काव्य की चेतना प्रकृति अपेक्षाकृत प्रखर रूप में विद्यमान रही है। बौद्धिक विकास की दृष्टि से भी उनके काव्य में एक प्रकार की क्रमबद्धता लक्षित होती है। मानव और प्रकृति के सौन्दर्य का चित्रण तथा प्रकृति में मानवीय चेतना का आरोपण सहज अभिव्यक्ति से युक्त होकर उनके काव्य में विद्यमान है। कलात्मकता की दृष्टि से भी पंत का काव्य विशिष्टता रखता है। सुकुमार और कोमल भावनाएं सूक्ष्म पर्यवेक्षण से युक्त होकर उनकी कविता में चित्रबद्ध हुई हैं। पंत की संवेदना युगीन यथार्थ का आधार ग्रहण करके उनके काव्य में विकसित हुई है।

महादेवी वर्मा—

श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म सन १९०७ में हुआ था। वह उत्तर प्रदेश के

फर्रुखाबाद नामक स्थान की निवासी थीं। इन्दौर तथा प्रयाग में उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या का पद सम्हाला जिस पर वह आजकल कार्य कर रही हैं। उनकी कविता के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें सन् १९३० में प्रकाशित निहार, सन् १९३२ में प्रकाशित रश्मि, सन् १९३४ में प्रकाशित नीरजा, सन् १९३५ में प्रकाशित सान्ध्य गीत तथा सन् १९४० में प्रकाशित दीपशिखा आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आधुनिक कवि महादेवी में भी उनकी प्रमुख कविताएँ संकलित हैं। शृंखला की कड़ियाँ, स्मृति की रेखाएँ तथा अतीत के चलचित्र उनकी संस्मरणात्मक तथा विचारात्मक गद्य रचनाएँ हैं। महादेवी का विवेचनात्मक गद्य में रचित के सैद्धान्तिक विचार मिलते हैं। महादेवी के काव्य की एक विशेषता यह भी है कि उसमें वेदना की चरम अभिव्यक्ति के साथ-साथ दार्शनिक चेतना भी मिलती है। प्रकृति चित्रण के सम्बन्ध में भी महादेवी का काव्य छायावादी तत्वों से युक्त है। उन्होंने प्रकृति में अन्य छायावादी कवियों की भाँति चेतना का आरोपण करके उसमें एक विराट् शाश्वत सत्ता के दर्शन किये हैं। यामा की भूमिका में उन्होंने स्वयं लिखा है कि छायावाद ने मनुष्य के हृदय एवं प्रकृति के सम्बन्ध में प्राण डाल दिया है जो प्राचीन काल से बिम्ब प्रतिबिम्बवाद में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को प्रकृति अपने दुःख में उदास एवं सुख में पुलकित जान पड़ती थी। छायावाद की प्रकृति घट, कूप आदि में भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों में प्रकट महाप्राण बन गया। अतः अब मनुष्य के अश्रु, मेघ के जलकण एवं पृथ्वी के ओसबिन्दुओं का एक ही कारण एक ही मूल्य है। प्रकृति के लघु तृण और महान् वृक्ष, कोमल कलियाँ एवं कठोर शिलाएँ, अस्थिर जल एवं स्थिर पर्वत, निविड़ अन्धकार एवं उज्ज्वल विद्युत् रेखा, मानव की लघुता, विशालता, कोमलता, कठोरता, चंचलता, निश्चलता और मोह ज्ञान का केवल प्रतिबिम्ब न होकर एक ही विराट् से उत्पन्न सहोदर हैं। प्रकृति की अनेकरूपता में परिवर्तनशील विभिन्नता में कवि ने ऐसा तारतम्य खोजने का प्रयत्न किया जिसका एक छोर किसी असीम चेतन और दूसरा छोर उसके असीम हृदय में समाया हुआ था। वह प्रकृति का एक एक अंश एक अलौकिक व्यक्तित्व लेकर जाग उठा। प्रकृति की इस चेतना के द्वारा कवि का तादात्मीकरण अनेक अर्थों में स्पष्ट है। मैं क्या मधुमास आता ? उधार रात की नागर व्यथा-तम सी अगम मेरी कहानी जैसी पंक्तियाँ इसी तादात्मीकरण की द्योतक हैं। विभिन्न मनोनुभूतियों के प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति चित्रण के भी अनेक उदाहरण महादेवी के काव्य में विद्यमान हैं —

जो कहते करुणा में मधुर मधुर
सोना मिस कर ले रजकण
फिर कहते मधुर सुन्दर-सुन्दर
जग पतझड़ का नाम रखकर।

पहा हिम जल की अजमार
मैं गिर बन गाती डार डार।
गुन फूल फूल उठा पत पात
गुच्छ गुच्छ मंजरियां ए अंकुर।

— —

नव गीत मन्दिर गति तान अमर
अप्सरि तेरा नर्तन सुन्दर।
आकार तिमिर गिल असित चीर
सागर गर्जन सुन झन मंजीर।

उडता नभ मे अवर जाल
मधा मे मुखरित किंकिण स्वर।
अप्सरि तेरा नर्तन सुन्दर
रवि शशि तेरे अवतंश नार।

सीमन्त जटित तारक अमार
चपला विभ्रम स्मिति इन्द्रधनुष।
हिम-कण बन झरत स्वेद निकर
अप्सरि तेरा नर्तन सुन्दर।

महादेवी के काव्य की एक विशेषता दुख अथवा वेदना का प्रभावशाली चित्रण है। कवियित्री का पीडा से विशेष प्रेम है। स्वयं एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि दुख मेरे जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे ससार को एक सूत्र मे बांध रखने की क्षमता रखता है। हमारा एक एक बूंद आसू भी जीवन को अधिक मधुर एवं उर्वर बनाये बिना नहीं रह सकता। मनुष्य सुख को अकेले भोगना चाहता है पर दुख को सब को बांट कर विश्व जीवन मे अपने जीवन को तथा विश्व वेदना मे अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देना जिस प्रकार एक जल बिन्दु समुद्र मे मिल जाता है कवि का मोक्ष है। दुख की यही भावना महादेवी के काव्य मे एक स्वप्निल और स्मतिपरक अभिव्यक्ति लिए हुए मिलती है

पुलक पुलक उर सिहर सिहर तन
आज नयन क्यों आते भर भर।
सकुच सलज खिलती शेफाली
अलस मौलश्री डाली डाली।
बुनते नव प्रवाल कुंजो मे
रजत श्याम तारो से जाली।
शिथिल मधु पवन गिन गिन मधु कण

हरसिंगार झरते हैं झर झर
आज नयन क्या आते भर भर।

वेदनात्मक अभिव्यक्ति की यह स्वप्निलता मार्मिक अनुभूति से युक्त है। यह अनुभूति सत्यता से युक्त है। इसलिए इसे मात्र वेदना की काल्पनिक अनुभूति कहना उचित नहीं होगा। वेदना की अनन्य आकांक्षा प्रगाढ़ परिचय के साथ महादेवी के काव्य में मिलती है

प्रिय तेरे उर में जग पाये—
प्रतिध्वनि जब मेरे पी पी की
उसका जग सपने बादल में
विद्युत का वन-वन मिट जाना।

तुम चुपके से आ बस जाओ
सुख दुख सपनों में श्वासों में
पर मन कह देगा ये वे हैं
आँखें कह देंगी पहचाना!

महादेवी की कविता गीतात्मकता की दृष्टि से भी विशिष्टता रखती है। उनके गीतों में कोमल कल्पना के साथ-साथ भाषा और भावों की मोहक अभिव्यक्ति विद्यमान है। लाक्षणिकता माधुर्य और मार्मिकता उनके गीतों की अन्य विशेषताएँ हैं। प्रतीक योजना तथा आलंकारिकता ने भी उन्हें रसात्मक रूप प्रदान किया है। एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

रूपसि, तेरा घन केशपाश!
श्यामल श्यामल कोमल कोमल
लहराता सुरभित केशपाश!

नभ-गंगा की रजत धार में
धो आई क्या इन्हें रात
कम्पित हैं तेरे सजल अंग
सिहरा सा तन है सद्यस्नात
भीगी अलकों के छोरों से
चूती बूँदें कर विविध लास!
रूपसि, तेरा घन केशपाश!

महादेवी की कविता मुख्यतः वेदना के प्रखर रूप से युक्त है। महादेवी की प्रणयानुभूति आध्यात्मिकता तथा रहस्यवादिता का आवरण रखकर भी मुख्यतः पार्थिव है। उसे लौकिक प्रेम की सहानुभूतिमयी भावना का प्रतिफलन कहा जा सकता है। वेदना अथवा विरक्ति का जैसा भावासक्तिमय चित्रण इनके काव्य में मिलता है वैसा

अत्यन्त दुर्लभ है। किशोरावस्था में जीवन के अभाव ... सांसारिक ... का प्रभाव बनाए रहा है पर तु ... की उ ... प्रति ... आध्यात्मिकता अ ... भावना की भावना जन्म देता है। स्वय महादेवी ने स्वीकार किया है ... में सुख बहुत दुलार बहुत आदर तथा कुछ मात्रा में गर्व दुख मिला है। पर तु उन पर पार्थिव दुख की छाया नहीं पड़ सकी है। ... यह उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे ... मधुर लगने लगी है। ... बौद्ध ... भगवान बुद्ध के प्रति ... अनुराग के कारण ... संसार को दुःखात्मक ... दार्शनिक सिद्धान्तों से ... असमय ही परिचय हो गया था। महादेवी की ... कविता में निहित छायावादी रहस्यवाद ... का स्वर ... है।

अन्य कवि तथा महत्व—

छायावादी प्रवृत्ति के अन्तर्गत ऊपर जिन प्रमुख कवियों का उल्लेख किया गया है वे छायावाद के आधार स्तम्भ है। इनके अतिरिक्त भी छायावादी काव्यधारा को अनेक कवियों का पोषण और समर्थन मिला। ... कवियों का परिचय अन्य काव्य प्रवृत्तियों के सन्दर्भ में अधिक औचित्यपूर्ण होगा। छायावाद ... विषय में अनेक प्रकार के मतवाद प्रचलित हुए। कुछ आलोचकों ने ... युक्त एवं कुछ ने उसमें रहित काव्य सिद्ध किया। उन ... के आरम्भ ... यह काव्य प्रवृत्ति प्रगतिवाद के आरम्भिक युग तक विद्यमान रही। इस काल में प्रसाद पंत निराला तथा महादेवी के अतिरिक्त रामकुमार वर्मा नरेन्द्र शर्मा ... गोपाल शरण सिंह ... बच्चन भगवतीचरण वर्मा आदि अन्य अनेक कवियों ने भी इस प्रवृत्ति के विकास में योग दिया। कुछ विचारकों ने इसे ... की प्रतिक्रिया वादी प्रवृत्ति सिद्ध किया तथा कुछ ने ... भाषाओं का प्रभाव बताया। छायावाद में भावात्मकता वैयक्तिकता प्रकृति में चेतन सत्ता का आरोपण प्रकृति की नारी रूप में कल्पना प्रेम और शृंगार की उदात्त भावनाएँ वेदना और निराशा की अभिव्यक्ति रहस्यवादिता ... तथा नवीन अभिव्यंजना शैली आदि जो विशेषताएँ विद्यमान हैं उन्होंने इसे ... काव्य प्रवृत्तियों में एक सर्वथा पृथक और नवीन स्वरूप प्रदान किया है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में छायावादी प्रवृत्ति का ऐतिहासिक महत्व है।

अध्याय : १८

आधुनिक युगीन प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में उत्तर छायावाद कालीन प्रवृत्ति के रूप में प्रगतिवाद का उल्लेख किया जाता है। प्रगतिवाद हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिशीलता की भावना के रूप में तो मान्य किया जाता ही है, साम्यवादी तथा मार्क्सवादी विचारधाराओं का समर्थन करने वाले विचारों के रूप में भी इसकी मान्यता है। छायावाद के स्वर्णयुग में उसके विरुद्ध भी एक प्रतिक्रिया के लक्षण मिलने लगे थे। उसकी कल्पनात्मक भावभूमि के विरुद्ध कुछ विचारकों ने व्यावहारिकता के आधार पर चिन्तन आरम्भ किया। छायावाद के ही एक प्रमुख स्तम्भ श्री सुमित्रानन्दन पंत ने 'रूपाभ' नामक पत्रिका के एक सम्पादकीय में इसके विषय में अपने विचार प्रकट किये। सन १९३८ में 'रूपाभ' के प्रकाशन में उन्होंने लिखा कि 'इस युग की वास्तविकता ने जैसा उग्र आकार ग्रहण कर लिया है उससे प्राचीन विश्वासों में प्रतिष्ठित हमारे भाव और कल्पना के मूल हिल गये हैं। श्रद्धा अवकाश में पलने वाली संस्कृति का वातावरण आन्दोलित हो उठा और काव्य की स्वप्नजड़ित आत्मा जीवन की कठोर आवश्यकता के उस नग्न रूप से सहम गयी है। अतएव इस युग की कविता स्वप्नों में नहीं पल सकती। उसकी जड़ों को अपनी पोषण सामग्री ग्रहण करने के लिए कठोर धरती का आश्रय लेना पड़ रहा है।' इन शब्दों में भी प्रगतिवादी आन्दोलन की आवश्यकता और स्वरूप की स्वीकृति है। प्रगतिवाद एक समकालीन भावधारा थी। मार्क्सवाद और साम्यवाद से इसे इसलिए सम्बद्ध किया गया क्योंकि इन विचारधाराओं के अनुसार समाज में तभी उन्नति हो सकती है जब उसकी व्यवस्था में आर्थिक वैषम्य न हो। आर्थिक असमानता को इन्हीं विचारधाराओं का आश्रय लेकर उन्मूलित किया जा सकता है। स्वतन्त्र हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में जब प्रगतिवादी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ तो इसके समर्थकों ने सामाजिक राष्ट्रीय भावना के विकास में योग देने पर बल दिया।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रगतिवाद का प्रसार हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सन १९३६ से आरम्भ हुआ। इसी वर्ष लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ का सर्वप्रथम अधिवेशन हुआ और इसका सभापतित्व हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द

न दिया। अपने अध्ययन और भाषण में भी अमरीका ने कला और साहित्य की सामाजिक उपयोगिता पर बल दिया। अमरीका ही था मार्च १९३६ में विशाल भारत में भी निराला, सिंह, घोषाल ने एक बड़े विवाद में भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता बताया। आगामी दशक में अनेक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से इस आन्दोलन की आवश्यकता और महत्व पर बल दिया गया।

सुमित्रानन्दन पंत—

जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है सुमित्रानन्दन पंत ने छायावाद के रचनाओं में भी इस वैचारिक आवश्यकता का अनुभव किया और इसके प्रवर्तन में योग दिया। पंत की युगवाणी जैसी कृतियां में इस विचारधारा के सूत्र उपलब्ध होते हैं। रूपाभ के जुलाई ३८ के अंक में प्रकाशित मानव-पशु रचना में इस विद्रोहात्मक भावना का स्पष्ट आभास मिलता है

युग युग से रच नीति-रीति नतिक आधार
बांध दिया मानव के पाशविक पशु को।
विद्रोही हो उठा आज पशु दर्पित
वह न रहेगा अब नवयुग में गर्हित।
नहीं सहेगा रे! वह अनुचित ताड़न
रूढ़ि नीतियों का गत निर्मम शासन।
वह भी क्या मानव जीवन का लांछन?
वह मानव के देहभाव का वाहन।
नहीं रे जीवनोपाय तव विकसित
जीवनयापन कर न सके तव इच्छित।
नैतिक सीमाएं कर बहुत निर्धारित
जीवनइच्छा की जन ने मर्यादित।
— —
देव और पशु भावों में जो सीमित
युग युग में होता परिवर्तित अवसित।
मानव पशु ने किया आज विजित
मानव देव हुआ अब वह सम्मानित।
मानव के पशु के प्रति
मध्य वर्ग की हो रति।

इस प्रकार की कविताओं ने प्रगतिवादी काव्यधारा का आरम्भिक स्वरूप स्पष्ट किया। इनकी रचनाओं ने आरम्भ में एक वैचारिक आधार ग्रहण करके साहित्य अथवा काव्य के उस स्वरूप का मार्ग किया जिसमें सामाजिक उपयोगिता पर बल दिया गया हो। यहां पर इस तथ्य का उल्लेख करना आवश्यक है कि इन कवियों ने कहीं पर भी उग्रता या अथवा हिंसावादी विचारों का समर्थन नहीं किया है। स्वयं पंत ने आधुनिक

कवि की भूमिका म लिखा है कि ऐतिहासिक भौतिकवाद और भारतीय आध्यात्मिक दशन म किसी प्रकार का कोई विरोध नहा जान पडा क्योकि मैंन दोना का लोकोत्तर कल्याणकारी पक्ष भी ग्रहण किय हैं। मार्क्सवाद क अन्दर श्रम जीविया क सगठन वग सघष आदि स सम्बध रखन वाल बाह्य पक्ष का, जिसका वास्तविक निणय आर्थिक और राजनीतिक क्रान्तिया ही कर सकती है म अपनी कल्पना का अग नहा बनन दिया है। इसस भी यह स्पष्ट होता है कि आरम्भ म प्रगतिवाद विशुद्ध साम्यवादी अथवा मार्क्सवादी आधार का ग्रहण करक हिन्दी साहित्य म विकसित नही हुआ। अत प्रगतिवादी काव्यधारा से उस कविता का आशय समझना चाहिए जिसके मूल म उपयुक्त राजनीतिक विचारधाराए नहा हैं वरन सामाजिक उपयोगिता क उद्देश्य के साथ-साथ राष्ट्रीय चतना क जागरण का आह्वान है। यह आवाहन भी पत की युगवाणी में मिलता है

रूढि रीतिया जहा न हो आराधित
श्रणी वग म मानव नहा विभाजित।

धन बल स हो जहा न जन श्रम शोषण,
पूरित भव जीवन क निखिल प्रयोजन।

सस्कृत वाणी भाव, कम सस्कृत मन
नव मानव सस्कृति किरणो स प्लावित।

पत की इस कोटि की रचनाओ का दशन म यह सकेत मिलता है कि कोमल और सुकुमार भावो की कल्पना प्रधान छायावादी कविता क प्रति उनकी भावना युगान्त की रचना के साथ-साथ परिवर्तित हो जाती है। इसलिए युगान्त का मानवतावादी विचार धारा क आरम्भ की दृष्टि म महत्वपूण समझा जाता है। युगान्त क दो वष पश्चात युगवाणी क प्रकाशन क साथ साथ पत का यह मानवतावादी समन्वयवाद की ओर बढ़ता प्रतीत होता है। छायावाद के इस परवर्ती युग म पत न नवीन यथाथ चतना का पर्याप्त सीमा तक स्वीकार किया है। ग्राम्या म अभिव्यक्त पत की अनुभूतिया मार्मिकता और यथार्थात्मकता की दृष्टि म महत्वपूण है यद्यपि छायावादी कल्पना की इसम भी यत्र-तत्र विद्यमान है

माली की मडई स उठ
नभ क नीच नभ-सी धूमाली
मद पवन म तिरती
नीली रशम की-सी हलकी जाली
बत्ती जगा दुकानो म
बठ कस्ब क व्यापारी,

मोर [illegible]

[illegible] रही [illegible]।

दुमात [illegible] गुम्फना [illegible] में [illegible] स्वणधूलि [illegible] अमित [illegible] सुन्दर [illegible] ग्रहण कर लेती है [illegible] भाव अभि व्यक्ति की प्रौढ़ता [illegible] विराम की दृष्टि [illegible] यथार्थ की [illegible] है। परन्तु यह [illegible] प्रभाव [illegible] है [illegible] नहीं [illegible] क्योंकि [illegible] प्रौढ़ता [illegible] और [illegible] नहीं [illegible] है। [illegible] निम्नलिखित [illegible] उदाहरण दृष्टव्य हैं

कौन स्रोत [illegible]
[illegible] की विश्वास [illegible]
राज मराल [illegible] जाड
तिरत [illegible] उर सरसी में
शुभ्र सुनहली ग्रीवा मोड
शोभा की स्वर्गिक उडान में
भर जाता सहमा अपनव मन
बजते नव छन्दों के नूपुर
अनिश्चित गीतों के प्रिय पन्वन।

— —

एक टाग पर उचक खडी हो
मुग्धा वय से अधिक बडी हो
पैर उठा तृण पिन्नी पर धर
घटना मोड चित घन सुन्दर
उठ अगूठे के बल ऊपर
उडन को अब छूने अबर
सानजुही सी बन हरीनी
अटकी मधी अधर पर।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला —

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में भी यथार्थता के तत्त्व विद्यमान हैं। प्रगतिवाद का जो आन्दोलन चौथे दशक में नियोजित हुआ उसके संकेत निराला की लिखी हुई तीसरे दशक की कविता में ही देखे जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उनकी कविता से भी हिन्दी की इस नयी काव्य प्रवृत्ति ने प्रेरणा ग्रहण की। छायावाद रहस्यवाद और अध्यात्मवाद से प्रभावित होने के साथ साथ उनकी अनेक

कविताएं यथार्थ चित्रण की दृष्टि से महत्व रखती है। सन १९४२ में प्रकाशित उनके 'कुकुरमुत्ता' नामक काव्य संग्रह की अधिकांश रचनाएं इसी कोटि की हैं। उनकी ये रचनाएं इस तथ्य की द्योतक हैं कि छायावादी युग की विद्रोह भावना प्राचीन परम्पराओं की सीमाओं को तोड़कर नये रूप ग्रहण करना चाहती थी। परन्तु निराला की ये कविताएं यथार्थ के प्रति व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। कहीं कहीं पर इनमें यथार्थ से समझौता नहीं भी हुआ है और उनमें निराशावादी दृष्टिकोण ही अभिव्यक्त हुआ है। उदाहरणार्थ—

ये दुख के दिन
काटे हैं जिसने
गिन गिन कर
पल छिन तिन तिन
आंसू की लड़ के मोती के—
हार पिरोये
गले डालकर प्रियतम के
नयन का शशि मुख
दुख निशा में
उज्ज्वल अमलिन ।

गवना न कर ।
छाती परी रासता न चार ।
कंकरीली राह न कटेगी
बपर की बातें न पटेगी
काली मचनिया न कटेगी,
एम एस न डग न भर ।

भगवती चरण वर्मा—

छायावादी विचारधारा ने हिन्दी काव्य साहित्य के क्षेत्र में कृषक तथा श्रमिकों की दयनीय स्थिति का मार्मिक और यथार्थपरक चित्रण प्रस्तुत किया है। भगवतीचरण वर्मा की अनेक कविताएं इसी कोटि की हैं जिनका रचना काल उत्तर छायावादी युग है और जिनमें प्रगतिवादी तत्वों की प्रधानता है। इस दृष्टि से उनकी भसागाड़ी शीर्षक कविता का कुछ अंश उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है

उस ओर क्षितिज के कुछ आगे,
कुछ पांच कोस की दूरी पर
भू की छाती पर फोड़ों से
हैं उठे हुए कुछ कच्चे घर

मधु व ाररत्र मिम र, अहो
ग्गिया अा रही है गु शम
ा सा हर मर आा
यह है साागा मड़ान नाम।

रांगेय राघव—

डॉ० रागय राघव क काव्य म भी प्रगतिशीलता क त व विद्यमान हैं। विशेषत पत्थर शीपक उनका काव्य सग्रह इस दृष्टि स विशेष रूप म उल्लेख किया जा सकता है। साम्राज्यवादी विचारधारा का विरोध करत हुए उ होन जन ताना का आह्वान करत हुए क्रांतिकारी काव्य का सृजन किया है। डॉ० रांगेय राघव क का य क कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किय जा रहे हैं

आर्यों का भीषण रोन्नाद
शव हुआ का वह सिंहनाद
यूनानी जीतो की पुकार
मुगलो क मद का अहकार
रुस्तम पृथ्वी दहलाता था
वह कण पैंकता रथ महान।

— —

यह सडा गला निर्जन समाज
कहता यदि हम करते प्रचार।
तो यह प्रचार ही सही सतत
यदि इसम जीवन की पुकार
मुखरित होती है बार बार।

— —

जा नाव वन हृन की सतत चट्टान का भी तोड़ दें।
जो दासता क शीश को इतिहास म ही जोड़ द।
आओ जगाने सुप्त को मुक्तस हृदय के गीत गो।

नरेन्द्र शर्मा—

नरेन्द्र शर्मा की छायावादी युग म लिखी गयी कविताए छायावाद के रूमानी और आध्यात्मिक तत्वों म रहित मिलती है। प्रवासी क गीत सग्रह म प्रकाशित उनकी रचनाए मुख्यत पूववर्ती प्रभाव की ही द्योतक है। परन्तु उनका अग्निशस्य शीपक काव्य सग्रह नय युग की नई समस्याओं की ओर सकेत करता है। इस सग्रह की अधिकाश कविताओं म समकालीन जीवन की यथार्थता क प्रति जागरूकता प्रकट की गयी है। एक उदाहरण इस प्रकार है

जब से भावी महायुद्ध का खबर लगा है आन,
फिर लोभी के मनागमन म गद्ध लग मडराने ।
सोच रहा है नफाखोर कब गोली-गोला छूटें
कब बरसें बम, कब बम के सग भाग्य उनका फूटें ।
कब मानव की चीजें भू पर गाज बनकर टूटें
कब वह जीता का धाखा में और मरा का लूटें ।
फिर नाभी क मन को या चितायें लगी सतान
जब स भावी महायुद्ध की खबर लगी है आन ।
फिर सोन का रग मिलायगा बनिया रगर म
खूनी मणि टवकायगा पूजी क जवर म
फिर विष बुभी कटार छिपायगा अपन तवर म
दुश्मन दुश्मन चिल्लायगा बठा अपन घर म
दुनियादार गवार जन फिर राग उमा का गान
जब स भावी महायुद्ध का खबर लगा है आन ।

रामेश्वर शुक्ल अचल —

रामश्वर शुक्ल अचल का नाम भी उन कवियो म लिया जा सकता है जिन्होंने उत्तर छायावाद काल म रोमांटिक सवेदना स युक्त काव्य रचना स पृथक नय युग क स्वर को अपनी कविता म भरा । उन्होंने जो इस कोटि की कविताए लिखी हैं उनम छायावादी तत्वों स साथ साथ मुक्त छन्द क अतीव प्रयाम भी है । सब यही परम्परागत रूढ़िया और मान्यताओं क प्रति नवीन चेतना क आह्वान का सकेत भी अचल की उन कविताओं म मिलता है जो छायावाद म पृथक प्रेरणा और प्रभाव की द्योतक हैं । उदाहरणार्थ

जब पाप कर पाप और अनाचार का गला
सदियों का सोया स्वत्व मानव का जागगा
जीवन तल पर जब फूकगा
अपनी अकर्मण्यता और निरुत्साह की चिता
दूर जब होगा उसका दर्शातिक अहम का
प्रतिहिंसामूलक पलायन की रूढ़ि का
आत्मघाती कारायन ।
आज कवि का है उसी दिन की प्रतीक्षा ।।

रामधारी सिंह दिनकर'—

रामधारी सिंह दिनकर का कविता म आधुनिक युग का अनक विचारधाराओं का ताकिक समाहार हुआ है । उनकी जिन कृतियों में इस क आमूल तथा युग और धर्म आदि काव्य सग्रह प्रयोगात्मकता क साथ साथ मानवतावादी दृष्टिकोण क विचार म

भी महत्व रखता है। यह भावना उनकी 'तीर कुसुम' रेखा के ..... उनका ..... पत्र तथा 'दिल्ली' आदि संग्रहों में भी विकसित हुई है। कवि का प्रगतिशील दृष्टिकोण यथार्थ के नग्न रूपों की अभिव्यक्ति पाता है। अभिशप्त मनुष्य ..... कविता में कुछ अंश यहाँ पर उद्धृत है। प्रस्तुत किया जा रहा है जो ..... का परिचायक है

हाय रे मानव नियति ..... लाभ!
हाय रे मनुज अपना आप ही उपहास!
प्रकृति की प्रच्छन्नता को जीत
सिंधु से आकाश तक सबको किए भयभीत
सृष्टि को निज बुद्धि से करता हुआ परिमेय
चीरता परमाणु की सत्ता असीम, अजेय
बुद्धि के पवमान में उड़ता हुआ असहाय
जा रहा तू किस दिशा की ओर को निरुपाय?
लक्ष्य क्या? उद्देश्य क्या? क्या अर्थ?
यह नहीं यदि ज्ञात तो विज्ञान का श्रम व्यर्थ।
सुन रहा आकाश चढ़ ग्रह तारकों का नाद
एक छोटी बात ही पड़ती न तुझको याद?

शिवमंगल सिंह सुमन —

डा० शिवमंगल सिंह सुमन की प्रारम्भिक कविताओं में छायावादी प्रभाव के फलस्वरूप प्रेम भावना की ही प्रधानता है। उनकी परवर्ती रचनाएं प्रगतिशीलता से प्रभावित हुई। उत्तरकालीन रचनाओं में नवीनता का समावेश हुआ है। उनकी इस श्रेणी की रचनाएं विप्लव के आह्वान से युक्त हैं और उनमें भी राष्ट्रीय स्तर पर समाजवादी विचारधारा का समर्थन मिलता है। पर आँखें नहीं भरीं शीर्षक उनका काव्य संग्रह इन भावों व प्रवृत्तियों से पृथक सामाजिक यथार्थ के धरातल का स्पर्श करती रचनाओं से युक्त है। कवि का जीवन-दर्शन इन कविताओं में एक सुस्पष्ट रूप ग्रहण करता प्रतीत होता है। शब्द संगीत एवं चित्रात्मकता भी इन कविताओं की विशेषता है। एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

तजाओ मत इसी से
    भक्त के भगवान पलते हैं।
इसी के आसरे दिन रात
    सूरज चांद जलते हैं।
सितारे टिमटिमाते और
    झरने फूल पलते हैं

निशा के गहु-गुम्फित केश
सहसा छूट पड़ते हैं।
जीवन की साधना संसार में
सभी नहीं होती
मधुर मुस्कान की कीमत
चुकाते जीते न माता।
न जिसके आदि में है यार
अथवा अन्त में बाकी
तुम्हारे स्नेह की दो बूंद
जीवन का बहुत बाकी।

केदारनाथ अग्रवाल—

केदारनाथ अग्रवाल की 'नींद के बादल' नामक संग्रह में प्रकाशित कविताएं मुख्यतः वैयक्तिक अनुभूति प्रधान हैं। इनमें जो प्रगतिवादी भावना प्रधान रचनाएं हैं उनमें यथार्थवादी दृष्टिकोण की प्रमुखता है। छायावाद का भी स्पष्ट प्रभाव इस संग्रह की अनेक कविताओं में मिलता है। 'युग की गंगा' नामक काव्य-संग्रह यथार्थवादी जीवन दृष्टि के विचार से अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें कवि की कल्पनामूलक भावनाएं भी यथार्थपरक आधार ग्रहण कर चुकी हैं। इसमें छायावादी कवियों की भांति कवि ने प्रकृति का मानवीकरण किया है परन्तु उसकी पृष्ठभूमि में जन चेतना के आह्वान की भावना है। यत्र-तत्र प्राचीन परम्पराओं की अर्थहीनता एवं धार्मिक आडम्बर भावना आदि के प्रति भी व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण मिलता है। संग्रह में कुछ प्रयाण गीत भी हैं जिनमें सामूहिक जन चेतना के आह्वान के स्वर बोलते हैं। 'कटाई का गाना' नामक रचना का कुछ अंश यहां उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है

हरेक तार साथ का बजाए चल
बजाए चल बजाए चल बजाए चल!
हमारी आत्मा का दम
हमारी जोरता का दम
हमारी यातना का गम
कदम-कदम कहे विकल,
नवीन जान जिन्दगी जगाए चल
जगाए चल, जगाए चल जगाए चल।
सभी का मन गुलाम है
सभी का तन गुलाम है
सभी की मति गुलाम है
सभी की गति गुलाम है

गुलामिया ने िहू का मि ाा धा !
मिटाए धन, मिटाए धन मिटाए हम !!

नागार्जुन—

नागार्जुन का नाम भी हिन्दी की प्रगतिवादी काव्य प्रवृत्ति के अन्तर्गत विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नागार्जुन के काव्य में साम्राज्यवाद के विरुद्ध आक्रोश मिलता है। वर्तमान परिस्थिति के प्रति तीव्र विद्रोह की भावना के साथ-साथ व्यंग्य के माध्यम से उसे परिवर्तित कर देने का निश्चय उनकी कविता में मिलता है। समकालीन अनेक समस्याओं जिनमें सामन्तवादिता एवं दमन की समस्या भी है तथा इसके साथ-साथ कृषक और श्रमिक वर्गों से सम्बन्धित समस्याओं का भी चित्रण नागार्जुन की कविता में मिलता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि नागार्जुन ने समकालीन सामाजिक आर्थिक व्यवस्था के विविध रूपों का अध्ययन करके नए समाज की रचना की रूपरेखा निर्मित की है। इन्होंने शोचनीय स्थिति का कवि साम्राज्यवाद की विभीषिका और विडम्बना के रूप में चित्रित करता है। इस दुरवस्था के प्रति करारा व्यंग्य अपने सारे तीखेपन के साथ नागार्जुन की कविता में विद्यमान है। कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं

लौह पुरुष के प्रखर परुष उद्गार
आह नेहरू ! वाह नेहरू !
वाह तुम्हारी यह अपनी सरकार !
किया खूब है तुमने रजवाड़ों का जीर्णोद्धार
नई नहीं है नये सिरे से गढ़ी हुई है
खूब तेज है धार
राजप्रमुख चूमा करते हैं एक दूसरे की लम्बी तलवार
सूर्यवंश की चन्द्रवंश की टूटी म्यानें फट रही हैं नई कापरें।

— — —

कहीं बाढ़ भूचाल कहीं पर कहीं अकाल कहीं बीमारी।
महंगाई की क्या नजीर दूं मानो द्रुपद सुता की सारी॥
भूखा मरो चबाओ पत्ते मगर अन्न का नाम न लेना।
कहीं न तुम भी पकड़े जाओ कहीं सफाई पेश न देना॥
सुर वंदना लीडर लोगों की हम सब की सीख दे रहे।
चचा भतीजों की पौ बारह खुद ही सब कुछ हड़प न रहे॥

— — —

सुरभित चीनांशुक फहराकर राखों पर धूलों पर
दशकंधर का ध्यान हटाकर चल रहे हो शूलों पर

अजी, घय हो कवि काकिल तुम
आज नहीं तो कल अवश्य ही नदनन्न म आग लगगी
भस्मसात होन वाला है नीड तुम्हारा
काम आएगी स्वण किरण की आशा
पराभूट बना तना प्रिय,
डना म रह गई न ताकत
उड तो क्या सकन हो ?

त्रिलोचन—

आधुनिक युगीन प्रगतिवादी काव्य की प्रवत्ति क अन्तगत कवि त्रिलोचन का नाम भी उल्लखनीय है। त्रिलोचन का सवप्रथम काव्य-सग्रह धरती शीपक स प्रकाशित हुआ था। इस सग्रह म जो कविताए मिलती हैं उनम सामाजिक चतना और भविष्य म आस्था क सकत निहित हैं। सघष की कामना और सघष क फलस्वरूप परिवर्तित नवसमाज का उत्कट अभिलाषा की भावना भी इन कविताओं में मिलती है। कवि का विचार है कि परिवतन समाज की एक अनिवाय आवश्यकता है और उसी क फलस्वरूप समाज का नव निर्माण हो सकता है। परिवतन की प्रक्रिया कठिन होन क कारण कवि त्याग और बलिदान क लिए भी प्रस्तुत है, क्योंकि वह जानता है कि धरती की पीडा उसक बलिदान स ही शात होगी। इस सग्रह में कवि क कुछ गीत भी सग्रहीत हैं जो प्रकृति चित्रण का मोहक रूप प्रस्तुत करत हैं। त्रिलोचन क काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किय जा रह हैं

बिगुल बजाओ और बढ चलो
यह सम्मुख मदान पडा है।
मानवता क मुक्तिदूत तुम
कौन तुम्हारे साथ अडा है॥

— —

प्रिय मैं जगपर उस धरती को
दुखी देखकर तप्त देख कर
शीतल छाया बन छाऊँ।
उसका रुखा-सूखा आचल
हरा भरा कर दन क हित
गल-गल जाऊं मिट मिट जाऊँ॥

महेन्द्र भटनागर—

डॉ० महेन्द्र भटनागर की कविताएँ प्रगतिवादी तत्त्वों स युक्त हैं। उनके अभियान 'जिजीविषा' 'टूटती शृखलाएं' तारों क गीत 'नई चतना' बदलता युग' मधुरिमा 'विहान' तथा सतरग' आदि काव्य-सग्रह इस दृष्टि स उल्लिखित किय जा सकते हैं।

छायावादी [illegible] अति [illegible] प्रतिक्रिया [illegible] जन [illegible] जागरण सामाजिक [illegible] के विरुद्ध जन आवाहन तथा सामाजिक [illegible] मिलता है। इनकी कविता के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं

धूप [illegible]
[illegible] अगणित
धरा पर [illegible] म [illegible]
सदन उजली हँसी [illegible]
आँगन [illegible]।

— —

उदारक [illegible] रहे आवाज—
पुनर्निर्माण करो पुनरुत्थान करो
चिर खंडित नष्टप्राय संस्कृति का
आदिम युग के आदर्शों का!
बीते वर्षों के रीते घट
तम के पट पर विगत युगों की
सभ्यता कला म्लान आज
वह गया महान पुरातन!
जीवन सरिता की निधि बह गई अरे
फिर से बुझ दीप को आज जलाओ
मानवता की उस दबी राह को
खोदो (खोदो)।

महत्व—

आधुनिक युगीन हिन्दी काव्य की प्रगतिवादी प्रवृत्ति के अन्तर्गत जिन कवियों का उल्लेख ऊपर किया गया है उनके अतिरिक्त भी अनेक कवि ऐसे हैं जिन्होंने इस काव्य प्रवृत्ति के विकास में योग दिया है। उनमें से कुछ का उल्लेख अन्य काव्य प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में प्रस्तुत किया जायगा क्योंकि उनके काव्य में अनेक विचारधाराओं को भी प्रमुखता से समावेश मिलता है। जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है प्रगतिवाद का आरम्भ भी एक प्रकार से प्रतिक्रियात्मक रूप में हुआ था। यह आन्दोलन भी हिन्दी साहित्य में बहुत विवादास्पद रहा क्योंकि यदि एक ओर अनेक आलोचकों ने इसकी महत्ता की घोषणा की तो दूसरी ओर अनेक लेखकों ने इसे विदेशी साहित्यिक विचार धाराओं का अनुगमन मात्र बताया। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद उन कवियों के द्वारा एक नई काव्य शैली के रूप में आरम्भ किया गया जो संकुचित अर्थ में आज प्रगतिवादी नहीं माने जाते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि प्रगतिवाद की राजनीतिक

स्थिति और पृष्ठभूमि जो कुछ भी हो परन्तु हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उसका जन्म एक युगीन आवश्यकता के रूप में हुआ। इसके अनेक कवि छायावादी तथा प्रयोगवादी काव्य धाराओं के क्षेत्र में भी प्रतिष्ठा रखते हैं। प्रगतिवाद के अनुसार साहित्य को निश्चयात्मक रूप से सामाजिक उपयोगिता की भावना से युक्त होना चाहिए। विशुद्ध कल्पनात्मक एवं आदर्शपरक काव्य धाराओं का प्रगतिवाद विरोध करता है। इस काव्य प्रवृत्ति में अधिकांश कवियों ने सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन की आवाज को प्रभावशाली बनाया है क्योंकि उनके विचार में समकालीन सामाजिक व्यवस्था शोषक वर्ग के लोगों के हाथ में है और कृषक तथा श्रमिक-वर्गों का भयानक रूप से शोषण हो रहा है। सामाजिक यथार्थ का जो रूप प्रगतिवादी कविता में मिलता है उसका आधार यही भावनाएँ हैं। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि समकालीन सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता अधिकांश प्रगतिवादी कवियों में मिलता है। साम्प्रदायिक क्षेत्र में भी जो समस्याएँ विद्यमान थीं उन्हें भी प्रगतिवादी कवियों ने उठाया। बंगाल के अकाल पर भी कविताएँ लिखी गयी। स्वदेश प्रेम की भावना को स्वीकार करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग की आवाज इन कवियों ने उठायी। पूँजीवाद के विरुद्ध लगभग सभी प्रगतिवादी कवियों ने नारे लगाये क्योंकि आर्थिक वैषम्य और आर्थिक शोषण का मूल कारण पूँजीवादी व्यवस्था ही है। साम्यवाद और मार्क्सवाद का वैचारिक आधार ग्रहण करके प्रगतिवादी कवियों ने अपने काव्य में बौद्धिकता का भी समावेश किया। इन कवियों ने अनेक कविताएँ प्रयाण-गीत की शैली में लिखीं जो मुक्त जन आह्वान के स्वर से युक्त हैं। सामाजिक व्यवस्था की परम्परागत और अर्थहीन रूढ़ियों के विरुद्ध भी इन कवियों ने आवाज उठायी। स्वभावतः प्रगतिवादी कविता की भाषा जन-सामान्य के अधिक निकट है। इसमें अधिकांशतः सामान्य बोलचाल के ही शब्द प्रयुक्त किये गये हैं। मुक्त छन्द को इस काव्यधारा के अधिकांश कवियों ने प्रयुक्त किये हैं। यद्यपि द्वितीय महायुद्धोत्तर काल में हिन्दी काव्य के क्षेत्र में प्रयोगवाद के रूप में एक अन्य नई काव्य प्रवृत्ति का सूत्रपात हुआ और उसे भी व्यापक आधारभूमि प्राप्त हुई परन्तु प्रगतिशीलता की भावना और तत्व का साहित्य में समावेश वर्तमान युग तक मिलता है।

—)०(—

अध्याय : १७

आधुनिक युगीन प्रयोगवादी कविता की प्रवृत्ति

आधुनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उत्तर छायावादी काल को प्रयोगवाद नाम दिया गया। बीसवीं शताब्दी में हिन्दी कविता के क्षेत्र में जितने भी आन्दोलन हुए उन सब के मूल में न्यूनाधिक रूप में प्रतिक्रियावादिता तथा प्रयोगशीलता विद्यमान थी। परन्तु इस प्रवृत्ति को प्रयोगवाद नाम द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् में दिया गया। सन् १९४३ में सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय के सम्पादकत्व में जब तार सप्तक का प्रकाशन हुआ तब इस काव्य प्रवृत्ति की ओर वाद के रूप में विशेष चर्चा हुई। तार सप्तक के प्रकाशन के उपरान्त दूसरे और तीसरे सप्तक भी प्रकाशित हुए और इस प्रकार से इस काव्य प्रवृत्ति के क्षेत्र में क्रियाशीलता स्थापित की गयी। 'प्रयोगवादी कविता भी स्थूलतः छायावाद के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में ही कही जा सकती है। इसमें छन्द विधान, शब्द योजना तथा अलंकार निरूपण के साथ साथ भावात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी नवीन प्रयोग मिलते हैं। छायावाद तथा प्रगतिवाद से इसकी भिन्नता मुख्यतः इस कारण है कि जहाँ उनके पीछे एक विशिष्ट चिंतन भावना अथवा जीवन दर्शन की पृष्ठभूमि है वहाँ प्रयोगवादी काव्य प्रवृत्ति के पीछे केवल उसकी अभिव्यंजनात्मक शैलीगत विशेषताएँ ही हैं। प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि अज्ञेय ने इस काव्य प्रवृत्ति को एक वाद कहने का विरोध करते हुए लिखा है कि 'प्रयोग कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, न ही हैं न प्रयोग अपने आप में इष्ट या साध्य है। अतः हमें प्रयोगवादी कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है जितना कवितावादी कहना।' ये विचार अज्ञेय ने दूसरे सप्तक की भूमिका में प्रकट किये हैं।

प्रयोगवाद के स्वरूप तथा परिभाषा के विषय में विभिन्न विद्वानों ने विविध प्रकार के मत प्रकट किये हैं। कुछ लोगों ने प्रयोग का यह मुख्य उद्देश्य बताया है कि वह नवीन सत्य की अभिव्यक्ति करता है। इसकी दूसरी विशेषता यह बतायी गयी कि यह छायावादी काव्य जगत की कल्पना से हटकर यथार्थता की ओर अग्रसर हुआ है। इसे आत्म सत्य का अन्वेषण बताया गया और वस्तु तथा शिल्प दोनों के क्षेत्र में साधारणी

करण की मौलिक आवश्यकता बताया गया। प्रवर्तन-काल से लेकर प्रारम्भिक दस वर्षों में जो प्रयोगवादी काव्य रचा गया उसके मूल में माध्यम के नये प्रयोग ही थे। इन प्रयोगों का उद्देश्य भावाभिव्यक्ति की नई प्रणालियों का काव्य में समावेश था। विचारात्मक दृष्टि से प्रयोगवादी कवियों में पर्याप्त पारस्परिक भिन्नता होने के बावजूद भी अभिव्यंजना शैली की दृष्टि से समता मिल रहा है।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'—

प्रयोगवाद के अन्यतम कवि सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का नाम इस प्रवृत्ति के कवियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। उनकी कविताओं के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें 'भग्नदूत', 'चिन्ता', 'इत्यलम्', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी' तथा 'आँगन के पार द्वार' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अज्ञेय की प्रारम्भिक कविताओं में प्रकृति दर्शन की दृष्टि से कुछ विशेषताएँ मिलती हैं। गीतात्मकता, नयी छन्द योजना एवं काव्यानुभूति की सघनता के साथ साथ संगीतात्मकता, मधुरता और कलात्मकता आदि विशेषताएँ भी अज्ञेय के काव्य में विद्यमान हैं। ✓तार सप्तक में संग्रहीत अज्ञेय की रचनाएँ व्यक्तिवादी विद्रोह के अहम् की भावना पर आधारित है। उदाहरणार्थ

नूतन प्रखरतर स्वर में
आततायी आज तुमको पुकार रहा मैं
रणोद्यत दुर्निवार ललकार रहा हूँ—
कौन हूँ मैं?
तेरा दीन दुखी पददलित पराजित
आज जो कि सद्य सबल जनता को जगा
मैं से हम हो गया।
मैं ही हूँ वह पदाक्रान्त रिरियाता कुत्ता
मैं ही हूँ वह मालार निधर का प्राणी भूखा
मैं वह छप्पर तले का अहदीन शिशु भिखारी।

यौन प्रतीकों और नवीन मान्यताओं की दृष्टि से भी तार सप्तक में संग्रहीत अज्ञेय की कविताएँ विशिष्टता रखती हैं। हरी घास पर क्षण भर नामक संग्रह में अज्ञेय ने कुछ हटकर ऐसी कविताएँ भी लिखी हैं। ये कविताएँ उन रचनाओं से भिन्न हैं जिनमें मनोभावों की गहन अभिव्यक्ति से युक्त चित्रण हुआ है। इनकी विशेषता इनकी हल्की चुलबुलाहट ही है। एक उदाहरण इस प्रकार है

✓ अच्छा है अच्छा
होता न मनुष्य मैं होता करमकल्ला।
रूखे कर्म जीवन से उलझता न पल्ला।
चाहता न नाम कुछ

सोचता न काम कुछ
करता न काम कुछ बैठा निठल्ला—
अलग रहे अलगा।

अज्ञेय ने "इत्यलम्" तथा "बावरा अहेरी" नामक संग्रहों में जो कविताएँ प्रकाशित हुई हैं उनमें अज्ञेय की कविता की सामान्य विशेषताओं के साथ साथ अनेक रचनाएँ ऐसी भी हैं जो मुक्त छन्द के क्षेत्र में नवीन प्रयास हैं। इनमें भावना का प्रौढ़ रूप नहीं मिलता परन्तु फिर भी भावाभिव्यक्ति की विशेषता से ये भी युक्त हैं। इत्यलम् से एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है जो मुक्त छन्द की दृष्टि से एक कमजोर रचना है

मेरा ध्यान
धधकता सा पड़ता हुआ
गया
मकान के किनारे वाली पटरी के उस मौलसिरी के
गाछ की ओर
जिसके नीचे की उखड़ी घास में बैठ कर
एक दिन दो आने की किनारी मलाई की बर्फ
खाई थी।

अज्ञेय की कविताएँ प्रयोगवादी विशेषताओं का परिचय देने के साथ साथ उनके विकास की भी द्योतक हैं। यदि एक ओर उनमें प्रकृति वर्णन के ताजे रूप मिलते हैं तो दूसरी ओर यौन प्रतीक और सौंदर्यबोध के नग्न उपमान भी। यदि उनमें एक ओर व्यक्तिवादी विद्रोह के जन्म की भावना विद्यमान मिलती है तो दूसरी ओर मनोभावों का सफल चित्रण भी मिलता है। यदि उनमें एक ओर हल्के फुल्के विचारों की सरल अभिव्यंजना मिलती है तो दूसरी ओर अनास्था से आस्था की ओर बढ़ने का गम्भीर संकेत भी। यदि उनकी बहुत सी रचनाएँ छन्दात्मकता, गीतात्मकता तथा मधुरता की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं तो दूसरी ओर ऐसी रचनाएँ भी हैं जो अभिव्यक्ति की कलात्मकता की दृष्टि से विशेष महत्व की हैं। अनास्था के स्थान पर आस्था की ओर बढ़ने का संकेत वैचारिक तीव्रता से जिस रूप में अज्ञेय की कविता में मिलता है उसका एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तुम तुम हो मैं क्या हूँ?
ऊँची उड़ान, छोड़ कृतित्व की नयी परम्परा हूँ।
पर कवि हूँ—स्रष्टा दाता
जो पाता
हूँ अपने को मिट्टी कर उसे सनाता चमकाता हूँ।
पुष्प सा सलिल सा, प्रसाद सा

अनिवच आह्लाद सा छुपाता हू
क्योंकि तुम हो ।

गिरिजा कुमार माथुर—

प्रयोगवादी काव्य प्रवृत्ति के अन्तगत श्री गिरिजा कुमार माथुर का नाम भी उल्लेखनीय है। प्रयोगवाद के आरम्भिक काल म ही श्री माथुर की कविता म प्रयोग शीलता के तत्व लक्षित किये जाने लगे थे। छन्द प्रतीक तथा उपमानो क क्षेत्र म उनके प्रयोग सफल कहे जा सकते हैं। श्री माथुर ने अपने एक निबन्ध म प्रयोगवाद से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं। उन्होंने लिखा है प्रयोगशील कविता का क्या अथ है? काव्य म प्रयोग और अन्वेषण की एतिहासिक पृष्ठभूमि क्या थी? उसका प्रारम्भ और विकास कैसे हुआ? आज उसका क्या रूप है? प्रयोग साध्य है या साधन? यदि साधन है तो किस चीज के? किस की अभिव्यक्ति के? हिन्दी कविता की प्रगति म वे साधक हैं या बाधक हैं? क्या प्रयोग का कोई स्वतन्त्र वाद हो सकता है? क्या यह वास्तव म रूपवाद की ही एक धारा नहीं है जो प्रयोग और प्रतीक की आड म प्रगतिशील कविता के विरोध म खड़ी हुई है और इस प्रकार तथा माध्यम पर जोर देकर यथाथ वस्तुतत्व और जीवन की वास्तविकता के बीच दीवार बनना चाहती है या कि माध्यम सम्बन्धी निम्न के प्रयोग जीवन-स्पर्शी काव्य के हित म भी है? श्री माथुर की कविता म स्पष्टत म स वस्तुत स प्रश्नो के उत्तर मिल जाते हैं। सन १९४१ म उनके काव्य का प्रथम सग्रह मजीर प्रकाशित हुआ था जिसम मुक्त छन्द प्रतीक और उपमान के नये प्रयोग थे। उनकी आरम्भिक कालीन कवितायो म छायावादी काव्य तत्व ही विद्यमान था। रोमानी भाव और सौन्दर्य के साथ-साथ प्रकृति चित्रण की दृष्टि से भी उनकी अनेक कविताएँ सुन्दर कही जा सकती है। विपरीत दृष्टि स अन्न पर बम तथा शीर्षक कविता का नाम उल्लेखनीय है। नवीन उपमान एव यथार्थवादी दृष्टि भी इनम मिलती है। कवि का दूसरा सग्रह नाश और निर्माण है जिसका प्रकाशन सन १९४६ म हुआ था। ये कविताएँ मुख्यत नये छन्दो और नये उपमानो के प्रयोग की दृष्टि म उल्लेखनीय है। श्री माथुर के धूपके धान काव्य सग्रह धूप के धान म भी उपमान भाषा छन्द लय सांकेतिकता आदि के क्षेत्र म सफल प्रयोग मिलते हैं। चित्रात्मक प्रवाह शैली भी उनकी कविताओं की एक विशेषता है। श्री माथुर की कविताओं के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

अब के बसन्त
कितने सहस्र वर्षों की सखी बना आया
कहिए, अबकी
ये शिशिर सरीखा बादल भरी हवा चलता
रातों को याद टूट रहा
ये मुख उड़ाता न जाता वर्षों पाद

जाड़ा की सन्ध्या का यह अंतिम प्रहर
रात गन्नी चांदनी से धीरे ढलती जाती
जब कालिदास की नगरी में
उन गीतों की छाया में मैं बैठा था,
पहली भी अंतिम बार वही
जग ने जिसका मिलना पर है पहिचाना
वह चित्र न मुख पर से उतरा
उसको ही पूरा करने में
मुझको भी पूर्ण न होने का वरदान मिला
मैं चलता जाऊंगा इतिहासों के ऊपर
यद्यपि पाषाण हुआ जाता ।

— —

चांद हंसता
हवा बहती कटीली
चान्दनी फैली हुई है ।
ओस नीली
चान्दनी ज्यों हवा सुधि मधु लाती
याद के हिम वक्ष से आंचल उड़ाता
चांद के जब गात बीता आइना में
मोम की सित मूर्ति सी गत आयु आती ।

— —

क्वार की सूनी दुपहरी
श्वेत मरमीले रूप से बादलों में
तेज सूरज निकलता फिर डूब जाता ।
घरों में सुनसान आलस ऊंघता है
थकी राह ठहर कर विश्राम करता
दूर सूनी गली के उस छोर पर से
नीम नीचे खेलते कुछ बालकों की
मिली सी आवाज आती ।

रामविलास शर्मा—

प्रयोगवादी काव्यधारा के जो कवि तार सप्तक में संग्रहीत किये गये थे उनमें से अनेक ऐसे हैं जिनके काव्य में प्रयोगशीलता के तत्व विद्यमान होने के साथ साथ समाजवादी यथार्थ की प्रवृत्ति प्रधान थी। ऐसे कवियों में डा॰ रामविलास शर्मा का

नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

ईश के सुवर्ण सिंहासन के पार्श्व में
उड़ चले पुष्पक विमान पृथ्वी की ओर
करते हैं पुष्प वृष्टि
नष्ट करते हैं नर-सृष्टि कर अग्नि वृष्टि
दुर्गम नृशंस आततायियों के ध्वंसकारी वायुयान
हरे हरे खेतों के
लाल-काले लोहे के कल कारखानों के
नीचे कहीं दबा था मूक एक चुपचाप
हड्डियों का ताप।

नेमिचन्द्र जैन—

नेमिचन्द्र जैन ने प्रयोगवाद के आरम्भ में जिन कविताओं की रचना की उनमें रूमानीपन विशेष झलकता है। कुछ कविताओं में व्यष्टि और समष्टि का अन्तर्द्वन्द्व भी व्यक्त हुआ है। नवीन परिस्थितियों में उत्पन्न मनःस्थितियों का भी अच्छा चित्रण उनमें मिलता है। कहीं-कहीं पर कतिपय प्रतीकात्मक चित्र भी मिलते हैं। उनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

देखता हूँ दशमी का पीला सा चाँद
कहीं भागता
दीखता नहीं है मुख
उसमें किसी का मुख खिलता उत्फुल्ल
किसी मुग्ध भावना की मधु-आभा से दीप्त।
लगता है यन्त्रणा से पीड़ित निस्तब्ध
मुख कोई
मुझे घूरता है अपलक निस्पंद

गजानन्द माधव मुक्तिबोध—

गजानन्द माधव मुक्तिबोध का काव्य बौद्धिकता एवं निम्नमध्य वर्ग की दृष्टि से तार सप्तक के कवियों में विशिष्टता रखता है। इनकी बहुत सी कविताओं में नवीन परिस्थितियों के फलस्वरूप उत्पन्न मनःस्थितियों का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। कुछ कविताएँ ऐसी भी हैं जिनमें प्रगतिवादी दृष्टिकोण प्रधान होते हुए भी समाजवादी यथार्थ की प्रवृत्ति स्पष्ट अभिव्यक्त हुई है। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

वह परस्पर की मृदुल पहचान जैसे
अतल गभीर भव्य धरती हृदय के निज कूल पर

मृदु स्पन्दन पर पहुँचा बरनी मूराम उग बिन
दीप छाया श्याम रहाय बरग तू है वो
जिसने तार आज्ञि आता प्राण
जिसने मूक पक्षी है तू मन में रहा आय उनमें आये।

— — —

तेरे रक्त में भी मत्य का अवरोध
तेरे रक्त में भी घणा आनी तीव्र
तुझको दया मितनी उमड आती क्रोध
तेरे हाम में भी राग द्वेष में उग्र
तेरा नाश तुझ पर क्रुद्ध तुझ पर व्यग्र
मेरी ज्वाल जन की ज्वाल होकर एक
अपनी उष्णता में धो चुका अविवेक
तू है मरण तू है रिक्त तू है व्यथ
तेरा ध्वस केवल एक तेरा अर्थ।

प्रभाकर माचवे—

इसी प्रवत्ति के अन्तगत डा० प्रभाकर माचवे का उल्लेख भी किया जा सकता है। प्रभाकर माचवे की कविता में मुक्त छन्द में नवीन उपमान एव बिम्ब योजना मिलती है। सामाजिक चेतना के जिस स्वर का उनकी कविता में आवाहन है वह आधुनिक निम्न मध्य वर्ग की अर्थहीन सत्ता की प्रतिक्रिया है। निम्न मध्य वर्ग में व्याप्त कुण्ठा एव जीवन सघष की अधिकता ने उसे एक अमानवीय वत्ति प्रदान कर दी है। प्रभाकर माचवे की इसी प्रकार की एक कविता उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत की जा रही है

नीचे तले लकडी की फिर में नग घर में
मकडी के जालों से कोल्हू के बर्तनों से
मजा नहीं रहने को फिर भी ये घुन से
गन्दे अंधियारे और बदबू भरे दरबों में
जनते हैं बच्चे।
बीसवी सदी ने हम क्या दिया
मोटर रेल विमान क्रान्तियाँ
यह बेतार सवाक् चित्रपट
कागज मुद्रा आर्थिक सकट
गति अतिशयता वेगातुरता
कहीं प्रदीप्त कहीं प्रचुरता।
बीसवी सदी ने यही दिया

मानव को मानव का भक्षण
मानव को निज मरण का
परवाना सबको बांध दिया
जीवन-संघर्ष बड़ा यह तब
इस हाथ लिया उस हाथ दिया
देखा न पुण्य अथवा पातक
जिसने मारा बस वही जिया।

भारतभूषण अग्रवाल—

भारतभूषण अग्रवाल के काव्य संग्रहों में 'छवि के बंधन', 'जागते रहो' तथा 'मुक्ति मार्ग' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये संग्रह उनकी कविता में आने वाले विभिन्न मोड़ बताते हैं। इनमें से 'मुक्ति मार्ग' की रचनाएँ कवि के आस्थावादी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति के विचार से विशेष रूप से महत्वपूर्ण कही जा सकती हैं। समाजवादी यथार्थ की प्रवृत्ति के साथ साथ रूमानी भावना भी समन्वित रूप में उनकी कविता में उपलब्ध हो जाती है। आस्थावादी दृष्टिकोण के विचार से इनकी कविता का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

आज ही मैं जान पाया हूँ
कि बंधन में अकेला हो नहीं हूँ दुखी चिंताग्रस्त
वरन आज समस्त जीवन-प्राण
दब रहा इस विषम बाधा से विकल है फूल
पथ खोजने के लिए
व्यस्त है हमारे जीवन मरण के संग्राम में
मुक्ति के इस मार्ग में हम-तुम अकेले ही नहीं
हैं हमारे साथ लाखों करोड़ों अरबों असंख्य
स्वप्न और विश्वास के भाई

भवानी प्रसाद मिश्र—

प्रयोगवादी कविता के क्षेत्र में दूसरे सप्तक के प्रकाशन काल सन् १९५१ से एक नया चरण आरम्भ होता है। वैचारिकता तथा बौद्धिकता के विचार से तार सप्तक के कवि भले ही अनिश्चय रखते हों परन्तु अभिव्यक्ति, आस्था, कल्पनात्मकता एवं शिल्पगत प्रयोगों की दृष्टि से इस सप्तक के अनेक कवि महत्वपूर्ण हैं। भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ सहज अभिव्यक्ति, सरल भाषा एवं तीखी व्यंग्यात्मकता के कारण उल्लेखनीय हैं। उनकी 'गीत फरोश' कविता का कुछ अंश उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है

जी हाँ हुजूर गीत बेचता हूँ।
मैं तरह-तरह के

गीत बनाता हूँ
मैं सभी किसिम के गीत बनाता हूँ।
जी मारे फिर नाम बताऊँगा
बदनाम रहा है नाम बताऊँगा
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने
यह गीत सख्त सरदर्द भुलायेगा
यह गीत पिया को पास बुलायेगा।
जी पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको
पर पीछे पीछे अक्ल जगी मुझको
जी लोगों ने तो बेच दिये ईमान।
जी आप न हों सुनकर ज्यादा हैरान।
मैं सोच समझकर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ
जी हाँ हुजूर मैं गीत बेचता हूँ।

शकुन्त माथुर—

दूसरे सप्तक की उदीयमान कवयित्री शकुन्त माथुर की रचनाएँ विषयगत सादगी और रागात्मकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। अभिव्यक्ति की सरलता भी इनकी कविताओं की विशेषता है। उदाहरण के लिए 'जानबूझकर नहीं जानती' शीर्षक कविता यहाँ प्रस्तुत की जा रही है

आज मुझे लगता संसार खुशी में डूबा
क्या?
जान बूझकर नहीं जानती।
आज मुझे लगता संसार खुशी में डूबा—
माँ ने पाया अपना धन ज्यों
बच्चे पिता का खोया
बहुत बड़ी क्वारी लड़की को सुघर मिला
हो दूल्हा
मन भरी दीवारों पर राजा ने फेरा हो चूना
किसी भिखारिन के घर में बहुत दिनों के
पीछे मानो जला हो चूल्हा।
वृद्ध की काया में फिर से एक बार
यौवन हो कूदा।
पकड़ गया था चोर अकेले कूचे में जो

किसी तरह वह कारागृह से छूट गया हो,
या कि अचानक किसी वियोगिनि का पति
लौटा
उसी तरह
आज मुझे लगता संसार खुशी में डूबा
क्या ?
जान बूझकर
नहीं जानती ।

हरिनारायण व्यास—

हरिनारायण व्यास की कविता कल्पना के आधिक्य एवं प्रकृति वर्णन के यथार्थ चित्रों से युक्त है। गत्यात्मक प्रवाहपूर्णता भी इनकी कविताओं की एक विशेषता है। इनकी कविता में कहीं कहीं पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे आस्थावादी स्वर मन्द हो गया है और संदेहशीलता की भावना जाग्रत होती है

इस पुरानी जिन्दगी की जेल में
जन्म लेता है नया मन

जल रही प्राचीनतायें बांध छाती पर मरण का एक शव
इस जर्जर की पुरानी आत्मा का आडंबर
आ रही ऊपर नव युग की किरण।

शमशेर बहादुर सिंह—

दूसरे सप्तक के एक महत्वपूर्ण कवि शमशेर बहादुर सिंह हैं। इनकी कविता में उर्दू शैली और भावसंगीत का प्रवाह भी यत्र-तत्र मिलता है। अनेक स्थलों पर अभिव्यक्ति का उत्तरोत्तर संकुचन की स्थिति में आ जाने के कारण उसकी सरलता भी अपेक्षाकृत कम हो गयी है। कहीं कहीं पर कवि ने प्रकृति का मानवीकरण कोमल कल्पनाओं और नवीन बिम्ब विधान के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यथार्थवादी स्वर की प्रमुखता ने इन्हें इस सप्तक के कवियों में एक विशिष्ट व्यक्तित्व से युक्त बनाया है। इस दृष्टि से नवीन बिम्ब विधान ही उनकी कविताओं की प्रमुख विशेषता है। दूसरे सप्तक में उनकी कोमल भावक कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तब गिरा
जो
झुक गया था गहन
छायायें लिए।
अब
हो उगा है मौन का डर

और भी मौन
गूँज उठा है करुण सागर का हृदय
शान्त सागर और भी अगाध हो आया
डाल दी है किसने मुख पर।

नरेश मेहता—

नरेश मेहता एक भावनाओं के कवि हैं। आध्यात्मिकता और सामाजिकता इनकी कविता के मुख्य गुण हैं। इनकी रचनाओं की एक विशेषता अनुभूति की गहनता है जिसके कारण अभिव्यक्ति में सरलता नहीं आ पाती। इतना अवश्य है कि इनकी रचनाओं में कहीं-कहीं पर सौन्दर्य के रहस्यमय गीत मिलते हैं जिनमें रोमांटिक संवेदना के साथ अस्तित्ववाद के पुट भी हैं। इनकी रचनाओं में यांत्रिक युग में मानव व्यक्तित्व के विघटन के संकेत भी यहाँ-वहाँ मिलते हैं। उदाहरणार्थ

जिन्दगी
दो उँगलियों में दबी
सस्ती सिगरेट के जलते टुकड़े की तरह
जिसे कुछ लमहों में पीकर
गली में फेंक दूँगा।

रघुवीर सहाय—

रघुवीर सहाय की कविताओं में भी अभिव्यक्तिगत गुणभाव कम मिलता है। चित्रात्मकता की दृष्टि से इनकी कुछ कविताएँ अवश्य अच्छी बनी हैं। गद्यात्मकता की प्रवृत्ति इनकी रचनाओं में बहुलता से मिलती है। भाषा की सरलता और चमत्कार युक्तता इनकी कविता की विशेषताएँ हैं। मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का सूक्ष्म चित्रण इनकी कविता में यत्र तत्र लक्षित होता है। आस्थावादी स्वर भी उनकी कुछ रचनाओं में मुखरित है। रोमांटिकता का स्वर भी इनके कुछ गीतों में तीव्रतर रूप में मिलता है। एक उदाहरण इस प्रकार है

मुक्ति के सारे नियन्त्रण तोड़ डाले
मुक्ति के कारण नियम सब छोड़ डाले
अब तुम्हारे बंधनों की कामना है।
विरह यामिनी में न पल भर नींद आयी
क्यों मिलन के प्रात वह लता समायी
एक क्षण हो तो मिलन में जागना है।
यह अभागा प्यार ही यदि है भुलाना
तो विरह के वह कठिन क्षण भूल जाना,
हाय जिनको भूलना मुझको मना है।
मुक्त हो उच्छ्वास अम्बर मापता है

तारों के पास जो कुछ काँपता है
स्वाति के हर कम्प में कुछ याचना है।

धर्मवीर भारती—

डा० धर्मवीर भारती की प्रारम्भिक कविताओं में रोमानियत के साथ-साथ सामाजिक चेतना की अनुभूति भी विद्यमान मिलती है। इस दृष्टि से उन पर समकालीन गीतकारों का प्रभाव भी मिल जायगा। इनके कुछ गीत गेयता की दृष्टि से भी अच्छे हैं। उर्दू काव्य-धारा का भी प्रभाव यत्र-तत्र इनकी रचनाओं पर मिल जाता है। यथार्थ की कटु अनुभूति भी इनके काव्य में विद्यमान है। स्फुट काव्य के अतिरिक्त धर्मवीर भारती के 'अंधा युग' नामक दृश्य-काव्य में कथात्मकता की बहुलता के कारण थोड़ी प्रभावहीनता भी आ गयी है। अनेक कविताओं में प्रकृति के मोहक चित्र मिलते हैं। कवि की मानवतावादी विचारधारा बौद्धिकता से संयुक्त होकर उनकी विचार प्रधान कविताओं में मिलती है। कटु यथार्थ की अनुभूत्यात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से इनकी कविता का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

हर घर में सिर्फ चिराग नहीं, फूटे मुकद्दर
लेकिन फिर भी
जाने कैसा सुनसान अँधेरा
रह रह कर घबराता है
छप्पर से छनता धुआँ धुआँ
हर ओर
हवा की पतों पर छा जाता है
बढ़ जाता है तलवार शाम तक तन में
हर घर में मचता कुहरामा
शहर के घर दूर कचों की चाट स्याह
बच्चों की भाग दुहाई
पतों की सुनसान।

अन्य कवि—

तीसरे 'सप्तक' के कवियों में प्रयागनारायण त्रिपाठी, कीर्ति चौधरी, मदन वात्स्यायन, केदारनाथ सिंह, कुँवरनारायण, विजयदेव नारायण साही तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं। कीर्ति चौधरी की कविताएँ बिम्ब-योजना की मार्मिकता और परिपूर्णता की द्योतक हैं। इनकी कविता का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

जब नाम तुम्हारा आता है,
उस क्षण में अन्दर की उदासी छा जाती है।
सहसा
वह जाड़ पथ का जा

पीरा ताता गा गता है।
पगा लगता
जग बाग के महता म जगा म
धरती (मातव जहा रहा आ मरा है।
उत गारी महता म
सुधि का परस
पत्र भर दता है
जान कभी अनुभूति विरार मा आता है
मैं सिहर सिहर रह जाती हूँ
आरठ डूबकर
मधु क निमन सागर म।

कुवरनारायण की कविता म यहाँ वहाँ मानसिक अन्तर्विरोधा तथा परिष्कृत पीडा की सूक्ष्म संवेदनाओं का अभिव्यक्ति हुई है। रूमानियत के साथ साथ बौद्धिकता क तत्व भी मिलत हैं। गद्यात्मकता की प्रवृत्ति की बहुलता म समावश भी उनकी कविता म हुआ है। इसी प्रवृत्ति क कारण अनक स्थलों पर उनकी कविता अभिव्यक्ति की दृष्टि स दुरूह और प्रभावहीन हो गयी है। कुछ स्थलों पर भावों म भी अस्पष्टता आ गयी है और अर्थ म एक विचित्र सा उलझाव मिलता है। एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

चाँदनी सित रात चितकबरी
उस भूखण्ड की गजी सतह पर
छाह स खण्डहर
कपाटों म घना सा रहता मनहूस अँधियारा।
अचानक चौंक कर बुत छाव म
दो पंख फड़के
ज्या किसी स्मृति न कगूरा पर दस्तक दी हो
दूर की महराब म धसती हयी
प्रेत भाषा का पुकारा
प्यार की अतृप्त खण्डित आत्मा
आश्वस्त हो
वह दर्द जीवित है तुम्हारा।

विजयदेव नारायण साही की कविताएँ कुवरनारायण के काव्य क विपरीत भाषा की सरलता और सगठन की चुस्ती की दृष्टि स उल्लखनीय है। इनकी कुछ रचनाओं म विश्वास और अनास्था का अन्तर्द्वन्द्व भी मिलता है। विजयदेव नारायण साही क काव्य का एक उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है जो अभिव्यक्तिगत सहजता क विचार स दृष्टव्य है

धार से उमड़ी घटा गिरि घाटियों में बस गयी
पत्थरों के बीच सोंधी बास आकर बस गयी
नार में हो जा रही हैं यह हवायें बावरी ।
रसियों की गाठ सा जम उधर मन उग गया
मस्तियों सा पा गया मैं गज-सा मैं घुन गया
स्वरों को वमुध स्वरों का नापहर यह भावना ।

महत्व—

इस प्रकार से आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में प्रयोगवादी काव्य की जो प्रवृत्ति विकसित हुई है उसका मूल आधार उपर्युक्त वर्णित तीन सप्तकों के कवि हैं। जैसा कि ऊपर स्पष्ट संकेत किया गया है प्रयोगवाद नामक यह आन्दोलन कविता के क्षेत्र में स्वच्छन्द शैली, छन्द विधान, शब्द चयन, अलंकार योजना एवं भावनात्मक वैशिष्ट्य आदि का आधार लेकर विकसित हुआ। प्रयोगवादी कवियों ने वैचारिक दृष्टिकोण में पाश्चात्य कविता से भी प्रेरणा ग्रहण की। मूलतः यह प्रेरणा अनास्था के प्रति एक प्रकार के विद्रोह से युक्त है। इसलिए अधिकांश प्रयोगवादी कवि किसी न किसी रूप में आस्थाजनक दृष्टिकोण की ओर उन्मुख दिखाई पड़ते हैं। प्रयोगवाद तो यह उद्घोष उस नवीन काव्य तत्व प्रयोगों से भिन्न एक तारक शब्द की क्रान्ति में प्रतिष्ठित करता है। प्रयोगवादी काव्य में जो बौद्धिक प्रवृत्ति विद्यमान है वह उन्हीं कवियों की कविताओं में मिलती है जिनका पाठक को दुरूह वैचारिकता नहीं है। ऊपर जिन कवियों का उल्लेख किया गया है उनके अतिरिक्त अन्य अनेक कवि ऐसे हैं जो आधुनिक काव्य की विभिन्न धाराओं के विकास में योग दे रहे हैं। किसी विशिष्टवाद अथवा विचारधारा के प्रति विशेष रूप से आग्रहशील न रहकर ये कवि आधुनिक हिन्दी कविता के स्वरूपगत वैशिष्ट्य का द्योतन करते हैं। इनमें अनेक कवि प्रयोगशील हैं तथा अनेक स्वतन्त्र रूप से गीति काव्य की परम्परा प्रारम्भ कर रहे हैं। इन कवियों का उल्लेख पृथक अध्याय में किया जायगा।

—)o(—

अध्याय : १४

आधुनिक युगीन कविता की अन्य प्रवृत्तियाँ

आधुनिक युगीन हिन्दी कविता [illegible] छायावाद [illegible] प्रगतिवाद [illegible] प्रयोगवादी प्रवृत्तियों के अतिरिक्त अन्य भी अनेक प्रवृत्तियाँ [illegible] होती हैं। [illegible] समय में जो हिन्दी-कविता लिखी जा रही है उसमें भी [illegible] प्रमुख [illegible] साथ-साथ अन्य धारायें भी विद्यमान हैं [illegible] आन्दोलन भी [illegible] हैं। बहुधा ऐसा भी प्रतीत होता है कि इनमें से [illegible] विशिष्ट विचार धारा की [illegible] सम्भावनाएँ विद्यमान हैं परन्तु दूसरी ओर वे अपनी नवीनता [illegible] नाओं से युक्त भी जान पड़ती हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक युग की कविता अपनी प्राचीन परम्पराओं [illegible] होती ही है इसके साथ ही आधुनिक युगीन [illegible] धाराओं के प्रति भी उसमें [illegible] भावना मालूम होती है। वस्तुतः ये कवि आधुनिक युग में [illegible] हैं जो पूर्व प्रचलित [illegible] धाराओं से थोड़ा बहुत साम्य रखते हुए भी मूलतः उनसे भिन्न हैं।

बालकृष्ण शर्मा नवीन —

बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविताएँ छायावादी कविता से समानता रखते हुए भी भिन्न हैं। उन्होंने अपने [illegible] उल्लेखनीय काव्य संग्रह [illegible] की भूमिका में लिखा है इस दर्शन सिद्धान्त पर जो भी साहित्य रचना सौन्दर्य शास्त्र आधारित होगा वह पूर्ण रूप से ग्राह्य नहीं हो सकता। इस प्रकार का शास्त्र उस अंश तक जिस तक वह जीवन का यथार्थवादी दर्शन का अनुगामी बना रहता है मानव प्रगति को [illegible] *मानवी नतिबाधक गति अवरोधक अचल तथा प्रतिक्रियावादी सिद्ध होगा।* इस प्रकार के साहित्य रचना सौन्दर्य शास्त्र में केवल उस सीमा तक गति होगी जिस सीमा तक वह जीवन के तथ्य का स्पर्श विकसित और प्रस्फुटित करेगा। किन्तु जिस समय वह शास्त्र जीवन के तथ्य को केवल भौतिकता में बाँधने का दुराग्रह करने लगेगा उसी समय वह विचार विरोधी के रूप में प्रकट हो जायगा। इस संग्रह की कविताएँ नवीन के काव्य के अन्तर्गत निहित आस्थावादी दृष्टिकोण की परिचायक हैं। रहस्यवादिता, मानवता

दिशा तथा वस्तुवादिता के स्थान उनकी इन कविताओं में स्पष्ट हैं

स्खलित उद्घाटन ध्वनित गति जनित अनहद नाद न यह।
दिग्दिगन्ताकाश व्याप्त रहा है जग अहरह।
ऊर्ध्व गति न ध्यानमग्ना धीर मति का ज्ञान परा।
उर चरा ... नाच-नच न मन विहग तज निज बसेरा।

— —

लपक चाटते जूठे पत्ते
जिस दिन मैंने देखा नर को
उस दिन सोचा क्यों न लगा दूँ
आग आज इस दुनिया भर को

— —

तू न हो सब बंधन शिथिल हैं अपने से
ये होते नश्वर मनुज डर हो सपने से
बंधन हैं कहाँ ? अरे तनिक आ सपने से
तू तो है निर्विकार निर्लिप्त उपमेय
तू अबाध चला कहाँ मानव तव चरण रथ।

बालकृष्ण राव—

बालकृष्ण राव की कविताओं में यथार्थ की ठोस चेतना मिलती है। रात बीती नामक संग्रह में उनकी जो कविताएँ प्रकाशित हुई हैं उनके अध्ययन से यह तथ्य उद्घाटनीय है। इस संग्रह की कविताओं को देखने पर यह भी आभासित होता है कि कहीं-कहीं कवि अपनी अनुभूतियों को संगठित नहीं कर पाया है। कवि ने अपनी रचनाओं में शिल्प की अपेक्षा अभिव्यक्ति को अधिक महत्त्व दिया है। बालकृष्ण राव की एक कविता नीचे उदाहरणार्थ प्रस्तुत की जा रही है जिसमें मनोव्यथा का ... रहित चित्रात्मक अंकन हुआ है

द्वार बन्द थे आशा ने राह दिखाई
किन्तु बरसा भी ... अन्धकार की
उमड़कर जिसमें तूफान सा गरज रहा था
... और निराशा की आवाज ...
... कर ... ले लिया ...
जितना पानी पर जितना सूना था ...
करते आज थे ... गगन भर।
इन ... की ... पूर्व-जन्म का नाता-सी
दिन ... हो गया ... आज सब भी है सून
गूँज रहा ... आज भी अविराम की।

कहाँ हुए [illegible] हाथ
[illegible] उतार [illegible] ।

लक्ष्मीकांत वर्मा—

लक्ष्मीकांत वर्मा की कविता [illegible] है। उनकी [illegible] गहराई में [illegible] है। [illegible] भी [illegible] मिलती है। सामाजिक [illegible] की यथार्थता के प्रति [illegible] प्रकार के आह्वान का स्वर भी उनमें मिलता है। उनकी [illegible] उदाहरण [illegible] प्रस्तुत की जा रही है [illegible] आस्था की प्रतीक है

मैं आज भी जिन्दा हूँ
उस हत्यारे की आँखें
जो मजार मजार में [illegible] किसी [illegible]
[illegible] लिख दिया गया था
एक तना धार धार फौलाद की नार
जब भी मेरी छाती में [illegible] है
और उस वक्षस्थल का पावन सीना
उस दाग की गाथा हर मौसम में कहता है
छिनी [illegible] पगडी पर दाग चढ़ जाती है
दुधियार पत्तों में बात बस जाती है
जहाँ भी पकती है भूतल का छती है
चरवाहे की वंशी जो टेर अटक जाती है
मगर
एक मैं हूँ फौलाद की पानी लिये
जीना हूँ—
मैं आज भी जिंदा हूँ।

जानकीवल्लभ शास्त्री—

उत्तर छायावादी युग के प्रमुख गीतकारों में जानकीवल्लभ शास्त्री का नाम भी उल्लेखनीय है। इनकी कविता में छायावादी प्रभाव के साथ साथ छायावादोत्तर काव्य के तत्त्व भी स्पष्ट रूप में लक्षित होते हैं। फलतः उनकी कविता में जहाँ एक ओर छायावाद के प्रभाव स्वरूप [illegible] विषय, रहस्यात्मकता, काल्पनिकता तथा रूमानियत आदि मिलती है वहाँ दूसरी ओर नवीन युग की नयी समस्याओं के प्रति मुड़ता हुआ दृष्टिकोण भी मिलता है। रागात्मकता एवं सुन्दर मधुर शब्द योजना ने उन्हें एक गीतकार के रूप में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उनके गीतों में लय और संगीतात्मकता की दृष्टि से भी पर्याप्त नवीनता मिलती है। भाषा चमत्कार के साथ साथ अर्थ चमत्कार भी उनके काव्य की एक विशेषता है। उनकी अनेक कविताएँ सांस्कृतिक [illegible] की

प्रधानता लिए हुए है। यह भिन्न छन्दों और शैलियों में लिखा गया है। प्रकृति चित्रण विषयक कविताएं कवि की विशेष सुन्दर बन पड़ी हैं। इनमें भावनात्मक अभिव्यक्ति स्वाभाविक है और जो [illegible] की ओर भी [illegible] न होता है। [illegible] हृदय-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तथा [illegible] [illegible] सहृदय [illegible] अभिव्यंजनात्मक शैली के परिचायक हैं। इनकी कविता के दो उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं

रेणु पिंजरित कुंचित कुन्तल
 [illegible] [illegible] [illegible] था
स्वर्ण [illegible] में मद [illegible]—
 [illegible] अरविन्द [illegible] था
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
 [illegible] [illegible] [illegible]
गीत मधुर मेरा [illegible] [illegible]
 [illegible] [illegible] [illegible] था।

— —

भ्रमता भ्रमता [illegible] [illegible] [illegible] था
 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आया
[illegible] की पहिचान [illegible] की माया
 वह [illegible] धूप और यह छाया।
शून्य [illegible] में [illegible] [illegible]
 [illegible] [illegible] [illegible] हुई है आशा-[illegible]
विकल [illegible] के [illegible] [illegible] कर
 [illegible] प्रतिध्वनि [illegible] [illegible]।

सुमित्राकुमारी सिन्हा—

छायावादोत्तर युग के [illegible] में श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा का नाम भी उल्लेखनीय है। उन्होंने सुन्दर [illegible] प्रणय गीतों की रचना की है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रेम भावना [illegible] [illegible] में [illegible] है। इनकी कविता का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है

तुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
फिर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।
 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

यह रूप ज्योति शुभ ... ...
आत्म निमज्जन प्राणों का चण चण विखरा।
तुम ... ... अगार ... कैसा ... ?
साधों की मीठी घाटों बीती जाती है।

गंगाप्रसाद पांडेय—

नवीनों में रचयिता श्री गंगाप्रसाद पांडेय का ... ... मधुर प्रकृति के सहज मोहक चित्रण से युक्त है। इस प्रकार के प्रकृति ... ... स्वाभाविकता मिलती है परन्तु नवीनता की ... भी ... ... है। विविध ... अन्य रचनाओं की तुलना में ... प्रकृति ... ... में विशेष ... मिलती है। उनमें कहीं कहीं पर ग्रामीण ... भी मिलता है। उदाहरणार्थ

ये भरे बादल
भरी आशा में जग हो गया काजल।
हास्य चमकार
गजत हो दूर जग पुनः पावन।
और यह शुभ रूप
जग प्राण पावक धर जाइ का।

— —

बादल के बादल घहराये
भर ... इठलाता
विना तुम्हारे मेरा चातक
चित पल चैन न पाता।

बच्चन—

आधुनिक युगीन कविता की नवीन प्रवृत्ति के अन्तर्गत कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कवियों के नाम भी लिये जा सकते हैं जो परम्परागत रूप में मान्य और प्रतिष्ठित हैं। उदाहरण के लिए कविवर बच्चन का नाम गीत परम्परा के क्षेत्र में उल्लेखनीय है। उनके गीतों के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें उन्हें पर्याप्त लोकप्रियता भी मिली है। सोपान, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी तथा प्रणय पत्रिका आदि उनके अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी नवीन काव्य रचनाएं पुराने संग्रहों से थोड़ी भिन्नता भी रखती है। बच्चन की कविता के लोकप्रिय होने का मुख्य कारण उनकी भाषा का सरल तथा व्यावहारिक होना है। कहीं कहीं पर बच्चन के गीतों में मरण भावना की प्रबलता भी दृष्टिगत होती है। इस कोटि के गीत भावात्मक अभिव्यक्ति का प्रौढ़ उदाहरण कहे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए एक गीत नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

बीत चली सध्या की बला।
धधता प्रति पल पडने वाली,
एक रख म सिमटी लाली।
कहती है समाप्त होता है सतरगी बादल का मला।
बीत चला सध्या की बला।
नभ म कुछ द्युति हीन सितारे,
माग रहे हैं हाथ पसारे—
रजनी आये रवि किरणा स हमने है दिन भर दुख झला।
बीत चली सध्या की बला।
अतरिक्ष म आकुल आतुर
कभी इधर उड कभी उधर उड।
पथ नीड का खाज रहा है पिछडा पछी एक अकेला।
बीत चली सध्या की बला।

विद्यावती 'कोकिल'—

विद्यावती कोकिल का नाम भी गीतकारा की परम्परा म उल्लखनीय है। इनक गीता का एक सग्रह सुहागिन नामक स प्रकाशित हुआ है। इनक गीता म इनकी भावनाए परम्परागत सस्कारा म प्रभावित रूप म मिलती है। सुहाग की अचल और अमर भावना भी यही नारी हृदय क स्वाभाविक उद्गारा क रूप म अभिव्यक्त हुई है।

नीरज—

कविवर नीरज क गीता क अनक सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनक 'विभावरी' शीषक सग्रह म जो गीत प्रकाशित हुए है उनम स अधिकाश निराशावादी दृष्टिकोण के सूचक है। इनम कवि न जीवन को एक विवशता सिद्ध करते हुए ससार की प्रत्यक वस्तु क नाशवान होन की बात कही है। इस सग्रह म उनका जो दृष्टिकोण अभिव्यक्त हुआ है वह पुरान सग्रहा की अपक्षा अधिक नवीनता का सूचक नहीं है। ओजपूण भाषा की रवानगी की दृष्टि स इनक अधिकाश गीत सुन्दर हैं। यही नीरज क काव्य की प्रतिनिधि विशषता भी है। नीरज की कविता का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

हर ओस यहाँ यूँ तो बहुत रोती है
हर बूँद मगर अश्क नहीं होती है।
पर दर्द क रोत जो जमाने का गम
उस ओस म आँसू जो गिर मोती है।

श्रीपाल सिंह क्षम—

श्रीपाल सिंह क्षम का नाम भी नव गीतकारा म उल्लिखित किया जा सकता है। उनक गीता क सग्रह जीवनतरी तथा नीलम त्याति और सघर्ष नीरव स प्रकाशित हुए

है। उनके गीतों की प्रमुख विशेषता यह है कि उनमें अनुभूतियों की नवीनता, सूक्ष्मता और गहराई मिलती है। कहीं कहीं पर ग्राम्य जीवन का भी अच्छा चित्रण इनके काव्य में मिलता है। इस दृष्टि का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

धीरे धीरे खोल पलकें उभार री
किरनों के पतन पर धूप रही नाच री।
तरुओं पर अड़ी हुई सूरज की नाव है
तरुओं में समाया नया का भाव है।
बाहों में डूब गया किसलयों का सौरभ
कलियों में डूब गया लाज का गुलाब है।
चिड़िया भी चहक रही है न जाने क्या
किरनों के धूल पर नाच रही नार री।
पनघटों पर छलक रही धारा की आनियाँ
बजती हैं नरम नरम पीपल की नालियाँ।
जो हो के गानों में डूबी ज्वार अरहर
आँचल में सुरभि रही बजरे की बालियाँ।
शरमीले नयनों की शबनम ने धार दी
किरनों के पतन पर नाच रही शारदा।

शम्भूनाथ सिंह—

शम्भूनाथ सिंह के गीतों का एक संग्रह 'दिवालोक' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इनके गीतों की विशेषता मुख्यतः नये उपमानों का प्रयोग है। 'दिवालोक' में जो गीत संगृहीत हैं उनमें से कुछ में विषाद भावना का मार्मिक चित्रण मिलता है। कवि कहीं कहीं पर विषाद भावना से इतना आक्रांत हो उठता है कि जीवन और मरण दोनों ही उसके लिए समान रूप से स्वीकार्य हो जाते हैं। छन्द रचना और ताजगी की दृष्टि से भी कुछ गीत अच्छे बन पड़े हैं। भाषा, प्रतीक और प्रयोग के क्षेत्र में नये सूत्र इन गीतों में उपलब्ध होते हैं। कवि की विषाद भावना भी अंततोगत्वा आस्थायुक्त स्वर में परिवर्तित हो जाती है

हम अनश्वर

शक्ति के हैं केन्द्र जीवन के प्रणेता।
क्षुद्र तिनकों-से न धारा के विजेता
अब बनेंगे एक एक नहीं सहस्र शत।
एक होकर आत्म मुक्ति समष्टि चेता
व्यक्ति होगा काल के रथ पर चढ़ेगा।
प्राणवंत नई दिशाओं में बढ़ेगा

रमानाथ अवस्थी—

आधुनिक कविता की इस गीतात्मक प्रवृत्ति के अन्तर्गत जो अन्य नाम उल्लिखित किये जा सकते हैं उनमें रमानाथ अवस्थी, शांति मेहरोत्रा, हंसकुमार तिवारी आदि हैं। इनमें से रमानाथ अवस्थी के गीत 'आग और पराग' नामक से प्रकाशित हुए हैं। इनके गीतों में प्रणय भावना की प्रधानता है। लय के और माधुर्य इनकी मुख्य विशेषताएँ हैं। एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है—

सो न सका कल याद तुम्हारी आई सारी रात
और पास ही बजी कहीं शहनाई सारी रात
मेरे बहुत चाहने पर भी नींद न मुझ तक आई
जहर भरी जादूगरनी सी मुझको लगी जुन्हाई
मेरा मस्तक सहलाकर बोली मुझसे पुरवाई—
दूर कहीं दो आँखें भर भर आईं सारी रात
और पास ही बजी कहीं शहनाई सारी रात।

बालस्वरूप राही—

वर्तमान काल के गीतकारों में बालस्वरूप राही का नाम भी उल्लेखित किया जा सकता है। छायावाद के उत्तर काल में जो गीत धारा विकसित हुई है राही के गीत उसी के परिचायक हैं। विभिन्न मनःस्थितियों के चित्रण के साथ-साथ मानवता के स्वर भी इनकी विशेषता है। एक उदाहरण इस प्रकार है—

चलते चलते थक जाता हूँ राह में पर इसका मतलब यह नहीं
गम के हाथों बेच दिया ईमान किसी के प्यार का।
एक क्षण भी पा सके जब प्राण तो जीवन सफल है
एक मुख भी कर सके शृंगार तो दर्पण सफल है
मान पाया यदि नहीं कवि विश्व मुझसे तो हुआ क्या
यह मुझे विश्वास मेरे गीत मुझको भा रहे हैं।
प्यार हुआ क्या तुमसे मेरा सारे जग से प्यार हो गया।
एक तुम्हारी छवि का दर्पण यह सारा संसार हो गया।

वीरेन्द्र मिश्र—

वीरेन्द्र मिश्र के गीतों में मानवतावादी स्वर गूँजता है। छायावाद की उत्तरकालीन सौन्दर्य चेतना वर्तमान युग के गीतकारों में मूर्तिमती हुई है। रोमांटिक कल्पनात्मकता के साथ-साथ रहस्यमयी भावना भरकर इन्होंने गीतों को मोहक सौन्दर्य प्रदान किया है। एक उदाहरण दृष्टव्य है—

रूप सा तन तुम शरद की धूप सी
प्र न्सा मन तुम विराट स्वरूप-सी

सांझरती ओंठ तुम स्वर का पदम
हिमगिरी मैं तुम स्वर के मधुर मां

रामावतार त्यागी—

रामावतार त्यागी के गीतों में छायावाद के समान प्रकृति के साथ साथ प्रकृति के मानवीकरण के प्रयत्न भी मिलते हैं। अर्थ प्रकृति में मानवीय भावना का आरोपण करते हुए त्यागी ने नारी सौन्दर्य प्रभावना का चित्र प्रस्तुत किया है। यह चित्र कवि की कल्पना शक्ति का भी परिचायक है। एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

धूप की तस्वीर पा गई यह ...मां अब ...
कोकिल का संगीत ... लिया ... है या विरह राग।
ओंठ में ... ... जिसका
तारा ... गोद घर घर पाजता है।

डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण'—

डा रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरुण के गीत प्रथम किरण तथा हिमालय आदि संग्रहों में प्रकाशित हुए हैं। इनके गीतों की शैली बड़ी स्वाभाविक और सरल है। प्रकृति विषयक गीतों में विशेष मधुरता भी मिलती है। कुछ गीत सामाजिक यथार्थ की संकेतात्मक निष्पत्ति के कारण भी महत्वपूर्ण बन पड़े हैं। मनोरम और मांसल चित्रों से युक्त उनके काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

पनघट आ नीचे जल में उतरी अब पूरना तर
रखा घड़ा पानी पर ... जल हिलराया छल छल छल छल
भर कर घड़ा उठाया भरी घूम उठी यौवन में सारी
काया गहरारी गहरारी बाढ़ तनिक सा घूघट
सिर पर रख घट पगडंडी पकड़ी निज सकरी
जाती पटपट लहराती तट फहराती पट
मादक गति से और पवन से पड़ते हैं साड़ी में सलवट।

डा० नामवर सिंह—

डा० नामवर सिंह की कविता में प्रगतिशील तत्व बौद्धिक चेतना से संयुक्त होकर समाविष्ट हुए हैं। इसके साथ ही प्रकृति का विविध रूपात्मक चित्रण भी उनके काव्य की एक विशेषता है। स्फुट चित्रों के रूप में प्राकृतिक सौन्दर्य का मोहक अंकन उनके काव्य में यत्र तत्र विद्यमान है। उदाहरणार्थ—

खेतों में लहरा रही खूब कुछ उठी हुलाई की लहरी
रह रह अंगड़ाई सी लेती ...धारा की भरी नदी गहरी

— —

झपुर चपुर धान के समुद्र में
हुलर हुलर सुनहला विहान।

डॉ० (कु०) रमा सिंह—

डॉ० (कु०) रमा सिंह की कविताएँ वर्तमान युगीन गीतपरम्परा के अन्तर्गत परिगणित की जा सकती हैं उत्तर छायावादी काल की गीत रीति में लिखी गयी उनकी कविताएँ जीवन की रागात्मक अभिव्यंजना से युक्त हैं। कहीं कहीं पर रहस्यवाद के प्रभाव-स्वरूप दुरूह प्रतीकों की योजना मिलती है। कुछ कविताएँ रागात्मक तन्मयता से युक्त हैं। एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

> नियति की बीन धरे आगे पर समय का सपेरा यह।
> क्या धुन बजाता है
> मर्मी बंध जाता है नागिन सी धरती यह घूम घूम जाती है[1]
> क्या यह वशीकरण कैसी तन्मयता है?

डॉ० देवराज—

आधुनिक युग के प्रौढ़ कवियों में डॉ० देवराज का स्थान भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उनके चार काव्य ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं जिनके नाम हैं जीवन रश्मि धरती और स्वर्ग उर्वशी ने कहा तथा इतिहास पुरुष हैं। जीवन रश्मि की कविताएँ मुख्यतः भावात्मक अतिरेक की परिचायक हैं। धरती और स्वर्ग में जो कविताएँ संगृहीत हैं वे अधिक कलात्मक और आधुनिक न होते हुए भी रागात्मक भावना तथा प्रेम भावना की छाया प्रस्तुत करती हैं। इस संग्रह की अनेक कविताओं में कवि ने आधुनिक जीवन की समस्याओं की ओर संकेत किया है। ये कविताएँ इस तथ्य का द्योतक हैं कि कवि ने आधुनिक जीवन के विभिन्न पक्षों का गहराई तक परीक्षण किया है। इसमें कुछ कविताएँ ऐसी भी मिलती हैं जो उर्दू रीती में लिखी गयी हैं। ये रुबाइयों जैसी हल्की-फुल्की व्यंग्यपूर्ण तथा रोचक हैं। एक उदाहरण इस प्रकार है

> धरती पे स्वर्ग लाने वाले हैं
> जन की व्यथा मिटाने वाले हैं
> इस बूँद नहीं आयी मैं पानी
> मरु को चमन बनाने वाले हैं।
> वक्ता हैं मगर सत्य से अपरचित
> नेता हैं मगर राह से अपरिचित
> करते हैं जमाने की मदाहात,
> दुखियों के मगर दर्द से अपरिचित।
> पद नीति का ज्यों जाके पकड़ते हैं
> हर अपने विरोधी पे अकड़ते हैं
> हिम्मत है किसे उनको करे ममता
> ममता के लिए उनकी वो लड़ते हैं।

डा० राजेन्द्र गुप्त—

डॉ० राजेन्द्र गुप्त की कविताएँ [illegible] की आधुनिक [illegible] में [illegible] अतिरिक्त [illegible] में प्रकाशित [illegible] कविताओं में [illegible] जीवन की [illegible] अनुभूतियों की अभिव्यक्ति [illegible] है। [illegible] की [illegible] ही [illegible] मिलता है। [illegible] कविताओं में [illegible] और [illegible] का [illegible] है। [illegible] प्रति [illegible] अनुभूतियों [illegible] पर [illegible] है कि [illegible] कविताओं [illegible] प्रस्तुत करता है। [illegible] विवशता तथा उपलब्धियों [illegible] कविताओं के कुछ अंश प्रस्तुत किये जाते हैं—

मेरे आँगन का फुदकता गौरैया
आज कहीं उड़ गया।
जिसे पाया था मेरे बचपन ने
कितने सौम्य रूप में
आज यहाँ नहीं है

— —

मैं बाजार में
कितनी गौरैया खरीद सकता हूँ
पर वह—
जिसने मेरे दाने चुगाये थे
परेशान कर कर
आँगन के चक्कर कटवाये थे
कहीं और बसेरा ले रही है
और उतना आकाश जो उसकी आकृति की
खाली है मेरे मन में—

— —

सत्य तो यह है
खरमता के अलावा
किसी की मुझमें निष्ठा नहीं है

— —

वह सारी प्रार्थनाएँ
जो कुछ पाने के लिए की थी
मन्दिर के कंगूरे से टकरा कर,

एक हवाबील का खाना गिराते हुए
लौट आयी है।
आस्थाएँ उन उतराती
मछलियों की तरह सड़ गयी हैं
जो ओहदों से निकल कर
साँस लेने आयी थीं
और किनारे के
गरम पानी में उबल गयीं।
सम्भावनाएँ क्या हैं ?
सूरज है जिसमें विस्फोट हो रहे हैं
चाँद है जिसके धरातल में
सिवाय रेत और छिद्रों के कुछ नहीं है।
दिन और रात हैं
जिन्हें सिर्फ मेरी उम्र से मतलब है।

डा० जगदीश गुप्त—

डा० जगदीश गुप्त की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन 'नाव के पाँव' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। यह दो खंडों में विभक्त है—'नाव के पाँव' तथा 'दूसरी लहर'। इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ गीत शैली में लिखी जाने के कारण गीतात्मकता के तत्वों से युक्त हैं। जगदीश गुप्त की काव्य शैली पर छायावाद तथा उत्तर छायावाद युग के गीतकारों का स्पष्ट प्रभाव मिलता है। कहीं कहीं इन्होंने पुराने माध्यमों से नयी अभिव्यक्ति को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है। इस संग्रह की कुछ कविताएँ ऐसी भी हैं क्योंकि उनमें अभिव्यक्ति प्रभाव रहित प्रतीत होती है। अनुभूति की नवीनता और ताजगी के साथ साथ प्रकृति चित्रण प्रधान कविताएँ अच्छी बन पड़ी हैं। कहीं-कहीं पर ऐसा आभासित होता है जैसे कवि का काव्यात्मक संवेदनात्मक व्यक्तित्व मग्न हो गया है परन्तु जब कवि कल्पना चित्रों का मोह छोड़कर यथार्थ के धरातल पर उतर आता है तब उसकी अभिव्यक्ति सशक्त रूप में प्रकट होती है। उदाहरणार्थ

मैं बिखर गया हूँ
अपने ही चारों ओर।
मेरा एक अंश—सामने के नीम की
नंगी टहनियों में टँगा उदास पीला
पत्तियों के साथ काँप गया है—
और हवा के साथ
पतझर के रूप किन्तु हमारा घर
तारों की धार तु—लक-लक कर

नाचता गिरता लहराता गिरता
जटाओं जैसी भरी भूरी धूल भरी पाग पर
उतर रहा है—उतर रहा है।

मुझे कौन पूरा कर
पीली पत्तियाँ का ... जब वृक्षों में कोंपल
बह जायेंगे ये।
... दानों पर ... का ...
दब जायगा नाद खो जायगी पीर।

डॉ० पुत्तूलाल शुक्ल चन्द्राकर—

डॉ० पुत्तूलाल शुक्ल चन्द्राकर ने अनेक तथा मालूशाही शीर्षक प्रबंध काव्यों की रचना की है। इनमें से द्वितीय हिन्दी का सर्वप्रथम आंचलिक प्रबंध काव्य कहा जा सकता है। चन्द्राकर जी ने संस्कृत में अश्वघोष के लिखे हुए बुद्धचरित नामक महाकाव्य के मूल अप्राप्य उत्तरार्द्ध को संस्कृत श्लोकों में भी प्रस्तुत किया है। पाठ्य पुनर्रचना के क्षेत्र में यह एक अद्वितीय कृति कही जा सकती है। मालूशाही में चन्द्राकर के काव्य का एक अंश यहाँ उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है

मेरा मन सूना सूना है संसार।
सारे रस भाग, विभव का याग।
पीर कौन जाने मन में वियोग।
परिजन जाने सारा दुख भार।
मेरा मन सूना सूना है संसार।
सूनी है दुनियाँ सूना आसमान।
सूने पेड़ पौधे सूने पाखी गान।
दीपक जगता जल रहा प्यार।
मेरा मन सूना सूना है संसार।
भीड़ बीच आप आप ही अकेली।
बह रही गंगा दुख की सहेली।
गिरे टूट टूट धैर्य का कगार।
मेरा मन सूना सूना है संसार।
स्वामी बिना गेह प्राण बिना देह।
साँस बिना प्राण ऐसा हुआ नेह।
सुन मित्र मेरा जीने का आधार।
मेरा मन सूना सूना है संसार।

डा० प्रतापनारायण टंडन—

डा० प्रतापनारायण टंडन की विदेश-यात्रा के दौरान लिखी गयी कविताओं का एक संग्रह 'पथरीले प्रतिबिम्ब' शीर्षक से प्रकाशित हो चुका है। काव्य के वक्तव्य के अनुसार मेरी यह धारणा बनती जा रही है कि आज की कविता अपनी पूर्ववर्ती कविता से कुछ अर्थों में आवश्यक रूप से भिन्न होगी। मैं यह समझता हूं कि हमारी रोजमर्रा की जिंदगी और ऐसी अनुभूतियां जो हम साधारण मालूम पड़ती हैं एक नया अर्थ ग्रहण करती हैं और आज का कवि बाध्य हो गया है उनको आज की ही भाषा और साथ साथ प्रतीक के बिंबों के माध्यम से अभिव्यक्त करने के लिए। मैं यहां पर यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि बिंब शब्द का प्रयोग मैं व्यापक अर्थों में कर रहा हूं। कभी कभी कविता की अंतर्निहित तन्मयता ही उस कविता का समग्र बिंब विधान होता है। विश्व की हर भाषा के साहित्य में—अंग्रेजी और हिन्दी के सम्बन्ध में मैं अधिक जानकारी से कह सकता हूं कि—कुछ समय बाद कविता आवश्यक रूप में यथार्थ के स्तर पर आ जाती है और बोलचाल के निकट होती जाती है। साथ ही उसका बिंब विधान भी वायवी नहीं रहता। जितनी कविता अधिक साधारण होगी उतनी उसकी अनुभूति स्पष्ट और प्रखर होगी उतना ही वह सामान्य से हटी हुई होगी। पर इससे यह न समझ लिया जाय कि मैं यह समझता हूं कि कविता को सामान्य होना चाहिए। कविता सामान्य तब होती है जब कवि असाधारण होने का प्रयत्न करते हैं और एक ऐसी भाषा तथा बिंब की पुनरावृत्ति करते हैं जिसकी सीमाओं को हम आसानी से तोड़ नहीं पाते। जब आज के कवि यह कहते हैं कि छायावादी कविता से हम हटना है तो साहित्य का एक विद्यार्थी होने के नाते मेरा ऐसा विचार है कि वह यह कहना चाहते हैं कि छायावाद और उसकी परिचित भाषा प्रतीक या बिंबगत एकरसता को वे अस्वीकार करना चाहते हैं। मैं समझता हूं कि इस समस्या का समाधान किसी प्रकार की प्रतिक्रिया से संभव नहीं है किन्तु उस समझ से ही संभव हो सकता है जिसमें साहित्य का यह सिद्धान्त अंतर्निहित है कि हर परिस्थिति में कवि के लिए प्रेरणा का स्रोत आकाशोन्मुखी नहीं वरन लौकिक है। प्रतापनारायण टंडन की कविता का एक उदाहरण प्रस्तुत है

मेह की लंबी दोपहरी
उजाड़ हुआ—
सांय-सांय करता हुई थम गई
सारा नगर गहरा सन्नाटा
तपती धूप—
सिमट कर ठहर गई
लड़खड़ाती पेड़ों की टहनियां
स्थगित—
आकाश में यहां वहां उभर गई

इस अजानी अरण्य में
आना—
नीरवता गहरी पास में
हरे स्वगों में छ बन्द किया हुआ
कोई गीत गुनगुना रहा रहा है
सुन्दर पाँखवान में अराजना
कोई नाजुक गुनाह कर रहा रहा है—
— —
कभी पड़ते हैं आज
कभी बहते हैं मन
कभी बहते हैं परसों
ऐसी में बात जाते हैं बरसों
कभी हथेली पर आ पहुँचा है बरसों ?

राजेन्द्र किशोर—

राजेन्द्र किशोर की कविता में छायावादी रहस्यमयता भी जहाँ तहाँ समाविष्ट मिलती है। बौद्धिक परिणति ने इनके काव्य को अवांछित रूप में दुरूह और अस्पष्ट बना दिया है। मनोगत्मकता की बढ़ती हुई काव्य प्रवृत्ति का प्रभाव राजेन्द्र किशोर की कविता पर भी पड़ा है। गीतात्मकता की दृष्टि से भी इनकी अनेक रचनाएँ प्रभावशाली बन पड़ी हैं। कुछ हल्के फुल्के मन स्थितियों की अभिव्यक्ति करने वाले चित्र भी अच्छे है। उदाहरणार्थ—

कल जब शाम आई जाने कैसा लगा !
उम्र पटते पटते दो पल रुक गई।
जहाँ वह नीम की छतनार डाल झुक गई!
और गन्धवन्ध हवा आयी के गयी दगा !
तब भी—तब भी जाने कैसा लगा।

वीरेन्द्र कुमार जैन—

वीरेन्द्र कुमार जैन का काव्य भाव भावना के पुट से युक्त है। उस दृष्टि से उसमें रहस्यमयता और चामत्कारिक सृष्टि के साथ साथ लोक गीतों से मिलती जुलती स्वाभाविक रोमानियत भी मिलती है। ऐसा एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है

टल गयी प्रदोष बेला
वन पथ खो गये अधर में।
दूर के घाटी वाले तम छाये वन पर
एक अकेली तारिका झिलमिल राती सी
लगती थी वन में खाई एकाकिनि बाला सी।

हां उस बाट की फूटी दरगाह म
वह साई रहता है चिमट वाला
हाय वह तो नहा आयी
वह गयी है फूल बीनने
सध्या के मन्प घर की दीवारा पर माडन क लिय।

श्रीराम वर्मा—

श्रीराम वर्मा की कविताओं म मानवीय सवदनाओं की अभिव्यक्ति क साथ साथ दृढ़ आस्था का स्वर भी स्पष्ट रूप म मिलता है। उनम पुरान प्रतीकों का नय रूप म प्रयोग मिलता है। कहा कहा पर गद्यात्मकता की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक हो गयी है। इस दृष्टि स उनकी चक्रव्यूह शीर्षक कविता उदाहरणार्थ प्रस्तुत की जा रही है—

मरी आत्मा
अर्जुन स भी अधिक ऋजु है
सुभद्रा स भी अधिक धारणशीला है।
क्योंकि मैं वनमाल का छोटा भाई मानता हू।
जिस मैं जिधर चाहू मोड सकता हू।
और उस अपने प्यार के सहारे दिव्य और भव्य
बना सकता हू।
यह विराट चक्रव्यूह
उस इकलौत भाई की नूतन पाठशाला है।
और मैं उसका अकेला अध्यापक हू।
नश्चित म झूठ नहीं बोलता
सच
मेरा बाप अर्जुन नहीं था
मरी मां सुभद्रा नहीं थी
और मैं भी अभिमन्यु नहीं हू।

राजकमल चौधरी—

नय कवियों म राजकमल चौधरी का व्यक्तित्व अत्यत प्रखर था। नयकवि न सदर्भ म कवि न स्वय अपने विषय म लिखा है—मैं कला प्रम्न सक्ति अथवा दूसरे सहज म कठा ग्रस्त नहीं हू। मरी जीवन प्रतिभा रचना प्रतिभा और स्वप्न प्रतिभा के आधार भूत मूल्यो म कला का कोई बहुमूल्य या विशिष्ट स्थान नहीं है। सम्भवत खडित अह क अलग-अलग टुकड़ो पर जम आया हुई कीचड़-काई हो कुछ बनती है जो अन्दर क खाबुत पत्थर को—यानी आदमी के अस्तित्व अउरग अस्तित्व को नियरन चमकने नहीं देती है। जो आदमी को किसी नारसा किसी गेह अग, किसी भगिमा, किसी नगपन, किसी भोग, किसी मृत और अतीत, शारीरिक

सम्भावना म हमना र लिए—वब आ मा प्रा ी रगा म अलिग मजबूर हुआ ॥ है उ अर्गे र लिए—शर्त थी है। रावयमन सोधय की न, म रविना को आगिया नाम सोपर रगता का कुछ अन यह उदाहरणार्य प्रस्तुत किया जा रहा है

हम भी गगा रही है विश्राम अनग
यह जन है
ज्यादी मगि ी है बह ति रता !
हम रगता हो रहा है विश्राम
सूरज डूबने की अपिरा राा ा म ही यह शाम
यह गीर यह मौसम व ाार ग्र्ग
हम तुम
रुक हुए है। हम तुम रर हुए है
दूर र ब न कारखाना की चिमनियों की तरह
—हम म धुआं भी नहीं
नहीं है अनुभव की यह जादूगर विनगारी जा शन्द का
एक अर्थ बना देती है !
जस यह शाम !
जस तुम्हार बचन हाथ जा पत्न ए
सिहरत ए। मगर
उस अनन्दिन सितार का एक तार भी नहीं सिहरता है !

दुष्यत कुमार—

हिन्दी के नय कवियों म दुष्यत कुमार का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। इनके का य का एक सग्रह सूय का स्वागत शीषक स प्रकाशित हुआ है। इनके कुछ गीतों म जहाँ एक आर छायावाद का प्रभाव दिखाई देता है तो दूसरी ओर सू म सवदनात्मक अभि यक्ति स भी इनकी अनक रचनाएँ युक्त है। अनुभूत्यात्मक सवदनाओं का आस्था युक्त स्वर इनकी कविता की मुख्य विशषता है। इनकी एक प्रसिद्ध कविता सूय का स्वागत उदाहरण क लिए नीच प्रस्तुत की जा रही है

दीवार काई स चिकनी है कानी है
धूप स चढा नहीं जाता है
ओ भाई सूरज मैं क्या करू ?
मरा नसीब ही एसा है
खुली हुई खिडकी दखकर तुम तो चल आए
पर म अधरे का आदी
अकमण्य
निराश ..

तुम्हारे आने का खो चुका था विश्वास।
पर तुम आये हो
स्वागत है
स्वागत घर की इन काली दीवारों पर।
और कहाँ ?
हाँ—मेरे बच्चे ने खेल-खेल में ही
यहाँ शब्द कुरेद गया था—
आओ यहाँ बैठो
और मुझे मेरे अभद्र सत्कार के लिए क्षमा करो।
देखो मेरा बच्चा
तुम्हारा स्वागत करना सीख रहा है।

अन्य कवि—

आधुनिक युग में हिन्दी कविता की जिन प्रवृत्तियों का परिचय यहाँ प्रस्तुत किया गया है वे वर्तमान कविता के स्वरूपगत प्रतिबिम्ब की द्योतक हैं। ऊपर जिन कवियों का उल्लेख हुआ है उनके अतिरिक्त भी एक बहुत बड़ी संख्या उन कवियों की है जिनकी कविता मौलिकता, यथार्थता, अभिव्यंजना तथा रचनात्मकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन कवियों में आरसीप्रसाद सिंह, नलिनविलोचन शर्मा, विष्णुस्वरूप, गोता सिन्हा, परमेश्वर द्विरेफ, गंगाप्रसाद विमल, निर्मला वर्मा, कालीनाथ उपाध्याय, भ्रमर (बेधड़क बनारसी), शान्तिप्रिय द्विवेदी, प्रयागनारायण त्रिपाठी, शान्ता भारती, बनारा बाजरथा, विमला राजेन्द्र, कृष्णदेवप्रसाद गौड़ बेढब बनारसी, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही, रामनाथ सुमन, तारा पाण्डेय, प्रेमलता वर्मा, रामेश्वरी गोयल, कबीर, रामेश्वरी देवी मिश्र चकोरी, ठाकुर प्रसाद सिंह, शम्भुणी बाला गुप्ता, डा० परमानन्द श्रीवास्तव, वसन्त देव, रामबहादुर सिंह मुक्त, डा० रवीन्द्र भ्रमर, विपिन अग्रवाल, प्रेमनारायण अग्निहोत्री, सुधांशु, जगनाथ नन्दन, रामावतार चेतन, गंगानारायण विशारदिया, त्रिलोकीप्रसाद शर्मा, वसन्त कुमार, राजेन्द्र माथुर, उपेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, हरकुमार तिवारी, महेन्द्र भल्ला, गिरिधर गोपाल, अनाम, अनन्तकुमार पाषाण, नित्यानन्द तिवारी, विमला राजेन्द्र, जगदीश चतुर्वेदी, नित्यानन्द तिवारी, शान्ता नन्दा, ममता कालिया, तारा तिवारी, विद्या शर्मा, रामदरश मिश्र, नन्दकिशोर चन्द्र, सूबनशार सिंह, बलवीर सिंह रंग, देवराज दिनेश, गोपाल प्रसाद व्यास आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये कवि वर्तमान हिन्दी कविता की विविध प्रवृत्तियों के विकास में योग दे रहे हैं। हिन्दी कविता का वर्तमान रूप बहुत अधिक विवादास्पद रहा है। उसके विविध स्वरूप पारस्परिक वैभिन्न्य और विरोध के भी द्योतक हैं। परन्तु कुल मिलाकर वर्तमान युग की हिन्दी कविता अपनी जागरूकता का परिचय दे रही है। नीचे वर्तमान कविता के सम्बन्ध में ये कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं

पूर्णिमा की ही न हो या कि रणा
सरमा पवन रही तो फिर बिखरा
उनकी बदलियाँ मंडरा रहीं
नील आकाश बिखरा
नील आकाश उज वर मन
सच अगर तुम पुरस्कृत होने जा रहे
हमें न उच्छा का भ्रम
(भ्रम हम कि हमने एक रण जीता)
पुरस्कृत करें इन ब नियां का
कौन सामर्थ्य ! किस योग्य हैं हम !
कम यहाँ क्या — मरें यदि यह मरण जि राह।
आशा न यदि होता कभी भी स्वस्थ उबरा
सहज निरनी महिमा धमित निमंत्रिया के दर्प में
(क्षण दो क्षण भर ही)
पर निहारेंगे
निहारेंगे इष्ट हम। (शेखर जोशी)

— —

वाकई इस दुनिया से पार पाना बहुत मुश्किल है।
(और इस दुनिया में आपकी भी अपनी
अहमियत है !)
फिर भी आप चैन से सोइये !
कोई एतराज कम से कम मुझे नहीं !
मैं तो किसी कस गये फिकरे सा
अब आपके पार हो चला हूँ ! (शिवकुटी लाल वर्मा)

— — —

असंख्य टुकड़ों पर टूट कर बिखरा हुआ मैं—
हर कोण से देखता नील आकाश को
और तुम्हें !
तुम्हारा मुख !
सारे बिखराव में
आँखों में बहते हुए आँसू
जाने की उष्मा लिये हुए (प्रयाग शुक्ल)

— — —

मणि विहीन
कड़ली मारे

सच
मन
बुझा बैठा है
और एक वहशत सा है। (निर्मला वर्मा)

— —

खिड़की से एक पीला गुलाब रह रहकर टकराता रहा
वहाँ वह मुझे छोड़ रोती रही
मैं सुनता रहा
कोई अपनी उँगलियों से
काँपता हुआ आवाज
मेरी ओर खोलता रहा
खींचता रहा— (अशोक वाजपेयी)

— —

वह देखा अधर में
चमकता पार गया था।
तुमने मुँह उठाकर मुझे देखा
मुस्करा दी। ठंड... बारिश
रात। (केदारनाथ सिंह)

— —

धूप का एक कविता-संग्रह
बादलों के पार होगा।
बरसते हैं दिन गगन से।
रिक्त-अंजलि विनत मस्तक
कवि नहीं मल्हार होगा। (मलयज)

— —

मुझे अपने ही कामों से विद्रोह,
चमचमाती तस्वीरों से मोह
जीवन जो बन सका न उभरा स्वप्न
आकांक्षाओं के सुनहरे निरवम
उफ! यह सूने गलियारों की धूल।
उफ! यह छोटे-छोटे स्वप्नों के शूल। (मुकुन्द तिवारी)

— — —

धुएँ का एक ठाठ है
बादलों के मौसम

लोहू न बा । है
और आहाना भाग ी गद ाड़ा।
गन्द का नहीं है अ।— (नित्यानन्द तिवारी)

— — —

जब टूटा प ी—
टूटी पात । सिर उठा ग्या
गर १६ वरिष्ठ भजाओ म
अपना सिर उठाए रहा था
उग नहीं आ गई ।
पेड़ न गुता मा नीचे म आ
अपना भजाओ म सिर का थमा
फेंक दन का आतुर हा गया
हरी पात नमी स
लौटी नो गई ! (विपिन अग्रवाल)

— —

हम अनावश्यक समिधा
पता पाए
तिरस्कृत !
आह !
धधक उठन की हमारी चाह
मिट्टी और पत्ते म
हाय हाती
रो उठी है एक मान म ! (महेन्द्र भल्ला)

— —

सब मिथ्या अहं पर टिके हुए !
अपनी आत्मा क बिके हुए !
सबके है अपन पान
और अपन दान
सब स्वर्ण पत्र पर
घणित अथ स लिखे हुए !! (श्याममोहन श्रीवास्तव)

— — —

लो ! अब विराट घणा क कुंचित ललाट का धीरज छूटता है।
लो ! अब उर्जन क परम कण का सूय सा शक्ति स्रोत फूटता है॥

हो सावधान !
ओ आज भगवान इन्सान !
अब दूर नहीं बहुत-बहुत-बहुत दूर
शुरू होती है वह अनन्त विध्वंस प्रक्रिया-सदा
जिसमें न रह पायेगी यह अब चेतना की मीनार खड़ी,
जिसमें हो जायेंगे ये सबके सब काँच के सपने चकनाचूर ! (मनोहरश्याम जोशी)

— — —

दीवारें उठाओ।
श्रम का दान करो
बाँटो।
स्वान्तः सुखाय निज हिताय
दीवारें उठाओ चारों ओर।
वहम (अहम्) का भूत करो—
हौवा सा मढ़ बनाओ—
बातों के जवाब में सिर्फ क्षण भर मुस्कराओ—
रिरियाओ तो भी सिर्फ गर्दन हिलाओ।
घूम जाओ।
दीवारें उठाओ
दीवारें उठाओ चारों ओर !
अन्दर से काम लो
जन-बस्ती में राख बनि मत घबराओ।
दीवारें उठाओ
उठाओ दीवारें चारों ओर ! (कान्तिचन्द्र वर्मा)

— —

चू रहे अमृत बुन्द रस फूल
उड़ रही अनंग की साँस
प्राण तुम जगो जगो जग गयी
चाँदनी में सुगंध की आग
ध्वनित बासन्ती बन के बाग
रहा उपवन का कोकिल बोल
प्राण तुम जगो जगा है स्वप्न
अचेतन में चेतन की आग। (हरिमोहन)

— —

चाँदनी चन्दन सदृश

हम क्या लिखें ?
मुख हम कम [illegible] ?
हम लिखेंगे
[illegible] उस रंग की है कि लिखेंगे
[illegible] है पर [illegible] है ।
हम [illegible] जाएँगे
मुँह पर [illegible]
जहाँ पर [illegible] और मुँह [illegible] । (अजित कुमार)

— — —

बचपन रहा था चिंतित था
यौवन रहा था चिंतित था
जीवन रहा था चिंतित था
मरण चिंतित था
जब हम उत्पन्न हुए थे
कीमतें ऊँचे आसमानों को चूमती थीं
मौतें वायुयानों पर चढ़ी चहकती थीं । (ओंकारनाथ श्रीवास्तव)

— — —

मन नहीं मिलता तो क्या हुआ ?
आओ हम साथ साथ रहें
एक दूसरे की सुनें और कहें
जो असह्य है—
उसको भी सहें ! (गोपालकृष्ण कौल)

— — —

कोहनी टिकाए धरी मेज पर
शीश झुकाए हाथों पर
क्या अपनी पलकों में डूब रहा ?
कुछ सपने टूटे शायद
रंगीन काँच के टुकड़ों से
खिड़की के बाहर फेंक उड़े ।
स्मृतियों के बीच आकर उनकी चुभन लगे ।
हैं स्वप्न टूटते तो हैं टूटते जाने दे ।
तू बना रहा तो कितने स्वप्न बना लेगा । (सिद्धनाथ कुमार)

महत्व—

इस प्रकार ये वर्तमान हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हिन्दी कविता की चतुर्मुखी जागरूकता और चेतना सम्पन्नता की द्योतक हैं। ऊपर ऐसे अनेक कवियों का उल्लेख नहीं हो सका है जो वर्तमान हिन्दी कविता के विकास में योगदान कर रहे हैं। इन कवियों में कुछ ने यदि एक ओर परम्परागत ग्राम्य संस्कृति के भावनाचित्र खींचे हैं तो दूसरी ओर ऐसे कवि भी काफी संख्या में हैं जो यांत्रिक संस्कृति की आकृति के सशक्त चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं। ऊपर जो काव्यांश उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये गये हैं वे वर्तमान काव्य के विवादग्रस्त और विरोधाभास युक्त रूप के परिचायक हैं। हिन्दी के वर्तमान कवि साहित्य में जिन मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए संघर्षरत हैं उनकी स्थापना चाहे जितनी सोपानिक हो परन्तु वे संस्कारगत परिमार्जन के प्रयत्न के साथ अटूट रूप से उनकी उपलब्धियों के प्रति आशावान हैं। वस्तुतः वर्तमान वैचारिक साहित्य में मूल्यगत संक्रमण और अस्थिरता ने एक प्रकार की संक्रांति कालीन परिस्थिति-सी उत्पन्न कर दी है। इसलिए नई कविता की दिशा का स्थिरीकरण तथा निर्धारण भी नहीं हो रहा है। यद्यपि हिन्दी के कवि यथार्थ को अस्वीकार नहीं कर रहे हैं, न ही उसमें पलायन करना चाहते हैं परन्तु अनास्था या कुंठाभूत भावना के उन्मूलन के लिए वे अवश्य कृतसंकल्प हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी की वर्तमान कविता का विषय क्षेत्रगत वैविध्य और विस्तार भी कवि की इस माध्यम से सृजनता का परिचायक है। हिन्दी की वर्तमान कविता मिथ्या आस्था का त्याग कर जिन मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए [illegible] और [illegible] के साथ कटिबद्ध है वे मानववाद में विश्वास रखते हैं। इससे यह स्पष्ट पता मिलता है कि नयी कविता मानव जीवन को उसके समग्र रूप में एक विशिष्ट दृष्टिकोण से देखती है। सहज अनुभूति के स्तर पर मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यंजना ने इस कविता को एक आडम्बरविहीन अकृत्रिम और स्वाभाविक परिवेश दिया है जो उसमें विगत और भविष्य के प्रति भी आसक्त करता है। सामाजिक यथार्थ के स्तर पर ईमानदारी ने भी नये कवि को अपने उक्त दायित्व के प्रति निष्ठावान बनाया है। यद्यपि नयी कविता का एक बहुत बड़ा अंश निरर्थक शब्दजाल एवं हास्यास्पद शिल्प रूपों के विकृत तथा निर्जीव चित्रों से भी भरा है परन्तु केवल इतने मात्र से उसके आकर्षण से विमुख होकर उसकी उपेक्षा करना औचित्यपूर्ण न कहा जायगा। वस्तुतः इस प्रकार के अंश सहज ही उसके विकासमय अंगों और उपलब्धियों से पृथक किये जा सकते हैं। बौद्धिक परिपक्वता का सूचन इसमें अनेक कवियों की दुनिया में आधुनिक हिन्दी कविता की नयी दिशाओं का परिचय देता है। नयी कविता में बढ़ती हुई गद्यात्मकता की प्रवृत्ति भी उसके भावी स्वरूप का आभास दे रही है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि गद्यात्मकता की यह प्रवृत्ति नयी कविता का एक विशेषता सी बनती जा रही है। प्रगतिवादी काव्य प्रवृत्ति के आरम्भिक काल से ही

नयी कविता में जो गुण दोष पाये जाते हैं और जितनी आज [illegible] की भी आवश्यकता है वह यह कि नवीनता के नाम पर चौंकाने या आश्चर्य उत्पन्न करने की प्रवृत्ति कविता में बहुतायत से मिलने लगी है। आज इसी के नाम पर नयी अभिव्यक्ति के रूप में अत्यन्त अमर्यादित शब्द रूप मिलते हैं। कहीं कहीं पर कवि अपनी बात इतने दुरूह और अस्पष्ट रूप में व्यक्त करता है कि पाठक को उसमें मात्र एक उलझाव मालूम होता है। इसके अतिरिक्त नयी कविता विविधता तथा परिमाण की दृष्टि से इतनी व्यापक और विशाल है कि जब तक उसके सम्यक मूल्यांकन के पश्चात उसकी उपलब्धियों का संयोजन नहीं होगा तब तक वह कोई सुनिश्चित दिशा नहीं ग्रहण कर सकती।

—)•(—

परिशिष्ट—(१)

नामानुक्रमणिका

अ